लगी, "ज्वाला, ज्वाला !"

ज्वाला उसकी हिन्दू दासी थी, जिसका नाम ज्वलन्तचन्द्र चपला था। लेकिन क्राइसिस इतना वडा नाम लेने में आलस्य अनुभव करती, इसलिए उसे ज्वाला ही पुकारती थी।

दासी ने प्रवेश किया और फाटक खोलकर वह उन्हे विना वन्द किए हुए ही खडी रही।

"ज्वाला, कल कौन आया था ?"

"क्या आपको याद नही ?"

"नही, मैंने उसकी ओर ध्यान ही नही दिया था। मैं थकी हुई थी। पूरे समय में उनीदी-सी रही और कुछ भी याद न रख सकी। क्या खुश-गवार आदमी था ? वह कव लौटा था, जल्दी ही ? वह मेरे लिए क्या भेंट लाया था ? क्या वह कोई मूल्यवान वस्तु थी, नही—मुझे न वताओ ! मुझे उसकी चिन्ता नही है ! वह क्या कहता था ? क्या उसके जाने के वाद मे कोई अभी तक नही आया ? क्या वह लौटकर आएगा। मुझे मेरे ककरण तो दो।"

दासी आभूपणो की मजूपा उठा लाई, लेकिन क्राइसिस ने उस ओर ध्यान भी नही दिया और अपना हाथ भरसक ऊँचा उठाकर उसने कहना शुरू किया, "आह, ज्वाला ! आह, ज्वाला ! मैं जीवन में कुछ असाधारण साहसिकतापूर्ण कार्य करना चाहती हूँ !"

"दुनिया की प्रत्येक वस्तु असाधारण है" ज्वाला ने कहा, "या फिर कुछ भी नही, सभी दिन एक समान होते हैं।"

"नही, नही। पहले कभी ऐसा नही अनुभव हुआ। दुनिया के हर देश में देवताओ का इस भूलोक पर अवतरण हुआ है और उन्होने मानवियों से प्रेम किया है। आह, मैं किस प्रकार उनकी प्रतीक्षा करूँ, वह कौन-से वन-प्रान्त हैं जहाँ उनकी उपलब्धि होती है—जो मानवो से कुछ अधिक होते हैं। किस प्रकार उनकी आराधना करू कि वह आएँ और मुझे सव कुछ सिखा दें या फिर जो कुछ मैं जानती हूँ वह सभी कुछ

भुला दें। और अगर देवताओं का अब से आगे पृथ्वी पर अवतरण नहीं होगा, अगर वे मर चुके हैं या अत्यधिक जराजीर्ण हो चुके हैं तो ज्वाला में भी मर जाऊंगी और कोई भी मानव मेरे जीवन में ऐसा न आएगा जो दु खपूर्ण घटनाओं का आविष्कार कर सके।"

वह अपनी पीठ की तरफ मुंह रखे लेट गई और अपनी अंगुलियों को मीडने लगी।

"अगर किसी ने मेरी आराधना की, तो मुझे ऐसा लगता है कि मैं उसको इतनी वेदना पहुँचाऊंगी कि वह उसके कष्ट से मर जाएगा। जो लोग मेरे पास आते हैं, वह चार आंसू बहाने के मात्र भी नहीं हैं। और फिर यह कसूर भी तो मेरा ही है--मैं उन्हे बुलाती हूं, तो फिर क्यों न वह मुझे प्यार करे ?"

"आज कौन-सा कङ्कण पहनना है ?"

"मैं सभी को धारण करूंगी, लेकिन मुझे अकेला छोड दो। मुझे कोई भी नहीं पहनना।"

"क्या आप बाहर नहीं जाएगी ?"

"हां, मैं अकेली ही जाऊंगी—मैं अकेली ही अपना शृंगार करूंगी। और मैं लौटकर नहीं आऊंगी। जाओ! मेरे पास से हट जाओ!"

उसने अपना एक कदम गलीचे पर रख दिया और सीधी तनकर खडी हो गई। ज्वाला चुपचाप बाहर निकल गई थी।

वह मन्थर गति से कमरे के बाहर की ओर जाने लगी। उसके हाथ गर्दन के पीछे एक दूसरे से गुथे थे और वह प्रस्वेद-स्नात अपनी टांगों को ठंडे फर्श पर फैलाकर काल्पनिक स्पर्श-सुख अनुभव कर रही थी। तब वह अपने स्नानागार में चली गई। जल के अन्दर अपने अंगों की गठन को देखकर उसे अत्यन्त आह्लाद हुआ। उसने अनुभव किया, वह एक मोती को अंक में धारण करने वाली सीपी है, जो किसी चट्टान पर खुली पडी है। उसकी त्वचा समवर्ण और सम्पूर्णता को प्राप्त हो गई थी। गहरे नीले प्रकाश मे उसकी देह-यष्टि को पृथक करने वाली

रेखाएँ दीर्घतर प्रतीत होने लगी थी, सम्पूर्ण अग अत्यन्त कोमल हो गया था और वह अपने हाथो को पहचान नही पाती थी। उसका अग इतना भारविहीन हो गया था कि वह दो अगुलियो के वल उसे तोल सकती थी। वह क्षण भर को तैरने लगी और फिर सहसा पीछे लौट पडी। इस आन्दोलन से जल तरगायित हो उठा था और उसकी चिबुक को दुलरा गया था। पानी उसके कानो मे इस प्रकार भर गया—जैसे किसी ने चुम्वन अकित कर दिया हो।

यह स्नान के क्षण ही वह सर्वप्रथम समय था, जहाँ क्राइसिस स्वय अपने रूप पर मोहित हो उठी थी। उसके देह की सुन्दरता ने उसके अन्दर कोमल कल्पनाओ और प्रशसा की भावना को जगा दिया था। अपने केशो और हाथो से वह सहस्रो क्रीडाए करती रही। और तव वह एक शिशु के समान धीरे-धीरे हँसने लगी।

शनै शनै दिन समाप्त हो गया। वह हौज में ऊपर उठी, पानी से निकलकर वाहर आई और दरवाजे की ओर वढने लगी। उसके पग-चिह्न पत्थर पर अभी तक चमक रहे थे। वह जैसे शिथिलता अनुभव करने लगी थी। उसने कपाट खोल दिये और दोनो हाथो को फैलाए एक क्षण खडी रही और फिर अपने विस्तर की ओर वढ गई। वह भीगी खडी थी और दासी को आदेश दे रही थी कि वह उसे सुखाए।

मालावार-निवासिनी उस दासी ने एक वडा स्पज लिया और उसे क्राइसिस के सुनहरे वालो में प्रविष्ट कर दिया। स्पज पानी से भर गया। उसने उसे सुखाया, छितराया और कोमल-से झटका दिया और तव उसने उस स्पज को एक तैल-पात्र में डुवो दिया और सुखाने से पूर्व उसने वह स्पज अपनी स्वामिनी के अग पर फेर दिया, जिससे कोमल त्वचा चमकने लगी।

क्राइसिस तव सहसा एक सगमरमर की ठडी पीठिका पर बैठ गई और वोली, "मेरे केश सँवारो!"

साध्यकालीन किरणो के मध्य वह भीगी और भारयुक्त केशराशि

ऐसी प्रतीत होती थी जैसे सूर्य के प्रकाश मे आकाश से झरने वाली वर्षा की कोई बौछार हो। दासी ने बालो के गुल्म हाथ में ले लिए और उनमें लहरे बना दी। उसने बालो को इस प्रकार सँवारा कि वह धातु के बने किसी सर्प के समान शीर्ष पर स्थिर हो गये और सोने की पिने उसमें तीरो के समान बिंध गई। उसने उन्हे हरे बन्धन से बांध दिया और उसके तीन चक्र बनाए ताकि वह रेशम के रग से समुचित विरोध उपस्थित कर सकें। क्राइसिस एक हाथ की दूरी पर अपना तांबे का रगीन आइना सभाले हुए थी। वह उस दासी के श्यामवर्ण हाथो की गति को अलस भाव से देख रही थी अपने घने बालो के गुच्छो और इधर-उधर बिखरी अलको को सुन्दर केश-क्रोडो में परिवर्तित होते हुए देख रही थी। इतनी चतुराई से दासी ने बाल सँवारे थे कि लगता था उसने साचा लेकर मूर्ति का निर्माण कर दिया हो।

जब केश-शृगार सम्पन्न हो गया तो क्राइसिस ने धीमे स्वर में कहा, "अगराग लगाओ।"

ड्योसकोरिस द्वीप से आया हुआ सदल का वह प्रसाधन-पात्र खोला गया। उसमे अनेक रगो के अगराग थे। ऊँट के बालो से बने हुए ब्रुश से थोडा-सा श्यामवर्ण प्रलेप दासी ने पलको पर लगा दिया ताकि आँखें और भी अधिक नीली दिखलाई पडने लगें। दो हल्के-से सस्पर्शो से उनको और भी विस्तृत कर दिया गया। एक नीला-सा शफूफ पुतलियो पर छिडक दिया गया। आँखो के दोनो कुंओ में एक चमकीला सिन्दूर लगा दिया गया। तब इन रगो को स्थिर करने के लिए मुंह पर इर्गंजा-प्रलेप किया जाना आवश्यक था। ज्वाला ने एक मोर-पख सफेद प्रलेप में डुबो दिया और उससे क्राइसिस की बांहो और गर्दन पर कुछ धारिया बना दी और ब्रुश में किरमिजी रग भरकर उसने मुंह में लगा दिया, फिर उसकी अगुलियो ने कपालो पर एक लाल शफूफ लगा दिया। तब एक रगीन चर्म-निर्मित पैड से उसने उसकी कोहनियो पर थोडा-सा रग लगाया और नाखूनो की सुर्खी फिर से ताजी कर दी। इस प्रकार वह

शृगार समाप्त हो गया ।

अब क्राइसिस ने मुस्कराना शुरू कर दिया था और हिन्दू दासी से कह रही थी कि सगीत प्रारम्भ करे ।

वह स्वय अपनी सगमरमर की आराम कुर्सी म एक वृत्त वनाती हुई वैठी थी । उसकी पिने उसके मुखमण्डल से निकलने वाली सुनहरी किरणो के समान चमक रही थी । उसके हाथ वक्षस्थल पर सिमटे हुए और उसके रगीन नाखून कन्धो के मध्य स्वत एक चन्द्रहार का रूप धारण कर चुके थे । उसके पैर पत्थर पर जुडे हुए रखे थे ।

ज्वाला दीवार के सहारे वैठ गई और प्राचीन भारत के प्रेम-गीतों को स्मृति-पटल पर उतारने लगी ।

"क्राइसिस ”

वह मध्यम स्वर मे गाने लगी ।

"क्राइसिस, तुम्हारे केश मधु-मक्षिकाओ के छत्ते के समान हैं—जो वृक्ष की शाखा पर शान्त होकर विश्राम कर रहा है । गर्म पुरवैया वयार इसमें से प्रेम के विन्दु वहन करती और रात्रि में खिलने वाले पुष्पो का गीला पराग लेकर वह रही है ।"

उस युवती ने और भी धीमे स्वर मे गीत को उठा लिया

"मेरी केशराशि मैदान मे निरन्तर वहने वाली उस सरिता के समान है, जो सध्या की अरुणाभा में डूवी हुई हो ।"

तव क्राइसिस और उसकी दासी एक के वाद दूसरी इस प्रकार गाने लगी ।

"तेरी आंखें नील कमल के समान हैं, जिनमें मृणाल नही है, परन्तु जो फिर भी जल की सतह पर खिले हुए हैं ।"

"मेरी आंखें मेरी पलको की घनी छाया मे उस सरोवर के समान प्रतीत होती हैं जिसपर चारो ओर से घनी छायादार शाखाएं घिर आई हैं ।"

"तेरे होठ दो कोमल फूल हैं, जिन पर हिरन का रक्त गिर गया है।"

"मेरे होठ किसी जख्म के झनझनाते हुए दो किनारे हैं ?"

"तेरी जिह्वा एक खूनी खञ्जर है, जिसने तेरा यह मुंह रूपी व्रण बनाया है।"

"मेरी जिह्वा के ऊपर मूल्यवान पत्थर जडे हुए हैं। मेरे होठो की प्रतिछवि पाकर वह लाल हो उठे हैं।"

"तेरी बाहे दो सुडौल गजदन्तो के समान हैं और तेरी बगले दो मुंहो के समान हैं।"

"मेरी बाहो का विस्तार कमल-नाल के समान है और मेरी पांच अगुलियां कमल की पांच पखुडियो के समान हैं ?"

"तेरी जघाए दो सफेद हाथियो की सूंडो के समान हैं और तेरे चरण ऐसे हैं जैसे सूंडो ने मुंह में दो कमल-पुष्प सभाले हुए हैं।"

"मेरे चरण-कमल दो पखुडियो के समान हैं और मेरी जघाए कमल की दो फूली हुई कलियो के समान हैं।"

"तेरा वक्ष चांदी की ढाल के समान है।"

"यह चन्द्रमा है—और चन्द्रमा का जल में प्रतिविम्ब है।" एक मधुर नीरवता एक क्षण के लिए छा गई, दासी ने अपने हाथ ऊपर उठाए और तब झुककर प्रणाम किया। क्राइसिस कहती रही

"मैं एक किरमिजी रग का गुञ्चा हूं जो मधुर पराग और अमृत से परिप्लावित है मैं सागर मे निवास करने वाली नागकन्या हूँ— कोमल और रात्रिजीवी पुष्प मैं एक कुआ हूँ जोकि सदा गर्म रहने वाली सीमाओ से घिरा है।"

प्रणत दासी ने बुदबुदाया

"तू मेदुसा* के मुख के समान रौब वाली है।"

---

* मेदुसा Medusa ग्रीक पौराणिक गाथा में तीन राक्षसियों में से एक, जिसके बालों में सर्पों का वास था, जो भी उसकी ओर देखता था वह उसकी नजर से पत्थर बन जाता था।

क्राइसिस ने अपना पैर झुकी हुई दासी की गर्दन पर रख दिया। और काँपते हुए कहा, "ज्वाला ... "

शनैं शनैं रात्रि का आविर्भाव हो चुका था, लेकिन चन्द्रमा इतना जाज्वल्यमान था कि सम्पूर्ण कक्ष नीले प्रकाश से भरा था। निर्वसना क्राइसिस अपनी त्वचा से प्रकीर्ण होती छटा को निरन्तर देखती रही थी और उन स्थलो को भी जहाँ स्वय उसी के अगो की छाया गहरी हो उठी थी।

वह सहसा उठ खडी हुई। "ज्वाला हम किस चीज का ध्यान कर रहे हैं। रात हो गई और मैं अभी तक बाहर नही जा सकी। हेप्टेस्टेडियन पर केवल कुछेक नौसैनिक ऊँघते मिलेंगे अब तो। मुझे बताओ ज्वाला, क्या मैं सचमुच हसीन हूँ ?" और दुगुने उत्साह से अपने प्रश्न को दोहराती हुई फिर बोलने लगी

"मुझे बताओ ज्वाला, क्या मैं आज रात सदैव से अधिक सुन्दर लग रही हूँ ? मैं अलेक्जेण्ड्रिया की सुन्दरतम रमणी हूँ ? क्या तुम जानती हो कि जो मेरी तिरछी निगाहो का शिकार होगा, वह कुत्ते की तरह मेरे पीछे-पीछे नही फिरने लगेगा ? क्या मैं जिस तरह चाहूँगी, उसे नचा नही सकूंगी, उसे अपनी सनक का गुलाम नही बना सकूंगी ? उस पहले आदमी से जो मेरी ओर आकर्षित होगा—क्या मैं उसे अधम से अधम काम करने के लिए प्रेरित नही कर सकती ? मेरा शृगार करो ज्वाला !"

उसकी बाहों पर दो रजत-नाग लहरा उठे, उसके पैरो में सैण्डलो की जोडी शोभित होने लगी, जो उसके किशमिशी रग के टखनो तक चमडे के फीतो से कसे हुए थे। उसने अपनी कटि में स्वय करधनी कस ली। उसने अपने कानो में चक्राकार कर्णफूल पहने, अगुलियो में मुद्रिकाएँ और आरसी धारण की। और गले में तीन स्वर्ण हार धारण किए, जो पेफोस के स्वर्णकारो द्वारा तैयार किए गए थे।

केवल आभूषण पहनकर वह काफी देरतक अपने आप को देखती

रही। तव उसने एक सन्दूक में लिनेन का पीत परिधान निकाला और आपाद-मस्तक समस्त शरीर उसे आवेष्टित कर लिया। महीन वस्त्रो में से उसके अगो की गठन स्पष्ट झलक रही थी। उसकी एक कोहनी ढकी थी और दूसरी खुली थी, जिससे वह अपने अधोवस्त्र सभालती थी ताकि वह धूल में घिसटता न चले।

उसने डैनो से वना हुआ पखा लिया और वाहर चली गई।

ड्योटी की सीढियो पर सफेद दीवार पर हाथ टिकाए ज्वाला खडी हुई अपनी स्वामिनी को जाते हुए देख रही थी।

वह उस निजन गली मे होती हुई जा रही थी जिसकी निर्जनता पर केवल सफेद चादनी ही पड रही थी। एक छोटी छाया नर्तन करती हुई उसकी पीठ-पीछे फुदकती चल रही थी।

अध्याय दो

सागर-तट

एलेक्जेण्ड्रिया की चौपाटी पर एक लड़की खड़ी हुई गा रही थी। उसके दो साथी कमर तक ऊँची दीवार पर बैठे हुए अलगोजा बजा रहे थे।

वनदेवताओं ने वन की अप्सराओं को
घने जंगलों में पहुँचा दिया,
और सागर की अप्सराएँ भी लाचार होकर
पर्वत की ओर भाग खड़ी हुई,
वे क्रुद्ध थीं, उनकी आँखों में आँसू थे और बाल बिखरे थे,
उन्हें पकड़ लिया गया और घास पर बिठा दिया गया,
उनके अर्ध दैवी गात्र काँपते हुए समाप्त हो गए।
सौंदर्य का देवता स्त्रियों के होठों पर सदैव ही,
कसकती हुई और मधुर लालसा पाता है।

अलगोजा बजाने वालों ने अपने स्वरों में सौंदर्य का देवता कहकर जोरों से स्वर ऊपर उठाया और फिर एक आह खींचकर समाप्त कर दिया।

साइबेली, अटीज को खोजती-खोजती
मैदान की ओर भागी,
सौंदर्य के देवता ने उसके हृदय को प्रेम के
बाणों से बींध दिया था,
लेकिन वह उससे नफरत करता था।

"वच्चीस के यहां।"

"अभी तो नही, क्या वह लोगो को खाने पर बुला रही है ?"

"हां, खाना भी और जशन भी, मेरी प्रिय, और वह पर्व से अगले दिन अपनी सर्वाधिक सुन्दरी दासी अफ्रोडीसिया को मुक्त कर रही है।"

"आखिर उसकी समझ में आ गया कि आने वाले लोग अब उसके लिए नही उसकी दासी के लिए ही आते हैं।"

"मेरा विचार है कि उसने आज तक देखा तो कुछ भी नही है। लेकिन खाडी के कप्तान चेरीज़ को वह पसद है। वह दस मिन्क्स देकर उसे खरीदना चाहता था, वच्चीस ने इन्कार कर दिया। वीस मिन्क्स पेश करने पर भी उसने इन्कार कर दिया।"

"वह तो पागल है !"

"तुम उससे और अधिक आशा भी क्या कर सकती हो। उसकी महत्वाकाक्षा थी कि वह अपनी किसी गुलाम को मुक्त करने का गौरव प्राप्त करे। लेकिन उसका इस तरह सौदा करना भी उचित ही था। चेरीज़ पैंतीस मिन्क्स देगा और इस मूल्य पर लडकी मुक्त हो जाएगी।"

"पैंतीस मिन्क्स ! तीन हजार पांच सौ ड्रैक्मा ! तीन हजार पांच सौ ड्रैक्मा एक नीग्रो लडकी के लिए !"

"लेकिन वह एक गोरे की लडकी है।"

"फिर भी, उसकी मां तो काली है।"

"वच्चीस ने घोषित कर दिया था कि उससे कम में वह वात करने के लिए भी तैयार नही है। चेरीज़ उसपर इतना आसक्त है कि वह तैयार हो गया।"

'क्या उसे निमन्त्रित किया गया है, कम से कम उसे तो जरूर किया गया होगा ?"

"नही, फलो के अन्तिम दौर के वाद जशन में उसका नृत्य होगा। तव अगले दिन वह चेरीज़ को सौंप दी जाएगी। लेकिन मैं

सोचती हूँ—तब तक तो वह बहुत थक चुकी होगी ?"

"उस पर रहम करने की जरूरत नहीं है। उसके साथ रहकर उसे अपनी थकान दूर करने का अवसर मिल जाएगा। मैंने उसे सोते हुए देखा है। मैं उसे जानती हूँ सेसो।"

वह दोनों मिलकर चेरीज का उपहास करने लगीं और तब एक दूसरे को साधुवाद देने लगीं।

"आज तो बहुत सुन्दर पोशाक पहने हो," सेसो ने कहा, "क्या घर पर कढ़वाई है ?"

ट्राइफेरा की पोशाक एक बहुत महीन कपड़े की थी और उस पर खूबसूरत फूलों की नक्काशी की गई थी। उसके बाम स्कन्ध पर सोने का एक कार्बंकल लगा हुआ था और पूरी पोशाक धातु के कमरबन्द तक ग्रीवा-वस्त्र की तरह लटकती थी। और पैरों के उठने से पोशाक में जो आन्दोलन होता था उससे शरीर का गौर वर्ण स्पष्ट हो उठता था।

"सेसो," एक और आवाज सुन पड़ी, "सेसो और ट्राइफेरा, इधर आओ, अगर तुम्हें कुछ भी सूझ नहीं रहा है। मैं तो दीवार पर अपना नाम देखने जा रही हूँ।"

"माउसेरियन, तुम कहाँ से आ रही हो, छुटकनी ?"

"मैं फेरोज से आ रही हूँ। इस समय वहाँ कोई नहीं है।"

"क्या मतलब है तुम्हारा, वहाँ तो इतनी भीड़ रहती है कि लाइन में खड़ा होकर काम चलाना पड़ता है।"

"लेकिन मुझे मछलियों की दरकार नहीं है, इसलिए मैं तो दीवार की तरफ जा रही हूँ। आना हो तो तुम भी आओ।"

रास्ते में सेसो ने बच्चीस के यहाँ के जशन का फिर एक जिक्र छेड़ दिया।

"ओह बच्चीस के यहाँ," माउसेरियन ऊँची आवाज में बोली, "तुम्हें पिछले डिनर की याद है ट्राइफेरा, आड्रसिस के बारे में वहाँ क्या-क्या कहा गया।"

"कृपा करके उसे दोहराने की जरूरत नही है। जानती हो, सेसो उसकी मित्र है।'

माउसेरियन ने अपने होठ काट लिए, लेकिन सेसो फिर भी बेचैन हो गई थी।

"क्या, क्या कहते थे वह लोग ?"

"ओह, बिलकुल अनर्गल बातें।"

'लोग चाहे जो भी बातें करें," सेसो ने कहा, "लेकिन उसका मूल्य हम तीनो को मिलाकर भी अधिक है। जिस दिन भी वह बाहर निकल आई, तो मैं अपने अनेक ऐसे प्रेमियो को जानती हूँ जो कभी भी हमारे पास लौटकर नही आएँगे।"

"ओह, ओह !"

"ठीक है, मैं उसके कहने से न जाने कितनी गल्तियाँ कर सकती हूँ। मेरा विश्वास करो, उसके समान सुन्दर यहाँ और कोई भी नही है।"

बातें करती-करती तीनो लडकियाँ सिरैमिक दीवार के निकट आ गई थी। उस सफेद भित्ति पर काली स्याही में एक के नीचे दूसरा नाम लिखा हुआ था। अगर कोई युवक किसी सुन्दरी को प्राप्त करना चाहता तो वह उसका नाम और प्रस्तावित उपहार का नाम उस दीवार पर लिख देता था। और अगर वह व्यक्ति और वह उपहार लडकी को पसन्द होता तो वह उस दीवार के साथ उस स्थान पर खडी हो जाती, जब तक कि उसका लेखक आ न पहुँचा होता।

"देखो सेसो," ट्राइफेरा ने हँसते हुए कहा, "किसी मसखरे ने उधर क्या लिख छोडा है।" और उन्होने बडे बडे अक्षरो में लिखे शब्दो को पढा

बच्चीस

थेरसोटीज

दो अबोली

"औरतों का इस प्रकार उपहास किया जाना निषिद्ध होना चाहिए। अगर मेरे लिए यह लिखा जाता तो मैं तो इसकी छान-बीन करती !"

लेकिन कुछ दूर चलकर एक अधिक गम्भीर लेख के नीचे सेसो रुक गई।

सेसो आव बीडोज

टाइमन लियाज का पुत्र

एक सोना

वह थोड़ी थोड़ी पीली पड गई।

"मैं यहाँ ठहरती हूँ," उसने कहा।

और वह रास्ता चलने वालों की दृष्टि में ईर्ष्या की भावना को जन्म देती हुई दीवार से पीठ सटाकर खडी हो गई।

कुछ कदम चलकर माउसेरियन को भी अपनी चाह मिल गई। उदगार यद्यपि स्वीकार करने योग्य था पर स्पृहणीय नहीं था। केवल क्राइसेस चौराहे पर लौटकर पहुँची।

चूंकि समय बहुत हो चुका था इसलिए भीड इतनी खचाखच नहीं थी, लेकिन फिर भी तीन गायक गा रहे थे और उनका अलगोजा बज रहा था। क्राइसेस ने एक आदमी को देखा, जो कि कोई परदेसी प्रतीत होता था, और उसके कन्धों को छूकर कहा, "बाबा जी, मैं शर्त लगाकर कह सकती हूँ कि आप अलेक्जेण्ड्रियन नहीं हैं।"

"ठीक कहा बेटी," उस भले आदमी ने उत्तर दिया, "तुमने ठीक-ठीक अनुमान लगा लिया है। क्योंकि इस नगर और यहाँ के लोगों को अचरज की निगाह से मुझे देखता पाकर तुमने यह अनुमान लगा लिया है।"

"आप बूबास्टिस से पधारे हैं ?"

"नहीं, कर्दाना से। मैं यहाँ अपना अनाज बेचने आया था और यहाँ से पास की मिस्तर लेकर लौटूंगा। देवताओं को धन्यवाद देना चाहिए कि अब की फसल बहुत अच्छी रही।"

ट्राइफेरा के मन में इस सौदागर के प्रति अकस्मात् दिलचस्पी पैदा हो गई।

"मेरी बच्ची," बूढे ने विनम्रतापूर्वक कहा, "तुम मुझे एक बहुत बडा सुख दे सकती हो। मैं कल कबीरा चला जाऊँगा, लेकिन अगर मैं किसी भी महापुरुष के दर्शन किए बिना ही लौट गया तो अपनी पत्नी और तीन लडकियो को क्या नई बात बता सकूगा, तुम तो यहां के महापुरुषो से अच्छी तरह परिचित हो न ?"

"हां, कुछ थोडो से," उसने हँसते हुए कहा।

"बहुत अच्छा, अगर वह इधर से गुजरे तो मुझे बताती जाना। मुझे विश्वास है कि पिछले दो दिनो में उन सभी महापुरुषो और राज-पुरुषो को मैंने देख अवश्य लिया होगा, किन्तु मैं जानता किसी को भी नही हूँ, यही तो असमर्थता है।"

"आपकी मनोकामना पूरी हो जाएगी। यह देखिए, उधर नाक्रेटीज़ आ रहे हैं।"

"यह नाक्रेटीज कौन हैं ?"

"यह एक दार्शनिक हैं।"

"और उनका उपदेश क्या है ?"

"कि आदमी को मौन रहना चाहिए।"

"ज्योस की सौगन्ध। इस सिद्धान्त का निर्माण करने के लिए तो किसी बडी प्रतिभा की जरूरत नही थी। और इस दार्शनिक के दर्शन करके मुझे लेशमात्र भी हर्ष नही हुआ।"

"वह फ्रेसीलास हैं ?"

"यह फ्रेमीलास कौन हैं ?"

"यह एक गावदू हैं।"

"तो फिर तुमने उसे गुजर क्यो न जाने दिया।"

"क्यो कि लोगो का विचार है कि वह भी महान् हैं। ये हर बात बडी मस्ती से कहते हैं। जिससे लोगो को भ्रम हो जाता है कि उनकी

मूना में भी कोई खास रहस्य अन्तर्निहित है और उनकी तुच्छताओं में भी कोई विशिष्टता है। इनके दोनों हाथों मे लड्डू हैं। दुनिया ने इनके द्वारा अपना छला जाना जैसे स्वीकार कर लिया है।"

"मेरे लिए यह विषय कुछ अधिक दुरूह है। मेरी समझ मे तुम्हारी बातें अच्छी तरह आती नहीं हैं। इसके अलावा इन फेमीलास महोदय के चेहरे पर कुछ पाखण्ड की झलक भी मुझे दिखाई देती है।"

"वह उधर फिलोमिडोज़ हैं?"

"[illegible]-विद्याविशारद?"

"नहीं एक लैटिन कवि जो ग्रीक में लिखता है।"

"ओह वह [illegible], वह तो दुश्मन है। अच्छा था, मैं उसे देखता भी नहीं।"

[illegible] भीड़ मे एक भारी आन्दोलन हुआ और अनेक [illegible] ही नाम को उच्चारण करती सुन पड़ती थी।

"[illegible] डिमिट्रियोस [illegible]"

[illegible] पर चढ़ गई और सौदागर से कहने लगी,

"[illegible] वह डिमिट्रियोस आया। तुम किसी महापुरुष [illegible] न?"

"[illegible], [illegible] या प्रेमी? क्या यह मुमकिन है?"

"[illegible] अच्छा था। वह तो कभी बाहर निकलता ही नहीं। [illegible] में है [illegible] आज पहली बार चौपाटी पर आते [illegible] है।

"[illegible] है वह?"

"वह उधर, [illegible] को आते हुए देख रहा है।"

"[illegible] वहाँ [illegible] दो आदमी झुके [illegible] हैं।"

"[illegible] पहने हुए है।"

"मैं उसे [illegible] नहीं पाता। उसने हमारी तरफ पीठ की हुई है न।"

"[illegible] मालूम है कि वह एक [illegible] महान् मूर्तिकार है, जिसके

सामने सम्राज्ञी ने अपने आपको अफ्रोडाइटी (सौन्दर्य की ग्रीक देवी) की मूर्ति बनाने के लिए माडेल के रूप में पेश कर दिया है।"

"लोग कहते हैं कि वह सम्राज्ञी का प्रेमास्पद है, वह मिस्र का स्वामी है।"

"वह अपोलो* की तरह सुन्दर है।"

"आह, वह लौट रहा है! मुझे प्रसन्नता है कि आज मैं यहाँ हूँ, मैं घर जाकर कह सकूंगा कि मैंने उसे देखा है। मैंने उसके बारे में अनेक कहानियाँ सुनी हैं। मालूम होता है कि आज तक कोई भी नारी उसके सम्मुख समर्पण करने से अपने को रोक नही सकी है। उसने जीवन में अनेक खेल खेले हैं। क्या तुम यह नही जानती? यह किस प्रकार हुआ कि सम्राज्ञी को आज तक उसकी सूचना ही नही दी गई?"

"सम्राज्ञी इन सब चीजो को हमारी तरह ही सब कुछ जानती हैं। लेकिन वह उसे इतना प्यार करती हैं कि उन बातो को जबान पर लाने का साहस ही उनमें नही है। उन्हें भय है कि कही वह नाराज होकर अपने स्वामी फेरीक्रेटस के पास न चला जाए। वह सम्राज्ञी के समान ही शक्तिशाली भी है। फिर बात तो यह है कि सम्राज्ञी को ही उसकी चाह अधिक है!"

"वह बहुत सुखी मालूम नही पडता। उसके व्यक्तित्व मे इतना विषाद क्यों है? मुझे लगता है कि अगर उसके स्थान पर मैं होता तो अपने को एक सुखी आदमी समझता। मेरी तो हार्दिक कामना है कि मैं डिमिट्रियोस बन सकता। चाहे केवल एक साँझ के लिए ही।"

सूर्य अस्त हो चुका था। वह नारी उस पुरुष की ओर देख रही थी, जो समस्त नारी-वर्ग का स्वप्न बन चुका था। वह इस यथार्थ से अवगत नही था कि उसकी उपस्थिति ने वातावरण में क्या हलचल पैदा कर दी है और वह जगले के ऊपर झुका हुआ था और अलगोजा

* अपोलो—यूनानी सूर्यदेव और पौरुषेय सौंदर्य का प्रतीक।

बजाने वालो के स्वर को सुन रहा था।

उन छोटे गायकों ने एक अलाप और लिया और तब उन्होंने अपने अलगोजे आहिस्ता से अपनी पीठो पर डाल लिए। गायिका ने दूसरे दो की गर्दनो में बाहें डाल ली और वे नगर की ओर चल खड़े हुए।

ज्योंही अधकार का अविष्कार हुआ, दूसरी स्त्रियां छोटे-छोटे दल बनाकर पुन रगस्थल पर प्रकट होने लगी। उनके पीछे ही अलेक्जेण्ड्रिया के लोग थे लेकिन वह सभी लोग गुजरते हुए पीठ फेरकर डिमिट्रियोस की ओर देखते जाते थे। अन्तिम महिला जो उधर से गुजरी, उसने अपना एक पीला फूल उसकी ओर फेंका और हँसती रही। समस्त खाड़ी के अञ्चल पर एक खामोशी छा गई।

अध्याय तीन

डिमिट्रियोस

उन तीन गायको के चले जाने के वाद डिमिट्रियोस इस प्लाजा पर कोहनी के वल झुका हुआ अकेला ही खडा रह गया था। वह सागर की मर्म ध्वनि, जलपोतो की चर्रमर्र सुन रहा था और तारो की छाया में वायु को वहते देख रहा था। चांद पर वादल की एक हल्की टुकडी आ गई थी। आकाश में भरा प्रकाश कुछ क्षीण हो चुका था लेकिन शहर में प्रकाश की चकाचौंध पैदा हो गई थी।

वह युवा पुरुष अपने चारो ओर देख रहा था। उन वीणावादको के कुछ पद-चिह्न अभी भी वहां की धूल पर वने हुए थे। उसने उनके चेहरे स्मरण करने की कोशिश की, उनमें दो एफीसियन थी। उनमें सवसे वडी उसे सुन्दर दिखाई दी थी लेकिन सवसे छोटी मे कोई भी आकर्षण नही था। उसे वदसूरती से चिढ पैदा होती थी इसलिए उसने उसका विचार छोड दिया।

उसके कदमो के पास हाथीदात की कोई चीज पडी थी। उसने उसे उठा लिया। वह एक लिखने की तख्ती थी और उसमें—धूपघडी का हत्था लटका हुआ था। यह वहुत अधिक प्रयुक्त हो चुकी थी लेकिन इतनी वार अक्षर उसपर लिखे जा चुके थे और घिस चुके थे कि इस वार उस तख्ती में अन्दर तक प्रवेश कर गए थे।

उसने केवल तीन शब्द ही अन्दर लिखे हुए देखे

मिर्टिस रोडोक्लिया को प्रेम करती है

उसने अपने आपने प्रश्न किया कि उन दो औरतो में से वह

तम्नी निगकी होगी। या कोई और औरत किसी की प्रेमास्पद है और इक़ीमोज में छूट गई है। तब उसने सोचा कि वह लपककर जाए और उन गायिकाओं को उनका वह उपहार दे दे जो कि उनके शायद दिवंगत प्रेमी का दिया हुआ उपहार हो। लेकिन बिना अधिक झंझट मे पड़े वह उनका पता नहीं लगा सकता था, क्योंकि उन लोगो में उसकी दिलचस्पी क्रम से घटती जा रही थी, इसलिए उसने उधर से मुंह फेर लिया और उस छोटी-सी वस्तु को समुद्र में फेंक दिया। वह तेजी के साथ जाकर गिरी और किसी सफेद पक्षी की तरह सतह पर फिसलती चली गई। उसने दूरस्थ काले पानी मे पैदा होने वाली छपाक को सुना। उस आवाज को सुनकर उसे अनुभव हुआ कि उसके चारो ओर कितनी खामोशी है।

अपनी पीठ ठण्डे जंगले पर टिकाते हुए उसने अपने मस्तिष्क मे हर एक विचार को दूर करने का प्रयत्न किया और अपने चारो तरफ देखना शुरू कर दिया।

वह अपनी जिन्दगी से भयभीत था। जिस समय चारो तरफ की दुनिया का कारबार बन्द हो जाता तो वह अपने निवास-स्थान से निकलता था और जिस समय पौ फटती और प्रातःकाल मछियारे शिकार के लिए निकलते और रसोई के लिए माली सब्जियां लादकर शहर को चल पड़ते तो वह लौट आता था। शहर की केवल छाया और उसके मन्द प्रकाश की आकृति को देखने का उसका शौक इतना बढ़ गया था कि महीनों तक उसने दोपहर के समय सूर्य के दर्शन ही नहीं किए थे।

वह थक चुका था परन्तु सम्राज्ञी पर अभी जोर सवार था। उसके मस्तिष्क में आज से तीन वर्ष पहले के उस आह्लाद की याद भी भूली नहीं थी, जब कि सम्राज्ञी ने उसकी प्रतिभा से नहीं वरन् उसके सौंदर्य से अभिभूत होकर उसको निमन्त्रित करने की आज्ञा दी थी और राजमहल के मध्य द्वार पर चांदी की तुरहियों के घोष से उसका स्वागत किया था।

इस द्वार को स्मरण करके कभी-कभी उसकी स्मृति में ऐसे उपहारो की याद ताजा हो जाती थी जो कि अपने बहुत अधिक माधुर्य के कारण आत्मा में इतना गहरा पैठ जाती है कि उसे सहन नही किया जा सकता। सम्राज्ञी ने अपने निजी कक्ष में उसका स्वागत किया था। इस कमरे में अत्यन्त मुलायम और चापहीन गद्दे और बिछावन बिछे हुए थे। वह अपने वाम पार्श्व से लेटी हुई थी और हरित वर्ण सिल्क में उसके केशो की बैंगनी प्रतिछवि पड रही थी। उसकी सुकुमार देह बहुत शानदार कशीदा की गई पोशाक से आवेष्टित थी।

डिमिट्रियोस ने प्रतिष्ठापूर्वक कोर्निस करते हुए सम्राज्ञी बेनिस का छोटा-सा नग्न पैर अपने हाथो में ले लिया था जैसे कि वह चुम्बन करने योग्य कोई अत्यन्त मूल्यवान और मधुर वस्तु हो। तब वह उठी थी, एक सुन्दर गुलाब की तरह जो एक माडेल की तरह काम करती है। उसने अपनी पोशाक उतार दी थी, अपने बाजूबन्द और ककण, अपने अगूठो के छल्ले भी और वह अपने दोनो कन्धो के सामने हाथो को चौडा कर खडी थी। मूंगे-मोती के उसके आभूषण उसके कपोलो के चारो ओर सुशोभित हो रहे थे।

वह सीरिया की एक राजकुमारी की पुत्री थी और एस्टार्टी के वशज देवताओ की कुल-परम्परा से थी, जिसे ग्रीक लोग अफ्रोडाइटी पुकारते हैं। डिमिट्रियोस इस इतिहास से परिचित था, और सम्राज्ञी को अपनी महान् कुल परम्परा पर बडा गौरव भी था, इसलिए उस समय उसने बिना किसी सौजन्य के यह कहा था, "मैं एस्टार्टी हूँ। सगमरमर और अपनी छेनी उठाओ और मुझे मिस्र के लोगो के सामने प्रस्तुत करो। मैं चाहती हूँ कि मेरी मूर्ति की उपासना की जाए।"

डिमिट्रियोस गहरी दृष्टि से उसे देखता भर रह गया था। और आश्चर्य के साथ अनुमान लगाता रहा था कि कौन-सी सरल और अभिनय-स्फूर्ति उसे आन्दोलित कर रही थी। उसने कहा था, "और मैं आपकी अभ्यर्थना करता हूँ।"

सम्राज्ञी ने इस उक्ति पर आक्रोश नहीं किया था, वरन् पीछे हटते हुए कहा था, "क्या तुम अपने को एडोनिस समझते हो कि देवी के स्पर्श का अधिकार तुम्हें हो जाए ?"

उसने उत्तर दिया था, "हाँ"

उसने भी गहरी नज़र से उसकी ओर देखा था और एक सरल मुस्कान के साथ कहा था, "तुम ठीक कहते हो।"

यही कारण था कि वह निराश्रय हो गया था, और उसके सभी मित्र उससे छूट गए थे लेकिन सभी औरतें उसके लिए प्राण देती थीं।

जिस समय वह राजमहल के किसी हाल से गुजरता था तो दासियाँ काम करती हुई रुक जाती थीं, राज-महिषियाँ खामोश हो जातीं, अजनबी लोग उसका स्वर सुनने के लिए बेचैन रहते क्योंकि उसके स्वर में दूसरे का मन हरण करने की अद्भुत शक्ति थी। अगर वह सम्राज्ञी के पास चला जाता तो वहाँ भी कोई न कोई बहाना बनाकर लोग उसकी प्रशंसा करने पहुँच ही जाते थे। अगर वह नगर के राजपथों से गुज़रता तो उसकी पोशाक की तहों में क्रोध से भरे अनेक पुर्ज़ अटके रहते थे और वह उन्हें सदैव ही बिना पढ़े अपने पैरों के नीचे कुचल डालने का अभ्यस्त था क्योंकि वह जानता था कि उनमें क्या होता था। जिस समय उसने अपनी कलाकृति समाप्त कर ली थी और उसे अफ़्रो-डाइटी के मन्दिर में स्थापित कर दिया था, तो अनेक रमणियाँ अपने इस जीवित आराध्यदेव के नाम पर पुष्पांजलि अर्पित करने के लिए दिन-रात उसकी पत्नी थीं।

शीघ्र ही उसका स्थान अनेक उपहारों से भर उठा, जिन्हें प्रथम तो वह उदासीनतापूर्वक स्वीकार कर लेता था किन्तु बाद में जब उनके उद्देश्य से वह अवगत हो गया था तो उसने उन्हें अस्वीकार करना आरम्भ कर दिया था। यहाँ तक कि उसकी गुलाम भी उससे प्रेम-निवेदन करने का साहस कर लेती थी। वह उन पर कोड़े बरसाता और

उन्हे बिकवा देता। तब उसके पुरुष गुलाम घूंस लेकर नई-नई स्त्रियो के लिए द्वार खोल देते। उसके प्रसाधन-उपकरणो और शृंगार मेज पर से अनेक चीजे उठनी शुरू हो गई थी। नगर की अनेक स्त्रियो के पास उसकी सण्डलें और गर्डल थी, कोई प्याला जिसमें वह मदिरा पी चुका होता था, यहाँ तक कि उन फलो के डठल या छोडे गए गूदे को भी वह उठा ले जाती थी। अगर भ्रमण को जाते समय उसका कोई फूल गिर जाता तो वह एक निमिष में ही उठा लिया जाता। उसके पैरो से स्पर्श होने वाली धूलि को भी बडी भावना से सहेज कर रखने वाली आत्माएँ उस नगर में थी।

यह एक हकीकत थी कि इस अवरुद्ध जीवन में उसकी समस्त भावुकता नष्ट होती जा रही थी और वह यौवन के उस सन्धि-स्थान पर पहुँच चुका था जहाँ पहुँचकर आदमी के लिए यह निर्णय करना आवश्यक हो जाता है कि वह आत्मा और इन्द्रियो के व्यापार-क्षेत्र को एक जगह न मिला दे। अफ्रोडाइटी-एस्टार्टी की वह मूर्ति उसके इस नैतिक मत-परिवर्तन का पावन प्रयोजन बन चुकी थी। सम्राज्ञी में जितना सौंदर्य था, और उसकी देह की रेखाओ के चारो ओर जिस कल्पित सौंदर्य का आरोप किया जाना सम्भव था, वह सभी डिमिट्रियोस ने सगमरमर और छेनी के द्वारा उस मूर्ति में आरोपित कर दिया था और उसने यह कल्पना कर ली थी कि दुनिया की कोई रमणी सुन्दरता में उसकी कभी समता नही कर सकेगी। अब वह मूर्ति उसकी आकाक्षा की पात्र बन चुकी थी। इसके बाद उसने इस मूर्ति के सिवा किसी भी अन्य की अभ्यर्थना करनी बन्द कर दी थी। उसने देह से देवत्व की भावना को बिलकुल विलग कर दिया था।

जब वह सम्राज्ञी को देखता तो उसको लगता कि उसके आकर्षण के वह समस्त उपकरण विच्छिन्न हो गए हैं, वह इस दूसरी हस्ती से बिल्कुल विभिन्न थी और फिर भी बहुत कुछ सामञ्जस्य रखती थी। लगता था कि जैसे किसी प्रशसित सुन्दरी का स्थान किसी अपरिचित स्त्री ने सभाल

लिया हो। उसके बाजू हल्के थे, उसके नितम्ब संकुचित हो गए थे—उसकी अपेक्षा जो उसके लिए अब अधिक यथार्थ बन चुकी थी। अन्त में वह सम्राज्ञी से तंग आ गया था।

उसके आराधकों को यह भली भाँति विदित था और हालांकि वह अब भी नित्यप्रति सम्राज्ञी की सेवा में उपस्थित होता था किन्तु वह अब वेनिस को प्रेम नहीं कर पाता था। उसके चारों ओर उत्कण्ठा उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही थी। उसने इस परिवर्तन को लक्ष्य नहीं किया था। वास्तव में उसे बिलकुल दूसरी तरह के परिवर्तन की आवश्यकता थी।

ऐसा बहुत कम देखा गया है कि दो प्रेयसियों से प्रेम करते हुए समय-समय पर ऐसे अवसर न आते हों कि आदमी पर उसकी विकृत वासना उभर न आई हो और उसने उसे परितुष्ट न किया हो। मिद्रिगोस ने अपने को इसी भावना के आसरे छोड़ दिया था। जिस समय राजदरबार में उपस्थित होने की आवश्यकता उसे बहुत अधिक अखरने लगती, तो वह मन्दिर के चारों ओर रहने वाली पवित्र नर्तकियों में पहुँच जाता। वहाँ की ये स्त्रियाँ उसे बिलकुल ही नहीं जानती थीं। वह न बोलती थीं और न उनकी आँखों में आँसू होते थे। और वह उसमें अपनी काम पीपासा से दुर्बलता पैदा न करती। इस सुन्दर और मौन रमणियों से उसका जो वार्तालाप होता वह सीधा-सादा और ओजहीन होता। उस दिन के आगन्तुक लोग, आने वाले कल का सम्भावित मौसम, घास और गाँव के मैदान पर बातचीत, यही कुछ मधुर वार्तालाप के विषय होते थे। वह मूर्तिकला पर उसके सिद्धान्तों की व्याख्या करने की इच्छा प्रकट नहीं करती थी। और स्टाफा की परिनीत पर अपना अभिमत भी नहीं देती थी। अगर वह आगन्तुक की प्रशंसा में उसकी देह-दृष्टि की सराहना करती थी तो उसे विश्वसनीय समझा जा सकता था।

उनसे विदा लेने के बाद वह मन्दिर की सीढ़ियों पर चढ़कर अफ्रो-डाइटी की मूर्ति के निकट पहुँच जाता था और अनेक कल्पनाओं में खो जाता था।

लाल पत्थर की पीठिका पर अनेक बेशकीमती आभूषणो से युक्त देवी की वह प्रतिमा जीवित प्रतीत होती थी। वह सर्वथा नग्न थी और उस पर नारी-सुलभ मानवीय अवयवो की छटा अंकित करने के लिए रगो का भी प्रयोग किया गया था। उसके एक हाथ में प्रतीक-रूप मुकुर था और दूसरे से वह अपनी छवि का परिष्कार करती प्रतीत होती थी। उसकी ग्रीवा में मुक्ताओ से बना एक सतलडा हार था। एक मुक्ता, जो कि दूसरो की अपेक्षा अधिक बडा था, रजतोज्ज्वल और लम्बमान था और उसके वक्षस्थल पर इस प्रकार शोभित होता था जैसे दो बादलो के बीच दूज का चन्द्रमा।

डिमिट्रियोस उसके विषय में अनेक कोमल कल्पनाएँ करता रहा। सर्वसाधारण की तरह वह भी यही विश्वास करना चाहता था कि उस प्रतिमा के कठ में वास्तव में वही मोती थे जो कि एन्डियोमेनी की सीपी से निकले थे।

"ओ अलौकिक भगिनी' उसने कहा, 'ओ पुष्पान्वित, ओ विभिन्न बाह्याकृति! अब तुम वह एशियाटिक नही हो जिसे मैंने तुम्हारा अयोग्य माडल बनाया है। तुम उसका चिरन्तन स्वरूप हो, उस एस्टार्टी की कुलमाता हो, जिससे उसके वश की उत्पत्ति हुई। तुम्हारा निवास उसके उज्ज्वल नेत्रो में था, उसके गुलाबी होठो में था और उसके उन्नत उरोजो में तेरी ही सास की धडकन थी, अपने जन्म से पूर्व और जिस वस्तु को देखकर एक गडरिये की लडकी आह्लादित हो सकती थी, उसे देखकर तुम भी प्रफुल्लित होती थी! देवि, तुम समग्र देवताओ और मानवो की जननी हो, विश्व की सुख और दुख की प्रतीक। लेकिन मैंने तुम्हे देख लिया है, उपलब्ध कर लिया है। ओ अप्रतिम साइथीरिया, मैंने पृथ्वी पर बसने वालो के लिए तुम्हारा उद्घाटन कर दिया है! यह तुम्हारी प्रतिमा नही है, यह तुम स्वय हो, जिसके हाथ में मैंने मुकुर दे दिया है और मुक्ताओ से अलकृत करके मैंने यह उसी प्रकार स्थापित किया है। आकाश की रक्तिमा और सागर की फेनिल मुस्कान

में जन्म लेने के उपरान्त ओसकणों से सिक्त ऊषा ने नील देवताओं के परिचारकों सहित तुझे साइप्रोस के तट पर भेज दिया था ।"

सागर-कूल पर आने के पूर्व उसने इन्हीं शब्दों में उस प्रतिमा की अभ्यर्थना की थी । भीड धीरे-धीरे खिसक रही थी और वह गायिकाओं के संगीत की करुण तान को सुन रहा था । लेकिन इस संध्या को मन्दिर में जाना उसने स्थगित कर दिया था क्योंकि एक कुंज में अर्धनग्न एक युगल को ऐसी स्थिति में देखा था कि घृणा से उसका मन खराब हो चुका था और उसका हृदय विद्रोह कर उठा था ।

शनै शनै रात्रि की कोमलता ने उस पर अपना प्रभाव डालना प्रारम्भ कर दिया था । उसने वायु के प्रवाह की ओर मुंह फेर लिया जो कि [illegible] के गुलाबों की सुवास अपने साथ बहाकर ला रहा था ।

उसके दिमाग में अनेक स्त्रियों की मनोरम आकृतियाँ तैर रही थीं । उससे प्रार्थना की गई थी कि वह मन्दिर के लिए तीन देवदासियों की [illegible] और [illegible] किन्तु उस विचार के विरुद्ध उसकी भावनाओं ने [illegible] किया था और उसने यह तै किया था कि उसी पीठिका पर [illegible] अंकित करेगा । दो देवदासी वस्त्र धारण किए [illegible] और [illegible] प्रार्थना [illegible] अर्धनिमीलित नेत्रों से [illegible] और दूसरी उसकी [illegible] होगी । तीसरी [illegible] उन युवतियों के पीछे होगी और [illegible] हुए बालू [illegible] फैली हुई केशराशि के [illegible] में [illegible] ।

की एक प्रतिमा बनाए जो सागर के दुर्धर्ष दैत्य का सामना करती हुई हो और बूरिन की पहाड़ी के चारो ओर सुदृढ अवयवो सहित चार विगासस[1] की मूर्तियां स्थापित करे और उसके मन मे यह भी उठा था कि टिटान के आक्रमण के समय अजीब प्रकार से जेग्रियस भयभीत हुआ था, उसकी भी एक मूर्ति का निर्माण कर दे। सौदर्य से वह कितना अभिभूत था! प्रेम से वह कितनी विकलता से अपने को तोड लेने के लिए आकुल था! और वह मानव के मासल स्वरूप से देवत्व की भावना को किस प्रकार अछूता रखने के लिए आतुर हो उठता था! और आज वह आखिर कितना मुक्त अनुभव करता था।

अब उसने खाडी की ओर अपना रुख बदल लिया था और दूर स्थान पर एक घुमक्कड नारी के चमकदार पीत परिधान की ओर उसका ध्यान आकर्षित हो चुका था।

---

१ विगासस—कवि-कल्पना की उडान का प्रतीक, एक उडन घोड़ा जिसे ग्रीक देवी मिनर्वा ने पाला था।

अध्याय चार

आगन्तुक

वह अपनी ग्रीवा को एक ओर झुकाए उस निर्जन सागर-तट पर उस स्थान पर आई थी, जहाँ चन्द्रमा का प्रकाश फैला हुआ था। एक [illegible] नीली नयन [illegible] उसके सम्मुख थिरकती जाती थी।

[illegible] उसकी गति का अवलोकन करता रहा।

उसकी [illegible] की बंकिम रेखाएँ महीन वस्त्रों से झाँकती नजर [illegible]। उसकी [illegible] घाघरे से बाहर निकली हुई थी और [illegible] इस प्रकार [illegible] थी कि पीछे लहराने वाला वस्त्र-छोर [illegible]। [illegible] उसके साथियों को देखकर अनुमान [illegible]। उसका प्रमाण स्वीकार [illegible] उपचार [illegible] था। इसलिए वह [illegible] दूसरी ओर [illegible]।

एकान्त, स्वच्छन्द वातावरण और उस खामोशी की हल्की-सी थिरकन को अनुभव करने आई थी।

अपनी जमी हुई निगाह को लेशमात्र भी विचलित किए बिना ही वह उधर ताकता आश्चर्य में डूब गया था।

कुछ ही दूर पर एक पीली परछाईं की तरह, उदासिन-सी वह जा रही थी, और एक काली छाया उसके सामने थिरकती हुई जा रही थी। हर कदम पर पथ की धूल में उसके पदत्राण की कोमल आवाज सुन पडती थी। वह फेरोज के द्वीप की ओर बढ रही थी और चट्टान पर चढने लगी थी।

अकस्मात्, जैसे कि वह उस अज्ञात महिला को कितने ही दिन से प्रेम करता रहा हो, ऐसे ही सहसा उसके पीछे दौडा लेकिन फिर वह रुक गया, पीछे लौट पडा, अपने आचरण पर अत्यन्त क्षुब्ध हुआ। उसने चौपाटी को छोड देने का प्रयत्न किया, लेकिन आज तक उसने अपनी इच्छाशक्ति का प्रयोग अपनी विलास-भावना की पूर्ति के अतिरिक्त किया ही नहीं था इसलिए, जिस क्षण उसे अपने चरित्र को हीनता से उबारना था और अपने को अनुशासन के अकुश के अनुकूल ढालना था, उसने एक कादर्य-भाव अपने अन्दर अनुभव किया और वह मेख की तरह उसी जगह जडा रह गया।

चूंकि वह उसकी बात को अपने मस्तिष्क में से निकाल नहीं सका था, इसलिए उसने इस आकर्षण के लिए नए कारण खोजने प्रारम्भ कर दिये थे। उसने कल्पना की कि उसके गुजरने के अन्दाज में जो खूबसूरती है, उसी का आकलन उसकी सौंदर्यप्रिय प्रतिभा करती रही है। और उसने अपने मन में एक प्रश्न पैदा किया कि मन्दिर में देव-दासी की प्रतिमा बनाने के लिए जो योजना उसके सामने रखी गई है, उसीको पूरा करने के लिए वह बहुत ही उपयुक्त माडल का काम कर सकती है—वह देवदासी जो चँवर डुलाने वाली का काम करेगी। अकस्मात् उसके सारे विचार बिखर गए और आतुरता के साथ इस

गौर वनिता को लेकर उसके मस्तिष्क मे प्रश्नो का तूफान खड़ा हो गया था।

रात्रि के इस प्रहर में इस द्वीप पर वह क्या करने आई है, क्यों और किसके लिए वह इतनी देर में इधर आई है, उसने उसे चीन्हने और उसकी अभ्यर्थना करने का प्रयत्न क्यों नहीं किया? उसने उसे देख लिया था, निश्चय ही जिस समय वह चौपाटी के दूसरी ओर गया था, उसने उसे देख लिया था। आखिर उसकी अभ्यर्थना किए बिना वह अपने रास्ते पर किस तरह बढ़ती चली गई। अफवाह थी कि कुछ औरतें हैं जो [illegible] शीतकाल में फेरोज से सागर-स्नान करने के लिए आती हैं। सागर उस स्थान पर बहुत गहरा था। इसके अतिरिक्त [illegible] कि एक औरत केवल स्नान करने के [illegible] तो फिर क्या चीज [illegible] से उसे यहाँ खींच लाई, शायद किसी से अभिसार [illegible]? किसी [illegible] के साथ उस सागर की तरंगों द्वारा [illegible]

आइना, कंघा और कण्ठहार

उसके सौंदर्य में कुछ विशेषता थी। उसकी केशराशि दो स्वर्ण-पुंजो के समान प्रतीत होती लेकिन वह इतनी घनी थी कि उसका भाल, अपने पर पड़ने वाली घनी छाया की दो लहरो से भाराक्रान्त-सा लगता था। इन लहरो ने उसके दोनो कानो को भी आत्मसात कर लिया था और उसकी ग्रीवा के पृष्ठ भाग पर वह केशराशि सात खम खाकर गिर रही थी। उसकी कोमल नासिका दो सुघड रन्ध्रो से सुशोभित थी जो कि कभी उसके गोल, चपल और अनुरजित ओष्ट-कोणो पर हलकी-सी थिरकन भी पैदा कर देते थे। उसके हर कदम पर उसकी लोचदार देह लहर की भांति आन्दोलित होती थी और उसके गोल और प्रभावशाली कटि-प्रदेश के नीचे सुन्दर नितम्बो का नियमन उसमें एक नए जीवन का सचार करता था।

जिस समय वह इस युवक से केवल दस कदम पर रह गई, उसने अपनी निगाह उसकी ओर उठाई। डिमिट्रियोस एकबारगी काप उठा। वह असाधारण आंखे थी, सुनील, लेकिन गहरी और साथ ही उज्ज्वल भीगी और अवसादपूर्ण जैसे आँसुओ और आक्रोश की भावना से युक्त, और उसकी पलको के भार से जैसे बिलकुल ढकी जा रही थी। वह आंखें इस तरह देखती थी—जैसे कोई अप्सरा गाती हो। इन नेत्रो के प्रकाश में से जो भी गुजरेगा—जैसे मत्रमुग्ध होकर रह जाएगा! वह अपनी इस अद्भुत शक्ति से अवगत थी और चातुरी से उसका प्रयोग करती थी। लेकिन वह उदासीनता पर अधिक भरोसा रखती थी—उस

ग्रौर मुख-शृगार मे वेश्याग्रो का ग्रनुकरण करना प्रारम्भ कर दिया है। सम्भव है, वह कोई ग्रत्यन्त प्रतिष्ठित महिला हो, ग्रौर तब उसने सहसा कहा, "ग्रपने पति के पास ?"

उसने ग्रपने हाथ जगले पर टिकाकर हसना ग्रारम्भ कर दिया। डिमिट्रियोस ने ग्रपने दांत काट लिए ग्रौर ग्रत्यन्त हीन भाव से भरते हुए कहा, "उसे यहा खोजने का प्रयत्न करना व्यर्थ है। ग्रापने देर से प्रयत्न शुरू किया है। यहा इस समय कोई नही है।"

"किसने ग्रापसे कहा कि मैं किसी को खोजने ग्राई हूँ। मैं तो ग्रकेली घूम रही हूँ ग्रौर किसी की भी तलाश में नहीं हूँ।"

"तो फिर ग्राप कहां से ग्रा रही हैं। यह तो स्पष्ट है कि ग्राप इतने हीरे-जवाहरात ग्रपने लिए नही धारण किए हैं ग्रौर फिर यह रेशमी ग्रवगुण्ठन ?"

"क्या ग्राप सोचते हैं कि मै निर्वसना ही ग्रपने घर से निकल ग्राती ग्रथवा गुलामो की तरह गर्म कपडे पहन कर ग्राती ? मैं ग्रपने ग्रानन्द के लिए ही पोशाक पहनती हूँ। मुझे यह जानकर ग्रानन्द होता है—कि मैं सुन्दर हूँ। जब मै चलती हूँ तो ग्रपनी ग्रगुलियो में पहनी हुई मुद्रिकाग्रो को देखती रहती हूँ, बस।"

"ग्रापके पास तो एक ग्राइना होना चाहिए था ताकि ग्राप ग्रपनी ग्रांखो को उनमे देखती रह सकती। ये ग्रांखे—एलेक्जेण्ड्रिया में पैदा नही हो सकती। ग्राप एक यहूदी मालूम पडती हैं—क्योकि मैं सुनता हूँ कि उनकी ग्रावाज हम लोगो की ग्रावाज से ग्रधिक कोमल होती है।"

'नही, मै यहूदी नही हूँ, मैं गैलीलियन हूँ।"

"ग्राप किस प्रकार ग्रपने को पुकारती हैं, मीरियम या नौयमी ?"

'मेरा सीरियन नाम उसे तुम नही जान सकोगे। यह एक राजकीय नाम है। इधर कोई भी ग्रादमी इस तरह के नाम नही रखता। मेरी मित्र मुझे क्राइसिस पुकारती हैं। तुम भी मुझे क्राइसिस कहकर पुकार सकते हो।"

वाले ! तुमने मेरी देवी की प्रतिमा का निर्माण किया है, तुम मेरी सम्राज्ञी के प्रेमी हो और हमारे नगर के स्वामी हो। लेकिन मेरे लिए तो तुम केवल एक सुन्दर गुलाम हो, जिसने मुझे देख लिया है और जो मुझे प्यार करता है।"

वह निकट खिसक आई और उत्तेजक स्वर मे कहती गई, "मैं जानती हूँ कि तुम मुझे प्यार करते हो। ओह—बोलो मत—मैं जानती हूँ, तुम जो कहोगे। तुम किसी को प्रेम करने के अभ्यस्त नही हो, अक्सर दूसरों का प्रेम पाने के अभ्यासी हो। तुम साक्षात् कामदेव हो, अत्यन्त अभि-वाछित और आराध्य हो। तुमने एण्ट्रियोचोज को भी इकार करने वाली लीकेरा को अस्वीकार कर दिया था। डमोनासा, जिसने आजीवन कुमारी रहने की शपथ ले ली थी और जो तुम पर अधिकार कर सकती थी, अगर तुम्हारी दो लीबियन दासियाँ उसे भवन से बाहर न निकाल देती। सुनामा कैलीशियन जिस समय तुम्हारे निकट पहुँचने में असफल रही तो उसने तुम्हारे भवन के सामने ही अपने लिए एक मकान खरीद लिया और नित्यप्रात खिडकी से अपने दर्शन कराती है। तुम सोचते हो मुझे यह सब नही मालूम। ये सभी चीजें औरतो में अक्सर चर्चा का विषय बनती रहती हैं। जिस रात तुम एलेक्जेण्ड्रिया आए थे, उसी दिन लोगो ने मुझे तुम्हारे बारे में बताया था। और उस दिन से शायद एक दिन भी ऐसा न गुजरा होगा, जब कि तुम्हारा नाम मेरे सामने न लिया जाता रहा हो। मैं वह सब बातें भी जानती हूँ जिन्हें तुम भूल चुके हो। बेचारी फिलिस ने तुम्हारे द्वार पर पहुँचकर अपने को फाँसी लगा ली, क्या ऐसा नही हुआ है ! यह एक फैशन है जो कि फैलता जाता है। लीडिया ने भी फिलिस का अनुकरण किया था। मै उधर मे गुजरी थी तो मैंने देखा था। वह नीली पड चुकी थी लेकिन उसके कपोलो पर आँसू अभी सूखे नही थे। तुम जानते नही हो लीडिया कौन थी ? एक पन्द्रह साल की बालिका जिसे उसकी माँ ने पिछले महीने सामोस के कप्तान को बेच दिया था जब कि वह थेब्स नदी पर जाने से पूर्व एलेक्जेण्ड्रिया मे

गुजर रहा था। वह भी पास आई थी। मैंने उसे परामर्श दिया था। वह नितान्त अबोध थी, यहा तक कि वह डाइस खेलना भी नही जानती थी। मैं बहुधा उसे अपने ही बिस्तर पर सुला लिया करती थी। क्योंकि उसके पास सोने के लिए स्थान नही था। वह तुम्हें प्यार करती थी। काश कि तुम सुन सकते कि वह किस प्रकार तुम्हारा नाम लेकर पुकारती थी। वह तुम्हे लिखना चाहती थी। क्या तुम्हारी समझ में आता है? मैंने उसे कहा था कि कोई ऐसा काम नही करना। अपना बलिदान करो।"

डिमिट्रियोस बिना कुछ सुने उसे ताकता रहा

"ठीक है। तुम्हारे लिए सब कुछ एक मामूली-सी ही बात है। क्यो नही?" क्राइसिस ने कहना जारी रखा, "तुम उसे प्यार नही करते थे। केवल मुझे तुम प्यार करते हो। तुमने वह सुना भी नही है—जो मैंने अभी-अभी कहा है। मुझे यकीन है कि अगर पूछा जाए तो तुम एक शब्द भी नही दोहरा सकते। तुम चकित होकर यही कल्पना करने में लगे हो कि मेरी पलकें किस प्रकार की बनी हैं। और मुंह कितना सुन्दर है और मेरी केशराशि कितनी कोमल है। आह, कितने दूसरे लोग हैं जो सब यही कहते हैं और दोहराते हैं। सभी मेरे सौंदर्य का उपभोग करने के लिए लालायित रहते है, पुरुष, युवापुरुष, प्रौढ और वृद्ध पुरुष! बच्चे, स्त्रियां और किशोरियां! पिछले वर्ष मैंने दो हजार की एक भीड के मध्य नृत्य किया था। मुझे मालूम था कि तुम उन दर्शको में नही थे। क्या तुम्हें यह विश्वास है कि मैं कोई पर्दानशीन औरत हूं? आह, आखिर ऐसा क्योकर हो सकता है! स्नान के अवसर पर अनेक स्त्रियो ने मुझे देखा है, सभी पुरुषो ने मुझे देखा है। तुम—केवल तुम मुझे कभी न देख सकोगे। मैं तुम्हे इन्कार करती हूं—इन्कार करती हूं। मेरे अन्तर में क्या है—मैं क्या अनुभव करती हूं, मेरे सौंदर्य और प्रेम किसी के भी बारे में तुम्हें कभी भी कुछ मालूम न हो सकेगा। कभी नही—कभी भी नही! तुम पैशाचिक वृत्ति के आदमी हो, बेदर्द, भावहीन और कापुरुष! मेरी समझ में यह

नही आता कि हममें से कोई एक ऐसी क्यो न हुई—जो तुम दोनो को घृणा करके मृत्यु के निकट पहुँचा सकती। तुम्हे पहले और सम्राज्ञी को उसके बाद !"

डिमिट्रियोस ने उत्तर में एक भी शब्द कहे बगैर उसकी बाह पकड़ अपने अग में भर लिया। उसे क्षणभर को क्रोध आया किन्तु तत्काल वह सीधी खडी हो गई और धीमे स्वर में कहा, "आह, मुझे उसकी चिन्ता नही है, डिमिट्रियोस ! मुझे मुक्त होने दो। तुम मेरी बाह को कुचल डाल रहे हो !"

वह एक क्षण के लिए खामोश हो गए। तब डिमिट्रियोस बोला, "अब यह सब बन्द करो क्राइसिस। तुम यह भली भाति जानती हो कि मै तुम्हे चोट नही पहुँचा सकता। लेकिन मुझे अपने साथ ले चलो। तुम जो इतना गर्व कर रही हो, डिमिट्रियोस को इन्कार करना तुम्हारे लिए महगा पडेगा।"

क्राइसिस चुप रही।

उसने और भी कोमल स्वर में कहा, "आखिर तुम्हे किस चीज का भय है।"

"तुम दूसरो से प्रेम प्राप्त करने के अभ्यासी हो, क्या तुम्हें मालूम है जो नारी प्रेम न करती हो, उसे प्राप्त करने के लिए क्या करना होता है ?"

वह अत्यन्त आतुर हो उठा।

"मै सारी दुनिया का स्वर्ण तुम्हारे चरणो में अर्पित कर दूगा। यहा मिस्र में मेरी अपनी सामर्थ्य है।"

"मेरे केशो में स्वर्ण है। मै स्वर्ण से थक गई हूँ। मैं स्वर्ण नही चाहती। मै तीन चीजो की कामना करती हूँ। क्या तुम मेरे लिए वह उपलब्ध कर सकोगे ?"

डिमिट्रियोस ने अनुभव किया कि वह कोई असम्भव वस्तु मागने वाली है। उसने विकलतापूर्वक उसकी ओर देखा। लेकिन वह मुस्कराने

लगी और अत्यन्त कोमल स्वर में बोली, "मुझे एक चादी के आइने की चाह है ताकि मैं अपनी आखो से अपनी आखो की छाया देख सकू ?"

"तुम्हे वह मिलेगा। और तुम क्या मागती हो, शीघ्र बतलाओ।"

"मैं हाथीदात का नक्काशीयुक्त कघा चाहती हूँ जो कि मेरे बालो में इस प्रकार प्रतीत हो जैसे सूर्य से प्रकाशित जल के मध्य जाल।"

"तो फिर ?"

"तुम मुझे मेरा मनचाहा कर दोगे ?"

"निश्चय, बस समाप्त ?"

"मैं नीलम का एक नेकलेस चाहती हूँ जो मेरे वक्ष पर उस समय शोभित होगा जब कि मैं तुम्हारे लिए अपने देश का विवाह के अवसर पर किया जाने वाला नृत्य करूँगी।"

उसने अपनी भवे ऊपर उठाई।

"क्या इतना ही?"

"तुम मुझे मेरा नेकलेस दे सकोगे ?"

"हाँ, वही जो तुम्हें पसन्द होगा।"

उसका स्वर अत्यन्त कोमल हो गया, "वही जो मुझे पसन्द होगा। आह, यही चीज तो मैं तुमसे कहना चाहती थी। क्या तुम मुझे यह सुविधा दोगे कि मैं अपने उपहार स्वय चुन सकूँ ?"

"क्यो नही !"

"तुम सौगन्ध खाकर कहते हो ?"

"हाँ-हाँ सौगन्ध खाकर !"

"क्या सौगन्ध तुम ले रहे हो ?"

"तुम नाम कह दो।"

"अफ्रोडाइटी की सौगन्ध, जिसकी दुनिया तुमने बनाई है।"

"मैं अफ्रोडाइटी की सौगन्ध खाकर कहता हूँ। लेकिन तुम्हें इतना अविश्वास क्यो है ?"

"कुछ नही, पहले पक्का विश्वास नही था, अब हो गया।"

उसने अपना सिर उठाया, "मैंने अपने उपहार चुन लिए हैं।"

डिमिट्रियोस एक बार फिर बेचैन हो उठा, "इतने शीघ्र ?"

"हा—क्या तुम सोचते हो कि मैं कोई चांदी का आइना—जो स्मर्ना के किसी सौदागर या किसी अज्ञात वीरागना के यहा से प्राप्त कर लिया गया हो—स्वीकार कर सकती हूँ ? मैं अपनी मित्र वच्चीस का आइना चाहती हूं, जिसने पिछले सप्ताह मेरे साथ विश्वासघात किया था और एक पार्टी के अन्दर आयोजन उसने ट्राइफेरा, माउसेरियन तथा दूसरी तरुण मूर्खाओ के साथ किया था—जिसने मेरा उपहास किया था। इस आइने पर वह प्राण देती है क्योकि यह आइना वास्तव में रोडोमिस का था—जो कि यूसुफ की एक गुलाम थी और सैपो का भाई उसे यहा वापस कर लाया था। तुम जानते हो कि वह एक वहुत ही प्रतिष्ठित वेश्या है। उसका आइना बहुत सुन्दर है। लोग कहते हैं कि सैपो उसमें अपना मुंह देख चुकी है, इसलिए वह ईर्ष्यापूर्वक उसे अपने पास रखती है। उसके पास इससे अधिक मूल्यवान वस्तु दुनिया में कोई भी नही है। लेकिन मैं जानती हूँ तुम्हें कहा वह मिलेगा। एक रात जब वह पीकर अत्यन्त उन्मत हो गई थी तो उसने मुझे बताया था। वह आइना वेदी के तीसरे पत्थर के नीचे है। हर शाम जब वह दिन छिपे बाहर जाती है, तो उसे वही रख कर जाती है। कल इसी समय उसके घर पहुँच जाओ और किसी भी चीज से भी घवराना नही। उसकी दासिया भी उसके साथ ही वाहर चली जाती हैं।"

"यह निरा पागलपन है," डिमिट्रियोस चिल्लाया, "क्या तुम चाहती हो कि मैं चोरी करूँ ?"

"क्या तुम मुझे प्यार नही करते ? मैंने समझा था तुम मुझसे प्यार करते हो। और फिर क्या तुमने सौगन्ध नही ले ली है ? मैंने सोचा था कि तुमने सौगन्ध ले ली है। और अब तक यह मेरी भ्रान्ति है, तो छोडो। इस किस्से को आगे ही न वढाया जाए।"

वह यह समझ गया था कि इस प्रकार स्वेच्छापूर्वक विना सघर्ष

किए उससे दूर हटने का दिखावा करने पर भी अगर वह वस्तुत पीछे हट गया तो वह उसे बर्बाद करके ही दम लेगी। "जो कुछ तुम कहोगी, मैं करूँगा ?" उसने कहा।

"ओह, मैं जानती हूँ, तुम यह करके ही छोडोगे लेकिन तुम पहले पहल थोडा हिचकते हो। मैं यह समझ सकती हूँ, यह कोई साधारण उपहार नही। मैं किसी दार्शनिक से तो यह माँग कभी नहीं कर सकती थी, मैंने तो तुम से ही यह माँग की है। मैं भली भांति जानती हू कि तुम मुझे यह दे सकोगे।"

वह थोडी देर के लिए अपने पखे पर लगे मोर-पखों से खेलती रही और तब अकस्मात् कह उठी, "आह और मैं कघा भी कोई साधारण नही चाहती जो कि शहर के किसी सौदागर से खरीद लिया गया हो। तुमने कहा है कि मैं स्वय अपना चुनाव कर सकती हूँ—क्या नही ? तब तो ठीक है। मैं चाहती हूँ मैं चाहती हूँ, वह चित्रकारीयुक्त कघा जो कि बडे पादरी की पत्नी के बालों में लगा हुआ है। यह कघा रोडोपिस के आइने की अपेक्षा बहुत मूल्यवान है। यह कघा मिस्र की एक सम्राज्ञी का था और तभी से चला आता है। उस सम्राज्ञी का नाम भी इतना अटपटा था कि मैं उच्चारण भी नही कर पाती। इसलिए यह गजदन्ती बडा कघा पुराना है और हालांकि उस पर सुनहरा पानी चढा हुआ है लेकिन उसका असली रग पीला है। उन्होंने उस कघे पर एक ऐसी लडकी का चित्र अकित किया है जो कि एक दल-दल में फस गई है, और वहाँ उससे भी अधिक ऊँचे कमल खिले हुए हैं और वह अपने अगूठो के बल चल रही है ताकि भीग न जाए • वह दरअसल बहुत ही सुन्दर कघा है। जिस समय तुम वह कघा मुझे लाकर दोगे, मेरे मन में एक बडा सतोष भर उठेगा। जिसके पास वह आजकल है, उसके विरुद्ध मुझे यह शिकायत भी है। पिछले महीने मैंने अफ्रोडाइटी पर एक नीला परिधान चढाया था, अगले दिन देखा कि वह उस औरत के सिर पर सुशोभित है। उसने वह काम कितनी जल्दी

किया श्रौर मुझे उसकी इस हरकत पर क्रोध आ गया। लेकिन अगर उसका कघा आ गया तो मेरा मुआवजा पूरा हो जाएगा।"

"लेकिन उमे मैं पा किस तरह सकूंगा", डिमिट्रियोस ने पूछा।

"आह, यह जरा कुछ मुश्किल काम जरूर होगा। वह एक मिस्र-वासिन है, और अपने देश की रस्म के अनुसार अपने सिर पर दो सौ प्लेटे काढती है, परन्तु वर्ष में केवल एक बार। लेकिन मैं कल ही अपना कघा चाहती हूँ ऐसा करने के लिए तुम्हे उसको कत्ल करना पडेगा, पर तुम ने सौगन्ध जो ले ली है।"

उसने डिमिट्रियोस की ओर मुंह विचकाया। डिमिट्रियोस उस समय जमीन की तरफ देख रहा था। तब उसने बडी शीघ्रता के साथ इस प्रकार अपनी माग समाप्त कर दी, "मैंने अपना नेकलेस भी चुन लिया है। मैं वह सतलडा हार चाहती हूँ जाकि अफ्रोडाइटी के गले में शोभाय-मान है।"

डिमिट्रियोस चौंक उठा "आह, इस बार तुमने सीमा का उत्क्रमण कर डाला! तुम्हे इस हद तक मेरा उपहास नही करना चाहिए। कुछ भी नही तुम सुनती हो, कुछ भी नही। न आइना, न कघा और न नेकलेस, तुम्हे कुछ भी नही मिल सकेगा!"

लेकिन उसने अपने हाथ से उसका मुंह बन्द कर दिया और प्रेरक स्वर में बोली, "ऐसा मत कहो। तुम जानते हो कि तुम यह भी मुझे दोगे। मुझे इसपर पूर्ण विश्वास है। मुझे तीनो ही उपहार उपलब्ध होगे। तुम कल शाम मेरे पास आओगे और परसो शाम भी, अगर चाहो तो प्रत्येक शाम को। तुम्हारे समय पर मैं वहां रहूँगी, उसी पोशाक में जो तुम्हें बहुत पसन्द है—रगीन, और मेरे केश इस तरह गूंथे होंगे कि तुम उलझकर रह जाओगे। अगर तुम्हे कोमलता प्रिय हो तो मैं एक शिशु के समान तुम्हें दुलारूँगी। अगर तुम्हें खामोशी पसन्द होगी, तो मैं खामोश रहूँगी। जिस समय तुम गाने का सकेत करोगे, तो गाऊँगी। आह, तुम देखोगे परमप्रिय कि मुझे सभी देशो के गीत आते हैं। मुझे

ऐसे गाने भी आते हैं जिनका स्वर छोटे चश्मो के मर्म स्वर के समान कोमल होता है और ऐसे भी जिनके स्वर में मेघो का गम्भीर घोष और विजली की कडक होती है। मैं कुछ गीत इतने भोले और ताजगी पैदा करने वाले भी गा सकती हूँ जो कि एक बेटी अपनी माँ को भी सुना सकती है। और ऐसे भी जानती हूँ कि उन्हे लोग लेम्पसाकोस के अवसर पर भी गाने का साहस न कर सके। कुछ ऐसे भी मुझे याद हैं जिन्हें एलिफेन्टिस लोग भी गाने का साहस न कर सके और जिन्हे मैं भी गाऊंगी नही। जिन रातो को मुझे नृत्य करने को कहोगे, मैं दिन निकले तक नाचती रहूँगी। मैं पूरी पोशाक पहनकर ही नाचूंगी, मेरी ट्यूनिक फर्श पर फैली होगी या अवगुण्ठन डालकर या केवल एक अगरखा ही डालकर। मैं अपने सिर पर लहराती हुई वेणी में भी पुष्प गूंथ कर नाचूंगी—जोकि एक देवी की प्रतिमा के समान प्रतीत होगी। मैं जानती हूँ हाथो का बाजूओ पर किस तरह सतुलन किया जाता है, तुम देखोगे। मैं अपने अगूठो के सिरो पर भी नाचना जानती हूँ। मैं अफ्रोडाइटी के सभी नृत्य जानती हूँ—वह भी जो यूरानियां के सामने नाचे जाते हैं और एस्टार्टी के सम्मुख भी। मैं ऐसे नृत्य भी जानती हूँ, जिन्हें नाचने की लोग हिम्मत भी नही कर सकते। मैं तुम्हारे लिए सभी प्रकार के प्रेम-नृत्य करूंगी। तुम देखना तो ! सम्राज्ञी मुझसे अधिक समृद्ध है या कि दुनिया का एक भी राजमहल ऐसा नही है जिसमें मेरे विलास-कक्ष के समान साज-सज्जा हो ! तुम्हें वहां क्या मिलेगा, मैं अभी से बताऊँगी नही। उसमें कुछ इतनी सुन्दर चीजे हैं कि मैं उनकी सादृश्यता वर्णन द्वारा प्रस्तुत नही कर सकती और कुछ इतनी विरल हैं कि मेरे पास उनका वर्णन करने के लिए शब्द ही नही हैं। और फिर तुम्हें मालूम है इनमें भी सर्वोपरि वस्तु और क्या है—क्राइसिस, जिसे तुम प्यार करते हो और आज तक जानते नही हो। तुमने मेरा मुंह ही देखा है—लेकिन अभी जानते नही हो कि मैं कितनी कोमलागी हूँ। आह आह आह, अभी तुम्हे न जाने कितने आश्चर्य देखने हैं। आह,

तुम किस तरह मेरी आराधना करोगे, मेरी बाहो मे तुम कि तरह कम्पायमान हो उठोगे और मेरे प्रेम की मदिरा से तुम किस प्रकार मूर्च्छित हो उठोगे, और मेरा मुखमण्डल कितना आकर्षक होगा और मेरे चुम्बन ! "

डिमिट्रियोस ने एक मायूस निगाह उस पर डाली। वह अब भी कोमलतापूर्वक कहती रही, "क्या तुम मुझे एक चादी का आइना भी नही दे सकते—जब कि मेरे बालो मे तुम्हे स्वर्ण का एक महान उपवन प्राप्त हो जाएगा ?"

डिमिट्रियोस का मन हुआ कि उसका स्पर्श करे

वह पीछे हट गई और कहा, "कल।"

"तुम्हे तुम्हारा उपहार मिलेगा," उसने फुसफुसाया।

"और तुम मेरे लिए वह तुच्छ हाथीदात का कघा भी नही ला सकते, जब कि दो विशाल गजदन्तो के समान मेरी दोनो बाहें तुम्हारी गर्दन मे पडी रहेगी ?" उसने उसको अपने अक में लेने का प्रयत्न किया वह पीछे हट गई और कहा "कल।"

"मैं कल तुम्हे कघा ला दूंगा।" उसने बहुत धीमी आवाज में कहा।

"आह, मैं अच्छी तरह जानती थी," वारागना ने कहा, "और तुम वह मोतियो से जडा नेकलेस भी मेरे लिए अवश्य लाओगे—जोकि अफ्रोडाइटी के गले मे पडा है। और उसके बदले में तुम्हारे मुख पर इतने चुम्बन अकित करू गी, जितने सागर में मोती भी न होंगे।"

डिमिट्रियोस ने याचनापूर्वक अपना सिर उधर बढाया और जिस समय उसने अपने विलासयुक्त होठो को आगे बढाया उस नारी की विशाल दृष्टि ने उसकी दृष्टि को अभिभूत कर लिया

जिस समय उसने अपनी आँखे खोली, वह काफी दूर निकल चुकी थी। एक छोटी-सी छाया, जो अपेक्षाकृत अस्पष्ट थी, उनके लहराते हुए दामन के पीछे फुदकती जा रही थी।

वह खोया-सा नगर की ओर बढ रहा था और उसका सिर एक अकथनीय लज्जा से नीचे झुका हुआ था।

अध्याय छ

कुमारियां

सागर के अंक पर प्राची का धुंधला प्रकाश छा गया। सभी चीजें बकाइन के रंग में स्नान कर उठीं। फेरोज की चोटी पर चिन्गारियां सुलगाने वाला महापात्र चन्द्रमा के साथ ही अस्त हो गया था। सागर की वनफशी लहरों पर पीला प्रकाश ऐसा प्रतीत होता था जैसे सामुद्रिक घास के नीचे सागर-सुन्दरियां छिपकर झाँक रही हों। फिर सहसा चारों ओर प्रकाश छा गया।

चौपाटी बिलकुल खाली पड़ी थी। नगर बिलकुल निस्पंद था। यह पहली पौ फटने का प्रथम प्रकाश था, जो कि दुनिया की नींद को हल्का करता है और प्रातःकाल के ताजगी पैदा करने वाले स्वप्नों को प्रेरित करता है।

खामोशी के अलावा जैसे और कुछ भी अस्तित्व में नहीं था।

सोते हुए पक्षियों के समान एक कतार बनाकर खाड़ी पे खड़े हुए जहाजों ने अपने पतवार पानी में गिरा दिए थे। नगर-पथों का दृश्य नितान्त वास्तुकला-प्रधान था। कोई छकड़ा, घोड़ा या गुलाम इस दृश्य में बाधक नहीं था। एलेक्जेण्ड्रिया नितान्त निर्जीव-सा पड़ा था, जैसे वह सदियों से वीरान पड़ी हुई कोई प्राचीन नगरी हो।

अब दो लड़कियों की पगध्वनि सड़क पर मुखरित होना शुरू हो गई थी। इनमें एक पीले और दूसरी नीले परिधान से परिवेष्टित थी।

उन दोनों ने कुमारियों जैसी पोशाक पहन रखी थी और नितम्बों पर पटका बांधा हुआ था। पिछली रात एक को गायिका के रूप में

निमन्त्रित किया गया था और दूसरी एक बाँसुरी बजाने वाली थी।

गायिका अपनी मित्र से अधिक सुन्दर और आयु में भी कम थी। वह अपनी पोशाक की तरह पीली थी। उसकी आँखों में एक निर्जीव मुस्कान थी। उसकी आँखें पलकों के नीचे आधी डूबी हुई थी। दो पतली बाँसुरियाँ उसके कन्धे पर लगी फूलदार गाठ से कमर पर लटक रही थी। इन्द्रधनुष के समान की एक दोहरी तगडी उसकी गोल देह पर लिपटी हुई थी और उसके महीन वस्त्रों के नीचे से उसकी चपलता स्पष्ट परिलक्षित होती थी और वह उसके टखनों पर पहने हुए दोनों चाँदी की पायजेबों से वधी हुई थी। उसने कहा

'मिर्टोक्लिया, इसका दुःख न करो कि हमारी तख्तियाँ खो चुकी हैं। क्या तुम कभी भूल सकोगी कि रोडिस के प्रेम पर तुम्हारा अनन्य अधिकार है? क्या तुम, उच्छृंखल छोकरी यह ख्याल कर सकती हो कि तुम मेरे हाथ की लिखी पंक्तियाँ सदैव अकेली ही पढ़ती होगी? मैं उन साथियों में से हूँ जो कि अपने प्रिय मित्र का नाम अपने नाखून पर खोद लेते हैं और जब नाखून बढ़कर कट जाता है तो मैं भी दूसरे के पास चली जाती हूँ। क्या तुम्हें मेरे उपहार की आवश्यकता है, जब कि मैं जीवित और सम्पूर्ण ही तुम्हारे पास हूँ? मैं मुश्किल से उतनी ही उम्र की हूँ जिस उम्र में लडकियाँ शादी करती हैं, फिर भी मैंने जब सर्वप्रथम तुम्हें देखा था तो आज से आधी भी नहीं थी। हमारी माताएँ हमारी बाँह पकडे हुए थी और हम एक दूसरी की ओर ताक रही थी। क्या तुम्हें याद है, स्नान करते समय का वह दृश्य—वस्त्र पहनने के पूर्व हम संगमरमर पर कितनी ही देर तक खेलती रही थीं? उस दिन से हम कभी एक दूसरे से अलग नहीं हुईं। और पाँच वर्ष बाद हम एक दूसरे से प्रेम करने लगी।'

मिर्टोक्लिया ने उत्तर दिया "एक और भी प्रथम दिन था रोडिस, तुम्हें याद है। यह वह दिन था जब तुमने मेरी तख्ती पर हम दोनों का नाम मिलाकर लिख दिया था। वह था पहला दिन। हम उसे कभी

उपलब्ध नहीं कर सकते। लेकिन कोई चिन्ता की बात नहीं है। हर दिन मेरे लिए नया दिन होता है और जब तुम सन्ध्या समय जगती हो तो मुझे बिलकुल नई दिखाई देती हो। मेरा विश्वास है कि तुम लडकी नहीं हो। तुम एक छोटी सी आर्काडिया की वन-सुन्दरी हो और तुम अपना निवास-स्थान छोडकर इसलिए चली आई हो, क्योंकि फोबोस ने तुम्हारा चश्मा सुखा दिया है। तुम्हारी देह जैतून की शाखा के समान मुलायम और चिकनी है। तुम्हारी त्वचा जैसे ग्रीष्मकाल में ठण्डे पानी के समान सुखदायी है। तुम्हारे चारों ओर आकाश-गंगा बहती है और तुम उसी तरह कमल पुष्प धारण करती हो, जिस तरह एस्टार्टी खुला हुआ अजीर। न जाने तुम्हारी माता ने किस तपोवन में तुम्हारे जन्म के पूर्व निवास किया होगा। और न जाने किस अलौकिक नदी का देवता घास में उसके पास आया होगा। जब हम इस भयानक अफ्रीकन सूर्य को छोड देंगे तो तुम मुझे मोफीज और फिनोज के बसंत-प्रदेश में ले जाओगी, जहाँ वन की विशाल छाया में वन देवता और वन-सुन्दरियाँ निवास करती हैं। वहाँ तुम एक चिकनी चट्टान खोज निकालोगी और उस पर वही खोद दोगी जो तुमने मोम पर खोदा है। वही तीन शब्द जो हमारा सुख हैं, सुनो, सुनो, गोडिम! अफ्रोडाइटी की तगडी की सौगन्ध, जिससे विश्व की समस्त इच्छाओं का उद्भव होता है, मेरे लिए तुम मेरे स्वप्नों की अपेक्षा भी अधिक मेरी हो। अमलिथया के सींग की सौगन्ध—जहाँ से दुनिया की सभी अच्छी चीजों का उद्भव होता है। दुनिया मेरे लिए उदासीन है क्योंकि मैंने तुम्हें पा लिया है। तुम ही मेरे लिए सारी दुनिया में केवल एक अच्छाई हो। जब मैं तुम्हारी तरफ देखती हूँ और फिर अपने ऊपर नजर डालती हूँ तो मेरी समझ में नहीं आता, तुम किस प्रकार मुझे प्यार कर सकती होगी। तुम्हारे बाल गेहूँ की बालों के समान सुनहरे हैं और मेरे बाल बकरी के बालों के समान काले। तुम्हारी त्वचा गडरिये के मक्खन के समान सफेद है और मेरी त्वचा गार्ग-नट की फटी हुई रेती के समान है। तुम्हारे

· ˉ —

कोमल उरोज ऐसे शोभित होते हैं जैसे पतझड के मौसम मे नारगी का पेड और मैं इतनी पतली और क्षीणकाय हूँ कि जैसे चट्टानो के बीच कोई देवदार का वृक्ष उग आया हो। अगर मेरा मुँह कुछ सुन्दर है तो केवल इसलिए कि मै तुम्हे प्यार करती रही हूँ। मुझे मालूम नही कि तुम मुझे क्यो प्यार करती हो, लेकिन अगर तुम कही बहिन थानू के समान ही मुझे प्रेम करना बन्द कर दो और जहाँ हम काम करते हैं वही काम भी करते रहे तो मैं शायद उस रात कभी भी न सो सकूँ और तुम अगर लौटकर आओ तो मुझे अपने कटिबन्ध मे फांसी लगाकर समाप्त हुई ही देखो।"

रोडिस की लम्बी आँखे वेदना और हर्ष के आसुओ से भीग उठी। यह विचार ही इतना बेदर्दी और पागलपन से भरा हुआ था। उसने एक पत्थर पर अपना पैर जमा दिया। "अगर मेरे पैरो के बीच फूल आ जाए तो मुझे चिढन पैदा होती है। उन्हें हटा दो, मेरी प्रिय मिर्टो! मै आज रात और नही नाचूंगी।"

गायिका ने कन्धे हिलाए, "ओह, मै तो भूल ही गई थी, उन आदमियो और लडकियो को! उन्होने तुम दोनो को नचाया, तुम इस पोशाक में थी और साथ में तुम्हारी बहिन। अगर मै तुम्हारी रक्षा न करती तो हमारी आखो के सामने ही वह तुम्हारे साथ भी वही व्यवहार करते—जो तुम्हारी बहिन के साथ किया। आह, कितनी घृणित बात है! आदमी कितना बेरहम होता है!"

वह रोडिस के साथ नीचे झुक गई और पहले दो मालाएँ और बाद में फूल हटा दिए। जब वह उठी तो उस बालिका ने अपनी बाहे उसकी गर्दन मे डाल दी और उसे चूम लिया।

'मिर्टो, तुम उन बदमाश आदमियो से ईर्ष्या तो नही करती हो? तुम्हारे लिए इसका महत्त्व है कि उन्होने मुझे देख लिया है। मानो उनके लिए काफी है और मै उसे वही छोड आई हूँ। वह मुझे नहीं पा सकेंगे, मेरी प्यारी मिर्टो! इसलिए उनसे व्यर्थ ईर्ष्या न करो।"

"ईर्ष्या   मैं उन सब से ईर्ष्या करती हूँ जो तुम्हारे निकट आते हैं। तुम्हारी पोशाक केवल तुम्हारे द्वारा ही धारण की जाती रहे, इसलिए जब कभी तुम उन्हें उतार देती हो, मैं पहन लेती हूँ। तुम्हारी वेणी के जो पुष्प तुमसे प्रेम नहीं करते, मैं उन्हें गरीब वेश्याओं को दे देती हूँ। तुम जिस चीज को भी स्पर्श करती हो, मुझे उससे भय लगता है, जिस चीज को भी तुम देखती हो, मुझे उससे घृणा होती है। मैं तो यही कामना करती हूँ कि हम लोग कारावास में बंद रहें और वहाँ केवल तुम हो और मैं रहूँ। और अपने अंक में तुम्हें इस प्रकार भर लूँ कि किसी को भी सन्देह न हो सके कि तुम यहाँ हो। मैं चाहती हूँ कि मैं वह फल बन जाऊँ जिन्हें तुम खाती हो, वह इत्र जो तुम्हें पसन्द आता है और वह नींद जो तुम्हारी पलकों के नीचे निवास करती है। जो सुख सान्त्वना मैं तुम्हें देती हूँ मुझे उससे भी ईर्ष्या होती है, लेकिन फिर भी मैं भरसक समस्त सुख और सान्त्वना तुम्हें अर्पण करना चाहती हूँ। मेरी ईर्ष्या को तो देखो!"

रानिस हार्दिकता से उत्फुल्ल हो उठी, "क्या तुम चाहती हो कि अमोस के देवता के समक्ष दासीओं की तरह ही बलि अर्पित करने के लिए मैं भी जाऊँ? लेकिन आज सुबह नहीं मेरी प्यारी! मैं बहुत देर तक नाचती रही हूँ, मैं बहुत थक गई हूँ। मैं अब जाना चाहती हूँ ताकि घर जाकर सो सकूँ।"

वह मुस्कराई और बोली, "थालो से कह दिया जाना चाहिए कि अब वह भविष्य में हमारे बिस्तर में नहीं सो सकती। आज रात के बाद मैं उसके साथ कोई सम्पर्क नहीं रखूँगी। मिर्टो, सचमुच यह कितना वीभत्स है। क्या प्रेम की यह अभिव्यक्ति होना सम्भव है? क्या इसी को लोग प्रेम कहते हैं?'

'यही तो है!

'यह उनकी भूल है मिर्टा, वे जानते नहीं हैं।"

वायु के एक झोंके ने उनके केश एक दूसरे से मिला दिए।

अध्याय सात

क्राइसिस के केश

"हा ' रोडिस चिल्लाई, "देखो वहां कोई है !"

नायिका ने उधर देखा। एक स्त्री, उनसे बहुत दूर पर, खाडी की ओर तेज़ी से बढ रही थी।

'मै उसे पहचानती हूँ," बालिका ने कहा, "वह क्राइसिस है, उसने अपनी पीली पोशाक पहन रखी है।"

"क्या, उसने अभी से वस्त्राभूषण धारण कर लिये हैं ?"

"मेरी समझ में मामला कुछ आया नही। बहुधा वह मध्याह्न से पूर्व बाहर नही निकलती, और अभी तो सूर्य मुश्किल से निकला ही है। उसे कुछ मिल गया है। वह है भी ऐसी ही सौभाग्यशालिनी, इसमें सदेह नही !"

वे उससे मिलने गई और कहा, "बधाई है क्राइसिम।"

"बधाई तुम्हें भी। तुम लोग कब से यहां हो।"

"हम कह नही सकते। जब हम आए थे तो पौ फट चुकी थी।"

"क्या किसी को तुमने यहां चौपाटी पर देखा है ?"

"किसी को भी नहीं।"

'कोई आदमी यहा नही आया, क्या तुम्हें ठीक मालूम है ?"

"ओह, बिलकुल सही बात है ! लेकिन तुम क्यो पूछती हो ?"

क्राइसिस ने कोई उत्तर नही दिया। रोडिस फिर बोली, "क्या तुम्हे यहा किसी से मिलना था ?"

"हा शायद पर मेरा ख्याल है कि बेहतर यही है कि मै उसने

न मिलूं। हाँ, यही बेहतर है। मेरी गलती थी कि मैं लौटकर आई, लेकिन मैं अपने को रोक नहीं सकी।"

"आजकल क्या नवीन हालचाल हैं, क्राइसिस, बात कृपा करके हमें नहीं बताओगी ?"

"ओह, नहीं !"

"हमें भी नहीं, हमें भी नहीं, अपनी मित्रों को ?"

"तुम जान लोगी कुछ समय बाद। तुम क्या सारा शहर ही जान लेगा।"

"वह तो तुम्हारा अनुग्रह है !"

"थोड़ा पहले भी, अगर तुम अधिक हठ करोगी, लेकिन आज इस रहस्य को तुम्हें बताना बिल्कुल असम्भव है। कुछ असाधारण घटनाएँ घटित हो रही हैं मेरी बच्चियो ! मेरे तो प्राण निकले जा रहे हैं कि अपना दिल तुम्हारे सामने खोलकर रख दूं, लेकिन मैं अपनी जबान बन्द किए हुए हूँ। क्या तुम अपने घर जा रही थीं ? मेरे साथ घर चलो। मैं बिलकुल अकेली हूँ।"

"ओ क्राइसी, क्राइसिडियन ! हम बहुत थक गई हैं। हम घर जाकर सोना चाहती हैं।"

"अच्छा तुम सोओगी ? यह अफ्रोडाइटी के पर्व की पूर्व वेला है। यह विश्राम का समय है। अगर तुम चाहती हो कि देवी इस वर्ष तुम्हारा मंगल करे तो तुम मन्दिर अवश्य जाना। उस समय तुम्हारी आँखों की पलकें बनफशा की तरह काली और तुम्हारे गाल सफेद पत्तों के समान रहने चाहिए। हम लोग मेले पर चलेंगे, मेरे घर चलो।"

उसने उनकी कमरों में हाथ डाल लिया और उन्हें तेजी के साथ धकेलती ले चली। रोडिस अभी तक भी उसी विचार में तल्लीन थी। "और हम तुम्हारे घर में किस समय पहुँच सकेंगे ?" उसने कहना जारी रखा, "और तुम हमें यह नहीं बताओगी कि आजकल तुम किस चीज में व्यस्त हो, तुम्हारे जीवन में क्या घटित होने जा रहा है ?"

"मै तुम्हे अनेक बाते बताऊँगी—अनेक बाते, जो तुम्हे पसद होगी पर वह खास बात नही। जिद न करो रोडी! कल तुम्हे पता चल ही जाएगा। कल तक सब्र करो!"

"तुम बहुत सुखी होने वाली हो, बहुत शक्तिशालिनी।"

"हा, बहुत शक्तिशालिनी!"

रोडिस की आँखें विस्फारित हो उठी और वह चिल्लाई

"तुम सम्राज्ञी के दर्शन करने जाओगी?"

"नही,' क्राइसिस ने हसते हुए कहा "लेकिन उतनी ही शक्तिशालिनी हो जाऊगी, जितनी वह है। क्या तुम्हे मेरी आवश्यकता है, क्या तुम्हे किसी चीज की कामना है?"

"ओह, हां है!'

और वह बच्ची पुन विचार-विमग्न हो गई।

"अच्छा तो, बताओ, तुम किस चीज की कामना करती हो।" क्राइसिस ने पूछा।

"यहा सभी असम्भव चीजें हैं, मै क्यो उनकी कामना करू?'

मिर्टोक्लिया उसकी तरफ से बोली, "एफीसोज की परम्परा है कि रोडिस और मेरे समान दो लडकियां परस्पर प्रेम करती हैं, तो पुजारी उन्हे आशीर्वाद देता है। तब दोनो एथेना के मन्दिर में जाती हैं जहां वह दोनों अपने कटिबन्धो को सकल्पित करती हैं। और इफीनो के पवित्र स्थान में जाती हैं और दोनो अपने बालो की एक सयुक्त जटा अर्पित करती हैं। अन्त में डाइनीमोन के पेरीस्टाइल में एक रस्म अदा की जाती है। सन्ध्या समय वह अपने नवीन स्थान को जाती हैं। और पुष्पो से सज्जित द्वार पर उन्हे बैठाया जाता है, चारो तरफ मशाले जलाई जाती हैं और शहनाई बजाने वाले शहनाइयां बजाते हैं। उसके बाद उन्हे समस्त अधिकार प्राप्त होते हैं। उनकी प्रतिष्ठा होती है। यह रोडिस का स्वप्न है। लेकिन इस देश मे ऐसा रिवाज ही नही है।"

'लेकिन कानून बदल दिया जाएगा,' क्राइसिस ने कहा, "और तुम दोनों को आशीर्वाद प्राप्त होगा । मैं यह कार्यभार अपने ऊपर लेती हूँ ।"

"ओह सच," छोटी लड़की आनन्द से उन्मत्त होती हुई बोली ।

"हाँ, और मैं यह भी नहीं पूछती कि तुममें से कौन अधिक सुखी होगी । मैं मिर्टो को जानती हूँ और यह स्वीकार करती हूँ कि उस जैसी मित्र पाकर तुम निहाल हो गई हो । लोग कुछ भी कहें लेकिन ऐसी मित्र और मित्रता सदैव दुर्लभ होती है ।"

वह द्वार पर आ गई, जहां ड्योढ़ी पर बैठी ज्वाला फ्लैवम की एक तारिका बुन रही थी । आगन्तुकों के लिए उसने उठकर रास्ता दे दिया और आप पीछे-पीछे चल खड़ी हुई ।

एक ही क्षण बाद वह दोनों बाँसुरी-वादक अपनी सीधी-सादी पोशाक में बाहर निकल आईं । हरे संगमरमर के हौज में उन दोनों ने एक दूसरे को सावधानी से नहलाया और तब वह बिस्तर में उतर गईं ।

क्राइसिस गीली आँखों से उन्हें देखती रही । डिमिट्रियोस के संक्षिप्त-से वाक्य भी बार-बार उसके कानों में गूँज रहे थे । उसे यह भी अनुभव नहीं हुआ कि ज्वाला ने उसका लम्बा सफेद का बुर्का उतार दिया है, उसका कटिबन्ध खोल दिया गया है, नेकलेस उतार लिया है, अंगूठियां भी उतार दी हैं और मुद्रिकाएँ तथा दूसरे आभूषण भी उतार लिए हैं । सोने की पिन निकालने से उसके बालों के गिरने की सरसराहट ने उसका ध्यान भंग कर दिया ।

उसने अपना आइना लाने की आज्ञा दी ।

क्या उसे यह संदेह था कि उसमें उतनी सुन्दरता थी भी कि नहीं कि वह अपने नए प्रेमी को अपने प्रेमपाश में बाँधकर रख सके । क्योंकि उस पागलपन की मांगें पेश करने के बाद उसे पकड़ रखना एक बड़ी आवश्यकता बन गई थी, या सम्भवतः अपने अंग प्रत्यंग के सौन्दर्य को

देखकर वह पुन यह विश्वास पैदा कर लेना चाहती थी कि उसकी व्यग्रता व्यर्थ है ?

उसने अपने शरीर के हर भाग को आइने के सामने रखा और उसका अध्ययन करती रही। उसने अपनी त्वचा को देखा और सुदीर्घ आलिंगनो की कल्पना करके उसकी ऊष्मा को अनुभव किया। उसने अपनी देह की पुष्टता को परखा और मास-पेशियो की दृढता को तौला। उसने अपने बालो को नापा और उसकी स्निग्धता को देखा। अपनी दृष्टि की शक्ति को परखा और मुँह की अभिव्यजना, श्वास की मधुरिमा को देखा और अपनी बगलों से लेकर कोहनियो तक को निहारा और अपनी बाजुओ पर एक लम्बा चुम्बन अकित कर दिया।

कुतूहल और गर्व, निश्चयात्मकता और व्यग्रता की असाधारण भावना ने अपने ही होठो के द्वारा स्पर्श किए जाने पर भी उसमें एक मुग्ध भाव पैदा कर दिया था। वह घूम उठी जैसे वह किसी को खोजती हो, पर अपने बिस्तर मे उन दोनो इफेसियनो को देखकर—जिन्हे वह इस बीच भूल चुकी थी—वह उन दोनो के बीच में लेट गई और उसके सुनहरे बालो ने तीनो के सिरो को आच्छादित कर लिया।

अध्याय आठ

देवी का उद्यान

अफ्रोडाइटी-एस्टार्टी का मन्दिर नगर-पकोष्ठ के बाहर एक विशाल पुष्पोद्यान मे बना हुआ था। यह उद्यान अनेक प्रकार के पुष्पो और घने छायादार वृक्षो से भरा हुआ था। नील नदी से काटकर निकाली गई सात नहरो के द्वारा लाए गए जल से सिंचित यह उपवन प्रत्येक मौसम में हरियाली से भरपूर रहता था।

सागर-तट पर स्थित यह उद्यान, ये नहरें-चश्मे ये झीलें और लाल-लाल दूर तक फैले हुए खेत, इस मरुस्थल मे, आज से दो सौ वर्ष से पहिले हुए, टोलेमीज प्रथम ने बनवाए थे। उसके आदेश पर उस समय जो अन्जीर के पौधे लगाए गए थे, वह बढ़कर आज विशाल वृक्षों का रूप धारण कर चुके थे। उपजाऊ खनिजो से भरे इस जल के द्वारा निरन्तर सिंचाई होते-होते उस समय के धास के लान आज चरागाह बन चुके थे, छोटे-छोटे तालाब झीलो का रूप धारण कर चुके थे और प्रकृति ने इस पाक को एक विशाल वन्य प्रदेश मे परिणत कर दिया था।

लेकिन इस उद्यान को केवल घाटी क्षेत्र अथवा वन-प्रान्तरमात्र पुकारना उचित नहीं होगा। वह तो पत्थरो से घिरी एक बिलकुल ही दूसरी दुनिया बन चुकी थी, जिसकी एक अधिष्ठात्री देवी थी — जो इस दुनिया की आत्मा और उपासना का केन्द्र बन चुकी थी। उसके चारो ओर एक बड़ा परकोटा खिंचा हुआ था—जिसकी ऊंचाई बत्तीस फीट थी और लम्बाई अट्ठाईस हजार फीट। यह केवल एक दीवार ही नही

थी, यह एक बहुत बडा नगर था जिसमें चौदह-सौ घर बने हुए थे। इतनी ही सख्या में देवदासियाँ भी इस पवित्र नगर मे रहती थी और इस असाधारण स्थान मे दुनिया की सत्तर कौमो का प्रतिनिधित्व होता था।

इन पवित्र आवास-गृहो का निर्माण योजनाबद्ध था जो कि इस प्रकार था द्वार, लाल ताबे का—यह धातु देवी को समर्पित किया गया होता था। हर द्वार पर एक घण्टी और बजाने का हथौडा टगा रहता था। हर द्वार पर मालिक के नाम की तख्ती लगी होती थी।

द्वार के दोनो तरफ दो कमरे होते थे जो बहुधा दूकानो के रूप में प्रयोग में आते थे लेकिन उद्यान की तरफ वाले भाग में दीवार नही बनी होती थी। दाहिनी तरफ एक झरोखा होता था जहाँ देवदासियाँ झाँकी देती थी जब कि लोगो के आने का समय होता था। बाईं तरफ वाला कमरा समागतो के लिए होता था जो कि घास पर बिना सोये रात्रि गुजारना चाहते थे।

इस खुले हुए द्वार से प्रवेश करने पर सगमरमर के फर्श वाला एक बहुत बडा सहन सामने आता था—जिसके बीचोबीच एक अण्डाकार ताल बना होता था। यह स्थान एक महराब से ढका होता था, जिससे सातो कमरो मे प्रवेश करने वाले द्वारो पर घनी छाया रहती थी। पीछे की तरफ एक वेदी बनी होती थी जिसका निर्माण गुलाबी रग के पत्थर से किया गया होता था।

हर औरत अपने स्वदेश से देवी की एक मूर्ति लाती थी और उसे अपनी इस घरेलू वेदी पर रखती थी और अपनी भाषा मे उसकी उपासना करती थी। उसे दूसरो की भाषाओ का ज्ञान कभी न हो पाता। लक्ष्मी, अस्तारथ, वीनस, इश्तर, सीया, मीलिता, साइप्रिस इसी प्रकार के अनेक नाम उनकी उपास्य देवियो के थे। कुछ केवल प्रतीक बनाकर ही उपासना करती थी—कोई लाल पत्थर या प्रतिमा-सा प्रतीत होने वाला पत्थर या कोई बडा नोकदार पत्थर रखकर पूजा करती थी।

कुछ स्त्रियाँ चिकनी लकड़ी की पीठिका पर कोई खुरदरा-सा स्टैच्यू रखती थी जिसकी बाहे पतली, उरोज भारी और नितम्ब विशाल होते थे । उस मूर्ति के चरणो पर वह मेहदी की एक टहनी रखती थी और वेदी पर गुलाब के फूल बखेर देती थी । और हर प्रार्थना के समय उनके हृदय मे एक विशाल भावुकता की भावना पैदा हो जाती थी । वह मूर्ति उनके समस्त दुःखो की निदान करने वाली, श्रम की साक्षी और उनके समस्त सुखो की स्रोत समझी जाती थी । उनकी मृत्यु के समय वही मूर्ति उनके शव के साथ रख दी जाती ताकि वह उनकी कब्रो की रक्षा करती रहे ।

इन लड़कियो मे सर्वाधिक सुन्दरियाँ वह थीं—जो एशियाई देशो से आई थीं । हर वर्ष साथी देशो अथवा खिराज देने वाले मुल्को मे तोहफे भरकर लाने वाले जहाज जब एलेक्जेण्ड्रिया मे आकर उतरते तो रुपहले सोने की गाठो और शराब की बोतलो के साथ एक सहस्र देवदासियाँ भी पवित्र मन्दिर की सेवा करने के लिए भेज दी जाती थीं । इनका शृंगार पुजारी करता था । उनमे सीरियन, यहूदी, फारसियन और क्रीट-वासी लड़कियाँ होतीं । निनवाटना और बेबीलोनिया, रत्नो की घाटी के तट पर स्थित देशो और पवित्र गंगा-तटीय प्रदेश से भी आती थीं । कुछ का रंग गोरा होता, मृगनयनियाँ किसी चित्रकारी-युक्त पात्र जैसी होतीं, मुँह उभार होते, कुछ का रंग वर्षा मे भीगी जमीन की तरह काला होता । ये लोग अपनी नाकों मे सुनहरी बालियाँ पहनतीं और उनके सुचित्र केश कन्धों पर लहराते रहते थे ।

कुछ कुमारियाँ उससे भी आगे से आती थीं । छोटा कद, दीर्घकाय और शिथिल गति जो पीले बन्दरो के समान प्रतीत होती और उनकी भाषा किसी की भी समझ मे नहीं आती । उनकी आँखें कनपटियों की ओर खिंची होती थीं, उनके सीधे-काले केश बहुत ही विलक्षणता से सँवारे होते थे । ये लड़कियाँ जीवनपर्यन्त किसी खोये हुए पशु के समान खिन्न रहतीं । वे प्रेम की समस्त लीलाओं से परिचित होतीं किन्तु चुम्बन करने में हिचकती थीं । आने वालो के बीच ये लड़कियाँ आपस में

वैठी खेल खेलती रहती थीं और बच्चों की तरह अपना मनोरंजन करती रहती थी।

एक पृथक् चरागाह में सुनहरे केशों वाली गुलाब-सी सुख उत्तर-कन्यायें रहती थी, ये घास पर लेटी रहती। उनमे सरमेशियन भी थी, जिनकी देह भरी हुई और कन्धे चौरस होते और वे मनोरंजन के लिए आपस में मल्ल-युद्ध करती थी। चपट्टी नाक और विशाल उरोजो वाली सीथिया-वासिनी भी होती, जिनके शरीर पर बाल होते। विशाल आकार की जर्मन लडकिया, जिनके बालो को देखकर मिस्री लोग भयभीत हो उठते क्योंकि उनका रंग बूढे आदमियो के पीले बालो जैसा होता था। फ्रेंच लडकियाँ होती जिनके बाल पशुओं की तरह लाल होते—जो कि बिना कारण ही हसती रहती थी और कोमल कैल्टिक बालाएं जिनकी आँखें सागर की तरह सुनील होती थी।

किसी एक स्थान पर आइबेरिया-वासिनी लडकिया होती जो कि दिन में आपस में मिलकर बैठती थी। उनके बाल घने होते और वह उन्हें बडी चतुराई से सजाती थी। उनकी सख्त त्वचा और शक्तिशाली देह-यष्टि एलेक्जेण्ड्रिया-वासियो को बहुत पसंद आती थी। वे लोग इनमे से बहुतो को नर्तकियो के रूप में चुनते और उन्हें अपने यहाँ रख लेते थे।

ताड के वृक्षो की घेर वाली छाया मे अफ्रीका की लडकियाँ रहती थी, सफेद अवगुण्ठन धारण किए नुमीडिया-वासिनी, और काला रेशम पहिनने वाली कार्थोजीनिया-निवासिनी और बहुरंगी पोशाक पहनने वाली अफ्रीका की नीग्रो लडकिया भी इस विशाल नगर में रहती थी।

कुल मिलाकर इनकी सख्या चौदह सौ थी।

कोई औरत यहाँ प्रवेश करने के उपरान्त कभी बाहर कदम नहीं रखती थी जब तक कि वह बुढापे की सीमा में कदम न रख दे। अपने आय का वह आधा भाग मन्दिर को अर्पित करती थी और आधे से उनका जीवन-यापन भली प्रकार हो जाता था।

व गुमनाम नही होती थी। उनमे से प्रत्येक को इसी परकोटे मे एक मकान मिल जाता था, लेकिन सभी एक समान लोकप्रिय नही होती थी। उनमे से अनेक सौभाग्यशालिनी अपने पडोसिनो के मकान भी खरीद लेती थी— जो कि भुखमरी से बचने के लिए बेच दिए जाते थे। तब ये लोग अपना सामान पार्क मे रख लेती थी और चपटे पत्थर की वेदी एक कोने मे बनाकर रहती थी, और अपने स्थानो को कभी अकेला नही छोडती थी। गरीब सौदागर लोग यह जानते थे और इन्ही के पास आकर ठहरना पसद करते थे। लेकिन कभी कभी ये लोग भी उनकी ओर से मुह फेर लेते थे, तो ये लडकियाँ आपस मे मिल जाती थी, उनमें प्रगाढ मैत्री भाव पैदा हो जाते और अपने सुख-दुख और हर्ष-विषाद परस्पर बाँटकर जीवन बिताती थी। कभी-कभी ऐसी मैत्रियाँ एक स्थाई प्रेम मे परिवर्तित हो जाती, वह घर की हर वस्तु मे समान हिस्सा रखती, यहाँ तक कि एक ही सन्तान को गोद लेती क्योंकि उनकी दीर्घकालीन [illegible] सम्भव होता था।

[illegible] महिला मित्र नही होती थी, वह अपनी अधिक [illegible] मे [illegible] मे दासियो का काम स्वीकार कर लेती थी। नियम यह था कि एक देवदासी बारह से अधिक [illegible] नही रख सकती थी, लेकिन बाईस वेश्याएँ [illegible] जिन्होने बारह बारह दासियाँ रखकर अपने घर को विभिन्न [illegible] बना लिया था।

रहस्यों की शिक्षा देती थीं। ये छात्रा अपनी मर्जी के अनुसार अपनी दीक्षा का प्रथम दिन स्वय चुन लेती थी क्योंकि देवी के आदेश का उलन्घन होना असम्भव था। इसी दिन उसे परकोटे के मकानो में से एक मकान दे दिया जाता था। इन्हीं छात्राओ में से कुछ अत्यन्त अनथक थी और सबसे अधिक लोग इनके यहां आते थे।

डिडेस्केलियन के आन्तरिक भाग और सात कक्षाओ, कोर्ट के चारो तरफ की मेहताबियो और छोटे-से थ्येटर की दीवारो पर बानवे भित्ति-चित्र बने हुए थे—जिनमें प्रेम सम्बन्धी सभी उपदेश चित्रित किए गए थे। ये चित्र क्योचेयर्स नाम के व्यक्ति ने बनाये थे जो कि उसने मृत्यु-शैया पर पहुँचकर भी समाप्त किये थे। थोडे ही दिन हुए सम्राज्ञी बेरेनिस ने आदेश दिया था कि डिमिट्रियोस द्वारा निर्मित सगमरमर की कुछ मूर्तिया भी उस स्कूल में रखी जाय। सम्राज्ञी इस स्कूल के सुचारु सचालन में बहुत दिलचस्पी लेती थी और उन्होंने अपनी छोटी बहिनो को इसी स्कूल में शिक्षा ग्रहण करने के लिए भर्ती करा दिया था। लेकिन इस माला में केवल एक ही मूर्ति तैयार की जा सकी थी।

हर वर्ष के अन्त में इन देवदासियों की विशाल सभा के समक्ष एक महान् प्रतियोगिता होती थी जो कि महिलाओ के अन्दर रूप-गुण में सर्वोपरि होने की भावना को उत्तेजना देती थी। इस अवसर पर बारह पारितोषिक वितरित किए जाते। ये पारितोषिक इन महिलाओ के जीवन के महानतम स्वप्न होते थे और उन्हें प्राप्त करने के बाद उन्हे कोट्टीटियन में प्रवेश पाने का अधिकार प्राप्त हो जाता था।

यह कोट्टीटियन वह अन्तिम विहार था जिसके चारो ओर इतने रहस्य जुडे हुए थे कि उनका विस्तृत विवरण दिया जाना प्राय: असम्भव है। हम केवल इतना जानते हैं कि वह भी इसी उद्यान की सीमा के अन्दर था। इसकी स्थिति त्रिकोणाकार थी और उसमें देवी कोटीटो का मन्दिर बना हुआ था—जिसके नाम पर कुछ अज्ञात और भयानक अनुष्ठान किए जाते थे। इस विहार के दूसरे प्रकोष्ठ में बारह मकान बने हुए थे। इनमें

छत्तीस वेश्याये रहती थी, धनाढ्य प्रेमी लोग इनके पीछे इतने उन्मत्त रहते थे कि वह दो मिन्नम से कम कभी स्वीकार नही करती थीं। वे एलैक्ज़ेण्ड्रिया की पवित्र मस्कार करने वाली थी। महीने में एक बार जबकि आकाश में पूर्णचन्द्र निकला होता वह मन्दिर के निकट एकत्रित हो जाती और अनेक प्रकार के मद्यमारो का पान करके और अनेक वेश-भूषाओ से अलकृत हो उन्मत्त होकर नाचती थीं। इनमें से जो सबमे अधिक आयु की होती थी, उसे प्राणान्तक पेय का एक घूंट पीना पडता। तेजी मे निकट आने वाली मृत्यु के निश्चय को अटल मान कर वह ऐसी-ऐसी क्रीडाएँ करती जिन्हे करने में जीवित देवदासियाँ नितान्त लज्जा का अनुभव करती थी। उसका शरीर जो सर्वत्र झाग की तरह तैरता-सा प्रतीत होता था, इस प्रमत्त नर्तन का केन्द्र बना होता था। चारो तरफ नृत्यरता वेश्याएँ शोर मचाती, चीखती, रोती और नृत्य करती, उसका आलिगन करती, अपने बालो से उसे आच्छादित कर लेती और उस भयानक वेदना के बदलते हुए रगो में परिवर्धन करती। तीन वर्ष तक वे महिलाए इस प्रकार जीवन व्यतीत करती और छत्तीस महीने के अन्त में इसी प्रकार प्राणान्तक पेय उनकी जीवन-लीला समाप्त कर देते।

इन स्त्रियो ने अफ्रोडाइटी के नाम से प्रख्यात कुछ दूसरी देवियो के मन्दिर भी बना लिए थे, जो शान-शौकत में अपेक्षाकृत कुछ कम थे। एक वेदी ऐसी भी थी जो कि यूरेनियन को समर्पित की गई थी--जिसके समक्ष कुछ भावुक वारागनाएँ अपनी पवित्रता की प्रतिज्ञा किया करती थी, दूसरी एक वेदी एपिस्थिपया की थी-जो कि दुखान्त प्रेम-प्रसगो को विस्मरण करने में सहायता करता था। एक वेदी काइमिस के निमित्त थी जो कि धनाढ्य प्रेमियो को आकर्षित करती और एक वेदी जेनिटिलिस के लिए जो नवयुवतियो की सुरक्षा करती थी, एक वेदी कोलिएट के प्रति थी—जो शक्तिशाली भावावेगो को स्वीकृति प्रदान करता था, और वह सभी वस्तुएँ जिनमे प्रेम का सम्बन्ध था, देवी के

लिए सम्पूज्य थी। लेकिन ये छोटी-छोटी उपासस्य देविया केवल छोटी-छोटी इच्छाओ की पूर्ति का ही साधन समझी जाती थी। उनकी उपासना भी नैत्यिक थी और उनके आशीर्वाद भी नित्य-प्रति ही प्राप्त होते थे। जिन प्रार्थियो की मनोकामना पूरी हो जाती थी, वे साधारण फूल इनकी मूर्तियो पर चढा देते थे। अगर मनोकामना पूरी नही होती थी तो इनकी मूर्तियो पर धूल चढाई जाती थी। वह न तो पवित्र समझे जाते थे और न ही पुजारी लोग उनकी देखभाल करते थे। और अगर कोई उन्हे अपवित्र करता था तो उसे दण्ड देने की प्रथा भी नही थी।

इसके बिलकुल ही विपरीत मन्दिर का अनुशासन था। मन्दिर, अधिष्ठात्री देवी का विशाल मन्दिर, मिश्र भर का पवित्रतम स्थान जिसमें अप्रतिहत एस्टार्टियन की तीन सौ छत्तीस फीट ऊची मूर्ति थी, उसकी आधारशिला उद्यान की अपेक्षा सात सीढियाँ ऊची करके रखी गई थी। उसके स्वर्ण द्वारो पर बारह प्रतिहारी पहरा देते थे जोकि दोनो लिगो की क्षमताओ से सम्पन्न होते थे। ये १२ प्रतिहारी प्रेम और रात्रि के बारह घण्टो के प्रतीक स्वीकार किए जाते थे।

मन्दिर का द्वार पूर्व की ओर नही था वरन् पाफोस की ओर था। जिसका अर्थ हुआ उत्तर-पूर्व की ओर। सूर्य की किरणे कभी भी सीधी उस महान् आराध्य देवी की पवित्र वेदी तक नही पहुँच पाती थी। छियासी स्तम्भ चारो तरफ के मेहराबो को सभाले हुए थे। अपनी आधी ऊँचाई तक वह लाल रग से पुते थे और रगीन भागो को छोडकर ऊपर का हिस्सा बिलकुल सफेद रग का था जोकि किसी खडी हुई औरत के कद के समान मालूम पडता था।

मेहराब और कोरोना के मध्य मे कुछ ऐसे चित्र थे—जिनमें बडे-बडे पशुओ की रतिक्रियाएँ अकित की गई थी। घोडिया और बिना अन्ना किए हुए घोडे भी थे। बकरियाँ वन के देवताओ के साथ थी। सफेद अप्सराए, बारहसिघे, सुरा में उन्मत्त बच्चूस के उपासक (सुरा का देवता) चीते, सिहनिया और बडे-बडे दैत्य सभी अजायबघर का-सा दृश्य

उपस्थित करते थे, प्राणियों का यह महान समूह इसी प्रकार आगे बढ़ता जाता था। उनमें कुछ दृश्य अत्यन्त स्थायी महत्त्व के बन गए थे। यूरोपा, ओलम्पियन साड के साथ और लीडा, बत्तख के साथ चित्रित की गई थी। ग्लाकोज, सागर-अप्सरा की गोद में मूर्छित था, पशुओं का देवता अजाचरण एक अप्सरा का आलिंगन कर रहा था—जिसके बाल उड रहे थे। स्फिन्क्स (एक पखो वाला दानव जिसका नीचे का शरीर सिंह का और ऊपर का स्त्री का होता था, यूनानी धर्मगाथाओं में आने वाला दानव) देवी मिनर्वा द्वारा पाले गए उड़न घोडे के साथ विहार कर रही थी और अन्त में चित्रकार स्वयं को देवी अफ्रोडाइटी के सम्मुख अपने उपासना के गीतों को अंकित करते हुए चित्रित किया था।

अध्याय नौ

मिलीटा

'अपने को पवित्र कर लो, आगन्तुक ?"

"मै पवित्र होकर ही प्रवेश करूँगा," डिमिट्रियोस ने कहा।

द्वार पर बैठी हुई तरुण रक्षिका ने अपने बालो का अन्तिम भाग पानी मे डुबोया और पहले उसकी पलको से स्पर्श किया, तब उसके होठो और अँगुलियो से ताकि उसकी दृष्टि, उसका चुम्बन और उसके हाथो का दुलार सभी कुछ पवित्र हो जाय।

उसके बाद वह अफ्रोडाइटी के उद्यान में चला गया।

स्याह पडती हुई वृक्ष की शाखाओ के मध्य से उसने पश्चिमी क्षितिज पर लाल अंगारे के रग के सूर्य को देखा। अब उसे देखकर आँखे चौंधियाती नही थी। यह उस दिन जैसा ही सूर्य था, जिस दिन उसे क्राइसिस के सर्वप्रथम दर्शन हुए थे और उसका अपना जीवन अपनी स्वाभाविक गति बदल चुका था।

नारी की आत्मा कितनी सीधी और सरल होती है कि आदमी उस पर वैसा कभी भी विश्वास जमा नही पाता। जहाँ कही सीधी पक्ति होती है वहाँ आदमी मकडी के जाले के समान पेचीदगी प्राप्त करना चाहता है कि उसे स्थान मिल जाय और वह उसमें अपने को खो दे। क्राइसिस की आत्मा जो कि एक शिशु की आत्मा के समान सरल थी, डिमिट्रियोस को किसी अध्यात्मवादी उलझन से भी अधिक रहस्यमयी जान पडी। इस औरत को चौपाटी पर छोडकर जब वह घर लौटा तो वह जैसे किसी स्वप्निल अवस्था में था और उन समस्त प्रश्नो का

उत्तर खोजने मे वह अपने को असमर्थ पाता था—जो उसके मस्तिष्क मे उठ-उठकर उसको व्यथित कर रहे थे। आखिर वह उन तीन उपहारो का क्या करेगी ? एक चुराया हुआ आइना साथ रखना अथवा उसे बेचकर मूल्य वसूल कर लेना उसके लिए नितान्त असम्भव होगा। इसी प्रकार एक कत्ल की गई औरत का कन्घा और देवी का मोतियो का हार उसके लिए किस प्रकार उपादेय सिद्ध हो सकते हैं ? और अगर वह उन्हे घर पर रखेगी तो किसी भी दिन उनका पता चल जाने पर उसको भयानक विपत्ति का शिकार बनना पड सकता है। तो फिर उसकी इन मागो का क्या उद्देश्य हो सकता है ? केवल उन्हें नष्ट करना ? वह अच्छी प्रकार जानता था कि स्त्रिया किसी चीज को गुप्त रखने में कोई आनन्द नही लेती और सुखद घटनाएँ उन्हे उस समय तक प्रसन्न नहीं करती जब तक वह जग जाहिर नही हो जातीं। और फिर उसने किस महान् दैवी शक्ति से यह पता लगा लिया है कि उसमे उन तीन असाधारण कृत्यो को सम्पन्न करने की सामर्थ्य है। इसमें सदेह नही कि अगर डिमिट्रियोस चाहता तो क्राइसिस को पकडकर उसकी सेवा मे उपस्थित कर दिया जाता और वह उसकी कृपा पर अवलम्बित होती। वह चाहता तो उसे अपनी पत्नी बनाता, प्रेयसी अथवा दासी चाहे कुछ भी बना सकता था। और केवल उसका सर्वनाश-भर कर देना भी उसके हाथ में था, इससे पहले भी ऐसी क्रान्तियाँ हुई हैं और नागरिक लोग एक वेश्या के जीवन को विध्वस्त करने में दूसरी बार भी न सोचने के अभ्यस्त हो चुके हैं, क्राइसिस को भी तो यह सब पता होगा ही ? तब भी उसने साहस किया !

उसने जितना ही इस समस्या पर विचार किया, उतनी ही अधिक प्रसन्नता उसे हुई कि उसने कितने भिन्न पहलुओ मे उसपर विचार किया है। उसके स्थान पर कितनी ही दूसरी स्त्रिया और होती जो उतनी ही वाञ्छनीय होती हुई भी कितने भद्दे तरीके से अपने को पेश करती। न प्रेम, न स्वर्ग और न हीरे-जवाहर ! केवल तीन अविश्वसनीय

अपराध ! उसने एक गहरी दिलचस्पी उसमे पैदा कर दी थी। उसने समस्त मिश्र का खजाना उसके कदमो पर रखने की बात कही थी। उसने अब अनुभव किया कि अगर वह उस पर राजी हो जाती तो सम्भवत दो ओबोली (गीक सिक्के) भी उसे कभी प्राप्त न हो सकते, और वह उसके प्राप्त होने के पूर्व ही, उससे आजिज आ चुका होता। तीन अपराध निश्चय ही बहुत बडी फीस है, परन्तु उसके लिए वह सब कुछ भी अधिक नही हैं क्योंकि उसने वह सब मागा है और डिमिट्रियोस ने अपने वचन को पूरा करने का प्रयत्न जारी रखा।

वह अपने को इस काम मे तत्काल लगा देना चाहता था, इस डर से कि कही उसमे विरक्ति पैदा न हो जाय। वह सीधा बच्चीज के यहाँ गया। घर उसे बिलकुल खाली मिला। उसने चाँदी का आइना उठा लिया और उद्यान की ओर चला गया।

क्या वह अब सीधा क्राइसिस के दूसरे शिकार की ओर चला जाय-पुजारिन टोनी के पास जिसके बालो मे गजदन्ती कन्घा था। पुजारिन इतनी सुन्दर और कोमल थी कि उसे लगा कि अगर वह समुचित तैयारी के बिना उधर जायगा तो शायद अपने उद्देश्य मे कृतकार्य नही हो सकेगा। उसे डर था कि उसका मन उसे देखकर अभिभूत हो उठेगा। वह फिर पीछे लौट गया और उस महान् परकोटे के आस-पास घूमने लगा। मन्दिर की औरतें अपने खुले हुए कमरो में इस तरह बैठी थी जैसे फूल नुमायश के लिए सजाये गए हो। जितना वैभिन्न्य उनकी अवस्थाओ, किस्मो मे था उतना ही उनके अन्दाजो और पोशाको मे था। जो सर्वाधिक सुन्दरियाँ थी वे फ्रेने के फैशन पर ऐसी पोशाके पहने हुए थी जिनमे उनकी मुखाकृतियाँ ही दीख पाती, शरीर के दूसरे भाग को वह लिनेन के वस्त्रो से आच्छादित रखती थी। कुछ ने ऐसी पोशाके पहनी हुई थी जिनके नीचे उनका सौंदर्य उसी प्रकार सौंदर्ययुक्त प्रतीत होता था जिस प्रकार स्वच्छ सरोवर के तटवर्ती जल में तट पर खडी हुई घास की परछाई छविमान होती है।

जिनमे यौवन था उन्होंने वस्त्र इस तरह धारण किये हुए थे कि देह-यष्टि स्पष्ट दृष्टिगत होती थी। लेकिन जो अपेक्षाकृत प्रौढाएँ थी उनमें भी सौन्दर्य था, उनकी पोशाक उनके नारीत्व को और भी आकर्षक बना रही थी।

डिमिट्रियोस धीरे-धीरे उनके सामने से गुजरता जाता था और उनके सौदर्य की प्रशसा करता हुआ थकता नही था।

उसके जीवन मे ऐसे क्षण कभी न आए कि उसने किसी नारी को देखा हो और भावनाएँ उसमें न जाग उठी हो। गतयौवनाओ के समक्ष उसमें खिन्नता पैदा नही होती थी और अल्पवयस्काओ के समक्ष उसकी नाडियो मे शीतलता का सचार नही होता था। आज तो कोई भी औरत उसे मुग्ध कर सकती थी। अगर वह शान्त और सरल हो तो वह उसकी सुन्दरता के लिए भी अपनी आसक्ति को तिलाजली दे सकता था। ज्यो-ज्यो वह देह-यष्टि की सम्पूर्णता पर विचार करता, त्यो-त्यो उसकी भावनात्मक प्रतिक्रिया शिथिल होती जाती थी। जीवित सौन्दर्य के दर्शन से उसके हृदय मे जितनी वासना उत्तेजित होती थी, उतना ही अफ्रोडीसिया के सौंदर्य का चमत्कार ढीला पडता जाता था। उसने आक्रोश के साथ एक ऐसी महिला का स्मरण किया जिसे वह अपने अक में ले चुका था।

"दोस्त', एक आवाज ने कहा, "क्या तुम मुझे नही पहचानते ?"

उसने पीछे लौटकर देखा। नकारात्मक सकेत करते हुए वह अपने रास्ते पर चलता रहा, क्योकि उसका नियम था कि एक युवती के पास एक से अधिक वार वह कभी नही जाता था। उद्यान में जाते समय इसी सिद्धान्त का वह दृढतापूर्वक पालन करता था। डिमिट्रियोस किसी प्रकार भी दूसरी वार किसी लडकी के पास जाकर पूर्व-समागम के सौन्दर्य को नष्ट नही करना चाहता था।

"क्लोनेरियन !"

"ग्रैथीन !"

"प्लैन्गो !"

"म्नेइज !"

"क्रोवाइली !"

"ग्रायोसा !"

जैसे-जैसे वह उधर से गुजर रहा था, सुन्दरिया आवाज़ देकर अपनी सुन्दरता और रसिकता का बखान करती जाती थी। डिमिट्रियोस अपने पथ पर चलता जा रहा था और जैसी कि उसकी आदत थी वह अकस्मात् किसी को पसद करने की मनस्थिति में ही था कि एक लडकी ने—जो कि नीले वस्त्रो में लिपटी हुई थी—अपना सिर बाहर निकाला और बिना उठे धीरे से कहा, "क्या कही रास्ता नही रुकता ?"

इस गुर की अप्रत्याशितता ने उसे गुदगुदा दिया। वह रुक गया, "दरवाजा खोलो," उसने कहा, "मैं तुम्हे पसद करता हूँ।"

लडकी खुशी से उछल पडी और उसने एक घण्टे पर प्रहार किया जिसे सुनकर एक वृद्धा दासी उपस्थित हुई और उसे दरवाज़ा खोलने का हुक्म दिया गया।

"गार्गो," उसने कहा, "देखो मेरा कोई अतिथि आया है, जल्दी, क्रीट की शराब और केक ?"

और वह डिमिट्रियोस की ओर आमुख हुई, "आपको तगडे पेय की प्यास तो नही है न ?"

"नही", युवक ने हँसते हुए कहा, "क्या तुम्हें है ?"

"मुझे तो होनी ही चाहिए। क्योकि अतिथि लोग—आपको शायद पता नही है--हमेशा शक्तिशाली पेय की माग करते हैं। इधर से आ जाइए। जरा सीढियो का ध्यान रखिएगा। उनमें एक टूटी हुई है ? मेरे कक्ष मे आकर बैठिए, मैं अभी हाजिर होती हूँ ?"

कक्ष बिलकुल ही अलकारविहीन था। आरम्भ करने वाली दूसरी देवदासियो की तरह ही। एक बडा पलग, कुछ गलीचे, और कुछ कुर्सियां थी—जो कमरे को सजाने के लिए अपर्याप्त थी। लेकिन एक विशाल खुली

हुई वीथि से उद्यान, सागर और एलेग्जेण्ड्रिया का दोहरा राजपथ स्पष्ट दिखाई देता था। डिमिट्रियोस दूरी पर स्थित उस नगर की ओर खड़ा होकर देखने लगा।

बन्दरगाह के उस ओर अस्तोन्मुख सूर्य—नौसैनिक—नगरों की अनुपम गौरव-गरिमा! स्वर्गोपम शान्ति थी। सागर के अरुण वितान—तुम किस आत्मा में शान्ति का आविष्कार नहीं करते—वह आत्मा चाहे सुख में विभोर हो या दुख से कातर हो, कौन से चरण हैं—जो तुम्हें देखकर ठिठक नहीं जाते, कौन-सा आनन्द है—जो तुम्हें देखकर स्तब्ध नहीं हो जाता, कौन-सी वाणी है जो तुम्हें देखकर मूक नहीं हो जाती! डिमिट्रियोस ताकता रहा, सूर्य, सागर में आधी डुबकी लगा चुका था और किरणों की एक बौछार-सी क्षितिज पर छाई हुई थी और अफ्रोडाइटी के उद्यान तक फैली हुई मालूम देती थी। एक क्षितिज से दूसरे क्षितिज तक समस्त भूमध्यसागर पर लाल-लाल और मखमली रंग के डोरे फैले हुए थे। उस दोलायमान गरिमा और मेरियोटिस-झील के उस हरित वर्ण मुकुर के मध्य नगर का वह सफेद रंग का समूह मखमल से लिपटा हुआ सा प्रतीत होता था। बीस हजार चपटे भवन के रंगों में बीस हजार रंगीन स्थलों का भान होता था और पश्चिम के अस्तोन्मुख सूर्य के साथ-साथ नगर का सम्पूर्ण कायाकल्प होता जाता था। तब वह बहुत तेज़ी से आग का लाल-लाल अंगारा बन गया। सूर्य अब डूब चुका था और रात्रि के प्रथम प्रहर के साथ हल्की-सी हवा बहनी प्रारम्भ हो गई थी—जो सन्तुलित और पारदर्शी थी।

'ये अंजीर हैं, उधर केक है और यह मधु का पात्र, इधर सुरा और उधर सुन्दरी! अंजीरों का आनन्द दिन-दिन में ही ले लेना चाहिए?" लड़की लौट आई थी और हँस रही थी। उसने नवयुवक को आसनारूढ़ कर दिया था, स्वयं उसके घुटनों के निकट बैठ गई थी और अब हाथों को सिर के पीछे करते हुए अपने केशों से गिरते हुए गुलाब पुष्प को सम्भाल रही थी।

लेकिन डिमिट्रियोस ने जान-बूझ कर अपना आश्चर्य प्रकट किया, "तुम अभी बूढी औरत भी नही हो ?"

"मै औरत नही हूँ। दोनो देवियो की सौगन्ध, बताइए तो फिर मैं क्या हूँ ? एक थ्रेशियन[1] कुली या कोई दार्शनिक हूँ ?"

"तुम्हारी आयु कितनी होगी ?"

"मेरा जन्म ही उद्यान मे हुआ था। मिलेशियन मेरी माता हैं। वह साइथियन[2] हैं—जिसे लोग 'अजा' पुकारते हैं। वह सुन्दर है।"

"क्या तुमने डिडेसकेलियन मे शिक्षा पाई है ?"

"मै अभी तक वही हूँ, छठे क्लास मे। अगले वर्ष मैं विद्यालय से निकल जाऊँगी। लेकिन फिर भी उस घडी को पकडना बहुत आसान नही है।"

"क्या तुम उससे तग आई हुई हो ?"

"आह, अगर तुम जानते होते कि उस्तानियां कितनी कठोर होती हैं। वह हमें एक ही सबक को पच्चीस बार दोहराने को मजबूर करती हैं। इस तरह आदमी थक जाता है। मैं यह सब पसन्द नही करती। आइए, यह अजीर लीजिए। आह, वह नही, यह पका हुआ। मैं आपको खाने की एक नई पद्धति से परिचित कराऊँगी देखो ?"

"मै जानता हूँ। यह तरीका देरतलब है, लेकिन बेहतर नहीं है। मेरे ख्याल मे तुम अपने विद्यालय की बहुत अच्छी छात्रा होगी ?"

"ओह जो कुछ मुझे आता है, वह तो मेरा अपना है, उस्तानियां हमें यह मान लेने पर मजबूर करती हैं कि वे हमसे अधिक जानती है। मुमकिन है वह सब उनके सामान्य जीवन का अग हो किन्तु उन्होने नया कुछ भी आविष्कार नही किया है।"

"क्या तुम्हारे पास अनेक अतिथि आते हैं ?"

---

१ बाल्कन पेनिनसुला पूर्वी प्रदेश, प्राचीन देश थ्रेस का निवासी।

२ सीराक्यूज देश का निवासी—अत्याचारी राजा डायोनीसियस के राज्य काल में।

"सभी बूढे होते हैं—लेकिन क्या किया जाय मजबूरी है। जवान लोग वडे मूर्ख होते हैं ? वे तो चालीस वर्ष की स्त्रियों को ही प्यार करते हैं। मैंने देखा है कि उनके कोई-कोई तो कामदेव के समान सुन्दर होते हैं ? लेकिन ये चुनेंगे किसे—कोई हिप्पोपोटामी। आह, यह देखकर ही आदमी पीला पड सकता है। मैं उम्मीद करती हूँ कि मैं उस स्थिति को पहुँचने की अवस्था तक जीवित नही रहूँगी। मैं वैसी हुई तो लाज से मर जाऊँगी। तुम देखते हो मैं कितनी प्रसन्न हूँ, इतनी अधिक कि मैं अभी तक भी तरुणी प्रतीत होती हूँ। मुझे अपना चुम्बन लेने दो। मैं तुम्हे प्रेम करती हूँ।"

इसके बाद वार्तालाप थोडा कम सतुलित हो गया। यदि उसे धीमा न भी कहे तो ? डिमिट्रिओस को शीघ्र ही विदित हो गया कि उसकी अपरिपक्वता का सदेह निर्मूल था क्योकि उसकी बुद्धि अत्यन्त विकसितावस्था को प्राप्त हो चुकी थी। वह इस बात के प्रति जागरूक थी कि वह यह प्रकट कर सके कि किसी जवान आदमी का आतिथ्य करने के लिए वह बहुत ही उपयुक्त है। और वह इतने विशाल गुणात्मक आतिथ्य के लिए सन्नद्ध थी कि जिसकी न कोई कल्पना कर सकता था और न ही वैसी अनुमति अथवा निर्देश दे सकता था। वह उसे सोचने की सुविधा प्रदान नही करती थी। अन्त में उसने उसका आलिंगन किया। आधे घण्टे तक यह प्रेमलीला चलती रही।

वह उठी और मधुपान में अपनी उँगलियाँ डुबोकर उनसे अपने होठो पर शहद लगा लिया। और वह डिमिट्रियोस के ऊपर चुम्बन करने के लिए झुक आई। उसके लम्बे कर्णफूल उसके कपोलो पर दोनो ओर झूल रहे थे। युवक मुसकराया और कोहनियो के बल झुक गया।

'तुम्हारा नाम क्या है ?" उसने पूछा।

"मिलीटा। क्या द्वार पर तुमने मेरा नाम नही देखा।"

"मैंने उधर देखा ही नही।"

"तुम मेरे कमरे में उसे देख सकते हो। लोगो ने मेरी दीवारो पर

उसे बार-बार लिख छोडा है, मुझे शीघ्र ही दीवारो पर फिर से पुताई करने का कष्ट उठाना पडेगा।"

डिमिट्रियोस ने अपना सिर उठाया। चारो दीवारो के पैनल लिखावट से रगे हुए थे।

"क्यो, कितना अचरज है ?" उसने कहा, "क्या मैं उन्हें पढ सकता हूँ ?"

"ओह, अगर तुम्हारी इच्छा हो तो मेरे यहाँ कुछ भी गोपनीय नहीं है ?"

उसने पढा। मिलीटा का नाम अनेक लोगो के नाम के साथ लिखा हुआ था और अनेक टूटी-फूटी ड्राइग भी बनी हुई थी। कोमल और प्रहसन-वाक्य बहुत ही भद्दे ढग पर लिख दिये गए थे। अतिथियो ने इस मेजबान के सौदर्य का वर्णन किया था और उसके साथियो का मजाक भी उडाया था। यह सब बहुत ही अरुचिकर था, केवल उसके यहा आने वालो की सामान्य मानसिकता का पता चलता था। लेकिन दीवार के एक कोने में कुछ लिखा पढकर डिमिटियोस को धक्का सा लगा।

"यह कौन है, कौन है यह, मुझे बताओ ?"

"कौन, क्या है ?" बालिका ने कहा, "क्या हो गया है तुम्हें ?"

"यहाँ, वह नाम, यह किसने लिखा ?"

और उसकी अँगुलियाँ इस दोहरी पक्ति के नीचे रुक गई।

मिलीटा और क्राइसिस

क्राइसिस और मिलीटा

"आह," उसने उत्तर दिया, "मैंने ही, मैंने ही तो यह लिखा है।"

"लेकिन यह क्राइसिस कौन है ?"

"वह मेरी अन्तरग मित्र है।"

"यह तो मैं मान लेता हूँ। लेकिन मैंने तुमसे यह तो नहीं पूछा था। कौन-सी क्राइसिस ? बहुत सी क्राइसिस हो सकती हैं ?

"मेरी मित्र तो परम सुन्दरी है, क्राइसिस-गैलिली की रहने वाली।'

"तुम उसे जानती हो ? तुम उसे जानती हो ? तो मुझे बताओ वह कहाँ की रहने वाली है। मुझे उसके बारे में सब कुछ बताओ ?"

"वह पलग पर बैठ गया और लडकी को उसने अपनी जांघों पर बिठा लिया।"

"तो तुम उसे प्यार करते हो ?" उसने पूछा।

"तुम्हारे लिए वैसा पूछने का महत्त्व क्या है ? जो कुछ तुम्हे मालूम है, मुझे बता दो। मैं सभी कुछ सुनने के लिए बेकरार हूँ।"

"ओह ! मुझे तो कुछ भी मालूम नहीं, केवल इतना ही कि दो बार वह मेरे पास आ चुकी है, और तुम यह कल्पना कर सकते हो कि मैं उस प्रकार की सूचनाएँ उससे किस प्रकार ले सकती थी। उसे पाकर मैं अत्यन्त प्रसन्न थी और इस प्रकार के प्रश्न करके मैं किसी तरह भी समय नष्ट नही करना चाहती थी।"

"वह कैसी है ?"

"एक सुन्दर युवती के समान ही उसकी सुघड देह यष्टि है। लेकिन तुम मुझसे क्या कुछ कहलाना चाहते हो ? क्या मैं उसके सिर के प्रत्येक बाल का वर्णन तुम्हारे लिए करूँ और कहूँ कि वह सुन्दर है। और फिर वह औरत है एक सच्ची औरत है। जब मैं उसके बारे में सोचने लगती हूँ, तो मैं नितान्त एकाकी अनुभव करने लगती हूँ।"

और उसने अपनी बाहें डिमिट्रियोस के गले में डाल दी।

"तुम उसके बारे में कुछ भी नही जानती," उसने कहा, "कुछ भी नही ?"

"मैं जानती हूँ मैं जानती हूँ कि वह गैलिली की रहने वाली है। कि वह लगभग बीस वर्ष की हो चुकी है, और वह यहूदियो के क्वाटरो में रहती है, और उद्यान के निकट ही नगर के उस छोर पर, लेकिन बस इससे आगे कुछ भी नही !"

"और उसके जीवन के बारे में, उसके साथियो के बारे में, क्या तुम मुझे कुछ भी नहीं बता सकती। वह तुम्हारे पास आती है, इससे

स्पष्ट है कि उसकी अनेक महिला मित्र हैं। लेकिन क्या पुरुषो मे उसके मित्र नही है।"

'निश्चय ही। पहली बार जब वह इधर आई थी तो एक आदमी उसके साथ था और मै सौगन्ध खाकर कहती हूँ कि वह उसके प्रति उदासीन नही थी। केवल आँख देखकर ही बता सकती हूँ कि वह किसी के साहचर्य में आनन्द अनुभव कर रही है अथवा नही, लेकिन वह दोबारा भी आई तो इस बार वह बिलकुल ही अकेली थी, और शीघ्र ही मेरे पास दोबारा आने का वायदा कर गई थी।"

'क्या तुम बता सकती हो कि इस उद्यान मे उसकी कोई मित्र और भी है या कोई नही है ?'

"हा, एक और औरत उसके ही देश की है। चिमारिस एक गरीब औरत ?'

'वह कहाँ रहती है। मै उससे मिलना चाहता हूँ ?'

"वह जगल मे एक वर्ष तक सोती रही है, उसने अपना मकान बेच दिया है। लेकिन मैं उसकी गुफा को जानती हूँ, मै तुम्हे उधर ले चल सकती हूँ। मेरी सैण्डिल मुझे पहिनाने का कष्ट क्या तुम कर सकते हो ?

डिमिट्रियोस ने तेजी के साथ चित्रकारीयुक्त चमडे के फीते मिलीटा के दुबले टखनो पर बाध दिए। और तब उसे छोटी-सी पोशाक भी उसे पहिनानी पडी, जोकि उसने केवल अपने कन्धो पर डाल ली और फिर वह तेजी के साथ बाहर निकल गए।

पार्क बहुत बडा था, वह काफी देर तक चलते रहे। थोडी-थोडी दूर पर पेडो के नीचे पडी रहने वाली लडकियाँ उनका नाम लेकर पुकारती थी, और फिर वही लेट रहती थी और आँखो पर हाथ रख लेती थीं।

मिलीटा उनमे से अनेको को जानती थी और उन्होने बिना रोके ही उसका चुम्बन भी कर लिया था। किसी जजर वेदी के निकट से गुज़रते हुए उसने दो-तीन फूल तोडकर उस पर चढा दिए थे।

रात अभी तक अँधियारी नहीं हुई थी। ग्रीष्मकालीन दिन के प्रकाश में इतनी तेजी होती है कि सूर्य के डूबने के बाद भी रोशनी की चिलक मालूम पड़ती रहती है। पीले और गीले तारकगण—जो आकाश की गहराई की अपेक्षा कुछ ही कम हलके थे—एक हल्की-सी थिरकन के साथ चमक रहे थे और वृक्षों की परछाइयों को देखकर उन्हें चीह्ना नहीं जा सकता था।

"आह !" मिलीटा चिल्लाई, "मामा, वह उधर मामा है !"

एक महिला जो तिरंगी मसलिन पहने हुए थी—जिस पर नीले रंग के छींटे पड़े हुए थे, अकेली शान्त कदमों के साथ आ रही थी। ज्यों ही उसने इस बालिका को देखा तो वह दौड़कर उधर आई, उसे ज़मीन से ऊपर उठा लिया और अपनी गोद में उठाकर उसके कपोलों पर जोरों से चुम्बन किया।

"मेरी नन्ही बच्ची, मेरी प्यारी, तुम किधर जा रही हो ?"

"मैं किसी को साथ ले जा रही हूँ चिमारिस से मिलाने के लिए। और तुम ! क्या तुम भ्रमण कर रही हो ?"

"फ़ोरिन्न को प्रसव हो चुका है। मैं उसके पास गई थी। उसके पलंग के पास ही बैठकर मैंने खाना खाया है।"

"और उसकी गोद में क्या आया है, लड़का ?"

"जुड़वाँ पुत्रियाँ, मेरी प्यारी, और मोम की गुड़ियों की तरह। तुम आज रात ही उधर चली जाना। वह तुम्हें दिखा देगी ?"

"ओह, कितनी बढ़िया बात है ! दो देवदासियाँ। उनके नाम क्या रखे हैं ?"

"दोनों के ही पेनीचीज नाम हैं क्योंकि वह अफ्रोडाइटी के पर्व के अवसर पर पैदा हुई हैं। ये तो दैविक पड़ियाँ हैं। दोनों सुन्दर निकलेंगी।"

उस औरत ने बालिका को नीचे उतार दिया और डिमिट्रियोस की ओर देखकर स्वयं ही बोली, "आपने मेरी लड़की को कैसा पसन्द किया।

क्या मैं उस पर गर्व कर सकती हूँ।"

"आप दोनो को एक दूसरे से सन्तोष होना चाहिए," उसने शान्ति-पूर्वक उत्तर दिया।

"मामा का चुम्बन करो," मिलीटा ने कहा।

उसने धीरे से उसकी भौहो पर एक चुम्बन कर दिया। पाइथिया ने चुपके से उसके मुंह पर बदले में चुम्बन अकित कर दिया और वे विदा हो गये।

डिमिट्रियोस और वह लडकी वृक्षो के नीचे-नीचे चलते रहे। और वह देवदासी अपना मुंह फेरकर उन्हे देखती हुई काफी देर तक खडी रही। आखिरकार वे उद्दिष्ट स्थान पर पहुंच गए। मिलीटा ने कहा

"वह यहां है।"

चिमारिस एक वृक्ष और झाडी के मध्य एक छोटे-से लॉन पर बाएँ पैर पर बल दिए खडी थी। उसके पास लाल गलीचे जैसी कोई वस्तु थी जिसे लॉन पर बिछाकर जब वह किसी को आता देखती तो लेट जाती थी। डिमिट्रियोस अपनी बढती हुई उत्सुकता से उसके ऊपर विचार कर रहा था। उसकी आकृति उन कृषकाय स्त्रियो की तरह थी जिनके अन्तर की सुलगती हुई आग उनको सदैव जलाती रहती है। उसके पृथुल होठ, उसकी असाधारण दृष्टि, उसकी बडी-बडी पलकें उसके मुंह पर खेलने वाली लिप्सा और रिक्त लालसाओ की दोहरी भावनाओ को व्यक्त करती थी। उसकी देह का गठन एक शक्तिशाली वासना का द्योतक था और उसके बाल जोकि एक-दूसरे से उलझकर गुंथ गए थे और अब जगली सुअर जैसे लगते थे और उसकी लज्जाहीनता के साक्षी थे, यह ज़ाहिर करते थे कि वह कितनी अकिंचन है। और अपनी उदरज्वाल को शान्त करने के लिए उसने अपनी प्रसाधन सामग्री, अपना कन्घा और पिन तक भी बेच डाले थे।

उसके पास ही एक पालतू बकरा अपने सख्त सुमो पर खडा हुआ

था। वह एक सोने की जजीर द्वारा एक वृक्ष से बँधा हुआ था। यह जजीर पहले शायद उसकी मालकिन के गले में चार लडो के रूप में सुशोभित होती थी।

"चिमारिस," मिलीटा ने कहा, "उठो, तुमसे कोई कुछ पूछने के लिए आये हुए हैं।

वह यहूदिन उठकर बैठी नही, केवल ऊपर देखने लगी। डिमिट्रियोस आगे बढा।

"तुम क्राइसिस को जानती हो," उसने पूछा।

"हाँ।"

"तुम उससे अकसर मिलती रहती हो?"

"हाँ।"

"क्या तुम मुझे उसके बारे मे कुछ बता सकती हो?"

"नही।"

"क्यो नही—क्यो नही बता सकती हो?"

"नही।"

मिलीटा सुनकर चमत्कृत हो गई। "उससे कुछ बोलो," उसने कहा।

"उसका विश्वास करो। वह उससे प्रेम करता है। वह उसका भला चाहता है।"

"मैं साफ देख रही हूँ कि वह उसे प्यार करता है," चिमारिस ने उत्तर दिया। "अगर वह उसे प्यार करता है, तो उसका भला नही चाहता। अगर वह वस्तुत उसे प्यार करता है तो मैं उससे नही बोलूँगी।"

डिमिट्रियोस क्रोध से काँपने लगा, किन्तु फिर भी वह खामोश रहा।

"मुझे अपना हाथ दिखाओ," उस यहूदिन ने उससे कहा, "मैं हाथ देखकर यह निश्चित कर लूँगी कि मैं गलत हूँ अथवा सही।"

उसने उस युवक का वायां हाथ अपने हाथ मे ले लिया और चाद की तरफ किया। मिलीटा देखने के लिए आगे झुकी और हालांकि वह कुछ भी समझ सकने में असमर्थ रही तथापि रेखाओ की विनाशकारिता तो अत्यन्त स्पष्ट हो उठी थी।

"तुम क्या देख रही हो ? डिमिट्रियोस ने कहा।

"मै देख रही हूँ क्या मै कह सकती हूँ कि मैंने क्या देखा है। क्या तुम मुझ से प्रसन्न रह सकोगे। क्या तुम मेरा विश्वास भी कर सकोगे। पहले तो मुझे तुम्हारे हाथ में सब और सुख और समृद्धि दीख पडती है। लेकिन उसका अन्त रक्तपात में है।"

"मेरा खून ?"

"एक औरत का खून। इसके बाद दूसरी औरत का खून। इसके बाद अपना स्वय का खून, लेकिन कुछ समय बाद।"

डिमिट्रियोस न अपने कन्धे हिलाए और तब वह पीछे घूम उठा। और मिलीटा को देखा जो कि बडी तेज रफ्तार से वृक्षो की छाया में बढी जा रही थी।

"वह डर गई है,' चिमारिस ने कहा, "लेकिन आपकी रेखाएं न मेरी परेशानी का कारण हैं और न उनकी। चीजो को अपनी नैसर्गिक स्थिति में चलने देना चाहिए। क्योकि समय की गति को बदला नहीं जा सकता। तुम्हारे जन्म से ही तुम्हारा भाग्य सुनिश्चित था।"

और उसने उनका हाथ इतना कहकर छोड दिया।

अध्याय दस

प्रेम और मृत्यु

"एक स्त्री का खून ! इसके उपरान्त एक और स्त्री का खून। सबसे बाद मे अपना खून, लेकिन कुछ समय बाद !"

ये शब्द डिमिट्रियोस के मस्तिष्क में घूम रहे थे—वह चलता जाता था और उन पर विचार करता जाता था। उसके मन में एक नया विश्वास पैदा होता जा रहा था और उसकी वेदना भी मुखर होने लगी थी। नक्षत्रो की गति और मृतको के शवो से होने वाली आकाशवाणियों में उसका विश्वास नही था। इस प्रकार की समस्याएँ अत्यन्त उलझाने वाली होती । लेकिन अपने हाथ की रेखाओ के प्रभाव का अनुमान करके जो कि नितान्त व्यक्तिगत जन्म-कुण्डली से सम्बन्ध रखता है—उसकी बेचैनी बढ रही थी। और इसीलिए चिमारिस की भविष्यवाणी उसके मस्तिष्क मे चक्कर लगा रही थी।

उसने अपने बाये हाथ की हथेली को जहाँ कि उसका रहस्यमय और अपरिहार्य भविष्य अकित था स्वय भी देखना शुरू कर दिया था।

सबसे पहले उसने हाथ के ऊपर के भाग पर जोर दिया। वहा एक चन्द्राकार चिह्न अकित था—जिसका अग्रभाग अगुलियो की जड की ओर झुका हुआ था। उसके नीचे एक लाल रग की चौकोर पक्ति, गाठ की तरह खिची हुई थी और उसमें तेज लाल रग के निशान बने हुए थे। एक दूसरी बारीक-सी पक्ति साथ ही बनी हुई थी जो पहले समानान्तर चलकर पहुँचे की ओर मुड गई थी। अन्तिम रूप से एक तीसरी और पक्ति—छोटी और साफ—अगूठे की जड को स्पष्ट अकित

करती थी, जो कि हल्की-हल्की अनेक पक्तियो से गुंथी हुई थी। उसने वह सभी-कुछ देखा, लेकिन उसे यह मालूम नही था कि उम रहस्य-प्रतीक को वह किस प्रकार समझे, उसने अपना हाथ अपने मुंह पर फेर लिया और विचारणीय विषय को भूल जाने की कोशिश करने लगा।

क्राइसिस, क्राइसिस, क्राइसिस! यह नाम ज्वर की तरह उसकी घमनियो में धडकने लगा। उसे सतुष्ट करने के लिए, उस पर विजय प्राप्त करने और उसे अकशायिनी वनाने के लिए, उसे लेकर सीरिया, यूनान, रोम अथवा कही भी चला जाने के लिए—जहां उसके लिए प्रेयसी वनने के लिए कोई स्त्री न होगी और क्राइसिस के लिए प्रेमी वनने के लिए कोई न होगा—उसे तत्काल प्रयत्नशील होना पडेगा, तत्काल!

उसके द्वारा मागे गए तीन उपहारो में से एक उपलव्ध हो चुका है। दो अभी भी वाकी रहे हैं। कन्घा और गले का हार।

पहले कन्घा प्राप्त करना चाहिए।

और उसकी चाल में तेजी आ गई।

सूर्यास्त के उपरान्त प्रत्येक शाम को वडे पादरी की पत्नी एक सगमरमर की वेंच पर वैठती थी। उसकी पीठ जगल की ओर होती थी और वहा से सागर का दृश्य अच्छी प्रकार देखा जा सकता था। डिमिट्रियोस यह सव अच्छी प्रकार जानता था क्योंकि अनेक दूसरी स्त्रियो की तरह वह भी उससे प्रेम करती थी और उसने यह कह छोडा था कि किसी भी दिन जिस दिन वह उसे उपलव्ध करना चाहे—वहां से प्राप्त कर सकता था।

इसी चीज को मन में रखकर वह उधर चला।

वह वहा वैठी हुई मिली, लेकिन उसने उसे अपनी ओर आते हुए नही देखा था, वह आखे वन्द किए हुए वैठी थी। उसकी देह वेंच की पीठ पर टिकी हुई थी और उसकी वाहे फैली हुई थी।

वह मिश्र देश की रहने वाली थ । उसका नाम टोनी था। वह

सुर्ख रंग की पारदर्शी ट्यूनिक पहिने हुए थी और उस पर कोई बकसुआ या पेटी नहीं लगी हुई थी। उसकी छाती पर बने हुए दो सितारों को छोडकर और किसी प्रकार की मीनाकारी नहीं थी। इस बारीक वस्त्र पर अस्तरी द्वारा तहें बना दी गई थीं और उसके कोमल घुटनों पर पहुँच कर वह सुन्दर घेरा बनता था। नीले चमड़े से बनी सैंडिलें उसके पैरों में सुशोभित थीं, उसकी त्वचा बिल्कुल किशमिशी रंग की थी। उसके होठ भरे हुए थे, उसके कन्धे हल्के थे, और उसकी इकहरी और लचकदार देह उसके उन्नत उरोजों के भार को वहन करने में असमर्थ प्रतीत होती थी। वह ऊँघ रही थी। उसका मुँह कुछ खुला हुआ था और वह कोमल स्वप्नों में खोई हुई थी।

डिमिट्रियास आहिस्ता से उसके निकट बेंच पर बैठ गया।

वह धीरे-धीरे उसके निकट से निकटतर खिसकता गया। वह उसके कोमल तन्द्रा झलकों को, जो कि सुनिश्चित और गहरे थे और बगल की गोलाई बनाते हुए कोमलता के साथ उर-प्रदेश में विलीन हो गये थे—निर्निमेष दृष्टि से देखता रहा। उसके नीचे लाल मसलिन की उसकी पोशाक फँसी पड़ी हुई थी। कोमल स्पर्श से डिमिट्रियास ने उसकी पोशाक को छुआ। और उसकी गर्म त्वचा में हल्की सी थिरकन पैदा हुई।

लेकिन दासी फिर भी जागी नहीं।

उसका स्वप्न क्रमशः टूटता जा रहा था, किन्तु अभी समाप्त नहीं हुआ था। उसके खुले हुए होठों में से उसकी साँस तेजी से आने लगी थी और उसने एक लम्बे और अस्पष्ट वाक्य का उच्चारण किया और उसका स्वप्नाक्रान्त सिर पीछे की ओर ढुलक गया।

उतनी ही सावधानी के साथ डिमिट्रियास ने अपना हाथ पीछे खींच लिया और उसने ठण्डी हवा की ओर अपना हाथ उठा दिया।

सहस्र और नीले खजानों के पीछे रात्रि के गहरे प्रकाश के नीचे सागर ठाठें मार रहा था। किसी दूसरी पुजारिन के उपप्रदेश की तरह

वह सागर तारो की छाया मे हिलोरें मार रहा था। और उस महा-स्वप्न में विभोर था जो कि उसे इतनी वेगवान गति प्रदान करता है और दुनिया के लोग जिसके रहस्य को उस क्षण तक जानने का प्रयत्न करते रहेंगे जब तक युगो के उपरान्त प्रलय-काल मे उसके अस्तित्व का ही लोप नही हो जायगा। चन्द्रमा अपना विराट् रक्तिम पात्र सागरो पर झुकाये हुआ था। बहुत दूर उस निर्मल वातावरण में जो अनन्त काल से भूलोक और स्वर्गलोक को मिलाये हुए है, एक हल्की लाल रेखा—जिसमें लाल-लाल शिराये-सी उभरी हुई थी उदीयमान चन्द्रमा के नीचे सागर के प्रकाश पर इस प्रकार काँप रही थी जैसे रात्रि के आलिंगन के परिणामस्वरूप उत्पन्न सिहरन—जो स्पर्श के बाद भी यथावत् बनी रहती है।

टोनी अभी भी नीद मे खोई थी। उसका सिर झुका हुआ था और उनकी परछाई उसकी पोशाक पर स्पष्ट अंकित थी।

चन्द्रमा की लालिमा जो कि अभी क्षितिज से ऊपर नही उठा था—सागर के अंचल से होती हुई उसकी ओर आ रही थी। इसका जाज्वल्यमान, भाग्यशाली प्रकाश उसकी देह को एक ऐसी चिन्गारी से सराबोर किये हुए था—जो जैसे अचल हो, लेकिन धीरे-धीरे वह प्रति-बिम्ब उस पर से उठने लगा और एक के बाद उसकी श्यामल केशराशि के वृत्त स्पष्ट होने लगे। और कन्धा, वह शाही कन्धा—जिसकी इच्छा साइसिस को थी—अकस्मात् उभर आया और लालिमा उसकी शुभ्रता पर झलकने लगी।

तब उसने टोनी का मुँह अपने हाथो मे ले लिया और अपनी ओर आमुख किया। उसकी आँखें खुल गई विस्फारित हो उठी। 'डिमिट्रियोस ? डिमिट्रियोस ? तुम ?'

और उसने उसे अपनी बाहो में भर लिया।

"ओह ?" उसने ऐसी वाणी में कहा जिसमे सुख का संगीत छलका पड़ता था।

"ओह तुम आ गये तुम मेरे पास हो यह तुम्ही हो डिमिट्रियोम जिसके हाथो में मेरी नीद खुली है। यह तुम हो, मेरी आराध्या के पुत्र जो मेरे जीवन की अधिष्ठात्री हैं ।"

डिमिट्रियोम चमककर पीछे हट गया । एक ही निमिष में वह उसके पार्श्व में आ चुकी थी। "नही ?" वह चिल्लाई, "तुम किस चीज से भयभीत होते हो ? तुम्हारे लिए मैं वह नही हूँ जिसके चारो ओर पुजारी की सार्वभौम सत्ता छाई हुई है जिसके कारण लोग मुझ से दूर भागते हैं। मेरे नाम को भूल जाओ डिमिट्रियोम ! प्रेम से परिप्लावित स्त्रियो का कोई नाम नही होता। जिसे तुम जानते हो मैं वह नही हूँ। मैं वह स्त्री हूँ जो तुम्हे प्यार करती है—अपने रोम-रोम से प्यार करती है।"

डिमिट्रियोम ने अपना मुँह नही खोला।

"सुनो, एक बार और सुनो," उसने फिर बोलना शुरू किया, "मैं जानती हूँ तुमपर किसका अधिकार है। मैं तो किसी प्रकार भी अपनी सम्राज्ञी की प्रतिस्पर्धिनी नही बनना चाहती। नही, डिमिट्रियोम, मुझे ऐसी गुलाम मत समझो जिसे छोड दिया गया हो, और शीघ्रता के साथ हृदय से भी निकाल दिया गया हो। मुझे वैसी ही अकिंचन और नगण्य औरत समझो जो कि सडक पर खडी होकर प्रेम की भीख मांग रही हो। वास्तव मे, मैं उन औरतो से कुछ भी अधिक नही हूँ। और तुम्हे, कम से-कम तुम्हे देवोपम सौन्दर्यराशि प्राप्त हुई है ।

डिमिट्रियोम, जो अत्यन्त दुःख-कातर था—अपनी तीव्र दृष्टि से उसे भेदता रहा। "और तुम क्या सोचती हो, भाग्यविहीना, कि देवताओ से किस प्रकार की शक्तियाँ प्रस्फुटित होती हैं।"

"प्रेम ?"

"या मृत्यु।"

वह चौंक उठी।

"क्या मतलब है तुम्हारा ? मृत्यु हाँ, मृत्यु लेकिन

वह मुझसे कितनी दूर है।   साठ वर्ष मे उसकी कल्पना कर सकती हूँ। लेकिन तुम मुझसे मृत्यु की चर्चा क्यो करते हो, डिमिट्रियोस ?"

उसने सामान्य रूप से कहा, "आज रात को मृत्यु ?"

भयाक्रान्त, वह चीखती हुई अट्टहास कर उठी, "आज रात को   नही—नही   किसने कहा है तुमसे। मैं क्यो मरूँगी ? मुझे जवाब दो   बोलो   यह कितना भयानक मजाक करते हो तुम   ?"

"तुम्हे मृत्युदण्ड प्राप्त हो चुका है ?"

"किससे ?'

"तुम्हारे अपने भाग्य द्वारा ?"

"उसे तुम कैसे जानते हो ?"

"मैं जानता हूँ, टोनी, क्योंकि मैं तुम्हारे भाग्य मे संश्लिष्ट हूँ, तुम्हारे भाग्य में यही है कि तुम्हारी मृत्यु मेरे ही हाथो होगी और इसी बेंच पर ?"

उसने उसकी कलाई पकड़ ली।

"डिमिट्रियोस," वह आतंकित होकर हकलाने लगी, "मैं चिल्लाऊँगी नही। मैं सहायता के लिए भी किसी को बुलाऊँगी नही। मुझे बोलने तो दो,   " और उसने स्वेद-स्नात अपना मस्तक पोछा, "अगर मुझे तुम्हारे ही हाथो मरना है   मृत्यु   मेरे लिए प्रिय होगी   मैं उसे स्वीकार करती हूँ। मै उसकी कामना करती हूँ, लेकिन सुनो   "

एक पत्थर से दूसरे पत्थर की ओर लड़खड़ाती हुई वह उसे वन के अन्दर ले जाती रही।

"क्योकि आज तुम्हारे हाथो मे वह सब कुछ वर्तमान है जो हम देवताओ से स्वीकार करते हैं   वह स्फुरण जो हमे जीवन प्रदान करता है और जो हमसे उसे छीन भी लेता है। अपने दोनो हाथो मे मेरे नेत्रो का प्रसार करो डिमिट्रियोस   प्रेम का हाथ   और मृत्यु का हाथ भी   ऐसा करो तो मैं अपने अन्तर मे खेद की लेशमात्र भावना

के बिना मृत्यु का सहर्ष आलिंगन करूँगी ।"

उसने अपनी दृष्टि ऊपर फेरी, पर उसमे इस याचना का कोई उत्तर नही था। लेकिन जिस 'हाँ' को उसने कभी भी कहा नही था, इसने उसी हाँ की कल्पना कर ली थी।

एक क्षण के लिए बदली हुई टोनी ने अपना मुँह ऊपर उठाया—जिसपर सद्य जात वासना खेल रही थी, निराशा के उस निविड रूप ने भय को उसके अन्तर से दूर भगा दिया था।

वह फिर बोली नही। लेकिन उसके होंठो से जिन्हे एक बार खुलकर फिर कभी बन्द नही होना था—हर साँस एक संगीत का स्वर फूँकता जाता था, जैसे कि वह आलिंगन से पूर्व ही किसी के प्यार मे आत्मविस्मृत हो चुकी हो।

तथापि उसे सम्पूर्ण विजय प्राप्त हो चुकी थी।

उसकी तरुण और कोमल देह सुख के आवेश मे स्पन्दित हो चली थी और यह सुख शाश्वत आनन्द से किसी प्रकार कम नही था। लेकिन [illegible] ने यह ध्यान नही रखा कि उसकी पूर्वकल्पित [illegible] हो चुकी हो। [illegible] उसने उसे गाढ़ आलिंगन मे आबद्ध किया तो [illegible] मुझे अब मरने दो, डिमिट्रियोस। [illegible]"

—[illegible] डिमिट्रियोस ने टोनी को एक बार फिर [illegible] थी। तब उसकी केशराशि के [illegible] मे चमकने वाली पिन को निकालते हुए उसने उसे उसके [illegible] के वामाङ्ग मे भोंक दिया।

अध्याय ग्यारह

चन्द्र-ज्योत्स्ना

तथापि अगर वह चाहता तो वह औरत प्रेम के प्रतिदान स्वरूप उसे अपना कथा क्या स्वयं अपने केश भी खुशी से दे सकती थी । अगर उसने उससे कुछ माँगा नहीं तो केवल इसलिए कि वह यह मानता था कि यास्मिन केवल कथा नहीं चाहती । वह चाहती है कि मैं वह अपराध करूँ । उसे यह लालसा नहीं थी कि वह कोई प्राचीन हीरा अपने बालों में खोंस कर रखे । इसलिए उसने यह स्वीकार कर लिया था कि उसे हत्या करनी ही है ।

अब भी, वह यह सोच सकता था कि प्रेम की वेदना से पीड़ित क्षणों में औरतों के समक्ष जो प्रण किये जा सकते हैं उन्हें उस अन्तरिम अवकाश में भुलाया भी जा सकता है और उससे प्रेमी की नैतिकता पर कोई आँच नहीं आता और अगर इस विस्मरण के लिए कोई बहाना पारिवारिक आवश्यकता बन सकता है तो इससे अधिक क्या कुछ हो सकता है क्योंकि उस प्रण को पूरा करने में किसी बेगुनाह के प्राण जा सकते हैं । लेकिन टिमिड्रियोस इस परिपाटी से तर्क करने के लिए तैयार नहीं था । वह जिस दुस्साहस का अनुसरण कर रहा था उससे इतनी प्रवंचना से बिना सम्बन्ध होने की कभी उसने कल्पना भी नहीं की थी । उसे यह भय था कि दुखद घटना के वाञ्छित दृश्य को स्थगित करने के लिए अगर उसने कोई कोर-कसर छोड़ दी तो आगे चलकर कहीं उसे पछताना न पड़े । किसी दुखान्त घटना को घटित कर देने के लिए कहीं कोई साधारण-सी बात ही जिम्मेदार होती है ।

कैसेन्ड्रा[1] की मृत्यु, उसने विचार किया, "आगामैम्नन[2]" के निर्माण के लिए अपरिहार्य नहीं थी, लेकिन अगर वह सम्पन्न न होती तो सारी-की सारी 'ओरेस्टीज[3]' निरर्थक सिद्ध हो जाती।

यही कारण था कि टोनी के केश काट लेने के बाद उसने हाथी दाँत का वह कंघा अपनी पोशाक में छिपा लिया और उस घटना पर थोड़ा भी विचार किये बिना ही वह अपना तीसरा कार्य भी सम्पन्न करने के लिए आगे बढ़ गया—वह तीसरा काम था अफ्रोडाइटी के गले का हार प्राप्त करना।

मन्दिर में प्रवेश करने के लिए बड़े दरवाजे से जाने के लिए वह बाध्य नहीं था। बारह देवदासियाँ जो बारह द्वारों की रक्षा करती थीं, निषेध के बावजूद भी उसे अन्दर जाने की सुविधा प्रदान कर सकती थीं, परन्तु वह इस अपराध को सम्पन्न करते समय इतना बोदापन क्यों दिखाये जबकि पवित्र स्थान तक पहुँचने के लिए एक दूसरा गुप्त द्वार भी [illegible] था।

डिमिट्रियोस उद्यान के एक निर्जन प्रान्त की ओर चला गया, वह स्थान [illegible] की पुजारिन के अधीन था। उसने वृक्षों को गिना और [illegible] द्वार खोला और बन्द करके अन्दर चला गया।

[illegible] कठिनाई से उसने कब्र का पत्थर उठाया जिसके नीचे संगमरमर का दरवाजा बना हुआ था। वह एक-एक सीढ़ी नीचे उतरने लगा।

वह अच्छी तरह जानता था कि सीधी दिशा में उसे ६० कदम

1 कैसेन्ड्रा—ग्रीक पौराणिक [illegible]—इलियड की एक पात्री [illegible] भविष्यवाणी [illegible] प्राप्त थी लेकिन उसे अभिशाप दिया गया था कि उसकी [illegible] विश्वास नहीं किया जाएगा।

2 आगामैम्नन—[illegible]नियां का राजा। [illegible] का पुत्र, [illegible]

3 [illegible] और [illegible] का पुत्र [illegible] अपोलो के आदेशानुसार [illegible] करके अपने पिता की हत्या का [illegible]।

रखने हैं। और उसके बाद दीवार को छूते हुए उसके सहारे चलना है। ताकि मन्दिर के मध्यवर्ती जीने से ठकराने से वह बच जावे।

पृथ्वी के अन्त प्रदेश में वास करने वाली एकान्त शीत ने उसके मस्तिष्क को धीरे-धीरे बिलकुल शान्त कर दिया।

कुछ ही क्षणो में वह छोर पर आ पहुँचा।

वह ऊपर चढ गया और द्वार को खोला।

रात्रि बाहर बिलकुल साफ थी किन्तु देवालय में अन्धकार था। जिस समय उसने अत्यन्त सावधानी से उन चूं-चूं करने वाले कपाटो को बन्द कर लिया तो उसे अकस्मात् हडकम्प-सा होने लगा—जैसे कि वह पहाडो की बर्फानी शीत से घिर गया हो। वह सिर उठाने का भी साहस नही कर सका। अन्धकारपूर्ण खामोशी उसका दम घोटे डाल रही थी और निर्जनता अनेक अज्ञात आत्माओ से आक्रान्त प्रतीत होती थी। अपने माथे पर उसने हाथ फेरा। उसकी स्थिति उस आदमी की तरह थी जो अपने जीवित होने की चेतना के प्राप्त करने के भय से जागना ही न चाहता हो। आखिरकार उसने देखा।

चन्द्रमा की रोशनी में गुलाब के रग की प्रस्तर-पीठिका पर अनेक बेशकीमत रत्नकोप धारण किये देवी जीवितात्मा-सी प्रतीत होती थी। वह नगी थी और अनेक नारी-सुलभ वर्णो से अनुरंजित थी। उसके एक हाथ में उसका प्रतीकवादी मुकुट था, और दूसरे हाथ मे वह अपने सतलडे कण्ठहार को थामे हुई थी। एक मोती जो कि दूसरो से वडा था उसके उर प्रदेश मे ऐसे लग रहा था जैसे वर्फानी बादलो के बीच दूज का चाँद चमक रहा हो। और यह हार उन सच्चे मोतियो से बना था जो कि एण्डचोमीन की सीपियो के अन्दर पानी की बूंदो से बने थे।

डिमिट्रियोस का हृदय एक महती श्रद्धा से अभिभूत हो उठा। उसे इस सत्य में विश्वास होने लगा था कि अफ्रोडाइटी वहाँ मौजूद है। वह अब अपनी कलाकृति को स्वय पहचानने में असमर्थ था क्योंकि उसके आज के स्वरुप मे उतना ही विराट् अन्तर था। उसने अपने हाथ

आराधना की भावना से जोड़े और उसके मुँह से अनायास वही शब्द निकलने लगे जो फ्रीजियन देवी की वंदना में बहुधा कहे जाते हैं।

एक अलौकिक, दीप्तिमान, अप्रत्यक्ष, नग्न और पवित्र भाव उसे मूर्ति के ऊपर झिलमिलाता हुआ दिखाई दिया। उसने अपनी दृष्टि उसके ऊपर गड़ा दी क्योंकि उसे भय था कि कहीं दृष्टि के हटाने से उसका वह दिवास्वप्न भंग न हो जाए। वह बहुत अत्यन्त कोमल पगों से आगे बढ़ा, अपनी अंगुलियों से उसने मूर्ति के गुलाबी अंगूठे का स्पर्श किया, अपने को यह विश्वास दिलाने के लिए कि वस्तुतः वह मूर्ति की ही उपस्थिति में है जिसने अत्यन्त दुर्निवार रूप से उसे अपनी ओर खींच लिया था। वह ऊपर चढ़ता चला गया जब तक कि वह उसके निकट पहुँच नहीं गया, और सफेद कन्धों पर हाथ रखते हुए उसकी आँखों में देखने लगा।

वह काँपने लगा, मूर्च्छा उस पर छाती जा रही थी और वह आह्लाद से अट्टहास कर रहा था। उसका हाथ उसकी बाँहों पर होते हुए [illegible] और [illegible] पर आ गया था और वह उसे दुलारने लगा था। [illegible] शक्ति का [illegible] करके वह उस अलौकिक शक्ति के [illegible] गया था। उसने मुकुट से अपनी [illegible] देखी, उसको [illegible] और चाँद की रोशनी में उसे घुमाया और [illegible] पुनः वहीं स्थापित कर दिया। [illegible] मुड़े हुए हाथ का चुम्बन लिया, [illegible] उन्नत वक्ष और [illegible] के किंचित् मुड़े हुए होठों को भी चूमा। तब वह पुनः पीठिका की ओर उतर आया और [illegible] बाहुओं को देखते हुए वह अभिनन्दनीय मुड़े हुए सिर को [illegible] रहा।

चुपचाप उसने कण्ठहार के सातो लड मूर्ति के वक्ष पर से हटा लिये और नीचे उतर आया ताकि वह यह दूर से देख सके कि अब वह मालूम कैसी पडती है।

तब उसे लगा कि जैसे अब वह किसी नींद से जागा है। उसे स्मरण हुआ कि वह क्या करने के लिए उधर आया है, और वह काम जो प्राय सम्पन्न हो चुका है कितना राक्षसी कृत्य था। कनपटियो तक रग उभर आया था। फाइसिस की स्मृति एक छलावे की तरह उसकी आँखो के सामने घूम गई। उसने उन सब चीजो को स्मरण करना आरम्भ कर दिया जो उसे उस फाइसिस के सौंदर्य मे सन्दिग्ध प्रतीत हुई थी। मोटे होठ, फूले हुए बाल और मन्थर गति। वह उसके हाथो की बनावट भूल चुका था लेकिन उस कल्पित मूर्ति के बेढगेपन को और भी घिनौना बनाने के लिए उसने उसके लम्बे हाथो की कल्पना कर ली थी। उसकी मन स्थिति उस आदमी जैसी थी जोकि उषा के आलोक में खडे होकर यह विश्वास नही कर सकता कि पिछली सन्ध्या का सौंदर्य आखिर उसे किस प्रकार प्रभावित कर सका था। वह न तो कोई बहाना खोज सका और न कोई कारण ही। यह तो स्पष्ट था कि एक दिन के लिए उसके मस्तिष्क मे पूर्णरूप से पागलपन सवार हो चुका था, एक शारीरिक बेचैनी और व्याधि उसे पीडित करती रही थी। अब उसने उस रोग से निवृत्ति पा ली थी, लेकिन उस उन्माद से उसका सिर अभी तक भी झनझना रहा था।

अपने स्वय की सम्पूर्ण पुनरावृत्ति की स्थिति को पहुँचने के लिए वह मूर्ति के समक्ष मन्दिर की दीवार से लगकर खडा रहा। छत के वर्गाकार खुले भाग से चन्द्रमा की रोशनी अन्दर आ रही थी। अफ्रो-डाइटी उस प्रकाश में जाज्वल्यमान दीख पडती थी। और उसकी आँखे चूँकि अन्धकार मे थी, इसलिए वह उसकी दृष्टि के लिए लालायित हो उठा था।

इस प्रकार रात बीत गई। दिन का उदय हो गया और उषा का

सुनहरी आलोक तथा तदुपरान्त निमगिस का मर्मान्तक मूर्ति पर खिल उठा।

डिमिट्रियोस ने अब सोचना बन्द कर दिया था। वह हाथीदांत का कंघा और चांदी का आइना जो उसके कमरों में छिपे हुए थे—उसके मस्तिष्क से बिलकुल निकल चुके थे। वह अब कोमल निराशा में निमग्न हो गया था।

बाहर परिंदों का कलरव गूंज उठा था। पक्षी उद्यान में सीटियाँ बजाकर गाने लगे थे। स्त्रियों की कण्ठ-ध्वनि और अट्टहास बाहर दीवारों की जड़ों से प्रतिध्वनित होकर आने लगे थे। जागी हुई धरती से प्रभात का उद्वेग फूट पड़ा था। डिमिट्रियोस का अन्तर अनेक सुन्दर भावनाओं से परिप्लावित हो उठा।

सूरज काफी ऊँचा उठ चुका था और छाया की परछाईं अब सरक चुकी थी। तभी उसने बाहर सीढ़ियों पर किसी के ऊपर चढ़ने की अस्पष्ट आवाज सुनी।

निस्सन्देह देवी के चरणों में अर्पित करने के लिए कुछ लोग कोई बलि-पात्र ला रहे होंगे क्योंकि यह अफ्रोडाइटी के पर्व का पहला दिन था। उसने सोचा कि शायद सुन्दरियां अपनी-अपनी श्रद्धा के अनुसार चढ़ावा चढ़ाने के लिए जलूस बनाकर आ रही होंगी।

डिमिट्रियोस उन्हें नजरअन्दाज कर जाना चाहता था।

वह पवित्र वेदी जिसपर मूर्त्ति प्रतिष्ठित थी, पृष्ठभाग में इस प्रकार खुलती थी कि केवल बडे पुजारी और मूर्तिकार दो को ही उसका रहस्य विदित था। वहां पुजारी खडा कर उस नव-युवती को आदेश देता था जिसकी आवाज ऊँची और साफ होती। और पर्व के तीसरे दिन जो चमत्कारपूर्ण उक्तियां मूर्त्ति के मुंह से निकलती थी—वही वाक्य पुजारी दोहराता था। इसके द्वारा ही उद्यान तक पहुँचना सम्भव था। डिमिट्रियोस ने अन्दर प्रवेश किया और तांबे के बने कोने में ठिठक गया।

दो स्वर्णद्वार जोर के साथ खुले और जलूस दाखिल हो गया।

अध्याय बारह

निमन्त्रण

आधी रात के समय किसी ने उनके द्वार पर तीन बार खटखटाया, जिसके कारण वह जाग उठी।

वह दिनभर वह दो इफीसियन बालिकाओं को आसपास लेकर सोती रही थी। उन्हें देखकर कोई तीन बहन समझने की भूल कर सकता था। रोडीज इस गैलीलीयन के वक्ष में सटी थी, मिर्टोक्लिया नीचे मुंह किये सोई थी। उसकी आंखें उसके बाजू पर थी और कमर खुली हुई थी।

क्राइसिस ने सावधानी से अपने को मुक्त कर लिया। तीन कदम रखकर पलंग पर दूसरी तरफ आई और नीचे उतर गई और फाटक खोलकर बाहर देखा। द्वार से अनेक स्वरों की ध्वनि आती सुन पड़ी।

"कौन है ज्वाना? कौन है देखो तो?" उसने कहा।

"नॉक्रेटीज आए हैं और आपसे सम्भाषण करने के अभिलाषी हैं। मैं उनसे कह रही हूँ कि आपको अवकाश नहीं है।"

"आह, कितनी बेहूदा बात है, मैं तो बिलकुल मुक्त हूँ। नॉक्रेटीज, अन्दर आ जाओ, मैं अपने कमरे में हूँ।"

और वह अपनी शैया पर वापस आ गई।

नॉक्रेटीज कुछ देर ड्योढ़ी पर खड़े सकपकाते रह गए कि कहीं उस स्थिति में अन्दर प्रवेश करना कोई अनधिकार चेष्टा तो नहीं है। दोनों गायिकायें नींद की खुमारी तोड़ती हुई उठ बैठी, लेकिन अपने स्वप्नों से वह अभी तक अपने को विलग नहीं कर सकी थी।

"आसन ग्रहण कीजिए ?" क्राइमिस ने कहा, "मैं परस्पर कोई पर्दा-परहेज नही रखना पसंद करती। मैं जानती हूँ आप मेरे लिये नही आए। लेकिन आप मेरे लिये क्या मेरा समुपस्थित करना चाहते है।"

नॉसेटीज एक प्रख्यात दार्शनिक था जो तीस वर्ष से भी अधिक समय से बच्चीज का प्रेमी था और उसने कभी भी उसके साथ विश्वासघात नही किया था, हालांकि इसका कारण उसकी पवित्रता से अधिक उसकी अकर्मण्यता ही थी। अपने भूरे बाल उसने कटवाकर छोटे कर लिये थे। उसकी दाढ़ी डिमास्थनीज की तरह ही सार मूँछ होंठों के बराबर कटी हुई थी। और वह सफेद ऊन की बिना सीवन की पोशाक पहने हुए था।

"मैं तुम्हारे लिए एक निमन्त्रण लेकर आया हूँ," उसने कहा, "बच्चीज कल एक सहभोज कर रही है और उसके बाद एक जश्न भी होगा। अगर तुम आना स्वीकार कर लो तो हम लोगों की संख्या सात हो जायेगी। आशा है हमे निराश नहीं करोगी।"

"जश्न! उसके लिए क्या अवसर है ?"

"वह अपनी सर्वसुन्दरी दासी अफ्रोडीसिया को स्वतंत्र कर रही है। नर्तकियाँ और नट लोग भी अपने करतब दिखायेंगे। मेरा ख्याल है कि तुम्हारी दोनो मित्र वहा जाने वाली हैं और उन्हें अब यहा नहीं रहना चाहिये। क्योंकि दूसरे लोग पहले से ही उधर अभ्यास कर रहे हैं।"

"ओह, यह तो आपने ठीक ही कहा," रोडीज बोली 'हम तो यह भूल ही गई थी। उठो, मिटा, हमे बहुत देर हो चुकी है।'

लेकिन क्राइमिस ने इसका विरोध किया। "नहीं, नहीं, अभी नहीं। आप कितने बुरे हैं कि मेरी मित्रों को मुझसे छीने लिए जा रहे हैं। अगर मुझे इसका संदेह हो जाता तो मैं कभी आपका स्वागत न करती। ओह, देखो तो वे तो जाने के लिए तैयार भी हो चुकी हैं!"

"हमारी पोशाकों मे कोई झंझट नही है," बालिका ने कहा, "और

हम इतनी सुन्दरी भी नही हैं कि बहुत अधिक समय तक शृंगार करती जायें।"

"कम से-कम मन्दिर मे तो मैं तुमसे मिलने की आशा कर ही सकती हूँ।"

"हाँ, कल प्रात काल हम लोग वस्त्र लायेंगे। मैं बटुए में से एक ड्रेचमा ले रही हूँ। क्राइसिस हमारे पास खरीदने के लिए कुछ भी तो नही है। कल तक तो कुछ भी हमारे पास आने वाला नही है।"

वे दौडती हुई बाहर चली गई। नॉक्रेटीज एक क्षण के लिये उनके पीछे बद होने वाले द्वार की ओर देखता रह गया, और तब उसने अपनी बाहे आपस में बाध ली और क्राइसिस की ओर मुडते हुए बोला, "बहुत अच्छा, तुम अपना काम बडी अच्छी तरह चलाती हो।"

"किस तरह ?"

"क्या तुम समझती हो कि यह रवैया अधिक समय तक चलता रहेगा। अगर यह इसी प्रकार चलता रहा तो हम लोगो को शीघ्र ही बैंथीलोज की ओर प्रस्थान करना पडेगा ।"

"ओ, नही," क्राइसिस ने कहा, "मैं उसे स्वीकार नहीं करती। मैं जानती हूँ, अच्छी तरह, कि लोग परस्पर तुलना करते हैं। यह बेवकूफी है और मुझे तो आश्चर्य इस बात का है कि आप जोकि एक विचारक होने का दावा करते है—इस चीज के फूहडपन को क्यो नहीं देख सकते ?"

"तुम्हे क्या अन्तर दिखाई देता है ?"

"अन्तर का तो प्रश्न ही नही उठता। एक और दूसरे के अन्दर कोई समानता हो ही नही सकती, यह बात तो बिलकुल ही साफ है।"

"मैं यह नही कहता कि तुम गलत कहती हो, लेकिन मै तुम्हारे तर्क जानना चाहता हूँ।"

"ओह, वे तो मैं बडे सक्षिप्त रूप मे प्रस्तुत कर सकती हूँ, सावधान होकर सुने। एक औरत, जब वह प्रेम की मारी बन चुकी हो,

तो एक तैयारशुदा औजार की तरह होती है। सिर से पैर तक वह साधारण रूप से और विलक्षण ढंग से प्रेम के लिए ही बनी होती है। केवल वही जानती है कि प्रेम किस प्रकार किया जाता है। निष्कर्ष यह निकला कि एक औरत का दूसरी औरत के प्रति प्रेम सम्पूर्ण हो सकता है। पुरुष और स्त्री के मध्य उसकी पवित्रता उतनी अक्षुण्ण नही रह पाती। पुरुषो के प्रति उसे केवल मैत्री ही पुकारा जा सकता है। बस मुझे और कुछ भी नही कहना ?" क्राइसिस ने कहा।

"तुम प्लेटो पर अधिक कठोर हो जाती हो, मेरी बच्ची।"

"महापुरुष देवताओ से अधिक कुछ भी नहीं होते जोकि प्रत्येक परिस्थिति में महान् होते हैं। पल्लाज व्यापार के बारे में कुछ भी नही समझता, सोफोक्लिस को चित्रकला का ज्ञान नहीं था, प्लेटो को पता नही था कि प्रेम किस प्रकार किया जाता है। दार्शनिक, कवि और वाग्मी—जो उसके नाम की अपील करते हैं—वे भी उससे किसी प्रकार बेहतर नहीं हैं। और अपने हुनर मे वे चाहे जितने दक्ष हो किन्तु प्रेम को दुनियाँ में वे बिलकुल असफल हो उठते हैं। मैं अनुभव करती हूँ नॉक्रटीज, कि मेरा विचार ठीक है।"

दार्शनिक ने अपना मुंह बिचकाया, "तुम थोडी अमर्यादित बात कह रही हो," उसने कहा, "लेकिन मैं किसी प्रकार भी यह अनुभव नहीं करता कि तुम्हारा कहना गलत है। मेरा रोष वास्तविक नही था। मैं मानता हूँ कि दो स्त्रियो के प्रेम में माधुर्य है तो सही, लेकिन अगर उन दोनो मे ही नारीत्व की भावना बराबर बनी रहे। वे लम्बे केश रखें, स्त्रियोचित पोशाक पहने और पुरुषो का कृत्रिम अनुकरण करने से बाज आए, जिससे यह प्रकट न हो कि वे अपने विरोधी सेक्स से प्रतिस्पर्धा के वशीभूत वैसी मानसिक स्थिति रखती हैं। हाँ, उनका प्रेम निश्चय ही अनुपमेय हो सकता है क्योंकि शारीरिक संसर्ग न होने के कारण उनका पारस्परिक भावनाओ का प्रवेग निरन्तर ही बना रहता है और इसी कारण सुसंस्कृत रहता है। वे पुरुषो की तरह आलिंगन नही करती,

वे अधिक कोमलता के साथ भावना की सर्वोच्च स्थिति का अनुभव करती हैं। उनके उल्लास में कोई उद्वेग नही होता। वे किसी प्रकार भी पाशविक उद्वेगो का अनुभव नही करती और यही कारण है कि वेथी-लोजो से श्रेष्ठ होती हैं। पशुओ की विकृत प्रेम-लीला से मानवीय प्रेम केवल दो दैवी गुणो के कारण विभिन्न होता है आलिंगन और चुम्बन। यही दो चीज हैं—जिन्हे स्त्रियाँ जानती हैं—जो हमारी चर्चा का विषय हैं। इन्ही के द्वारा उनका प्रेम सम्पूर्णता को प्राप्त होता है।

"इनसे अधिक की आप किसी से अपेक्षा नही कर सकते" क्राइसिस ने कुछ उद्विग्न होते हुए कहा, "तो फिर आप मुझे धिक्कारते किस लिए हैं ?"

'मै तुम्हे इसलिए धिक्कारता हूँ कि तुम एक लाख जो बन चुकी हो। पहले ही औरते स्वय पुरुषो की उपस्थिति में सुख का अनुभव नही करती हैं अब शीघ्र ही तुम हम लोगो का स्वागत करना बन्द कर दोगी। मै तुमसे ईर्ष्या के कारण ही तुम्हे धिक्कार रहा था।

यहाँ आकर नॉक्रेटीज ने अनुभव किया कि उनका वार्तालाप अनावश्यक रूप से लम्बा चलता रहा है। वह आहिस्ता से उठ कर खड़ा हो गया। 'मै बच्चीज से कह सकता हूँ कि वह तुम पर भरोसा करे ?' उसने पूछा।

"मै आऊँगी,' क्राइसिस ने कहा।

दार्शनिक ने उसका चुम्बन किया और आहिस्ता से बाहर निकल गया। तब उसने दोनो हाथो की खुमचिया भर ली और जोर-जोर से बोलने लगी हालाकि वह अकेली ही थी।

"बच्चीज बच्चीज वह उसके पास से आ रहा है और अभी तक किसी को कुछ भी पता नही है। तो क्या आइना अभी तक वहीं पर है ? डिमिट्रियोस मुझे भूल चुका है। अगर वह पकड़ा गया है तो मै मारी गई, क्योकि अब वह कुछ भी कर नही सकेगा। लेकिन यह भी सम्भव है कि सब कुछ हो चुका हो। बच्चीज के पास इसे

आइन भी हैं, जिनका वह बहुधा प्रयोग करती है। शायद उसे अभी तक पता नही चला है हा दैव, किसी तरह भी उसका पता नही चलाया जा सकता। और शायद आह! ज्वाला! ज्वाला!"

दासी उपस्थित हो गई।

"मुझे मेरी चौपड दो," क्राइसिस ने कहा, "मैं पासा फेंकना चाहती हू।" और उसने चार छोटी-छोटी गुट्टिया हवा में उछाली।

"ओह! ओह! ज्वाला, देखो, अफोडाइटी का दाव आ गया है।"

ज्वाला ने पूछा, "आपने क्या मागा था ?"

"ठीक है," क्राइसिस ने निराश होकर कहा, "मैं तो कुछ भी मांगना भूल गई थी। मैंने किसी-न-किसी चीज के बारे मे सोचा अवश्य था किन्तु मुंह मे कुछ भी बोला नही था। क्या उसका भी एक ही अर्थ होता है।"

"मेरे ख्याल मे ऐसा नही है, आपको पासा फिर से फेंकना चाहिए!"

क्राइसिस ने दोबारा पासा फेंका। "यह मीडाज आया है, इसके बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है।"

"यह कहना तो मुश्किल है। इसका परिणाम अच्छा भी होता है और बुरा भी, इस पासे का परिणाम दूसरे पासे मे विदित हो जायगा। एक गुट्टी को दोबारा फेंको।

क्राइसिस ने तीसरी बार भी पासा फेंका। लेकिन ज्योही गुट्टी नीचे गिरने वाली थी। वह चिल्लाई, "कियोस "

और वह सिसक उठी।

ज्वाला स्वय अत्यन्त बेचैन हो उठी थी, कुछ भी कहना उससे बन नही पडा। क्राइसिस काउच पर गिरकर सिसकने लगी। उसके बाल उसके सिर के चारो फैल गए। आखिरकार उसके सिर पर क्रोध सवार हो गया। "तुमने मुझे दोबारा पासा फेंकने के लिए कहा ही क्यों? मेरा विश्वास है कि पहला ही पासा ठीक था।"

"अगर आपने मन में कोई इच्छा की थी तो ठीक है? अगर नहीं,

तो नही, यह तो केवल आप ही स्वय जान सकती हैं," ज्वाला ने कहा।

"इसके अतिरिक्त यह जुआ कुछ भी सिद्ध नही कर सकता। यह यूनानी खेल है। मुझे उसमें विश्वास नही है। मैं किसी और चीज पर परीक्षा करूँगी।"

उसने अपने आसू पोछ लिये और कमरे के पार निकल गई। उसने बाईस गुट्टियो से भरा एक बक्स खोला और उन्हे दूसरे बक्स पर बिखेर दिया। फिर हीरे की नोक वाले कलम से हिब्रू भाषा के अलग-अलग बाईस अक्षर अकित किए। वह कबला के अक्षर थे जो उसने गैलीली में सीखे थे, 'यह वह चीज है जिसका मुझे विश्वास है। यह वह चीज है जो कभी धोखा दे ही नही सकती।" उसने कहा, अपनी झोली बनाओ। मैं उसे ही अपना थैला मान लेती हूँ।"

उसने बाईस गुट्टियो को दासी की झोली मे फेक दिया, और मनमे दोहराती गई, "क्या मैं अफ्रोडाइटी का कठहार पहन सकूँगी? क्या मैं अफ्रोडाइटी का कठहार पहन सकूंगी क्या मैं अफ्रोडाइटी का कठहार पहिन सकूंगी ?'

और उसने दसवी गुट्टी उठाई जिस पर साफ शब्दो में लिखा हुआ था, "हां।'

अध्याय तेरह

क्राइसिस का गुलाब

वह एक अनोखा जलूस था, सफेद और नीला, पीला और गुलाबी तथा हरित।

तीस वारांगनाएँ फूलों की टोकरियाँ और सफेद फाख्ताएँ लिये जिनके पैर लाल होते हैं, मुख मण्डलों पर अत्यन्त झीना नील अवगुण्ठन और बहुमूल्य आभूषण धारण किये, आगे बढ़ रही थीं।

एक बूढा, सफेद दाढी वाला पुजारी जो कि अपने सिर पर एक कोरे कपडे की पगिया लपेटे हुए था, श्रद्धानत इस जलूस के आगे-आगे चल रहा था और उसे वेदी की ओर ले जा रहा था।

वे गा रही थी, उनका संगीत सागर की तरह गम्भीर था, मध्याह्न की वायु की तरह, एक दबी निःश्वास की तरह और किसी कामुक मुख की तरह मूर्च्छनायुक्त था। पहिली दो के हाथों में चंग था जिसे वे अपने बायें हाथ की कोहनी पर सम्भाले हुई थीं, जो लचकीली लकडी की तरह खम खाती चल रही थीं।

उनमे से एक आगे बढी और कहा "मैं ट्राइफेरा, ओ प्रिय कीप्रिस, तुम्हे नीला अवगुण्ठन अर्पित करती हूँ। यह वस्त्र मैंने अपने हाथों बुना है ताकि आपकी कृपा यथावत् मुझ पर बनी रहे।"

दूसरी "ओह राज्य की मंगलमयी देवी! मैं मॉमेरियन आपके चरणोंमें लिली पुष्प का गजरा और नर्गिसी पुष्प का गुलदस्ता अर्पित करती हूँ। मैंने उन्हे धारण किया है, और उसके पराग मे, सिक्त करके तेरे नाम

का जाप किया है। ओ विजयिनी, प्रेम की इस जर्जरित भेट को स्वीकार कर।"

एक ओर "ओ स्वर्णिम साइथेरिया, मैं टिमो तेरे चरणों में अपना ब्रेसलेट अर्पित करती हूं। जिस प्रकार यह चांदी का सर्प मेरे नग्न बाजू पर लिपटा हुआ है उसी प्रकार तू मेरा प्रतिशोध उसकी गर्दन पर जकड दे—तू उसे जानती है।"

मिर्टोक्लिया ओर रोडिस अब आगे आ गई थी, और एक-दूसरे के हाथ-मे-हाथ डाले हुई थी। "हम, स्मर्ना की दो फाख्ता—जिनके पख दुलार के समान शुभ्र हैं और जिनके चरण चुम्बन की तरह लाल हैं तेरी सेवा में प्रस्तुत करती है। ओ अमेथिया की द्विगुणी देवी, उन्हे हमारे सम्मिलित करो द्वारा स्वीकार करो, अगर यह सत्य है कि केवल भद्र अडोनिस से तुम्हारा काम नही चलता और उससे भी कोमलतर आलिंगन से तुम्हारी निद्रा में व्याघात होता है।

एक बहुत ही कमसिन देवदासी अब की बार आगे आई "मैं ट्रोगे-थिया तेरी वन्दना करती हूँ। और उदार एपिस्ट्रोफिया कामदेव के सम्मोहन स तू उसके अन्तर को मुक्त कर और उसके नेत्रों मे उसकी ज्योति पैदा कर, जोकि आज मुझे अगीकार नही करता है, मैं तेरे चरणों मे मेंहदी की शाखा अर्पित करती हूँ क्योंकि यह वृक्ष तुझे बहुत पसन्द है।'

दूसरी "ओ पाफिया तेरी इस पवित्र वेदी पर मै कालीगियन नादी के साठ ड्रामेक्स अर्पित करती हैं, यह धनराशि क्लोमेनीज से प्राप्त चार मिन्क्स का शेष है। अगर मेरी भेंट तुझे अस्वीकार हो तो उससे भी उदार प्रेमी मुझे प्रदान कर।

मूर्ति के सम्मुख अब केवल एक बालिका रह गई थी जिसने अपने को सबसे बाद मे रख छोडा था। उसके हाथ मे क्रोकस-पुष्पों का केवल एक हार था और पुजारी इतनी हल्की भेंट अर्पित करने के लिये उसको घृणा की दृष्टि से देख रहा था।

उसने कहा "मैं इतनी समृद्ध नही कि चादी के सिक्के तेरी सेवा मे भट कर सकूं, ओ तेजस्वी ओलम्पियन, और फिर मैं तुझे क्या ऐसा दे सकती हूँ जो तेरे पास नही है। पीले और हरे फूलो मे गुंथी हुई यह माला तेरे चरणो मे अर्पित है। और अब "

उसने अपना आचल देवी के सम्मुख समर्पण के रूप में फैला दिया, " मैं जो सम्पूर्ण रूप से तेरी हूँ मुझे देख मेरी, प्राणप्रिय मैं तेरे उद्यान मे मन्दिर की दासी बन कर ही मरना चाहती हूँ। मैं शपथ लेती हूँ कि मेरी कामना की पात्र केवल तू होगी, मैं केवल तुझे ही प्रेम करने की शपथ खाती हूँ। और इस ससार का त्याग करती हुई तुझमें ही अपने को अर्पित करती हूँ।"

पुजारी ने तब उसे सुगन्धियो से परिप्लावित कर दिया और मिर्टो-विलया द्वारा भेट किया हुआ अवगुण्ठन ओढा दिया। वे दोनो एक दूसरे दरवाजे से होकर उद्यान की ओर चले गये।

यह जलूस अब समाप्तप्राय प्रतीत होता था क्योंकि सभी वाराग-नाए अब वापस जाने की सोचने लगी थी, उसी समय एक वारागना जो शायद कही पीछे पिछड गई थी और घबराई हुई सी थी, डयोडी पर दिखाई दी।

उसके हाथ मे कुछ भी नही था और लगता था कि वह भी अपने सौंदर्य का ही समर्पण करने आई है। उसकी केशराशि स्वर्ण के दो अम्बारो के समान प्रतीत होती थी, जो कानो को ढकती हुई, उसकी गर्दन के पृष्ठभाग पर सात लहरियां डालती चली गई थी।

नासिका कोमल थी, सकुचित नासिका-रन्ध्र, जोकि कभी-कभी उसके भरे हुए और अनुरजित मुंह के ऊपर थिरकते हुए ओष्ठकोणो के द्वारा अजीव तरह से फडक उठते थे। हर कदम पर उसकी लोचदार देह तरग की तरह आन्दोलित होती थी उसके गोल और प्रभावशाली कटि-प्रदेश के नीचे सुन्दर नितम्बो का नियमन उसमें एक नए जीवन का सचार करता था।

उसकी आंखे असाधारण थी, सुनील लेकिन गहरी और उज्ज्वल और पुतलिया चन्द्रकान्त मणि की तरह थी जो कि बिलकुल ढकी हुई सी थी। वह आंखे इस तरह देखती थी जैसे कोई अपसरा गाती हो

पुजारी उसकी तरफ मुडा और उसके मुंह से निकलने वाले शब्दो के लिए खडा रहा।

उसने कहा मैं क्राइसिस, क्राइसिया तुम्हारी अभ्यर्थना करती हूं। और तेरे चरणो पर तुच्छ भेंट अर्पित करती हूं, उसे अगीकार कर सुनो, मेरी पत रखो प्रेम करो और उसका उद्धार करो जो तेरे ही आदर्श पर अपना जीवन व्यतीत कर रही है।"

उसने अनेक मुद्रिकाओ से खचित अपने दोनो हाथ आगे फैला दिये और अभ्यर्थना मे झुक गई।

वह धूमिल सगीत पुन प्रारम्भ हो गया। बांसुरी की वही ध्वनि मूर्ति की ओर बढती हुई दिखाई दी। साथ ही पुजारी ने जो सामग्री हवन कुड मे जलाई थी उसका धुआं भी मूर्ति की ओर बढने लगा।

वह धीरे से ऊपर उठकर खडी हुई और उसने अपनी पेटी मे से एक ताबे का आइना निकाला—जो कि वहां बधा हुआ था। उसने कहा, "ओ रात्रि की देवी—जो हाथो और होठो को मिलाती है—मैं तेरे चरणो मे यह आइना अर्पित करती हूं। इसने वह अनेक आकृतियां और मुख दर्शन देखी हैं जो तेरी अनुकम्पा से अनेक बार परिवर्तित हो चुकी हैं, ओ, महाशक्तिमान, तुझे, जो कि अपने होठ केवल वासना की परितृप्ति के लिए ही हिलाती है।'

पुजारी ने आइना मूर्ति के चरणो मे रख दिया। क्राइसिस ने अपने लम्बे बालो मे से एक लम्बा लाल ताबे का पिन खीच लिया जो कि देवी की प्रिय धातु से बना हुआ था।

'तुझे' उसने कहा, "एफ्रोडाइटी जिसका रश्मिमय वर्ण ऊषा और सागरो की फेनिल मुस्कान से उदय हुआ, तुझे मुक्ताओ से खचित नग्न सौंदर्य, जिसने सागर के तट पर उन्मत्त बयार से तेरी

भीगी हुई केशराशि सँवारी तुझे क्राइसिस यह आइना भेंट करती है। इस कंघे ने उन केशों का शृंगार किया जो तेरी ही अनुकम्पा से मिले हैं। वही आइना तुझे समर्पित है जो मनुष्य के शरीरों की रचना और नियमन करता है।

उसने अपना कंघा बूढ़े पुजारी के हाथ में दे दिया। और मरकत-मणि के बने हार को गले से उतारने लगी।

"तुझे," उसने कहा, "जिसने युवतियों के लज्जारुण कपोलों की लालिमा को प्रशान्त किया, जो हास्य के साथ परामर्श भी देती हैं, तुझे, जिसके नाम में हम अपने प्रेम की स्थापना करती हैं, क्राइसिस अपना कंठहार अर्पित करती है, यह एक ऐसे आदमी ने मुझे दिया है जिसका नाम भी मैं नहीं जानती और इसका प्रत्येक मोती एक ऐसा चुम्बन है, जिसमें तेरा सन्निवास रहा है।"

वह तीसरी बार भी हार्दिकतापूर्वक नीचे झुकी अपना कंठहार उसने पुजारी के हाथों में रख दिया और चले जाने के लिए कदम उठाया।

पुजारी ने उसे रोक लिया, "इन बहुमूल्य भेंटों के बदले में तुम देवी से क्या वरदान माँगती हो?"

वह सिर हिलाकर मुसकराई और हँसते हुए कहा, "मैं कुछ भी नहीं माँगती।"

तब वह जलूस के साथ-साथ चल दी। एक टोकरी से गुलाब उठाया और उसे अपने मुंह से लगाया और बाहर चली गई।

एक के बाद दूसरी औरत उसके पीछे चली गई, और खाली मन्दिर के कपाट फिर से बन्द हो गए।

केवल डिमिट्रियोस ही वहाँ बन्द रह गया जो ताँबे की पीठिका में छिपा हुआ था। इस दृश्य में एक भी दृश्य अथवा एक भी मुद्रा उसके सामने आने से नहीं बची थी और अब वह खड़ा था तो बहुत देर तक अचल और एक असन्तुष्ट भावावेश ने उसे फिर से पीड़ित कर दिया था।

उसे विश्वास था कि उसने अभी-अभी जो भूल की है उससे उसने अपने को मुक्त कर लिया है। और उसने सोचा था कि भविष्य में कोई भी वस्तु उसे इस अज्ञात नारी की छाया मे पुन खींचकर नही ले जा सकती।

लेकिन उसका निर्णय क्राइसिस की अनुपस्थिति में ही तो हुआ था।

नारी! ओ नारी, अगर तू अपने से प्रेम कराना चाहती है तो अपने आपको दिखा, लौटकर आ और सर्वदा निकट और सुलभ रह। जिस समय वह वारांगना मन्दिर की ड्योढी पर आई थी उसने इतनी वेगवान भावना का अनुभव किया था कि उसे केवल इच्छा-शक्ति के बल पर परास्त नही किया जा सकता था। डिमिट्रियोस उस आकर्षण मे इस प्रकार बंध गया था, जैसे कि विजेता के रथ के पहिए से कोई बर्बर दास बांध लिया गया हो। उससे वचना मात्र छलना थी, और बिना जाने ही स्वाभाविक रूप से उसने अपना हाथ उस पर रख दिया था।

उसने उसे बहुत दूर से ही आते हुए देख लिया था क्योंकि वह अपनी वही पीली पोशाक पहिने हुए थी जोकि उसने चौपाटी पर घूमने जाते समय पहिन रखी थी। वह धीमी और मादक गति से चल रही थी और उसके नितम्ब हल्के-हल्के आन्दोलित हो रहे थे। वह सीधी उसी के पास आई थी जैसे कि उसने अपनी दिव्य दृष्टि से उसे पत्थर के पीछे भी देख लिया हो।

प्रथम क्षण से ही उसने यह समझ लिया था कि वह पहली ही मुठभेड में उसके चरणों पर लोटने लगेगा। उस पॉलिश किए हुए तांबे के आईने को जब वह पुजारी के हाथों में दे रही थी तो देने से पूर्व उसने आईने में अपना मुंह देखा था और देखकर उसके नेत्रों में पैदा होने वाला सम्मोहन खेलने लगा था। जिस समय बालों का बन्ध निकालने के लिए उसने अपना हाथ बालो पर रखा था और दाक्षिण्य भाव से नतशिर होकर जिस समय वह उसे सिर से खोलने लगी थी तो

पोशाक के अन्दर से ही उसकी देह की समस्त रेखाएँ स्पष्ट हो उठी थी, और बाजू पर पड़ने वाले सूर्य के ताप से प्रस्वेद की कुछ बूंदें झलकती दीख पड़ रही थीं। और अन्त में वजनदार मरकत मणि से बने अपने कण्ठहार को गर्दन से खोलने के लिए जब उसने अपनी उस रेशमी पोशाक को हटाया था जिसके नीचे उसके उरोज छिपे हुए थे—तो डिमिट्रियोस को सहसा प्यार की एक उन्मादी भूख ने दबोच लिया था। लेकिन क्राइसिस ने बोलना शुरू कर दिया था

वह बोल रही थी और उसके शब्द डिमिट्रियोस को आक्रोश से झकझोर रहे थे। वह अपने सौन्दर्य में स्वयं हठपूर्वक आनन्द का अनुभव कर रही थी और उसे एक सार्वभौम भावना का रूप दे रही थी। वह मूर्ति की ही तरह गौरवर्ण थी और उसकी केशावलि अपार स्वर्ण राशि से भरी हुई थी। उसने अपने घर के द्वार यात्रियों के प्रवास के लिए मुक्त कर दिए थे। अपने सौन्दर्य को उसने कुपात्रों के लिए उन्मुक्त कर दिया था और उसने उस सौन्दर्य को ऐसे लोगों के लिए खुला रख दिया था जो किसी प्रकार भी कला की सराहना करने में समर्थ नहीं समझे जा सकते। अपने जीवन में उसने गौरव का अनुभव किया था और वह गौरव भावना उसके होठों, केशों, और उसकी धार्मिकता में गहरी पैठ गई थी।

जिस आयासहीन गति से वह मन्दिर की ओर आ रही थी, उसे देखकर डिमिट्रियोस अत्यन्त आकम्पित हो उठा था। उसकी हार्दिक इच्छा थी कि उसकी अप्रतिम गति का केवल वही आनन्द ले सके और जब वह उसके निकट आ जाय तो उसके पीछे कपाट बन्द करके उसके अस्तित्व का एकाकी अधिनायक अपने को सिद्ध कर दे। सच तो यह है कि कोई स्त्री उस समय और भी आकर्षक प्रतीत होती है जब कि अपने प्रेमी के लिए ईर्ष्या की पात्र भी बन जाय।

इसलिए जिस कण्ठहार की उसने कामना की थी, उसके बदले में जब वह अपना हरितवर्ण कण्ठहार देवी के चरणों में अर्पित करके लौटी तो मानवीय

भाकाक्षा उसके होठो पर इस प्रकार खिली हुई थी मानो वह गुलाब के पुष्प की पखुड़ियाँ चलते-चलते अपने दातो से कुतरती जाती थी।

डिमिट्रियोस उस पकोष्ठ मे से सबके चले जाने तक प्रतीक्षा करता रहा। जब मन्दिर खाली हो गया तो वह उस गुह्य स्थान से बाहर आया।

वह मूर्ति की ओर बडी बेचैनी से देख रहा था। उसका अनुमान था कि अपना काम करते समय उसे एक भयकर अन्तर्द्वन्द्व का सामना करना पडेगा। किन्तु पिछले इतने विराट् भावुकता के प्रभाव मे सांस लेने के उपरान्त इतने शीघ्र फिर किसी गहरे अन्तर्द्वन्द्व में विभोर हो जाना नितान्त असम्भव था, इसलिए वह बिलकुल शान्त हो चुका था, और उसके अन्तर में आत्मग्लानि का लेशमात्र भी नही था।

लापरवाही के साथ आहिस्ता से वह ऊपर चढकर मूर्ति के निकट पहुँच गया। और देवी के किंचित विनत सिर से एण्डियो देवी के सच्चे मोतियो का हार निकाल लिया और उसे चुपचाप अपने कपडो में छिपका लिया।

अध्याय चौदह

जादू का चंग

वह बडी तेजी के साथ सडक पर चलने लगा। उसे आशा थी कि वह क्राइसिस को सडक पर जाते हुए ही पकड सकेगा। उसे यह भय था कि अगर आपना मन्तव्य पूरा करने में उसे बहुत देर लग गई तो कही ऐसा न हो कि वैसा करने का साहस और इच्छा उसके हृदय मे फिर निकल जाय।

सडक गर्मी से इस कदर तप रही थी कि डिमिट्रियोस मध्याह्न के सूर्य के सम्मुख ही आँख मीचने पर बाध्य हो उठा। वह कितनी ही देर तक इसी प्रकार चलता रहा और उसी धुन में कुछ काले गुलामो से टकरा भी गया जो कि किसी पालकी को कन्धे पर धारण किए हुए जा रहे थे। अकस्मात एक मधुर कठ से ये शब्द निकले

"प्रिय, तुम्हे पाकर मैं कितनी प्रसन्न हूँ!"

उसने अपना सिर उठाया, सम्राज्ञी बेरेनिस अपनी पालकी में कोहनी के बल बैठी उसकी ओर ताक रही थी।

उसने आज्ञा दी

"ठहर जाओ, पालकी वालो!" और अपने प्रेमी को ऊपर चढा लेने के लिए उसने अपनी बाँह लम्बी कर दी।

डिमिट्रियोस बहुत ही खिन्न हुआ किन्तु वह इन्कार नही कर सकता था। बहुत ही उदासीन भाव से वह पालकी में चढ गया।

सम्राज्ञी बेरेनिस जो कि खुशी से पागल हो उठी थी, अपने हाथो

से पालकी की सतह तक पहुँच गई थी और रेशम के तोषको में एक शिशु की भान्ति लेटने लगी थी।

यह पालकी क्या थी जैसे एक सुन्दर कक्ष था और पच्चीस गुलाम उसे अपने कन्धो पर लिए चल रहे थे। बारह औरतें उसमे आराम से विश्राम कर सकती थी। नीले रग के गलीचो के ऊपर मसनद और कुशन पडे हुए थे और पालकी की ऊँचाई इतनी थी कि पखे की डडी से भी छत को छूने मे सफलता नही मिल सकती थी। वह चौडी कम और लम्बी अधिक थी। सामने और पीछे से बिलकुल बद थी, अगल-बगल में दो रेशम के नीले पर्दे पडे हुए थे जिनसे छनकर प्रकाश आता था। पृष्ठभाग सीडार-लकडी से बना था और उस पर उन्नावी रग की रेशम मढी हुई थी। इस खूबसूरत दीवार के ऊपर मिश्र का विशाल सुनहरा बाज बना हुआ था जिसने अपने सरस डैने फैलाए हुए थे। उसके नीचे हाथीदांत और चाँदी से बनी हुई एस्टार्टी की मूर्ति थी और उसके नीचे एक लैम्प जलता था जो कि दिन के समान अनेक छवियो का प्रकाश फेकता था। उसके नीचे सम्राज्ञी बेरेनिस अपनी दो फारसी दासियो के मध्य विहार कर रही थी जो कि मोरपखो से बने पखो को निरन्तर झल रही थी।

अपनी आंखो से उसने मूर्तिकार को अपनी ओर बुलाया और दोहराया, "प्रियतम, मैं कितनी प्रसन्न हूँ।"

उसने अपने गालो पर अपना हाथ रख लिया "मै तुम्हारी ही खोज कर रही थी प्रिय, तुम कहा थे। मैने परसो से तुम्हे देखा नही है। अगर मै तुम से अब न मिल पाती तो दुख ने मेरे प्राण निश्चय ही निकल जाते। मै इस पालकी मे अकेली कितनी सूनापन अनुभव कर रही थी। जिस समय मै हर्मीज के पुल से गुजर रही थी तो मैने अपने समस्त मोती नदी मे फेंक दिए। तुम मुझे देखते हो, मेरे हाथो मे इस समय एक भी अँगूठी अथवा शरीर पर दूसरा कोई आभूषण नही है। मै तुम्हारे चरणो मे एक अकिंचन दासी की तरह यहा उपस्थित हूँ।

वह उसकी तरफ मुडी और उसे चूम लिया। दोनो पखा डुलाने वाली दासिया एक किनारे सिमट गईं। सम्राज्ञी थेगेनिस की आवाज़ अत्यन्त धीमी पड गई। दासियो ने अपने कानो में अँगुलियाँ दे ली ताकि यह विदित हो कि वह उन दोनो की प्रेम-वार्ता नही सुन रही हैं।

डिमिट्रियोस ने उत्तर नही दिया, वह तो जाने वह सब कुछ सुन भी रहा था अथवा नही, क्योकि वह अब भी अपने ही विचारो में खोया हुआ था। उसने सम्राज्ञी के मुंह पर मुसकान को ही देखा था और उसके केशरूपी कुशन को। सम्राज्ञी अपने बालो को सदैव ढीला बांधती थी ताकि उसके शिथिल सिर के लिए वह कुशन का काम कर सके।

उसने कहा, "मेरे प्रियतम मैं रात भर रोती रही हूँ। मेरी बाहें आलिंगन के लिए बेचैनी के साथ तुम्हे खोजती रही, लेकिन मेरे हाथ सूने के सूने ही रहे। आज उन्हे चूम रही हूँ। मैं प्रातःकाल से तुम्हारी प्रतीक्षा करती रही हूँ किन्तु तुम तो पूर्णिमा के दिन से जाकर फिर लौटे ही नही। मैंने शहर के कोने-कोने में गुलामो को तुम्हारा पता लगाने के लिए भेजा और उन्हें अपने ही हाथो से मार डाला क्योकि वह तुम्हारे बिना ही लौट आए थे। तुम कहाँ छिप गए थे। क्या तुम मन्दिर में गए थे। लेकिन उद्यान की उन विदेशी स्त्रियो के मध्य तो तुम थे नही। नही, मैं तुम्हारी आखो में वह सब देख रही हूँ। तो फिर मुझसे इतनी दूर जाकर तुम क्या कर रहे थे। मैं अनुमान कर सकती हूँ कि तुम मूर्ति के सामने बैठे थे। हाँ, मैं यकीन के साथ कहती हूँ कि तुम वही थे। अब तुम उसे मेरी अपेक्षा अधिक प्रेम करने लगे हो, वह बिलकुल मेरी ही तरह है, मेरी-सी आँखे, मेरे होठ और सब कुछ मेरे जैसी ही है। और तुम्हे यही कुछ तो चाहिए। मैं तो अभागी तिरस्कृता हूँ। मैं अच्छी तरह देखती हूँ कि तुम मुझ से ऊब गए हो। तुम अपने उस भोंडे संगमरमर और मूर्तियो के बारे में सोचते रहते हो और समझते हो कि वे मुझ से अधिक सुन्दर हैं, लेकिन कम से कम यह नही सोचते कि मेरे सीने में दिल है, मैं प्यार करती हूँ, तुममें ममता रखती हूँ, जिसे

तुम पसन्द करते हो, उसे ही पसन्द करती हूँ और जो तुम्हे नापसन्द है, वही मुझे भी नापसन्द हो जाता है। लेकिन तुम मुझ से कुछ भी नही चाहते। तुमने बादशाह बनने की ख्वाहिश भी नही की और तुमने अपने ही मन्दिर मे देवता के रूप में प्रतिष्ठित होने की कामना भी नही की। अब तो तुम मुझे प्यार करने की भी कोई इच्छा नही करते।"

उसने अपने पैर समेट लिए और अपने हाथ पर झुक गई। "मैं तुम्हे राजमहल में रखने के लिए कुछ भी कर सकती हूँ, प्रियतम! अगर मैं तुम्हारे मन से उतर गई हूँ तो बताओ किसके रूपजाल में तुम्हारी आँखें उलझी हैं, वह मेरी मित्र बनकर रहेगी। और मेरे महल में रहने वाली औरतें भी तो सुन्दर हैं। मेरे पास १२ तो ऐसी हैं जो अपने बचपन से ही मेरे रनवास में हैं और जानती भी नही हैं कि दुनिया में आदमी रहता भी है अथवा नही। तुम उन सब से भेंट कर सकोगे अगर तुम यह कह दो कि उनके बाद तुम मेरे पास आ जाओगे और मेरे पास कुछ ऐसी भी लडकियां है जो कि पवित्र देवदासियो से भी अधिक आकर्षक बनाई जाती हैं। मुँह से एक शब्द तो निकालो। मेरे पास एक हजार गुलाम लडकियाँ हैं, उनमे से कोई भी तुम्हारी खिदमत में पेश की जा सकती है। मैं अपनी ही तरह उनको सजा दूंगी। पीले रेशम, सोने और चादी से।

"लेकिन नही तुम सुन्दरतम और निष्ठुरतम पुरुष हो। तुम किसी से भी प्यार नही करते। तुम केवल प्रेमास्पद होना ही जानते हो। तुम्हारी आँखे जिसके दिल में प्रेम की आग जगा देती है—बस तुम उस पर दया ही करना जानते हो। तुम मुझे अपनी अभ्यर्थना करने की आज्ञा दे देते हो लेकिन यह प्रेमप्रसग उस घोडे की मालिश किए जाने के समान है जो मालिश करने वाले के प्रति उपेक्षा भाव से खडी हुई देखता हुआ उदासीन-सा खडा रहता है। तुम अपने-से होठो पर दया करना जानते हो, प्यारे देवताओ! हे देवताओ, मैं तुम्हारे बिना रहकर भी जिन्दा रहूँगी। जिसे सारा नगर प्यार करता है और जिसको कोई रमणी नहीं लुभा सकती उसे

विना रहकर दिखाऊँगी।

"मेरे राजमहल में केवल औरतें ही नही हैं। मेरे यहाँ शक्तिशाली इथोपियन योद्धा भी हैं जिनकी छाती तावे की है और जिनकी वाहो में मासपेशियाँ उभरी हुई हैं। उनकी उपस्थिति में तुम्हारी कोमल प्रकृति और सलोनी दाढी को शीघ्र ही भूल जाऊँगी। प्रेम-प्रलाप से सन्यास ग्रहण कर लूंगी, और जिस दिन मुझे यह विश्वास हो जाएगा कि तुम्हारी खोई आखे मेरे मन में कोई उथल-पुथल पैदा न कर सकेगी और तुम्हारे होठो के स्थान पर दूसरे होठ प्राप्त कर लूंगी तो मैं तुम्हे हर्मीज के पुल से वही भिजवा दूंगी, जहाँ मेरा कण्ठहार और मेरी अँगूठियाँ गई हैं, उस आभूषण की तरह जो वहुत दिन धारण कर लिया गया हो। आह, एक मलिका होना कितना अच्छा है, कितना अच्छा!"

वह अकडकर वैठ गई और प्रतीक्षा करती-सी दिखाई दी। लेकिन डिमिट्रियोस फिर भी निष्क्रिय ही रहा और वह तनिक भी हिला-डुला नही, जैसे कि उसने वह कुछ भी सुना ही न हो। उसने अपनी वात जारी रखी, "क्या तुमने मेरी वात नही समझी?"

वह अपनी कोहनी पर झुका और अत्यन्त स्वाभाविक वाणी में उसने कहा, "मुझे एक कहानी याद आती है।

उस समय से भी वहुत पहले जव तुम्हारे पिता के पूर्वजो ने थ्रेस को विजय किया था, तव कुछ जगली जानवर और कुछ भयभीत लोग यहा रहा करते थे।

"जानवर वडे सुन्दर थे, सिंह थे जो सूर्य के समान प्रखर तेज वाले थे, चीते थे, जिनके शरीर की धारियाँ सध्या के रगो को मात करती थी और भालू थे जो रात के समान काले थे।

"आदमी छोटे और चपटी नाक वाले थे और पुरानी भद्दी खाल ओढे रहते थे, और भद्दे भाले और वदसूरत-सी तीर कमान लिए रहते थे। वे पर्वतो के अन्दर सूराखो में रहते थे और वडी-वडी चट्टाने वडी मुश्किल से खिसकाकर उन सूराखो के मुंह पर अडा दिया करते थे।

उनका जीवन शिकार करते ही बीतता था और जगलो में खूँरेजी के सिवा और कुछ भी नही होता था। वह देश इतना बीहड था कि देवताओ ने भी उसे छोड दिया था। एक दिन जब दिन की चिलक निकल आई तो आर्टिमीज ने ओलम्पस से विदा ली। उसका रास्ता वह नही था—जो उत्तर की ओर जाता था। अपने चारो ओर होने वाले युद्धो में आरीज को कोई दिलचस्पी नही थी। अलगोजे और सिपेरी के होने से अपोलो भी उदासीन हो गया। चन्द्रमा, पृथ्वी और पाताल पर प्रभुता रखने वाली देवी हिकेट भी अकेली इस तरह ताकने लगी जैसे कोई मदुसा (यूनानी पौराणिक गाथाओ मे आने वाली तीन विद्रूपा स्त्रियां जिनकी शक्ल देखते ही आदमी पत्थर हो जाता था) हो, जो पत्थरो और चट्टानो के बीच दिखाई पड रही हो।

"तभी एक आदमी वहाँ रहने के लिए आया। वह आदमी किसी अधिक सुखी जाति का था और बर्बरो की तरह जानवरो की खाल नही ओढता था।

"वह बहुत लम्बी और सफेद पोशाक पहिनता था और इस पोशाक का कुछ भाग चलते समय पीछे लटकता भी था। उसे चादनी रातो में जगल के साफ मैदानो में भ्रमण करना अच्छा लगता था। वह अपने हाथ में कछुए की खोपडी लिये रहता था, जिसमे भरने-भैंसे के दो सींग लगे रहते थे और उनमे तीन चादी की तारे बधी हुई रहती थीं।

"जिस समय उसकी अगुलियां उन तारो को स्पर्श करती तो उनमे एक अजीब सगीत वह निकलता था। यह स्वर वृक्षो अथवा गेहूँ के पौदो में गुजरने वाली वायु के कोमल स्वर से भी अधिक कोमल होता था। पहली बार जब उसने अपने वाद्ययन्त्र के तारो को छेडा तो तीन सोते हुए चीते जाग पडे और उन पर इतनी विशाल मोहिनी छा गई थी कि वे उसके पास चले आये और जिस समय उसने सगीत बन्द कर दिया तो बिना कोई हानि पहुँचाये ही वापस भी चले गये। दूसरे दिन जिस समय उसने अपना सगीत पुन प्रारम्भ किया तो अनेक भेडिये, तेंदुए

ग्रौर ग्रनेक नाग ग्रपना फन उठाये हुये सगीत मुनने के लिये इक्ट्ठे हो गये।

"इस सगीत का प्रभाव यहाँ तक फैला कि जानवर स्वय ही उसके पास ग्राकर सगीत सुनाने की विनय करने लगे। बहुधा यह होता था कि कोई छोटा सा भालू उसके पास ग्राता ग्रौर उसके वाद्य-यन्त्र की तीन मधुर झंकार सुनने के बाद सन्तुष्ट होकर लौट जाता। उसके इस ग्रौदार्य के प्रतिदान मे पशु उसके लिये भोजन उपलब्ध करते ग्रौर मनुष्यो से उसकी रक्षा करते।

"लेकिन वह इस जीवन से ऊब गया। उसे ग्रपनी प्रतिभा ग्रौर पशुग्रो को ग्रानन्द प्रदान करने की ग्रपनी क्षमता पर इतना विश्वास हो गया कि वह ग्रपने सगीत के प्रति लापरवाह हो गया। लेकिन जानवर उस टूटे-फूटे सगीत को सुनकर भी सन्तोष कर लेते थे, क्योंकि बजाने वाला तो कम-से-कम वही था। थोडे ही दिन पश्चात् उसने उन्हें उतना सन्तोष प्रदान करना भी बन्द कर दिया ग्रौर वाद्य-यन्त्र बजाना बिलकुल ही छोड दिया। सगीतकार के इस निश्चय से सारे वन्य-प्रदेश में उदासी छा गई। लेकिन सगीतकार के द्वार पर ग्रब भी स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ व मास के टुकडे तथा ग्रनेक मीठे फल प्रचुर मात्रा में दिखाई पडते थे। पशुग्रों ने सगीतकार का ग्रातिथ्य फिर भी जारी रखा ग्रौर उसे उत्तरोत्तर ग्रधिक प्यार करते गये। पशुग्रो का दिल बना ही इस प्रकार का होता है।

"ग्रब एक दिन ऐसा हुग्रा कि ग्रपने खुले हुए द्वार के सहारे खडा होकर जैसे ही वह खामोश वृक्षो के पीछे ग्रस्ताचलगामी सूर्य को देख रहा था—एक सिंहनी उधर से गुजरी। वह भी ग्रपनी गुफा के ग्रन्दर प्रवेश करने लगा क्योकि उसे यह भय था कि सिंहनी उससे सगीत सुनाने का ग्रनुरोध ग्रवश्य करेगी। लेकिन सिंहनी ने उसकी ग्रोर ध्यान भी नहीं दिया ग्रौर सीधी ग्रपने रास्ते निकल गई।

"तब ग्राश्चर्यचकित होकर उसने प्रश्न किया, 'क्योजी! तुमने मुझसे

सगीत सुनाने के लिये क्यो नही कहा ।'

सिहनी ने कहा 'मुझे सगीत में विशेष रुचि नही है ।'

सगीतकार ने कहा 'तुम शायद यह नही जानती कि मैं कौन हूँ ।' सिहनी ने कहा, 'मै जानती हूँ तुम आरफ्योज हो ।'

सगीतकार ने कहा, 'और तुम फिर भी मेरा सगीत सुनना नही चाहती ।'

'सिहनी ने फिर भी कहा, मेरी इच्छा ही नही है ।'

'ओह' सगीतकार चिल्लाया, 'मेरी कैसी दयनीय स्थिति है । तुम्हे सगीत सुनाने की तो मेरी महती आकाक्षा थी । तुम औरो से कितनी अधिक सुन्दर हो और मेरा विश्वास है कि तुम औरो की अपेक्षा अधिक समझ भी सकती हो । यदि तुम केवल एक घन्टे मेरा सगीत सुन लो तो मैं तुम्हे वह कुछ सुना दूँ जिसकी तुम कल्पना भी नही कर सकती ।'

उसने उत्तर दिया मै तुम्हारा सगीत सुनने को तैयार हूँ यदि तुम मेरी यह तीन मागे पूरी कर दो । पहली कि तुम मैदानो में रहने वाले मानव का ताजा मास चुरा कर ला दो । मेरी दूसरी माग यह है कि तुम्हे माग में जो प्रथम पुरुष दृष्टिगत हो तुम उसकी हत्या कर दो । और मनुष्यो ने अपने देवताओ को बलि देने के लिए जो पशु चुन रखे हैं उन्हे मेरे सम्मुख प्रस्तुत कर दो ।' सगीतकार ने केवल इतनी सी मागे सामने रखने के लिये सिहनी का धन्यवाद किया ।

'एक घन्टे तक वह उसके सामने बैठा वाद्ययन्त्र बजाता रहा, किन्तु बाद मे उसने अपना वाद्य तोड दिया और इस तरह रहने लगा जैसे वह मर चुका हो ।'

सम्राज्ञी ने एक गहरी सास ली, "आह, मै इन रूपको को कभी नही समझ सकती । मुझे खुलासा करके समझाओ प्रिय ! इसका मतलब क्या है ?"

वह उठ खडा हुआ, 'मैने यह कहानी तुम्हे इसलिए नही सुनाई कि तुम उसे समझो । मैने तुम्हे यह कहानी इसलिए सुनाई है कि तुम

अपने अन्तर में शान्ति का अनुभव कर सको। मुझे बहुत देर हो गई है। अलविदा बेरेनिस ?"

बेरेनिस ने रोना शुरू कर दिया, "मैं समझती थी, मैं सब कुछ समझती थी ?"

डिमिट्रियोस ने बेरेनिस को गद्दों और तोपकों में सावधानी से लिटा दिया और उसकी पलकों पर एक चुम्बन अंकित कर दिया और उस चलती हुई विशाल पालकी में से चुपचाप नीचे उतर गया।

आगमन

बच्चीज ने पच्चीस वर्ष तक एक वेश्या का जीवन व्यतीत किया था। तात्पर्य यह कि इस समय उसकी आयु का चौथा पन गुजर रहा था और इस बीच उसका सौंदर्य कई रूपों में परिवर्तित हो चुका था।

उसकी माँ ने—जो बहुत समय उसके गृहकार्यों की निर्देशिका रही थी—उसे अपना कारबार चलाने और मितव्ययिता के कुछ सिद्धान्त बताए थे जिनपर चलकर उसने बहुत बड़ी सम्पत्ति एकत्रित कर ली थी और इस सम्पत्ति के बल पर ही, अपने उतरते हुए सौंदर्य की क्षतिपूर्ति करने के लिए वह अपने अतिथियों के बहुत शानदार मनोरंजन का प्रबन्ध करने में सफल होती थी।

इस प्रकार बाजार में ऊँची दर पर जबरन गुलाम लड़कियों को खरीद कर अपने घर रखने की अपेक्षा—जोकि आगे चलकर बहुत ही विनाशकारी व्यापार सिद्ध होता था—उसने एक ही नीग्रो लड़की अपने यहाँ रख छोड़ी थी और शेष सम्पत्ति से घर के उपयोग में आने वाली अनेक वस्तुएं खरीद ली थी जो आगे चलकर उसके जीवन में बहुत ही उपयोगी सिद्ध होने वाली थी।

इस गुलाम ने दस सन्ताने हुए थी जिनमें तीन लड़के भी थे। बच्चीज ने लड़कों को बेच डाला था क्योंकि वह जानती थी कि ये लड़के आगे चलकर बहुत ही ईर्ष्यालु प्रेमी बनते हैं। उसने इन सातों लड़कियों के नाम अलग-अलग नक्षत्रों के नाम पर रखे थे और उन्हें गान की

लगभग उसी प्रकार से सौंपे थे—जिनका बोध उनके नामों से होता था। हैलीओपी दिन की गुलाम थी, मेनेमिस रात्रि की गुलाम थी, हर्मियोनी खरीदारी और कोनोमैंगिरा भण्डार का काम करती थी। और सातवीं डियोमेडी हिसाब-किताब रखती थी और घर के उत्तरदायित्व को सम्भालती थी।

अफ्रोडीसिया उसकी प्रिय गुलाम थी, वही सबमें अधिक सुन्दरी थी और उसे लोग सबसे अधिक प्रेम करते थे, अतिथियों का मनोरंजन करने में वह अकसर अपनी मालकिन का हाथ बँटाती थी। यही कारण था कि घर के तमाम कामों से उसे अवकाश दिया जाता था, ताकि उसकी बाहें और उसके हाथ कोमल और सुन्दर बने रह सकें, और एक असाधारण कृपा उस पर यह की जाती थी कि उसको बाल ढकने की आज्ञा थी। यही कारण था कि कभी-कभी लोग उसे सामान्यजन समझ लेने की भूल कर बैठते थे, और इसी शाम को वह आजाद कर दी जाने वाली थी और उसके बदले में बच्चीज को पैंतीस मिन्नस की बड़ी दौलत प्राप्त होने वाली थी।

बच्चीज की ये सातों गुलाम लड़की इतनी सुघड़ और अनुशासनबद्ध थी कि जहाँ कहीं वह जाती उन्हें साथ ले जाने में वह अपना गौरव समझती, हालाकि उनकी अनुपस्थिति में घर के खुले रह जाने का भय हमेशा बना रहता था। इसी अदूरदर्शिता के कारण डिमिट्रियोस इतनी सरलता से उसके घर में घुसकर अपना कार्य सम्पन्न करने में सफल हो सका था। लेकिन आज उस जश्न का आयोजन करने के समय तक भी जिसमें उसने क्राइसिस को निमन्त्रित किया था—उसे अपने इस दुर्भाग्य का बिल्कुल भी ज्ञान न था।

इस सन्ध्या को आने वाले अतिथियों में सर्वप्रथम क्राइसिस ही थी।

उसने हरे रंग की पोशाक पहिन रखी थी और उस पर कशीदे के रूप में असंख्य गुलाब की टहनिया कढ़ी हुई थीं और वक्षस्थल पर फूल कढ़े हुए थे।

उसके द्वार खटखटाने से पहले ही अरोटी ने उनके लिए फाटक खोल दिए और यूनानी प्रथा के अनुसार उसे एक कक्ष में लेजाकर बैठा दिया। उसके लाल जूते खोल दिए और उसके नगे पावो को धो दिया और तब उसने जहाँ कही वाञ्छित था उसके शरीर पर अगराग लगा दिया। अतिथियो को किसी भी प्रकार का कष्ट स्वय न करना पडे ऐसा प्रयत्न किया जाता था, यहाँ तक कि भोजन करने जाते समय कर प्रक्षालन करने का काम भी उन्हे स्वय नही करने दिया जाता था। तब उसने उसे एक शीशा दिया और कुछ पिने दी ताकि वह अपना अस्त-व्यस्त केश-शृगार सुव्यवस्थित कर सके और अपने गालो और होठो पर सुर्खी लगा सके।

जब क्राइसिस अपना शृगार करके तैयार हो गई तो उसने गुलाम से पूछा, "आज के मुख्य अभ्यागत कौन है ?"

यह प्रतिष्ठा बहुधा उन मेहमानो को देने की परम्परा थी जो विशेष निमन्त्रित अभ्यागत के रूप में जश्न में शरीक होते थे। वह व्यक्ति जिसकी प्रतिष्ठा के लिए यह आयोजन किया जाता था अपने साथ किसी एक मन-पसन्द व्यक्ति को ला सकता था। मेहमानो को कोच-कुशन साथ लाने होते थे। और उन्हें अवसर के अनुकूल आचरण करना होता था।

क्राइसिस के प्रश्न का अरोटी ने इस प्रकार उत्तर दिया।

"नॉक्रेटीज ने फिलोडिमोज और उसकी मित्र फास्तिना को—जिसे वह इटली से लाया है—दावत दी है। उसने फ्रेसीलास और टाइमन को तथा तुम्हारी मित्र सेसो को भी निमन्त्रित किया है।

उसी क्षण सेसो ने अन्दर प्रवेश किया "क्राइसिस ?"

"मेरी प्यारी ?"

अपने सम्बन्धो से मन मे जाग उठने वाली भावनाओ को हृदय मे सहेजे वे दोनो महिलाएँ आपस में गले लगकर मिली। आज वर्षो से उन्हे एक लम्बी अवधि के बाद एक साथ होने का अवसर मिला था।

"मै तो डर रही थी कि कही तुम्हे विलम्ब न हो जाय', सेसो ने

कहा," बेचारे आर्चटियास ने मुझे देर कर दी ?"

"क्या, अभी उसकी स्थिति वही है ?"

"हमेशा एक ही बात तो रहती है। शहर में जहा कही मैं दावत में जाती हूँ उसे हमेशा यही सन्देह रहता है कि कोई मुझे अपने पजो में जकड लेगा। तब फिर उसे सान्त्वना देना आवश्यक होता है, और उसमे समय लगता ही है। आह! मेरी प्रिय! अगर वह मुझे और अच्छी तरह समझता होता! मेरे मन में तो उसको छलने की भावना उठती ही नही। लेकिन वह जैसा कि बहुधा होता है, काफी से अधिक ईर्ष्यालु प्रवृत्ति का आदमी है।"

"और उसका बच्चा ? क्या किसी ने अभी तक उसे देखा है, तुम तो जानती होगी ?"

"मुझे यकीन है शायद लोगो ने न देखा हो। यह तीसरा महीना ही तो है। लेकिन वह दुष्ट अभी तो मुझे तग नहीं करता। जब करेगा, तो जल्दी ही हवा हो जाएगा ?"

"मैं जानती हूँ तुम्हारे हृदय में क्या होता होगा ?" क्राइम्मिस ने कहा, "लेकिन देखो वह तुम्हे कहीं बदसूरत न बना दे। जानती हो बच्चे औरत को जल्दी ही बुढापे की ओर घसीट ले जाते हैं। कल मैंने अपनी बचपन की मित्र फिलेमेशन को देखा था। वह आजकल बुबास्तिस के एक अनाज के सौदागर के साथ रह रही है। तुम्हे मालूम है मिलते ही उसने पहली बात मुझ से क्या कही। "आह, अगर तुम देख सकती इसने मेरा क्या हाल बना डाला है।" उसकी आँखो में सचमुच आँसू छलक आए थे। मैंने उसे आश्वासन देते हुए कहा कि वह अभी तक काफी सुन्दर है तो उसने उत्तर दिया "अगर तुम देख सकती और याद रख सकती" और वह दूसरी बिब्लिस की तरह रो उठी। तब मैंने देखा कि वह हृदय से चाहती है कि मैं उससे सहमत हो जाऊँ और उसने मुझे अपना शरीर दिखाया। मेरी प्रिय, उसकी त्वचा खाल की तरह हो गई थी। और तुम जानती हो उसकी त्वचा कितनी कोमल थी। उसकी अगुलियो

के जोडो की त्वचा इतनी लाल हो गई थी कि आदमी देख नही सकता। सेसो, तुम अपने को बर्बाद मत कर लेना। अपने को ज्यो की त्यो यौवन युक्त और गोरी रखना—जैसी तुम आज हो, औरत की त्वचा उसके आभूषणो से अधिक मूल्यवान होती ।"

इस प्रकार वातचीत करते हुए दोनो महिलाओ ने अपना प्रक्षालन-कार्य समाप्त कर लिया। तब वह दोनो साथ-साथ महफिलखाने मे दाखिल हुई—वहाँ बच्चीज खडी हुई प्रतीक्षा कर रही थी। उसकी कमर मे कटिबन्ध बधा हुआ था और उसकी गर्दन मे अनेक जवाहिरात सुशोभित थे और वे उसकी चिबुक तक पहुँच गए थे।

"आह, मेरी सुन्दर सखियो, नॉक्रेटीज का विचार कितना सुन्दर था कि उसने तुम दोनो को एक साथ इस जश्न मे निमन्त्रित किया ?"

"हम दोनो अपने इस सौभाग्य पर अपने को धन्य मानती हैं," क्राइसिस ने कहा। वह इस उक्ति के विष को जैसे समझना नही चाहती थी और उसने तत्काल कोई घृणापूर्ण बात कहने के लिए पूछा, "टोरी-क्लोज कैसे है।"

वह एक बहुत ही तरुण प्रेमी था, जिसने बच्चीज को अभी-अभी छोड दिया था और एक सिसलियन से विवाह कर लिया था।

"   मैंने उसे अपने से दूर कर दिया है।" बच्चीज जैसे खरोंच खा गई।

'कम से कम तुम वैसा न करो।"

"हाँ, हाँ, मैंने लोगो को कहते सुना है कि वह किसी सिसलियन से शादी कर रहा है इसी जलन के कारण। लेकिन शादी के दूसरे दिन ही वह फिर मेरी शरण में आ पहुँचेगा। वह तो मेरे पीछे पागल है।"

यह पूछते हुए कि 'टोरीक्लोज कैसे है ?" क्राइसिस ने अपने में सोचा था। "तुम्हारा आईना कहा है ?" लेकिन बच्चीज की आखे क्राइसिस की आखोमे अधिक देर न टिक सकी क्योंकि उसे व्यर्थ के वितण्डावाद से निश्चित कोई प्रयोजन उसमे दिखाई नहीं दिया, लेकिन फिर भी क्राइसिस उस

प्रश्न का उत्तर पाने के लिए कृतसंकल्प थी और उसके लिए वह किसी अधिक उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा के लिए खामोश रह गई।

वह इस सम्भाषण को आगे बढ़ाने ही वाली थी कि उसी समय फिलोडिमोज, फास्तिना और नॉक्रेटीज ने प्रवेश किया। इनका स्वागत करने के लिए वच्चीज़ को अतिरिक्त विनय का प्रदर्शन करना आवश्यक हो उठा। वह कवि की कशीदा की हुई पोशाक, और रोमन महिला की पारदर्शी पोशाक को देखकर मीठे स्वप्नों में खो गयी थी। इस युवती ने, जो कि यूनानी प्रथाओं से अपरिचित थी, अपना यूनानीकरण इस प्रकार किया था, उसे यह विदित नहीं था कि ऐसी पोशाक महफिलों के अवसर पर शोभा नहीं देती, क्योंकि ऐसे समय पैसा लेकर आने वाली नर्तकियाँ भी इसी प्रकार के झीने वस्त्र पहिनती हैं। वच्चीज़ ने इस भूल को परिलक्षित कर लेने का कोई भी संकेत नहीं किया। प्रत्युत उसने उसकी घनी, चमकदार और श्याम-नील केशराशि पर उसे साधुवाद दिया। उसके केश अनेक प्रकार की गन्धों से सुगन्धित थे। एक सुनहरी पिन के सहारे उसने अपने बाल गर्दन से ऊपर उठाए हुए थे ताकि किसी भी सुगन्धित शफूफ के दाग उसकी पोशाक पर न पड़ने पाएँ।

वह लोग सहभोज की मेज़ पर अपने स्थान ग्रहण करने ही वाले थे कि उसी समय सातवाँ अतिथि टाइमन भी आ पहुँचा। यह युवक किसी सिद्धान्त की अमान्यता को अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति मानता था और उसने अपने युग के दार्शनिकों के दर्शनों में से अपने इस आचरण के औचित्य के कारण भी भली प्रकार खोज लिए थे।

"मैं किसी को अपने साथ लाया हूँ," उसने हँसते हुए कहा।

"कौन है वह," वच्चीज ने पूछा।

"कोई डिमो है, मेन्डीज की रहने वाली।"

"डिमो, तुम मज़ाक तो नहीं कर रहे हो, ओह, वह तो बहुत ही सस्ते किस्म की छोकरी है।"

"ओह, तो छोड़ो, मैं अधिक जिद नहीं करना चाहता।" उस युवक

ने कहा, 'रास्ते में ही मेरी उससे जान-पहिचान हो गई थी। उसने मुझ से शाम का खाना खिलाने के लिए कहा और मै उसे तुम्हारे यहाँ ले आया। लेकिन अगर तुम नही चाहती तो न सही "

"यह टाइमन बडा अविश्वसनीय आदमी है," बच्चीज ने कहा।

उसने एक दासी को पुकारा, "हैलियोपी, अपनी वहन से कहो कि द्वार पर एक लडकी खडी है, उसे तत्काल मारकर भगा देना है। जाओ?"

वह किसी चीज की तलाश करती हुई लौट गई।

"फेसीलाज नही आए?"

अध्याय सोलह

सहभोज

इन शब्दो के समाप्त होते-न-होते एक साधारण-सा, छोटे कद का आदमी, जिसका मस्तक छोटा था, भूरी आंखे थी और भूरी ही दाढी थी छोटे-छोटे कदम रखता हुआ अन्दर दाखिल हुआ और उसने कहा, "मैं आ पहुँचा हूँ।"

फेसीलाज एक प्रतिष्ठित लेखक था और वह इतने अधिक विषयो पर लिखता था कि यह जानना कठिन था कि वह दार्शनिक है या वैयाकरण, इतिहासकार है या पुराणकार। वह अपनी प्रतिभा का उपयोग गम्भीर से-गम्भीर विषय पर करता था। लेकिन उसमें कोई स्वतन्त्र निबन्ध लिखने का साहस न था और न ही वह नाटक लिखने की हिम्मत कर सकता था। उसकी शैली मे किंचित् नपुसकता, कृत्रिमता और शब्दाडम्बर ही अधिक होता था। विचारको के लिए वह कवि था, कवियो के लिए सन्त और समाज के लिए एक महापुरुप!

"अच्छा अब हम भोजन के लिए चले," बच्चीज़ ने कहा, और उसने अपने को उस कोच पर फैला दिया जो कि उस दावत के सभापति के आसन के समान प्रतीत होती थी। उसके दाईं ओर फिलोडिमोज, फास्तिना और फ़ेसीलाज के साथ बैठा हुआ था और नॉक्रेटीज के बाईं ओर सेसो, फिर क्राइसिस और उसके बाद तरुण टाइमन बैठा हुआ था। अतिथियो मे से हर कोई अपने रेशम के कुशनो पर कोहनी टिकाए सिर नीचा किए हुए बैठा था और उनके सिर पुष्प-मालाओ से लदे हुए थे। एक गुलाम लाल गुलाबो और नील कमल के ताज बनाकर लाई और अतिथिया ने उमे धारण किया। इसके उपरान्त जश्न आरम्भ हुआ।

टाइमन ने अनुभव किया कि उसकी असभ्यता ने स्त्रियो पर सर्द हवा फेंक दी है। इसलिए उसने स्त्रियो की ओर कोई सकेत न करके पहले फिलोडिमोज से कहा, "लोग कहते हैं कि आप सिसरो के बहुत घनिष्ठ मित्र हैं। फिलोडिमोज, क्या विचार है सिसरो के विषय में आपका ? क्या वस्तुत वह एक सच्चा दार्शनिक है या कोई यूं ही कम्पाउलर जैसा सनकी, जिसमें न कोई सुरुचि है और न विवेक। मैंने सुना है कि उसके बारे में दोनो ही प्रकार की सम्मतियां एक काफी बडी सख्या मे लोगो की हैं।'

'सक्षेप मे, चूंकि मैं उसका मित्र हूं इसलिए मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर नही दे सकता ?" फिलोडिमोज ने कहा, "मैं उसे बहुत अच्छी तरह जानता हूं, इसलिए हो सकता है कि उसके बारे मे मेरी राय कुछ नाकिस हो। इसलिए इस प्रकार के प्रश्न फ्रेमीलाज से करना जिसने उसे घोटा ही पढा है। वही उसके विषय मे तुम्हारे लिए सच्चा अध्ययन प्रस्तुत कर सकेगा ?"

"तो फिर फ्रेमीलाज का उसके बारे में क्या विचार है ?"

"वह एक अत्यन्त प्रशसनीय लेखक है," छोटे आदमी ने कहा।

"लेकिन वैसा निर्णय आप किस प्रकार करते हैं ?"

"उन्हीं अर्थों मे टाइमन, जिस प्रकार हर लेखक किसी-न-किसी चीज के लिए प्रशसनीय होता है—जैसे सभी देश और सभी आत्माएं। लेकिन मेरे लिए तो किसी सागर की हदयावली किसी मैदान से किसी भी प्रकार अधिक स्पृहणीय नही प्रतीत होती। इसलिए चाहे वह सिसरो का लिखा हुआ कोई निबन्ध हो, या पिण्डार का लिखा हुआ कोई गीत अथवा तुम्हारी बाल मे बैठी हुई हमारी शानदार मित्र क्लाइनिस का कोई पत्र हो, मैं अपनी पसद के आधार पर कभी भी उनका वर्गीकरण नही करूंगा। जब मैं कोई पुस्तक पढकर समाप्त करता हूं तो अगर एक भी पक्ति मेरी स्मृति मे ऐसी रह जाती है जो मेरे अन्दर विचार-शक्ति को प्रेरणा दे—तो मैं अपने अध्ययन को कृतकार्य हुआ मानता हूं। [illegible]

तक मैंने जो कुछ पढा है उसमे यह एक पंक्ति मुझे मिलती ही रही है। लेकिन आज तक किसी भी पुस्तक ने दूसरी पंक्ति मुझे प्रदान नही की है। शायद हम में से हर कोई अपने जीवन मे केवल एक ही चीज कहने का सामर्थ्य रखते हैं और वह जो अधिक विस्तार से बोलते हैं, वे अधिक महत्त्वाकाक्षी होते हैं। कोटि-कोटि जनता के मौन पर मुझे कितना अफसोस है जो कि कभी भी बोल नही सकी।"

"इस बात में मैं तुम से सहमत नही हूँ," नॉक्रेटीज ने अपना सिर ऊपर उठाए बिना ही कहा, "इस सृष्टि की रचना इसीलिए हुई थी कि तीन सत्य कहे जा सकें, किन्तु यह हमारा दुर्भाग्य रहा है कि उसकी निश्चयात्मकता आज की सन्ध्या से पाच शताब्दी पूर्व ही सिद्ध हो चुकी है। हिरेक्लिटोज ने दुनिया को समझने की कोशिश की, पार्मेनिडीज ने आत्मा का कलेवर स्पष्ट कर दिया, पाइथागोरस ने ईश्वर की नाप-जोख की, अब हमारे लिए क्या रह गया है, सिवा इसके कि हम चुप होकर बैठ जायें। मेरा ख्याल है कि चिकन-पी बडी गुस्ताख है।"

सेसो ने अपने पखे से मेज को ठकठकाया, "टाइमन," उसने कहा, "मेरे दोस्त ?"

"क्यो क्या बात है ?"

"तुम ऐसे प्रश्न क्यो करते हो जो मेरे जैसे लोगो के किसी भी मतलब के नही हैं, जो कि लैटिन नही जानते या स्वय तुम्हारे ही लिए जो उसे जान कर भी भूलना चाहते हों। क्या तुम अपनी नागरिक वाग्मिता से फॉस्तीना को प्रभावित करना चाहते हो। मेरे दोस्त तुम केवल शब्दो से मुझे धोखा नही दे सकते। कल शाम मैंने तुम्हारी आत्मा का नग्न रूप देख लिया है। और टाइमन मैं जानती हूँ इस चिकन-पी से तुम्हारा क्या मतलब है।"

"क्या तुम्हारा ख्याल वैसा ही है," नौजवान ने साधारणता से कहा। लेकिन फ़ेसीलाज़ ने अपना दूसरा भाषण धीरे और व्यग्यात्मक स्वर में प्रारम्भ किया "सेसो जिस समय हमें यह सौभाग्य प्राप्त हो कि

तुम टाइमन के बारे मे अपना निर्णय घोषित करो तो चाहे तुम्हारा इरादा उसकी प्रशंसा करना हो या उस पर आरोप लगाना—जो कि हम लोग नही कर सकते—तुम्हे यह स्मरण रखना चाहिए कि वह एक अदृश्य सत्ता है जिसमे एक अलौकिक आत्मा है। इसका अस्तित्व अपने आप मे नही है। कम से कम हम तो निश्चयपूर्वक वैसा नही कह सकते, लेकिन वह उसी की अभिव्यक्ति करता है जिसकी प्रतिच्छाया उस पर पडती है और स्थानान्तर से दृष्टि मे भी अन्तर पड जाता है। पिछली रात यह छवि बिलकुल तुम्हारी जैसी थी और मुझे अचरज नही होगा अगर उससे तुम्हे कुछ सान्त्वना मिली हो। ठीक इस समय उस पर फिलोडिमॉज की छवि है यही कारण है कि यह छवि अब भा हो रही है। लेकिन इसमें विरोधाभास की गुजायश नही है क्योंकि इसमे किसी चीज की स्थापना नही होती। तुम देखती हो कि प्रिय, तुम्हे विचारहीन निर्णय नही करने चाहिए।"

टाइमन ने फेसीलाज की ओर क्रुद्ध दृष्टि से देखा, लेकिन उसने अपना उत्तर सुरक्षित रखा।

"फिर भी यह हो सकता है" मेसो ने कहना जारी रखा, "हम यहा पर चार देवदासियाँ मौजूद हैं और हम बातचीत के सिलसिले को इस प्रकार बदल देना चाहती हैं कि हम उन अबोध शिशुओ की तरह न प्रतीत हो जो कि अपना मुँह केवल दूध पीने के लिये खोलते है। फॉस्तीना तुम अभी-अभी आई हो अत तुम्ही कोई नई बातचीत शुरू करो।

"बहुत अच्छा", नाॅॅक्रेटीज ने कहा, 'हमारे लिये कोई विषय चुनो फॉस्तीना, जिस पर हम अपनी बातचीत को आधारित कर सकें।'

नवयौवना रोमन युवती से अपना सिर झुकाया, निगाह ऊपर उठाई, उसके मुखमण्डल पर लालिमा दौड गई अपने समूचे रग को एक थिरकन देते हुए उसने कहा

'प्रेम।'

"वहुत सुन्दर विषय है," मेसो ने अपने हास्य को अवरुद्ध करते हुए कहा।

किन्तु किसी ने भी वादविवाद को आरम्भ नही किया।

मेज पर गजरे, सब्जियाँ, प्याले, सुराहियाँ करीने के साथ रखे हुए थे। गुलाम वर्फ के समान हल्की रोटियाँ ला रहे थे। मोटी-मोटी मछलियो पर अनेक प्रकार के मसाले छिडके हुए थे। मोम के रग के पेय और पवित्र स्वास्थ्यवर्धक पेय, चित्र खुदे हुए मिट्टी के बर्तनो में भर कर लाये गए थे।

इसी प्रकार अनेक प्रकार की मछलियाँ भोजन की मेज पर प्रस्तुत की गईं। यह भोजन का पहिला दौर था। अभ्यागत लोग उस भोजन मे से श्रेष्ठ अश स्वीकार कर लेते थे और शेष गुलामो के लिए बच जाता था।

"प्रेम" फ्रेसीलाज ने वार्ता आरम्भ की, "एक ऐसा शब्द है, जिसका कोई अर्थ नही या जिसके अर्थ में एक ही समय में सब कुछ सन्निहित है, क्योकि इसके अन्दर दो विरोधी तत्त्व सम्मिलित हैं—विलास और भावावेश। मैं नही कह सकता फॉस्तीना का मतलब किस चीज मे है।"

"मैं चाहती हूँ," क्राइसिस ने बाधा उपस्थित की, "मेरे लिए विलास और मेरे प्रेमी के लिए भावावेश। आपको दोनो ही पहलुओ पर प्रकाश डालना होगा, अन्यथा आपकी चर्चा का महत्व मेरे लिए अधूरा ही होगा।"

"प्रेम" फिलोडिमोज ने कहा, "न भावावेश है और न भोग विलास की इच्छा। प्रेम तो बिल्कुल ही दूसरी चीज है ।"

"ओह, दया करके," टाइमन ने टोका, "आज की शाम हमें ऐसी दावत का आनन्द लेने दो, जिसमें दर्शन की चर्चा न हो। हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि तुम अपनी मधुर वक्तृता के बावजूद और शहद के समान मीठी वाणी में बाते करने के उपरान्त भी एकनिष्ठ प्रेम के ऊपर गुणात्मक आनन्द की श्रेष्ठता सिद्ध नही कर सकोगे।

क्योकि हमें यह मालूम है कि पूरे एक घण्टे तक इतने कठिन विषय पर बोलने के बाद तुम दूसरे घटे मे अपने प्रतिपक्षी के मत को लेकर भी उतनी ही सरलता से बोल सकते हो। मैं ”

“अनुमति देता हूँ ”फ़ेसीलाज ने कहा।

“यह अस्वीकार नही करता” टाइमन ने अपनी बात जारी रखी, “कि बुद्धि का यह विलास और कौतुक अत्यन्त सुन्दर और प्रभावशाली है। इनमें कठिनता है और दिलचस्पी का अभाव है। कुछ दिन पहले एक अपेक्षाकृत कम गम्भीर कहानी के अन्दर आपने जो प्रहसन प्रकाशित किया था—जिसकी प्रेरणा आपने किसी पौराणिक गाथा से ली थी और वह आपके अपने आदर्शों से मिलती जुलती थी—वह शेलेमा आलेटीज के राज्यकाल की दृष्टि से एक नवीन और असामान्य चीज मालूम पडती थी, परन्तु अब जब कि हम तीन वर्ष तक सम्राज्ञी वेरेनिस का राज्य देख चुके हैं, समझ मे नही आता कि कौन सा वह परिवर्तन हो गया जिसने तग आस्तीनो और पीले रगीन बालो की तरह तुम्हारी उल्लसित और सगीतात्मक विचार शैली को एक दम सौ वर्ष का बुढापा प्रदान कर दिया। मै इसे धिक्कारता हूँ, आचार्यवर, क्योंकि यह मानते हुए भी कि आपकी कथाओ में थोडी आग की कमी है और स्त्री वर्ग के बारे में भी आपके अनुभवो मे कृत्रिमता ही अधिक झलकती है, उनमे हास्य की विलक्षण प्रतिभा है, और मैं आपको प्यार करता हूँ कि मै आपके कारण हास्य का आनन्द प्राप्त कर सका हूँ।’

“टाइमन!” बक्चीज क्रोध में चिल्लाई, लेकिन फ़ेसीलाज ने उसे इशारे से रोक दिया।

“छोडो भी प्रिय, मै उन आदमियो मे से हूँ जो अपने बारे मे दिए गए निर्णयो में से केवल उन्ही स्थलो को याद रखते है जो प्रशसा से कहे जाते है और अपने को पसन्द आते है। अगर सभी लोग एक स्वर से प्रशसा करने लगे तो फिर प्रशसा में क्या लुत्फ? आलोचनाओ की इस विविधता को मै एक ऐसा उद्यान मानता हूँ जिसमे तरह तरह के फूल

खिले हैं, मैं केवल गुलाब के काँटों के अतिरिक्त कुछ नहीं छूता।"

क्राइसिस ने कुछ इस तरह अपने होंठो को थिरकन दी जिससे पता चलता था कि उसने इस आदमी को कितना तुच्छ साबित कर दिया है जो कि किसी भी प्रकार के विवाद को समाप्त कर देने में इतना अधिक चतुर था। उसने अपना रुख अपने निकट ही बैठे हुए टाइमन की ओर फेर लिया और अपना हाथ उसकी गर्दन मे डाल दिया।

"जीवन का उद्देश्य क्या है ?" उसने पूछा।

हालाँकि वह यह नहीं जानती थी कि किसी दार्शनिक के समक्ष किस प्रकार अपनी बात प्रस्तुत करनी चाहिये तथापि उसने यह प्रश्न पूछा। लेकिन इस बार उसने अपने स्वर में इतनी कोमलता भर दी कि उसे सुन कर टाइमन को शंका होने लगी कि जैसे उसके प्रति प्रेम की घोषणा की गई हो।

तथापि उसने बहुत ही संयम के साथ उत्तर दिया—"हर जीवन का अपना एक अलग उद्देश्य होता है, मेरी—क्राइसिस ! जीवन के अस्तित्व का कोई सार्वभौम उद्देश्य नहीं होता। रहा मेरे बारे में, मैं एक महाजन का बेटा हूँ जिसके यहाँ मिश्र की बड़ी से बड़ी वेश्यायें आती हैं। मेरे पिता ने बहुत से अवांछित साधनों द्वारा बहुत सी सम्पत्ति इकट्ठी की थी और मैं वही सम्पत्ति देवताओं की इच्छा के अनुसार अपने पिता के कुकर्मों का परिणाम भोगने वाले लोगों तक फिर से पहुँचा रहा हूँ। मैं अपने को जीवन में केवल मात्र यही कर्त्तव्य करने के योग्य पाता हूँ और यह काम मैंने इसलिए चुना है कि इसके करने में मुझे वैसा ही आत्म-सतोष मिलता है जो कि किसी भी पुण्य कार्य के करने में मिल सकता है।"

इसके बाद कुछ क्षण तक सब लोग खामोश रहे। तब सेमो ने मौन भंग करते हुए कहा, "टाइमन तुम बातचीत के प्रारम्भ में ही व्यवधान उपस्थित करके बात का मजा किरकरा कर देते हो। इतने सुन्दर विषय पर इतने गम्भीर तरीके से बातचीत चल रही थी कम से

कम नौक्रेटीज को बोलने दो, तुम तो अपनी उद्दंडता से विवश हो ही।"

"मैं प्रेम के बारे में क्या कह सकता हूँ ?" अतिथि ने उत्तर दिया। "उसके लिए जो पीडा सहते हैं कुछ कहने का अधिकार भी उन्ही का है। सन्तोष प्रदान करने वाली वेदना का ही दूसरा नाम प्रेम है। दु:खी होने के केवल दो तरीके है। एक तो यह कि अप्राप्य की कामना करना और दूसरा यह कि जो इच्छित है उसको उपलब्ध करना। प्रेम पहली स्थिति से प्रारम्भ होता है और दूसरी स्थिति पर पहुँच कर समाप्त हो जाता है, और बहुत ही दारुण अवस्था मे—कहने का तात्पर्य यह कि उपलब्धि होते ही देवता हमें प्रेम की अनुकम्पा से बचायें।"

लेकिन क्या अप्रत्याशित ढग से उपलब्धि होना, फिलोटीमोज ने मुस्कराते हुए कहा, "वास्तविक सुख नही है। यह सब कितना विरल होता है।"

"बिलकुल भी नही—अगर आदमी के मन मे उस तरह की कामना है। बात सुनो नौक्रेटीज इच्छा न करना, परन्तु उपस्थित होने पर प्रत्येक अवसर का लाभ उठाना, प्रेम न करना, परन्तु जो चाहने लायक है, उनके प्रति सद्भावना रखना जो कि अवसर और परिस्थिति के अनुसार किसी दिन उद्दामवासना मे भी बदल सकता है, अपने इच्छित गुणो से युक्त किसी स्त्री को प्रेम न करना और न ही ऐसी स्त्री को प्रेम करना—जो अपनी सुन्दरता को रहस्य ही बनाए रखना चाहती हो किन्तु हमेशा ही किसी बदलायका चीज की कल्पना करना और निरन्तर सुन्दर की उपलब्धि होने के आश्चर्य और सुख के लिए अपने को सुरक्षित रखना—क्या ये सब बाते ऐसी नहीं है जो कि कोई भी सन्त प्रेमी लोगों को दे सकता है। केवल उन्ही लोगो का जीवन सुखी जीवन [illegible] सकता है जो कि अपने वैभव और विलास के दिनो मे भी [illegible] सुखी कल्पना को अक्षुण्ण रख सकते हैं।'

दावत का दूसरा दौर समाप्त होने लगा था। [illegible]

लाये जा रहे थे, उनको तैयार करने मे दो-दो दिन मे तैयारियाँ की जा रही थी। बत्तखे थी जिन्हें पिछले चौबीस घटे मे पकाया जा रहा था कि उनके डैनो को अक्षुण्ण रखा जा सके। अब तक जो खाना परोसा जा चुका था, मेहमानो ने उसमे से चुन-चुन कर ही खाया था। और जो बचने पर एक तरफ हटा दिया गया था, उसमे अब भी सौ आदमियो का पेट अच्छी तरह भर सकता था। लेकिन सबसे आखीर में जो चीज़ परोसी गई, उसकी समानता मिलनी असम्भव थी।

यह असाधारण खाद्य पदार्थ सूअर से तैयार किया गया था। सारे एलेक्जेण्ड्रिया मे भी इसका मिल सकना असम्भव था। इस सूअर का आधा भाग भूना गया था और आधा पकाया हुआ था। यह जान सकना प्राय असम्भव था कि सूअर को किस तरह मारा गया है, और उसके पेट में जो कुछ मसाले थे वह किस तरह भरे गए हैं। सूअर के पेट में कीमा किया हुआ गोश्त, सब्जियाँ, मसाले और नाना प्रकार के स्वादिष्ट और भूख को उत्तेजित करने वाले पदार्थ भरे हुए थे। उस भरे पूरे साकार सूअर के अन्दर उन पदार्थों को पाकर मेहमानो के आश्चर्य का ठिकाना नही था।

चारो तरफ से वाह वाही की आवाजे आ रही थी। फॉस्तीना ने निश्चय कर लिया कि वह उसके पकाने का तरीका पूछे बिना न रहेगी। फ़ेमीलाज अलकार युक्त शब्दो की झडी लगा रहा था, और फिलोडिमोज ने एक ऐसा श्लोक सुनाया था, जिसके प्रत्येक शब्द में कूट अर्थ था। यह सब सुन कर नशे में मस्त सेसो इस कदर जोर से हँसी कि सुनने वाले चौंख पडे। लेकिन बब्बीज ने सात प्यालो में सात अलभ्य मदिरा ढालने की आज्ञा दे दी थी, इसलिए वह अलकार युक्त वाक्यावली आगे न बढ कर कुछ निम्न स्तर पर आ गई।

टाइमन बब्बीज की तरफ मुख़ातिब होकर बोला, "क्योजी तुमने उस ग़रीब लडकी को अपने साथ लाने मे मुझे क्यो रोक दिया। तुम कितनी बेरहम हो। आखिरकार वह अपने ऊपर करम करने वाली तो

थी ही। अगर तुम्हारी जगह मैं होता तो कम से कम मैं तो किसी धनाढ्य महिला के स्थान पर एक गरीब नर्तकी को ही तरजीह देता।"

"तुम तो पागल हो!" और बिना बहस में पडे वह चुप हो गई।

"हाँ, मैं मानता हूँ कि जो लोग कभी-कभी ही आश्चर्यजनक सत्यों का उद्घाटन करते हैं—लोग उन्हें सनकी ही कहते हैं, दार्शनिक नहीं। केवल असम्भव और परमविरोधी सत्यों के सामने ही लोग सिर झुकाते हैं।"

"अच्छा, आओ मेरे दोस्त अपने पडोसियों से पूछो। भला इनमें से कोई ऐसा है जो किसी गरीब औरत को अपनी चहेती बनाएगा।"

"मैंने ऐसा किया है," फिलोडिमोज ने सहज भाव से कहा।

दावत मे शरीक होने वाली स्त्रियों ने उसकी तरफ नाक सिकोड़ी और भौंहे चढा ली।

"पिछले साल," उसने अपनी बात जारी रखी, "वसन्त के अन्तिम दिनों मे, जब सिसरो को देश निकाला हुआ तो मैंने अपने को अनुरक्षित मान कर एक यात्रा की थी। मैं आल्पस पर्वत की तलहटी मे विनिमियोज झील के तट पर ओरोबिया नामक सुन्दर प्रदेश मे चला गया। वह गाव बहुत साधारण-सा था। वहा लगभग तीन सौ औरतें रहती थीं। उनमे से एक स्त्री देवी अफ्रोडाइटी की देवदासी बन गई थी ताकि वह दासी की सुरक्षा कर सके। उसके घर की एक पहिचान थी कि उसके द्वार पर एक ताजी पुष्पमाल लटकती रहती थी, किन्तु वह स्वयं अपनी बहिनों और चचेरी बहिनों से ही बिल्कुल मिलती जुलती थी। वह किसी तरह की सुर्खी, सुगन्धित प्रसाधनों का प्रयोग न करती और वह रहस्यों से भरे हुए नकाब ओढ़ती थी। वह अपने सौन्दर्य की हिफाजत करना भी न जानती थी। वह अपने को उपेक्षित रखती थी और ऐसी लगती थी जैसे कि किसी ने संगमरमर के फर्श पर कोई मखमली चादर-सी फेंक दी हो। यह सोच कर हंसी आती है कि वह केवल [illegible] नंगे पैर रहती थी ताकि उसके पैरों का कोई भी [illegible] सके।

फास्तीना के पैरों को देखो तो हाथों से भी अधिक कोमल दिखाई देते हैं। तथापि उसके साथ मुझे इतना सुख मिला कि उस एक महीने के लिए मैं रोम, टायर और एलेक्जेण्ड्रिया सभी को भूल गया।"

नौक्रेटीज ने सिर हिला कर उसकी बात को सहमति प्रदान की और शराब के घूंट को गले में उतार कर बोला, "प्रेम के महान क्षण वही हैं जब सच्चे स्वात्मदर्शन होते हैं। स्त्रियों को इस सत्य से अवगत होना चाहिए। और मायूस करने वाले करिश्मों से हमें बरी रखा जाय, इसके विपरीत उनकी कोशिश यह रहती है कि पूरी तरह से हमारी कोमल भावनाओं को हम से छीन लें। भला कोमल चिकने बालों पर लोहे की मार की कल्पना भी कोई कर सकता है। आह, इन बालों पर गर्म लोहे के निशानों से अधिक दुख देने वाली चीज कोई हो सकती है, और जिन रुखसारों को चूमने के लिए आदमी के होंठ फड़कने लगें उन पर की गई रंगीनी से ज्यादा रहम करने लायक कोई गुनाह हो सकता है। अन्तिम विवेचना करते हुए मैं तो यही कह सकता हूँ कि महिलाएँ कभी-कभी भ्रामक शृंगार पद्धतियों की ईजाद करती हैं। प्रत्येक स्त्री अपने चारों तरफ प्रशंसकों के झुण्ड रखना चाहती है। यदि वह अधिक आत्मीयता के साथ न मिलें तो सम्भव है कि वह अपनी असलियत को कभी भी बेनकाब न करे। लेकिन इस बात की कल्पना करना कठिन है कि कोई स्त्री सौन्दर्य-प्रसाधन के ऐसे ढंग को अपनायेगी कि उसका प्रशंसक उसके निकट आते ही उससे नफरत करने लगे। क्या कोई औरत ऐसी है जो सार्वजनिक स्थानों की अपेक्षा अपने घर में अपने लोगों के समक्ष कम आकर्षक लगना भी पसन्द कर सकती है।"

"तुम इस बारे में कुछ भी नहीं जानते नौक्रेटीज," क्राइसिस ने मुस्कान के साथ कहा "मैं जानती हूँ कि बीस प्रेमियों में से एक को भी हमेशा अपने पास रोक रखना मुश्किल है। लेकिन पाँच सौ में से एक को अपनी तरफ आकर्षित कर लेना और भी मुश्किल है। एकान्त में अगर आप किसी को प्रसन्न कर भी लें तो भी उसके सार्वजनिक

तौर से प्रसन्न करने की जरूरत बनी रहती है, आदमी यह भी चाहता है कि उसकी होते हुए भी सार्वजनिक स्थानो में उसकी साथिन दूसरो को कितनी पसन्द आती है, अगर हम रूज न लगाये और आंखो मे अंजन न करे तो कोई हमारी तरफ आंख उठा कर भी देखोगे नही। फिलोडियोज ने जिस किसान महिला का जिक्र किया वह भले ही उसे आकर्षित कर सकी हो क्योकि उस वातावरण में वह अकेली थी, लेकिन यहां तो १२ हजार सुन्दरियां हैं, यहां बिलकुल ही दूसरे ढग की प्रतियोगिता है।"

"क्या तुम यह जानती हो कि जिसे खुदा ने वास्तविक सौन्दर्य दिया है, उसे जेवर की जरूरत नही पडती, और वह सौन्दर्य अपने आप में ही सब कुछ पूरा कर देता है।"

बहुत अच्छी बात है। एक शुद्ध सुन्दर स्त्री के मुकाबले में, अपने कहने के मुताबिक एक बूढी खूसट को खडा करो। एक को [illegible] फटे-टूटे कपडो मे किसी कोने में खडी कर दो और दूसरी को आकाश मे झिलमिल करने वाले तारो के समान चमकदार पोशाक मे सजा [illegible] दासियो से घेर कर मच पर रखो। देखोगे कि उस सौन्दर्य [illegible] को कोई देखेगा भी नही और इस भद्दी, उम्र रसीदा की ओर सब मुह फैला कर देखते जायेंगे। अगर उसकी ओर बीस देखेंगे तो इसकी ओर दो सौ की नजर उठेगी।'

"आदमी तो जाहिल होता है।' सेनो ने कहा

'नहीं, आदमी सिर्फ जाहिल होते हैं, वह अपनी प्रेमिकाओं का चुनाव करने मे भी जरा-सी भी मशक्कत करना पसन्द नही करते। जिन [illegible] अधिक प्यार किया जाता है वही सबसे ज्यादा धोखेबाज निकलते है।'

'आप तब क्या करेंगे," मेनीलाज ने दांत को [illegible] देते हुए [illegible] "आप तब क्या करेंगे अगर कोई जान-बूझ कर किसी की प्रशंसा [illegible] आरम्भ कर दे।' और उसने बहुत ही [illegible] निर्लेप भाव से श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत किए।

एक के बाद एक—बारह नृत्य बालायें प्रकट हुईं। पहिली दो शहनाई बजा रही थी और आखिरी चग बजा रही थी । और बाकी हाथो में छोटे-छोटे ढप ले रही थी। सगीतवादक अपने साज ठीक कर रहे थे। उनके स्वर का मवान होते ही नर्तकियाँ लाम के साथ थिरकने लगी।

नृत्य अत्यन्त कोमल था, और नर्तकियो का पद-निक्षेप बहुत द्रुत-गामी नही था। नृत्य में कोई योजना भी नही थी। बहुत थोडी-सी जगह में नृत्य किया जाता था और नाचने वाली लहरो के समान एक दूसरे से घुलमिल रही थी। नाचते-नाचते उन्होने युगल नृत्य प्रारम्भ कर दिया और पैरो की ताल को बिना भग किए ही उन्होने अपनी कमर के फेटे खोल दिये और गुलाबी रग की झीनी-झीनी ओढनी भी गिरा दी। नर्तकियो के इत्र-सुगन्धित देह मेहमानो के इर्द-गिर्द मंडराने लगी। यह गन्ध सभी गन्धो से तेज थी। उनके देह की लोच और भुजाओ के वातायनो मे से झाकते हुए नेत्र और निकट से गुजरते हुए बाहुपाश में आबद्ध कर लेने का निमत्रण—सब कुछ मिलकर एक मदहोशी पैदा कर रहे थे। टाइमन के कपोलो पर एक बाला की गर्म हथेली स्पर्श करती चली गई।

"हमारे दोस्त किस विचार मे तल्लीन है ?" फ्रेमीलाज ने अपनी बारीक आवाज में कहा।

'मै बहुत सुखी हूँ दोस्त," टाइमन ने उत्तर दिया, "नारी के जीवन का सबसे बडा प्रयोजन क्या है—यह बात आज की शाम से अधिक कभी भी मेरी समझ में नही आई थी।"

"क्या है वह प्रयोजन ?"

"प्यार पाना—चाहे कलात्मकतापूर्ण हो अथवा कला-विहीन ?"

"यह तो एक राय हुई।"

"फ्रेमीलाज, एक बार हम इस नतीजे पर पहुँच रहे हैं कि दुनिया में कोई चीज सिद्ध नहीं की जा सकती। और इससे भी आगे यह बात

कि कही कुछ भी अस्तित्वमान नही है और यह धारणा भी शाश्वत नही है। यह याद रखो और तुम्हारे इस अभिमान युक्त अहम् को परितोष देने के लिए एक ऐसा थीसिस स्वीकार करने की इजाजत दो जो विवादास्पद हो और साथ ही पराजित भी हो—जो कम से कम मेरे लिए दिलचस्पी का साधन हो क्योकि मैं उसका स्थापित करने वाला हूँ। विचार भी दुनिया में मौलिकता की बात करना एक काल्पनिक आदर्श की बात करने से अधिक कुछ नही हैं। यह बात ध्यान मे रखने की है।"

"मुझे थोडी शराब और दो," सेसो ने दानी से कहा, "यह शराब दूसरी से ज्यादा तेज है।"

"मै यह मानता हूँ," टाइमन ने अपनी बात जारी रखी, "एक विवाहित स्त्री जो उस आदमी के प्रति आत्मोत्सर्ग करती है जो उसे छलता है, जो परपुरुष को नकारती है, जो बच्चे पैदा करती है जो कि उसे पहले बरदाश्त करते हैं और बाद मे उस पर अपना एकछत्र अधिकार जमा लेते हैं—मै वही बात फिर दोहराता हूँ कि वह ईमानदार समझी जाने वाली औरत इस प्रकार जीवन जीकर अपने आपको बर्बाद करती है और अपनी शादी के दिन शायद अपनी जिन्दगी का सबसे अधिक मूर्खतापूर्ण सौदा करती है।"

"वह यह समझती है कि अपना फर्ज पूरा कर रही है" नाग्रेलीन बिना की आस्था के अपनी बात कह डाली।

'फर्ज, और किसके प्रति। क्या वह उन प्रश्न का समाधान करने के लिए स्वतन्त्र नही है जिसका केवल उसी के जीवन से सम्बन्ध है। औरत हमेशा बौद्धिक सुख से अनीत होती है और आनन्दोप हर्ष और उल्लास की इस आधी दुनिया से बेखबर रहने में ही सन्तोष का अनुभव करती हुई। यह शादी कर लेती है और इस प्रकार सब प्रकार के सुखो के कपाट हमेशा के लिए बन्द कर देती है। क्या अपने यौवन के बसन्त काल मे कोई ऐसा कहने वाली लड़की भी हो सकती है,

'मेरा पति भी होगा और इसके अतिरिक्त दस और आदमी भी मेरे शनाशाई होंगे, शायद बारह भी हों ?' और ऐसा कहते हुए भी वह यह सोचे कि वह बिना पश्चाताप किए ही जीवन की अन्तिम साँस लेगी। रहा मेरी बाबत, जब मेरी आँख मिचने लगेगी, शायद तीन हज़ार की संख्या भी मेरे दिल को संतोष प्रदान न कर सकेगी।"

"तुम तो महत्त्वाकांक्षी हो!" क्राइसिस ने आलोचना की।

इस पर फिलोडिमोज़ ने चिल्ला कर कहा, "लेकिन अपने इन उदार परोपकारी साथियों की प्रशस्ति में हम महान् से महान् काव्य गाकर भी शायद फर्ज़ पूरा नहीं कर सकते। आपकी कोमल आत्मा के लिए प्रेम बलिदान नहीं है, वरन् दो प्रेमियों के बीच वह बराबर का आदान-प्रदान है। आप सौन्दर्य विहीनों के प्रति भद्रता का व्यवहार करती हैं, दुःखी को धैर्य प्रदान करती हैं, सबका स्वागत करती हैं? और स्वयं सुन्दरी परम् सुन्दरी होकर भी। यही कारण है कि क्राइसिस, बच्चीज़, मेसो, फॉस्तीना मैं तुम से कहता हूँ कि आप लोगों को पुरुष की शाश्वत प्रशंसा प्राप्त है और स्त्रियों की शाश्वत ईर्ष्या।"

नृत्य-बालाओं ने अपना नृत्य समाप्त कर दिया था। एक कला दिखाने वाली सामने आ गई थी और खुले खंजर की तेज़ ऊपर खड़ी हुई नोक पर वह हाथों के बल चल रही थी।

सारे मेहमान दम साध कर उस बाला के उस खतरनाक प्रदर्शन को देख रहे थे। टाइमन ने क्राइसिस की ओर देखा और लोगों की नज़र बचाता हुआ, वह धीरे-धीरे उसके नजदीक खिसकने लगा।

"नहीं" क्राइसिस ने हल्की आवाज़ में फुसफुसाया, "नहीं, मेरे दोस्त!"

लेकिन उसने उसे अपने बाहुपाश में आबद्ध कर ही लिया।

"बन्द करो यह सब," उसने अनुनय की, "बच्चीज़ देख लेगी। बच्चीज़ बहुत नाराज़ होगी।"

टाइमन ने एक नजर भर कर मेहमानों की ओर देखा और यह

सतोष करके कि कोई उन्हे नही देख रहा है, उसने आलिंगन पाश को और भी कस दिया। और तब उस असभ्य आचरण के प्रति एक तर्क के रूप में उसने अपना खुला हुआ बटुआ उसकी गोद मे डाल दिया।

कला दिखाने वाली अपनी खतरनाक कलाओ का प्रदर्शन करती जा रही थी। वह अपने हाथो पर चल रही थी, उसका घाघरा उलट कर नीचे आ गया था, उसके पैर घूम कर सिर के सामने आ गए थे और वह तलवार और लम्बी तेज नोको के बीच चल रही थी। इस सकटापन्न स्थिति से, और शायद जख्म खा जाने के भय से उसके कपोलो पर गाढा और गर्म खून उतर आया था और उसकी उजली आंखे इससे और भी चमकदार मालूम पडने लगी थी। उसकी नसें भुकी थी और तनी हुई थी। उसकी टांगे नर्तकी की भुजाओ की तरह फैली हुई थी और उसकी छाती मे सास की धडकन साफ दिखाई देती थी।

"बस बहुत हो गया" क्लाइसिस ने सख्ती से कहा, तुम नाहक मुझे परेशान कर रहे हो। मुझे जाने दो। जाने दो मुझे !"

और जिस समय दोनो एफीसियन परम्परानुसार गाए जाने वाली हर्माफ्रोडाइटी की कथा सुनाने के लिए अपने वाद्ययन्त्र उठा रही थी क्लाइसिस ने अपने को टाइमन के बाहुपाश से मुक्त कर लिया था और वह भाग खड़ी हुई थी।

अध्याय सत्रह

रहाकोटिस

क्राइसिस का दिल क्रोध से धधक रहा था। उसमे जख्म की तरह जलन हो रही थी। पीठ पीछे द्वार बन्द भी न हुए थे कि उसने अपने सीने को कस कर हाथो से दबा लिया। वह एक स्तम्भ से लग कर खडी हो गई। एक अज्ञात वेदना से विकल होकर वह अपने हाथ मीड रही थी और एक हल्की कराह उसके मुंह से निकल जाती थी।

तो क्या वह कभी भी न जान सकेगी ?

जिस तेजी से समय व्यतीत हो रहा था, उस रहस्य को जान सकने की सम्भावना भी उतनी ही तेजी से उसकी आँखो के सामने अस्त होती दिखाई देने लगी थी। इस सत्य को जानने के लिए शीशे की माँग करना बहुत बडे दुस्साहस का कार्य होगा। और अगर शीशा लिया जा चुका है तो सारा सन्देह उसी पर पडेगा और मामला बिगड जाएगा। लेकिन उस सत्य को जानने की बेसब्री उसके जब्त से बाहर होती जा रही थी। इसी बेसब्री से घबरा कर वह हाल से बाहर निकल आई थी।

टाइमन के उस फूहड आचरण से उसका दबा हुआ क्रोध अब धू-धू करके धधकने लगा था। उसका शरीर काँप रहा था। शीतलता ग्रहण करने के लिए उसने ऊँचे-विशाल स्तम्भ से अपना शरीर सटा दिया।

उसे भय था कि उसकी स्नायु शिथिल हो जाएँगी।

उसने आर्ट्री नामक दासी को पुकारा और उससे कहा, "मैं जरा बाहर जा रही हूँ, मेरे जेवरात का ख्याल रखना।"

तब वह ७ सीढियां उतर कर नीचे आई।

सामने सडक थी और उस सडक पर वह सीधी आगे बढने लगी। उसके मस्तक पर पसीने की बडी-बडी बूंदे झलक आई थी, हवा मे पत्ता तक न हिल रहा था। मायूसी ने उसकी बेचैनी को और भी बढा दिया था और उसके पैर लडखडाने लगे थे।

लेकिन फिर भी वह आगे ही आगे बढती जा रही थी। बच्चीज का मकान र्‍हाकोटिस नगर के बुशियन नामक इलाके के भी अन्तिम छोर पर था। इस इलाके में गन्दी बस्तियां भरी हुई थीं और इनमे मल्लाह और मिस्त्री लोग रहते थे। वे मछियारे जो लगरबन्द नौकाओ पर सूरज की चिलचिलाती धूप मे सोते थे, एक बजे से लेकर पौ फटे तक शराब खानो में आकर पिछले दिन की बेची हुई मछलियो से हासिल होने वाली रकम लडकियो और शराब पर दोहरा नशा हासिल करने के लिए खर्च करते थे।

क्राइसिस इसी वहशी प्रदेश मे फँस गई। चारो तरफ से अजीब आवाजे आ रही थी और उन्मत्त नृत्य-संगीत के स्वर वातावरण में गूंज रहे थे। उन शराब खानो के द्वार खुले हुए थे। लैम्पो के धुएं से वह कोठरियां घुप्प हो रही थी। अनेक छायाएं अन्दर दिखाई देती थी। उनमे एक भी अकेली न थी। रग-बिरगी चटाइयां बिछी हुई थी और मानव देहो के भार से वह निरन्तर चटख रही थी। क्राइसिस बेचैनी के साथ उस बस्ती में से गुजरती रही। एक भिखारिन उससे भीख मांगने लगी। एक बूढा आदमी लडखडाता हुआ उसकी ओर बढा और एक किसान ने उसको चूम लेने की भी कोशिश की। वह भाग रही थी और एक लज्जायुक्त भय उसके अन्दर समाता जा रहा था।

यूनानी नगर में यह विदेशी उपनगर क्राइसिस को अजनबी और कपट से भरा हुआ प्रतीत हुआ। यहा के मकानो के रहस्यो, यहा की रहस्यमय और पेचीदा गलियो से वह बिल्कुल अपरिचित थी। जब अभी वह इधर आई है, वह लाल-दरवाजे वाले मकान में भी गई है

और वहाँ आकर वह हमेशा ही अपने प्रेमियो को भूल जाती रही है।

लेकिन आज उसने बिना पीछे को मुड कर देखे ही यह जान लिया कि दो सम्मिलित पदचाप उसका पीछा कर रहे हैं।

वह जल्दी-जल्दी आगे बढने लगी। वह युगल पदचाप भी उसी तरह तेजी से पीछा करने लगे। वह भागने लगी, लेकिन फिर भी उसका पीछा किया जाता रहा। वह एक गली में मुड गई और फिर एक दूसरी गली में फिर वह एक तीसरे रास्ते पर मुडी जिसका अन्त कहाँ होगा, वह जानती न थी।

उसका गला सूख गया था, और उसकी कनपटियाँ फडक रही थी। लेकिन बच्चोज के यहाँ पी हुई शराब उसके कदम सभाले हुई थी और वह दायें-बायें भाग रही थी—उसको सूझता न था कि वह किधर जाये।

आखिरकार रास्ता एक दीवार पर खत्म हो गया। अब वह रास्ता बिल्कुल अधकार से पूर्ण था। उसने तेजी से पीछे लौटने की कोशिश की लेकिन दोनो मल्लाहो ने अपने हाथो से उसका रास्ता रोक लिया।

"किधर जाती हो, सुनहरी चिडिया" उनमे से एक अट्टहास करता हुआ बोला।

"मुझे जाने दो।"

"ओह, तुम रास्ता भूल गई हो, देखो न तुम रहाकोटिस के लिये बिल्कुल अनजान हो। एह तुम आज हमारे साथ इस शहर का भ्रमण करोगी।"

और उन दोनो ने उसकी पीठ में अपने हाथ डाल दिये। उसने चीख-पुकार मचाई, उनको घूंसे भी मारे लेकिन दूसरे मल्लाह ने एक ही हाथ में उसके दोनो हाथ दबा लिये और बोला, "खामोश, यहाँ के रहने वाले यूनानियो को प्रेम नहीं करते। कोई भी तुम्हारी मदद के लिये नहीं आएगा।"

'मैं यूनानी नहीं हूँ।"

तुम झूठ बोलती हो। ये गोरी चमडी और लम्बी नाक। अगर

मार खाने से डरती हो तो एक दम खामोश हो जाओ।"

फ्राइसिस ने वक्ता की ओर आमुख होकर कहा, "मैं तुम्हारे साथ चल सकती हूँ।"

"तुम हम दोनो के साथ चलोगी। चलो, सीधे सीधे चलो। तुम्हे बहुत आनन्द आएगा।"

वह आश्चर्य कर रही थी कि वह उसे किधर ले जायेंगे। इन अनिश्चितता के क्षण मे भी दूसरा मल्लाह अपनी वहशियाना खोपडी और अक्खडता के बावजूद भी उसे अच्छा लगा। वह उसे इस तरह घूर रही थी, जैसे कुत्ता गोश्त की रकाबी को घूरता है। वह अपनी देह उसकी ओर लचकाने की कोशिश करने लगी ताकि चलते-चलते वह उससे स्पर्श करती रहे।

अब वेजान और अधकारपूर्ण गलियो मे वे तेजी के साथ गुजरने लगा। वह गलियां इतनी रहस्यपूर्ण और उलझी हुई थी कि फ्राइसिस को आश्चर्य होता था कि मल्लाह किस तरह अपना रास्ता खोज पा रहे थे। स्वय वह त्रिकाल मे भी वहा से उस रात बाहर निकलने मे सफलता न पा सकती थी। बन्द दरवाजो, खाली खिडकियो और निस्पद छायाओ को देख कर उसका मन भयभीत हो उठता था। दोनो तरफ खडे हुए मकानो के बीच ऊपर मुंह उठाकर देखने से आकाश की पतली पीली रेखा दिखाई पडती थी जहाँ कि उस समय मनोहर चांदनी छिटकी हुई थी।

आखिरकार वह फिर से गुजान इलाके मे आ पहुँचे। जिस समय एक मोड पर वह गली मे घूम रहे थे, अकस्मात् आठ, दस, बारह बत्तियां जलती हुई नजर आई। मकानो के दरवाजो पर रोशनी हो रही थी और नागाटोआह की प्रतिमा लाल मोमबत्तियो के बीच मे बैठी हुई थी। इन लोगो ने सिर पर सुनहरे रंगे पहने हुए थे और कागज के लैम्पो की रोशनियां उनके चेहरो पर पड रही थी।

यहा दूर से भीड की गहमागहमी सुनी जा सकती थी। इन्हीं

की टापो और सामान के इधर से उधर उतारे और लादे जाने की आवाज सुनाई पडती थी। यह रहाकोटिस का बाजार था। जब एलेक्जेड्रिया नीद की खुमारी मे होता तो यहा के नौ लाख निवासियों के खान-पान के लिए रसद वगैरह लाया जाता था।

आगे चलकर एक चौक आया। इस मैदान में चारों ओर हरी शाक-सब्जियाँ फैली हुई थीं, कमल-ककडियाँ और हरी सब्जियो के चमकदार दाने रखे हुए थे। क्राइसिस ने एक ढेर में से कुछ मेलबेरीज उठा ली और बिना रुके ही उन्हे खाने लगी। आखिरकार वे एक नीचे दरवाजे के सामने आ गए और वे मल्लाह उसी क्राइसिस को लेकर नीचे उतर गए जिसके लिए एण्डयोमेनी के सच्चे मोती चुराये गए थे।

नीचे उतर कर वे एक हाल में पहुँच गए। हाल बहुत बडा था। लगभग ५०० आदमी पौ फटने की इन्तजार में पीली बीयर पी रहे थे। अन्जीर और सीसेम (Seasame) और ओलीरा रोटी (Olyra Bread) खा रहे थे। उनके मध्य अगडाई तोडती हुई स्त्रियो का जमघट लगा था। घने काले केशों का खेत भरा हुआ था और विभिन्न प्रकार के फूलो ने उस प्रज्वलित वातावरण मे डूबा हुआ था। ये अनाथ लडकियाँ थी जो सहारे की तलाश में थीं और जो सभी की थीं।

उनके पैर नगे थे और लाल, पीले रगो के चिथडों मे ढका उनका शरीर प्राय अर्धनग्न था। वे इन्हीं चिथडो की भीख माँगने यहाँ आई थीं। उनमे बहुत-सी लडकियाँ अपने साथ एक छोटा-सा शिशु लिये हुई थीं जिसे चिथडो मे लपेट कर उन्होने अपने बायें बाजू मे सभाला हुआ था। यह छ मिस्री नर्तकियाँ भी थीं। वे मच पर सतर्क थीं और उनके साथ तीन साजिन्दे भी थे। दो ने अपने हाथो में ताशे सभाले हुए थे और तीसरा बडा पीतल का त्रिशूल बजा रहा था।

आह्लाद से क्राइसिस के कठ से चीख निकल गई।

एक नन्गा शराब वाले से उसने थोडी सी शराब खरीदी। लेकिन इस गन्दे स्थान की दुर्गन्ध इतनी तेज थी कि अकस्मात् उसे बेहोशी

आने लगी। मल्लाह अपने कन्धो से सहारा देते हुए उसे बाहर ले गये।

बाहर जाकर उसका मन कुछ हलका हुआ। उसने मल्लाहो से प्रार्थना की, "हम कहां जा रहे हैं। मैं अब अधिक चल नही सकती। मैं सड़क में ही गिर जाऊगी।"

अध्याय अठारह

बचनेलिया और बच्चीज़

जब वह दोबारा बच्चीज़ के मकान पर पहुँची तो उसका मन तरो-ताज़ा था और एक आनन्दयुक्त हल्केपन मे पुलकित था। उसके मस्तक से चिन्ता के बादल उड चुके थे। उसकी मुखाकृति पर कोमल भावनाएँ उभर आई थी। जीने पर चढती हुई वह ऊपर ड्योढी में पहुँच गई।

इस बीच और भी मेहमान शरीक हो चुके थे। बारह नृत्य-बालाओ ने उसका स्वागत किया था। चारो तरफ मसले हुए पुष्प हार फर्श पर बिखरे पडे थे। एक कोने में एक बडी शराब की बोतल औंधी पडी हुई थी और एक सोने की नदी उससे निकल कर मेजो के नीचे बहती जा रही थी।

फॉस्तीना के साथ सट कर फिलोडिमोज बैठा हुआ था और उस के सम्बन्ध में लिखी हुई अपनी कविता गा रहा था। और उसके वस्त्रो से अठखेलियाँ करता जाता था।

वह गा रहा था, "ओ पद्मपाद, गुलाब के समान घुटनो वाली तन्वगी। ओ सौंदर्य की प्रतिमा! तुम्हें देख कर मेरा मन बावला हो उठता है। तुम रोमन हो और भूरी हो। तुम सेफो की कविताएँ नही गाती हो किन्तु क्या पर्सियस भी भारतीय आन्द्रमदा को प्यार नहीं करता था।"

इसी मध्य सेमो जिसे मिस्री शराब के तेज शरारो ने मदहोश कर दिया था और जो फलो से लदी हुई मेज पर उलट-पुलट हो रही थी, अब

बफ ने ठंडे किए हुए शबत ने अपने को तर कर रही थी। और अकेले में गुनगुना उठती थी, पियो, पियो मेरे नन्हे पियो, तुम बहुत प्यारे हो। अफ्रोडीसिया जिसकी दासता का आज अन्तिम दिन था, बड़े गर्व के साथ अपना मुक्ति दिवस मना रही थी। इस रस्म के मुताबिक, इस जश्न के अन्दर उसने तीन प्रेमी अंगीकार किए थे, लेकिन उसका कर्त्तव्य केवल यहीं तक सीमित नहीं रहना था। दासता से मुक्त होने वाली स्त्रियों के लिए परम्परानुसार यह नियम था कि निरन्तर भोग विलास में लिप्त रह सकने की शक्ति का प्रदर्शन करके उन्हें यह सिद्ध करना होता था कि दासता से मुक्ति प्राप्त करके उन्होंने कोई अनुपयुक्त कार्य नहीं किया है।

हॉल के दूसरे किनारे पर मिर्टोक्लिया रोडिस को उस मेहमान से बचा रही थी जो लगातार उसे दबाता जा रहा था। इन दोनों इफीसियनों ने ज्योंही क्राइसिस को देखा तो वह दौड़ कर उसके पास गईं और बोलीं—"हमें जाने की आज्ञा दो, प्रिय क्राइसी, थ्यानो अभी यहीं रहेगी, लेकिन हम जाना चाहती हैं।"

"मैं भी यहीं ठहरूँगी।" क्राइसिस ने कहा। और गुलाब के फूलों से ढके हुए एक पलंग पर उसने अपना शरीर पसार दिया।

अनेक आवाज़ों की गहमागहमी और हँसी की आवाज़ ने क्राइसिस का ध्यान आकर्षित किया तो उसने देखा कि थियानो अपनी छोटी बहिन का मजाक उड़ा रही है और डाने की कथा कहती हुई दर्शकों का मनोरंजन कर रही है। छोटी लड़की इस कुत्सित स्वांग से बहुत लजा रही थी और चूँकि आकाश से बिजली गिर कर सबके पत्थर हो जाने के दिन अब नहीं थे, इसलिए सबके सब मेहमान स्तम्भित रह जाने के स्थान पर उसे देख कर उपहास ही कर रहे थे।

लेकिन यह नाटक अधूरा ही रह गया। छोटी लड़की की दिलजोई के लिए एक दूसरा उपाय सोचा गया। नाचने वाली दोनों लड़कियों ने एक बड़ा-सा शराब का पीपा भर कर हॉल के बीचोबीच सरका

सरका दिया और थ्यानो की टाँग ऊपर करके उसे शराब के नजदीक पहुँचाने की कोशिश करने लगी। इस कौतुहलपूर्ण क्रीडा को देख कर सभी मेहमान इस छोटी लडकी के चारो ओर इकट्ठे हो गये। लडकी का मुँह शराब मे भीग गया था और उसके मुँह की लाली और भी ज्यादा बढ गयी थी। बच्चीज ने सैलेमिस को पुकार कर कहा—"आइना उठाकर लाओ, जरा वह भी तो अपनी शक्ल देखे।" दासी ताँबे का शीशा उठाकर ले आई। "नही वह आइना नही, रोडोपिस का आइना उठाकर लाओ, उसी में तो उसकी शक्ल देखने के लायक है।" एक झटके के साथ क्राइसिस उठ कर बैठ गई। रक्त का एक ज्वार उसके गालो पर उभर आया और फौरन ही भाटे के समान उतर कर उसका चेहरा पीला जर्द बनाकर छोड गया। उसका हृदय धक्-धक् कर रहा था। उसकी निगाह उस दरवाजे पर टिकी हुई थी, जिसमें से होकर दासी वह आइना लेने गई थी।

ये क्षण उसके जीवन का अन्तिम निर्णय करने वाले क्षण थे। आज उसकी अन्तिम अभिलाषा या तो पूरी होने वाली थी अथवा सर्वनाश को प्राप्त होने वाली थी।

उसके चारो तरफ जश्न अब भी जोरो से चल रहा था। फूलो से बनाया गया एक ताज जो किसी ने दूर से फेंका था, अभी-अभी उसके मुँह पर आकर लगा था और पराग का एक अजीब जायका उसके ओठो पर लगा रह गया था। किसी आदमी ने इत्तर की एक शीशी उसके शरीर पर ढुलका दी थी जोकि उसके कन्धे पर से बह गई थी। प्याला भरी शराब जिसमें लाल पोमेगनेट डाली हुई थी, किसी ने उसकी रेशमी पोशाक पर ढुलका दी थी जो कि उसके जिस्म तक पहुँच गई थी।

जो दासी आइना लेने गई थी वह लौट कर नही आयी। क्राइसिस पलग का पाया पकड कर बिलकुल पत्थर की प्रतिमा के समान निस्पन्द बैठी हुई थी। प्रेम-रोग से पीडित एक युवती के हृदय की सगीतात्मक धुन उसके कानो में गूज रही थी। उस क्षण उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि

जैसे उसके अन्दर की नारी पिछले दिन भर से कराहती रही है। वह किसी चीज को तोड़-मरोड़ डालना चाहती थी। वह अपनी अगुलियो को भी तोड़-मरोड़ देना चाहती थी। वह चीख उठना चाहती थी।

आखिरकार सैलेमिस लौट कर आ गई, लेकिन उसके हाथ खाली थे। "आइना कहा है ?" बच्चीज ने पूछा।

"आइना वहा नही वह चुरा चुरा लिया गया है।" दासी ने हकलाते हुए कहा। यह सुन कर बच्चीज के मुंह से इस तरह चीख़ निकली कि जश्न में शरीक होने वाले सभी मेहमान पत्थर की तरह खडे रह गये। अकस्मात् चारो ओर सन्नाटा छा गया।

उस विशाल हाल के अन्दर जितने भी स्त्री-पुरुष थे वे सभी वहां आकर जमा होने लगे। केवल थोडी-सी जगह बची हुई थी जहां क्रोध से आग बबूला हुई बच्चीज खडी हुई थी और दासी दोजानू होकर उसके सामने अपराधी की तरह झुकी हुई थी।

"तुम कहती हो ! तुम कहती हो !" वह चिल्लाई। इस पर भी जब सैलेमिस ने कोई उत्तर नही दिया तो उसने क्रूरतापूर्वक उसका गला दबोच लिया।

"तुम हो जिसने वह आइना चुराया है, सच-सच बता ? तुम्ही ने वह आइना चुराया है, अगर नही बोली तो मै कोडो से तुम्हारी खाल उडवा दूंगी।"

इसके बाद और भयानक हादसा हुआ। मौत के अप्रस्तुत भय से और प्रस्तुत भय की भयानकता से आक्रान्त होकर वह छोटी लडकी चीख उठी और उसने कहा—"मैने वह आईना नही चुराया है, अफ्रोडीसिया ने चुराया है। मैने नही।"

"अफ्रोडीसिया, तुम्हारी वहिन ?

"हा ! हा !" सैलेमिस ने फिर दोहराया। "अफ्रोडीसिया ने ही वह आइना चुराया है।" और वह बहिन को घसीट कर बच्चीज के सामने लाई जो कि यह आरोप सुन कर ही मूर्छित हो चुकी थी।

अध्याय उन्नीस

बलिदान

सभी लोगों ने एक साथ मिलकर दोहराया, "अफ्रोडीमिया ने वह आइना चुराया है।"

"दुष्ट ! बदकार ! चोर !" सारी बहिनें, जो अपने स्वयं के जीवन की हानि के भय से आक्रांत थी अफ्रोडीमिया पर पूरी तरह हिंसात्मक आक्रमण कर रही थी। बच्चीज़ लगातार उसके शरीर में ठोकर मारती जा रही थी।

"आइना है कहा ?" बच्चीज़ ने पूछना जारी रखा—"तुमने उसे कहा छिपाया है ?"

"उसने वह आइना अपने प्रेमी को दे दिया है।"

"उसका प्रेमी कौन है ?"

औफिक का रहने वाला एक मल्लाह है।"

"उसका जहाज कहाँ है ?"

"वह तो आज ही शाम को रोम की ओर चला गया। अब आप जीवन पर्यन्त अपना आइना न पा सकेंगी।"

"इसको सूली पर चढ़ा दो। यह चोर है और अभागिन पशु से भी गई बीती है।"

"हे देवता !" बच्चीज ऊँचे स्वर से चीख रही थी। इसके बाद उसका दु:ख एक भयानक प्रतिहिंसा के रूप में बदल गया। अफ्रोडीसिया की चेतना हालांकि आंशिक रूप में लौट आयी थी लेकिन जो कुछ हो रहा था उसे समझ सकने में वह असमर्थ थी और उसके प्रतिकार कर सकने

री। असमर्थता के कारण उसके मुंह से शब्द भी न निकलते थे। उसकी आंखों के आंसू सूख गये थे। बच्चीज ने उसके बाल पकड़ कर घसीटना शुरू कर दिया था और उसे फर्श पर पड़ी हुई धूल, मुर्झाये हुए फूलों और शराब की नदी में से घसीटती हुई ले जा रही थी।

"उसे क्रास पर ले चलो ?"

"क्रास पर! फौरन ही मेखें लाओ और इसे सूली पर लटका दो।"

'ओफ!" नेसो ने अपने पड़ोसी से कहा—"हमने तो आज तक किसी को सूली लगते नहीं देखा, चलो, जरा उनके पीछे चलें, देखें क्या होता है।"

सबके सब उनके पीछे बढ़े। फ्राइसिस जो शायद वास्तविक अपराधी को जानती थी और स्वयं उस अपराध का कारण भी थी सबके साथ मिलकर उनके पीछे-पीछे जा रही थी। बच्चीज सीधे दासियों के सोने के उस हॉल में घुसती चली गई जहां कि सिर्फ तीन चटाइयां बिछी हुई थी और रात बीत जाने पर यह दासियां दो-दो करके सोती थी। इस कमरे के पीछे अंग्रेजी के वर्ण "टी" के समान एक क्रास खड़ा हुआ था, आज तक जिसको कभी भी इस्तेमाल न किया जा सका था।

इस स्थल पर एकत्रित होने वाले स्त्री पुरुषों की विभिन्न प्रकार की आवाजों के अन्दर चार दासियों ने उस गरीब गुलाम लड़की को ऊपर उठाया।

अभी तक भी उसके मुंह से जरा सी भी आवाज नहीं निकली थी। लेकिन जिस समय उस ठण्डी लकड़ी ने उसके जिस्म का स्पर्श किया तो उसकी आंखें खुली रह गईं। और दिल को पिघला देने वाली एक कराह उसके मुंह से निकलने लगी जो कि उसी तरह से अन्त तक निकलती रही।

क्रास पर बीचोबीच एक खूंटी गाड़ दी गई थी जो कि उसके शरीर को सीधे तौर पर सम्भाले हुए थी और हाथों को इधर-उधर गिरने से

रोकती थी। इसके बाद उन्होंने उसके हाथ फैला दिये।

फ्राइसिस यह सब देख रही थी और खामोश थी। वह कह भी क्या सकती थी। डिमिट्रियोस के ऊपर दोषारोपण करके वह उस गुलाम लडकी की जान नही बचा सकती थी। क्योंकि वह अच्छी तरह जानती थी कि डिमिट्रियोस को दण्ड नही दिया जा सकता, बल्कि अपने ऊपर अपराध डाले जाने की बात सुनकर उसकी प्रतिहिंसा जाग उठेगी और उसका प्रतिशोध बहुत भयानक होगा। इसके अतिरिक्त वह यह भी भली-भाँति जानती थी कि गुलाम वास्तव में एक बहुत बडी सम्पत्ति होते हैं और उसकी प्रतिद्वन्द्वी बच्चीज अपने ही हाथो अपने पैर मे कुल्हाडी मार रही थी। बच्चीज तीन हजार मुद्राए जैसे अपने ही हाथो समुद्र में फेंक रही थी। और फिर एक नाचीज गुलाम की जिन्दगी के लिए अपने को चिन्ता में डालना क्या उसके लिए मुनासिब था।

हेलीओप ने पहली कील और हथोडी उठाकर बच्चीज को दी और इस तरह उस गुलाम लडकी की शहादत शुरु हो गई। जिस समय गुलाम लडकी की हथेली पर लोहे की कील रखकर बच्चीज ने हथौडी मारी तो उसके मस्तिष्क मे चढी हुई शराब की खुमारी, घृणा और क्रोध और यहा तक एक नारी के प्रति दूसरी नारी के हृदय में स्वाभाविक रूप से निवास करने वाली बेरहमी की भावना भी अपनी जगह पर हिल उठी और खुली हुई हथेली को चीरती हुई कील ज्योही पार निकली तो अफोडीसिया के मुह से निकलने वाली चीख के साथ ही स्वय बच्चीज के मुह से भी एक दर्दनाक चीख निकल गई। उसने दूसरे हाथ पर भी कील जड दी। नीचे पैरों पर एक को दूसरे पर रखकर कील जड दी गई और इस प्रकार तीनो घावो में से फूटकर बहने वाले रक्त को देखकर बच्चीज के मस्तिष्क में जैसे पागलपन सवार हो गया। "अभी भी तुझे पूरी सजा नही मिली है, ठहर, चोर, मल्लाह की रखैल।"

अपने घने बालो में से एक के बाद दूसरी पिने निकाल कर वह

गुनाम लडकी के कोमल मांस में घुसेडती चली गई । जब कोई हथियार उसके पास नहीं बचा तो उसने लडकी के मुह पर घूसो की बौछार कर दी और उसके शरीर को नोचने लगी । तब उसने समझा कि उसका प्रतिशोध पूरा हो चुका है । और गुलाम लडकी को तडपते हुए छोडकर वह मेहमानो के साथ फिर से जश्न वाले हाल में पहुँच गई।

प्रेमीलाज और टाइमन ही केवल पीछे रह गये ।

एक क्षण विचारमग्न रहकर फ्रेनीलाज थोडा खासा । उसने अपना दाया हाथ बाये हाथ पर रखा । अपना सिर ऊपर किया, भौहे ऊपर उठाई और शान से चढाई गई उस लडकी के नजदीक पहुँचा—जिसका शरीर लगातार एक भयानक कम्पन के साथ हिल रहा था ।

उसने लडकी को सम्बोधित करते हुए कहा—"हालाकि बहुत-सी परिस्थितियो मे मैं कठमुल्ला सिद्धान्तो के पक्ष में नही हूँ फिर भी मैं इस बात को नजरअन्दाज नही कर सकता कि जिन विपत्तियो का पहाड तुम पर टूटा है उससे तुम फायदा नही उठाओ, और स्टोयक कथाओ से लाभ न उठाओ (स्टोयक प्राचीन ग्रीक दार्शनिक जैनो के मानने वाले को कहते है जिसका कहना था कि मनुष्य को सुख और दुख की भावना से अतीत होना चाहिए) जैनो ने, ऐसा प्रतीत होता है, जिसकी आत्मा सम्पूर्ण रूप से दोषातीत नही थी—हमें जो दर्शन विरासत मे दिया है उसमें हालाकि दर्शन की अपेक्षा छलना ही अधिक है तथापि जैनो के दर्शन से तुम इन दुखो से भरी घडियो को सहने की सामर्थ्य अपने अन्दर पैदा कर सकती हो ।" उसने कहा—"दुख निरर्थक और रिक्त शब्द है, क्योकि हमारी इच्छा शक्ति हमारी नाशवान काया की स्थूलता से हमें बहुत ऊपर उठा देती है। यह सही है कि जैनो ६८ वर्ष का बूढा होकर मरा और कभी-जैसा कि उसके जीवनीकार कहते हैं—किसी छोटी सी बीमारी से भी उसका बाल बाका नहीं हुआ । इसके बावजूद भी केवल इसीलिए हम उसके मत का समर्थन नही कर सकते कि वह अपने स्वास्थ्य को प्रत्येक स्थिति मे अक्षुण्ण रखने की कला

जानता था। लेकिन इसका अर्थ यह नही कि यदि वह बीमार पड़ता तो उसका दार्शनिक चरित्र खण्डित हो जाता। इसके अतिरिक्त यदि हम किसी दार्शनिक से यह अपेक्षा करे कि जिन सिद्धान्तो का वह प्रचार करे उन्हे स्वय भी अपने जीवन मे चरितार्थ करे, तो यह गलत बात होगी। सक्षेप मे अपनी बात कहते हुए और उसे इतना विस्तार न देते हुए कि उसके पूरा होने से पहले ही तुम्हारा जीवन दीप बुझ जाये—मैं यह कहना चाहता हूँ कि अपनी आत्मा को भरसक ऊपर उठाओ कि तुम्हारे दुख की भावना ही समाप्त हो जाय। इन भयानक आघातो की पीडा को चाहे जिस तरह भी तुम सह पा रही हो मैं भी तुम्हारी ही तरह यह पीडा सह रहा हूँ। यह पीडाए अपने अन्त को प्राप्त हो रही हैं। धैर्य धारण करो। सब कुछ भूल जाओ। उस घडी पर विचार करो जब कि हमें अमरत्व प्रदान करने वाले पेचीदा दार्शनिक सिद्धान्तो में से तुम किसी का भी चुनाव अपने लिए नही कर सकती। तुम्हारे लिए मुनासिब यही है कि तुम अपनी वेदना को भूल जाओ। अगर दार्शनिक लोग सच बोलते हैं तो तुम्हारी ये गुजरने वाली घडिया भी प्रकाश से खिल उठेंगी और अगर वे झूठ भी बोलते हैं तो इसमे भी तुम्हे क्या। तुम तो यह भी नही जान सकी कि उन्होने तुम्हे धोखा दिया है।

यह शब्द कहने के उपरान्त फ़ेसीलाज ने अपनी पोशाक पर पडी हुई सलवटो को फिर से ठीक किया और पीडा से लडखडाते हुए कदम रखता हुआ वह चुपचाप खिसक गया।

क्रास पर चढाई गई उस मरणासन्न गुलाम लडकी के पास उस कमरे में केवल टाइमन रह गया था। उसके मस्तिष्क में उसके साथ गुजरे हुए सुन्दर क्षणो की स्मृतियाँ घूम रही थी और उसके मन में उस नृशस कृत्य के प्रति जिसके द्वारा उस सुन्दर अस्तित्व को नष्ट किया जा चुका था—घृणा का भाव उमड रहा था। उस वीभत्स दृश्य को अपनी आखो से दूर रखने के लिए उसने अपने मुह पर हाथ रख

लिया लेकिन फर्श पर निरन्तर तड़पने वाली देह की आवाज अब भी उसके कानों में आ रही थी। आखिरकार उसने आंख उठाकर देखा—उसके शरीर पर खून की नदियों एक दूसरे से टकराती हुई बह रही थी। उसका सिर निरन्तर इधर से उधर तड़प रहा था। उसके बाल रक्त, धूल और आंसुओं से डूबे हुए थे।

"अफ्रोडीसिया! क्या तुम मेरी आवाज सुनती हो!

क्या तुम मुझे पहचानती हो! मैं हूँ टाइमन, टाइमन!" एक नजर जिसकी ज्योति प्राय बुझ चुकी थी, जैसे उसे एक क्षण के लिए स्पर्श कर गई। लेकिन निरन्तर तड़पने वाला सिर किसी एक दशा में स्थिर न हो सकता था। सारा शरीर बिना रुके तड़पता जा रहा था। तरुण टाइ-मन आहिस्ता-आहिस्ता कदम रखते हुए उसके पास पहुँचा। उसे भय था कि कहीं उसके पैरों की आहट उसकी पीड़ा को और अधिक न बढ़ा दे। उसने अपने हाथ ऊपर उठाये और उसके दुर्बल और निरन्तर तड़पते शरीर को भ्रातृत्व की दुलार भावना से अपने दोनों हाथों मे भर लिया और रक्त व आंसुओं से तरबतर उसके गालों पर चिपके हुए बालों को एक ओर हटा दिया और एक भावना से भरा हुआ अत्यन्त कोमल चुम्बन उसके कपोलों पर अंकित कर दिया।

अफ्रोडीसिया ने अपनी आँखें बन्द कर लीं। क्या उसने अपने भयानक अन्त को प्रेम पूर्ण करुणा के स्पर्श से मधुर बनाने वाले आगन्तुक को पहचान लिया था। एक अवर्णनीय मुस्कान उसकी नीली पुतलियों मे फैल गई और एक आह के साथ उसकी आत्मा देह के बन्धन को तोड़ कर चली गई।

अध्याय बीस

उत्साह

आखिरकार काम पूरा हो गया। अब तो क्राइसिस के सामने प्रत्यक्ष प्रमाण भी आ चुका था। अगर डिमिट्रियोस ने यह प्रथम अपराध करने का निश्चय कर लिया था तो बाकी दो अपराध भी उसने शीघ्र ही पूरे कर लिये होंगे। उसके समान उच्च कोटि की आत्मा के लिए वध करना और पाप-कर्म करना शायद उतने अप्रतिष्ठाजनक न होंगे, जितना कि चोरी करना।

उसने आज्ञा पालन किया था, इसलिए वह बन्दी बन चुका था। आखिरकार वह स्वतन्त्र वृत्ति, कर्मठ और भावुकता से ऊपर रहने वाला व्यक्ति भी किसी का गुलाम बन गया और क्राइसिस जो कि शासक बन चुकी थी अब उसकी अधिष्ठात्री थी। आह! उस महान् विजय को दोहराने के लिए वह एकान्त चाहती थी। क्राइसिस ने शोरोगुल और भीड़भाड़ से युक्त उस भवन के आकर्षण से अपने को मुक्त किया और तेजी से भाग खड़ी हुई। प्रातःकाल की कोमल वायु उसके शरीर को स्पर्श करके तरोताजा कर रही थी।

वह सीधी अगोरा राजपथ पर चल खड़ी हुई। यह राजपथ सीधा सागर तट की ओर जाता था, जहाँ कि ८०० बड़े-बड़े जहाज लंगर डाले हुए खड़े थे। इसके उपरान्त दाहिनी ओर को मुड़ी और ड्रोम के सामने पहुँची जहाँ कि डिमिट्रियोस का विशाल भवन बना हुआ था। विजय के गर्व से उसका सारा शरीर काँप रहा था। लेकिन वह इतना जानती अवश्य थी कि अपने प्रेमी से पूर्व मिलन की आतुरता प्रकट करना

उसके लिए उचित न होगा, इसलिए अपने हृदय में महान् उद्वेग सभाले वह अपने प्रेमी के घर के सामने की सड़क से गुजर गई ।

डिमिट्रियोस ने अपना काम पूरा कर लिया है। उसने क्राइसिस के लिए ही यह सब कुछ किया है और इसमें सन्देह नही कि उसने ऐसा काम किया है जो कि आज तक किसी आदमी ने किसी औरत के लिए नही किया। वह गौरव के साथ अपनी जीत को मन ही मन दोहरा रही थी। और डिमिट्रियोस जो कि सैकडो नारी-हृदयो के लिए एक स्वप्न के समान असम्भव और आशातीत था अब उसके सामने बिलकुल नगा हो चुका था। सिर्फ क्राइसिस को हासिल करने के लिए उसने बडे से बडा संकट अपने सिर पर ओढा था, शर्मनाक से शर्मनाक काम किया था। उसने स्वय अपने ही विचारो और आदर्शो को ठुकराया था। उसने अपने ही हाथो द्वारा बनाये गये उस महान् आश्चर्य के कण्ठहार को अपवित्र किया था और आज सुबह पौ फटने से पहले वह महान् प्रेमी उस महान् आराध्य देवी को छोड कर अपने इस नये प्रेमास्पद के चरणो में अपने को न्योछावर करेगा।

"मुझे अगीकार करो ! मुझे धारण करो !" वह अकेली ही चीख-चीख कर कहने लगी। जब वह डिमिट्रियोस पर आसक्त हो चुकी थी। वह उसे पुकार रही थी। और अपने स्वय को उसके चरणो में न्योछावर कर देना चाहती थी। वह सोचती थी कि इतने बडे तीन अपराध डिमिट्रियोस ने उसके लिए किये हैं। उसके मन में यह तीन अपराध किसी योद्धा के द्वारा किए गए बहुत बडे कारनामे थे और वह असमजस के साथ अपने मन मे सोच रही थी कि क्या इतनी बडी कुर्बानी का बदला चुकाने के लिए, उसके पास उतनी कोमलता और इतनी भावना है। आज इतनी बाधाओ को पार करने के बाद वे अलौकिक प्रेम की ज्योति से भरे हुए दो जीवन जब एक साथ मिलेंगे तो कितना असाधारण और महान् क्षण होगा।

वह सोचती जाती थी कि बस अब वे किसी यात्रा के लिए रवाना

हो जायेंगे। वह सम्राज्ञी के शहर को छोड देंगे और किसी रहस्यपूर्ण देश में निकल जायेंगे। अमाथ्स या अपीडोरस या और न सही तो अज्ञात रोम की तरफ चले जायेंगे, जो कि अलैक्जेंड्रिया के बाद ससार में दूसरे नम्बर का शहर है और जो कि विश्व विजय का सकल्प धारण किए हुए है। वे जहाँ कही भी होंगे वहाँ क्या कुछ नही करेंगे। दुनिया की कौन-सी खुशी है जिससे वे महरूम होंगे और जहाँ कहीं उनके कदम पड़ेंगे कौन सी जगह ऐसी होगी जो खुशियो से नाच न उठेगी।

क्राइसिस उठ खडी हुई। उसकी आँखो के सामने चौंध छा रही थी। उसने अपनी बाहे पसार दी। कन्धे तान लिये और एक गहरी साँस उसके फेफडो में भर गई। बढती हुई खुशी का एक तूफान उसके दिल में मचल रहा था। वह दोबारा अपने घर की ओर रवाना हो गई। ज्योही उसने अपना दरवाजा खोला तो यह देख कर उसे आश्चर्य हुआ कि पहले दिन की तरह उसके भवन में सब चीजे ज्यो की त्यो बनी हुई हैं। उसके शृंगार करने के सामान, मेज, अलमारियाँ इस नयी और बदली हुई जिन्दगी के अनुकूल नही थे।

उसने उन चीजो में से कुछ जो पुराने और बेकार प्रेमियो की याद दिलाती थी, उठाकर पटक दी और अगर उसमें कुछ को नही तोडा तो उसका आशय यही था कि वैसा करने से उसके कमरे की शोभा समाप्त हो जाती, क्योकि मन ही मन वह यह सोचती थी कि कही ऐसा न हो कि डिमिट्रियोस उसके घर मे ही कोई रात व्यतीत करने का निश्चय करले।

उसने धीरे-धीरे अपनी पोशाक उतार दी। उस जश्न के अन्दर उस की पोशाक पर जो रोटियो के टुकडे, बाल और गुलाब की पत्तियाँ लगी रह गई थी वे एक-एक करके गिरने लगी।

उसने अपने हाथ से ही अपनी कमर पर लगी पेटी खोल दी और अपने घने बालो में अपनी अगुलियाँ डाल ली। लेकिन पूर्व इसके कि वह

अपने बिस्तर पर लेटे उसके मन मे आया कि ऊपर अटारी पर बने हुए खूबसूरत कमरे में रह जाय और कोमल तोषकों पर लेटकर शीतल वायु का सेवन करे।

वह ऊपर चढ गई।

अभी कुछ ही क्षण बाद सूरज क्षितिज पर उदय हुआ था और अब एक फूली हुई विशाल नारगी के समान मालूम पडता था।

उसके सामने देवदार का तिरछे तने वाला विशाल वृक्ष खडा हुआ था, ओस से भीगे हुए उसके पत्ते झड रहे थे। क्राइसिस इन ठण्डे पत्तो को अपनी त्वचा से मल रही थी और ठण्ड से कम्पन के कारण उसने अपनी दोनो बाहे आपस मे जकड रखी थी।

उसकी आँखे शहर के ऊपर घूम रही थी। ऊपर आकाश धीरे-धीरे स्वच्छ होता जा रहा था। गहरे काही रग का कोहरा खामोश सडको पर छाया हुआ था और अब हल्की-हल्की बहती हुई हवा उसको अपने साथ उडाए लिए जा रही थी।

सहसा एक विचार क्राइसिस के मन में उत्पन्न हुआ। यह विचार बढने लगा और उसने क्राइसिस को इतना अभिभूत कर लिया कि वह पागल सी बुदबुदाने लगी कि जब डिमिट्रियोस ने उसके लिए इतना कुछ किया है तो वह सम्राज्ञी को मौत के घाट क्यो नही उतार सकता और स्वय सम्राट् क्यो नही बन सकता और तब और तब सागर की तरफ दिखाई देने वाले मकानो का यह सिलसिला, यह राज-भवन, मन्दिर, यह मेहताबियाँ और यह कुंज जो कि पश्चिमी नैक्रोपोलिस से देवी के उद्यान तक फैले हुए हैं, सब उसी के हो जाएँगे। यूनानी नगर बूचीमन, मिस्रीनगर रिहाकोटिस जिसके सामने एक विशाल प्रकाश से भरा हुआ पैनियन खडा हुआ है, सरापीस के महान् मन्दिर, अफ्रोडायटी के महान् मन्दिर जिसके चारो तरफ तीन लाख देवदार के वृक्ष खडे हैं और असख्य सरोवर बने हुए हैं, पर्सीफोने और आर्सीनों के मन्दिर, फारिस देवी की मीनारे, सौन्दर्य की

देवी लोचीयाम के सात स्तम्भ, हिपोड्रोम का महान् थियेटर स्टेडियम जहाँ सीटोकोस ने निकोसथनी के विरुद्ध दौड लगाई थी, स्टोपोनाईस और अलैक्जेण्डर देवता की कवरे, अलैक्जेण्ड्रिया सागर और विशाल सगमरमर के फैरोस जिसके आडने आदमी की दस्युओ मे रक्षा करते हैं। अलैक्जेण्ड्रिया ! सम्राज्ञी वैरेनिस का महान् नगर। अलैक्जेण्ड्रिया जो मनुष्यो के तमाम स्वप्नो की प्रतिमूर्ति था और पिछले तीन हजार वर्षों में मैम्फीज, थेव्स, एथेन्स और कोरिन्थ द्वारा प्राप्त की जाने वाली विजयो का प्रतीक और कला कौशल और खड्ग द्वारा उपलब्ध ऐश्वर्य का भाण्डार था। वह उसी अलैक्जेण्ड्रिया की सम्राज्ञी होगी।

उसने अपनी बाहे ऊपर उठाई। वह यह अनुभव कर रही थी कि उसने आकाश को छू लिया है और उसकी आत्मा घुटने लगी है और जब वह इस कल्पना में उड रही थी तो उसने यह अनुभव किया कि काले पखो वाला एक बहुत बडा पक्षी उसके पैरो पर से होता हुआ सागर की ओर उड गया है।

अध्याय इक्कीस

क्लियोपेट्रा

सम्राज्ञी वैरेनिस की एक छोटी बहिन थी, जिसका नाम क्लियोपेट्रा था। मिस्र में इस नाम की शहजादियां हुई हैं, लेकिन यह शहजादी आगे चल कर क्लियोपेट्रा महान् के नाम से प्रसिद्ध हुई है, जिसने अपने साम्राज्य का विध्वन्स किया और अपने स्वयं को उसके अवशेष के साथ समाप्त कर लिया। उसकी आयु उस समय १२ वर्ष की थी और यह नहीं कहा जा सकता था कि उसका सौन्दर्य किस कोटि का होगा। जिस कुल मे सारी स्त्रियां मोटी थी, क्लियोपेट्रा का लम्बा और इकहरा कद अलग दिखाई पडता था। वह किसी बाहर के देश से लाए गए और लापरवाही से लगाए गए फूल के समान धीरे-धीरे परिपक्वता को प्राप्त हो रही थी। उसके शरीर के कुछ अग मैसीडोनिया निवासियो की तरह खुरदरे थे। और कुछ अग न्यूबिया वासियो की तरह अत्यन्त कोमल और मधुर थे, क्योकि उसकी मां निम्न जाति की थी और उसका कुल-शील भी सन्दिग्ध था। सुग्गे के समान उसकी तिरछी नाक के नीचे मोटे होठो को देख कर आश्चर्य होता था। केवल उसके उरोजो को देख कर पता लगता था कि वह नील नदी की पुत्री है।

यह छोटी शहजादी सागर तट पर बने हुए एक विशाल भवन में रहती थी और सम्राज्ञी के भवन के साथ उसका भवन कुछ खम्बो पर बने हुए एक बराडे से मिलता था। इस भवन में नीले रग की सिल्क से बने तोषको से युक्त—जिनमें लेटने के बाद इसकी कोमल और सुचिक्कड त्वचा और भी सुर्ख मालूम पडती थी— इसी शैया पर वह

अपनी रात गुजारती थी। उस रात जिसमें पीछे वर्णन की गई घटनाएँ घटित हुई तरुण राजकुमारी क्लियोपेट्रा सोकर जब उठी, तो उसका मन स्वस्थ नहीं था। रात की गर्मी के कारण वह बहुत थोडी सो पाई थी।

उसने अपनी अग रक्षिकाओ को नही जगाया। आहिस्ता से वह ज़मीन पर उतर गई। उसने अपने सुनहरे पाजेब धारण किए। असख्य बेशकीमत मोतियो से जडी हुई तगडी पहनी। उसके बाद पूरी पोशाक स्वय ही पहन ली और कमरे से बाहर निकल गई। बाहर निकल कर उसने देखा कि सन्तरी अभी भी सोये हुए हैं। केवल सम्राज्ञी के द्वार पर पहरा देने वाला सन्तरी ही जाग रहा है। यह सुन्दरी राजकुमारी क्लियोपेट्रा को देखते ही घुटनो के बल बैठ गया और अपने फर्ज और उस को अदा करने के बदले मिलने वाले सकट के भय से वह गिडगिडाया

"राजकुमारी क्लियोपेट्रा! मुझे क्षमा करें, मैं आपको गुजरने की इजाजत नहीं दे सकता।" सन्तरी के शब्द सुन कर लडकी तन कर खडी हो गई। उसकी मुखाकृति क्रोध से भर उठी। उसने सन्तरी की कनपटी पर एक घूंसा जडते हुए कोमल परन्तु खूंख्वार स्वर में कहा—"अगर तुमने मुझे छुआ तो मैं शोर मचा दूंगी और तुम्हारी बोटियाँ-बोटियाँ उडवा दूंगी।"

तब धीरे से वह सम्राज्ञी के शयनकक्ष मे चली गई।

बैरेनिस सो रही थी। उसका सिर उसकी बांह पर रखा हुआ था और एक हाथ नीचे लटक रहा था। लैम्प उस लाल रग की शैया के ऊपर जल रहा था और उसका धीमा प्रकाश चन्द्रमा के उस प्रकाश में खो रहा था, जिसकी प्रतिच्छाया सफेद दीवारो पर पड रही थी। इन दोनो प्रकाशो के अन्दर वह तरुण नारी एक छाया से टकी हुई खडी थी। वह पलग के एक कोने में बैठ गई। उसने अपनी बहिन का मुंह अपने हाथो में ले लिया और उसे धीमे स्वर से पुकारते हुए जगाने लगी।

"तुम्हारा प्रेमी कहाँ है?"

सहसा जाग कर बैरेनिस ने अपने सुन्दर नेत्र खोल दिये—प्रिय पेट्रा! तुम यहाँ क्या कर रही हो? तुम क्या चाहती हो?

छोटी लडकी ने तत्काल वही शब्द दोहराये—

"तुम्हारा प्रेमी कहा है?"

"वह यहा नही है।"

"मै यकीन नही कर सकती, तुम जानती हो।"

मै सच कह रही हूँ, वह कभी यहा नही आता ओह् क्लियोपेट्रा, तुम कितनी बेरहम हो कि मुझे इस तरह जगा दिया और फिर मुझसे इस तरह की बाते कर रही हो।"

"तो फिर वह यहा क्यो नही आता?"

बैरेनिस के हृदय मे एक दुख भरी आह निकल गई।

"जब कभी उसकी इच्छा होती है दर्शन हो जाते हैं—सिर्फ दिन मे ही—और वह भी एक आध क्षण के लिए।"

"क्या वह कल तुम से नही मिला?"

"हा मिला था—मैं अपनी पालकी मे आ रही थी, वह मुझे सडक पर ही मिला था और मेरी पालकी में भी चढा था।"

"वह राजभवन तक तुम्हारे साथ नही आया?"

"नही—राज भवन तक तो नही, द्वार तक जरूर आया था।"

'तो तुमने उससे क्या कहा?"

"ओह! मुझे गुस्सा चढ आया था—मैंने उसे बहुत खरी-खोटी सुनाई—हा प्रिय।"

"सच?" छोटी लडकी ने व्यग्रतापूर्वक कहा।

"हाँ बहुत ही बुरी बाते कही। वह उनका उत्तर भी नही दे सका—उस समय जब मैं गुस्से मे लाल हो रही थी तो उसने एक बहुत लम्बी कहानी सुनाई और मुझे यह भी नही सूझा कि उसका क्या उत्तर दूं और वह सहसा मेरे पलग पर से खिसक गया, हालाकि मैं यह जानती थी कि मैं उसे रोक सकती हूँ।"

"तुमने आदेश दे कर उसे वापस क्यों नहीं बुलवा लिया ?"

"मुझे भय था कि वह कहीं नाराज न हो जाय।"

घृणा से भरते हुए क्लियोपेट्रा ने अपने हाथों मे अपनी बहिन के कधे पकड लिये और बोली—"क्या तुम सम्राज्ञी हो ? क्या तुम अपनी जनता की देवी हो ? इस दुनिया की स्वामिनी तुम्हीं हो और रोम के अधिकार में जो कुछ नहीं है उस सब की मालिक तुम ही हो, विशाल नील पर और समस्त सागर पर तुम्हारा ही राज्य है ? क्या स्वर्ग पर साम्राज्य करने वाली भी तुम्हीं हो ? और तुम सिर्फ उस एक आदमी पर साम्राज्य नहीं कर सकती, उसे तुम वापस नहीं बुला सकी !"

"साम्राज्य !" बैरेनिस ने कहा और उसका मुँह नीचे लटक गया।

" ऐसा कहना आसान है लेकिन तुम जानती हो कि एक गुलाम की तरह किसी प्रेमी पर राज्य नहीं किया जा सकता।"

"लेकिन आखिर क्यों नहीं ?"

"क्योंकि लेकिन तुम समझ नहीं सकती हो—प्रेम करना तो उन तमाम सुखों को दूसरे के चरणों में अर्पित कर देना है जिसकी कामना मनुष्य अपने लिए करते हैं—अगर डिमिट्रियोस प्रसन्न है तो उसमें मेरी भी प्रसन्नता है। उससे दूर रह कर भी और आसू बहाते हुए भी मैं ऐसी किसी खुशी की कामना नहीं कर सकती जो उसकी खुशी न हो। अपना सब कुछ देकर भी मैं प्रसन्न हूँ।"

"तो तुम बिलकुल भी नहीं जानती कि प्रेम कैसे किया जाता है।" बालिका ने कहा।

बैरेनिस एक दु खी मुद्रा में मुस्कराती हुई उसकी तरफ देखने लगी।

ऊँघते हुए उसने अपना शरीर शैया पर पसार दिया और एक गहरी उसास उसकी छाती से निकल गई।

"ओह ! पागल लडकी," उसने एक गहरी साँस ली और कहने लगी—

"जब कभी वह दिन आयेगा कि तुम अपने प्रेमी के प्रेम-पाश में

मूर्छित हो सकोगी तब तुम्हारी समझ में आयेगा कि उस आदमी पर शासन नही किया जा सकता जिसकी बाहो मे हम प्रेम मे सुख का अनुभव करते है ।"

"जैसा जो चाहता है वैसा ही होता है ।"

"लेकिन आदमी वैसा चाह नही सकता ।"

"मै तो वैसा कर सकती हूँ, तुम मुझ से बडी हो, तुम ऐसा क्यो नही कर सकती ?"

बैरेनिस फिर मुस्करा उठी—"लेकिन भोली बालिका आखिर तुम अपनी आवश्यकता का प्रदर्शन कहां करोगी, अपनी गुडियो के साथ ।"

"उसके साथ", क्लियोपेट्रा ने कहा । और तब अपनी बहिन को उसके आश्चर्य को शब्दो द्वारा अभिव्यक्त करने का अवसर देने से पूर्व ही उसने कहा, "हा मेरा भी एक प्रेमी है, हां मेरा भी एक प्रेमी है तुम्हारी ही तरह । मेरा भी एक प्रेमी क्यो न हो ? मेरी मा और चाची, बुआ और यहां तक कि नीच से नीच सभी मिस्र वासियो के प्रेमी हैं और फिर जब तुम मुझे पति नही देती हो तो मैं प्रेमी ही क्यो न उपलब्ध करूं । अब मैं अबोध बालिका नही रह गई हूँ ।"

"मैं जानती हूँ—मैं जानती हूँ ।" बैरेनिस ने कहा ।

"चुप रहो । मैं तुम से अच्छी तरह जानती हूँ—तुम्हारे जैसी सम्राज्ञी को देख कर शर्म से मेरा सिर झुक जाता है, तुम तो खुद किसी की गुलाम हो ।"

क्लियोपेट्रा सीधी तन कर खडी हो गई और उसने अपने हाथ अपने सिर पर इस प्रकार रखे जैसे एशिया की सम्राज्ञी अपने सिर पर मुकुट धारण किये हो ।

उसकी बडी बहिन जो अपनी शैया पर बैठी हुई उसकी बातचीत सुन रही थी—घुटनो के बल उसकी ओर झुकी और उसके कोमल कधो पर अपना हाथ रखते हुए बोली—

"तुम्हारा कोई प्रेमी भी है ?"

उसकी आवाज इस वार कुछ दबी हुई थी और उसमें छोटी वालिका के प्रति आदर का भाव था। लडकी ने रूखे भाव मे उत्तर दिया—

"अगर तुम्हे विश्वास न हो तो चलो देख लो।"

बैरेनिस ने गहरी साम लेकर कहा—"और तुम उससे कब मिलती हो ?"

"दिन में तीन बार।"

"कहाँ ?"

"क्या मुझ से कहलवाना ही चाहती हो ?"

"हा।"

क्लियोपेट्रा ने अपनी ओर से दूसरा प्रश्न किया—

"यह कैसी बात है कि तुम स्वय यह रहस्य नही जानती हो ?"

"मैं तो कुछ भी नही जानती, राजभवन में जो कुछ होता है वह भी नही जानती। डिमिट्रियोस को छोड कर दुनिया की किसी बात से मुझे दिलचस्पी नही है। मैं तुम्हारी खबरगीरी नही रख सकी हूँ—इसे मैं अपना कसूर मानती हूँ।"

"अगर तुम मेरे ऊपर चौकसी रखोगी और उस दिन जब मैं अपनी इच्छा के अनुसार नही जी सकूँगी तो मैं आत्महत्या कर लूंगी। मेरे लिए उसमें भी क्या अन्तर है।"

बैरेनिस ने नकार सूचक सिर हिलाते हुए कहा—"तुम आज़ाद हो और फिर अब तो तुम्हे रोकने का वक्त बहुत पीछे निकल गया लेकिन बताओ तो सचमुच तुम्हारा कोई प्रेमी है और तुम उसे अपने आधिपत्य में रखती हो ?"

"हा मैं अपने तरीके से उस पर अपना आधिपत्य रखती हू।"

"तुम्हे यह सब किसने सिखाया ?"

"ओह ! मैं तो स्वय ही जानती हूँ। यह हुनर तो आदमी को अपने आप ही आता है। सिखाने से कोई नही सीखता। मैं तो छ वर्ष

की आयु में ही सीख गई थी कि आगे चल कर अपने प्रेमी पर किस तरह आधिपत्य कायम रखना है ?'

"तो क्या तुम मुझे नही बताओगी ?'

'मेरे साथ चलो।"

बैरेनिस धीरे-धीरे उठी। उसने एक अंगरखा ओढ लिया और सिर पर एक कलगी रख ली और रात की गर्मी से चिपक जाने वाले केशो को हवा से फरहरा कर लिया और दोनो बहिने शयन कक्ष से बाहर निकल गयी।

आगे-आगे चलती हुई वह लडकी सीधी उस कमरे में पहुँची जहाँ पिछली रात को सोई थी और तब चटाई के नीचे से एक नक्काशी की हुई चाबी उसने निकाली और अपनी बहिन को कहा—"मेरे पीछे-पीछे आओ, वह जगह यहा से बहुत दूर है।"

दोनो भवनो के बीचोबीच बने हुए मेताबी के ठीक मध्य में एक जीना था। उस जीने से ऊपर चढ कर लडकी ने एक लम्बा सहन पार किया। अनेक द्वार खोलते हुए, अनेक घुमावदार सगमरमर के जीनो से चढते हुए और सुनसान बडे-बडे हालो में से गुजरते हुए वह आगे बढी। तब वह पत्थर के एक जीने से नीचे उतरी और अनेक चरमर करते हुए फाटक खोलती हुई और अनेक दहलीजो को पार करती हुई एक सिह द्वार पर पहुँची जहाँ दो बलिष्ट सन्तरी हाथ मे भाला लिये हुए द्वार की रक्षा कर रहे थे। आज चाद की रोशनी में यह सहन पार करने का बहुत दिन बाद अवसर आया था। देवदार वृक्ष की छाया उसके ओठो को स्पर्श कर रही थी। और बैरेनिस अपनी नीली पोशाक में लिपटी हुई बराबर उसके पीछे चली आ रही थी। आखिरकार वे एक मजबूत दरवाजे पर पहुँची जहाँ बाहर एक योद्धा के कवच की तरह मजबूत लोहा जडा हुआ था। क्लियोपेट्रा ने ताले मे चाबी लगाई उसे दो बार घुमाया, धक्का देकर फाटक खोला और बैरेनिस ने देखा कि एक आदमी जो छाया से ही विशाल मालूम पडता था कारा के एक

कोने में उठकर खड़ा हुआ है। वैरेनिम ने सब देखा। उसके आश्चर्य की कोई सीमा न थी। उसका सिर नीचे लटक गया था। बड़ी कोमलता के साथ वह अपनी बहिन से बोली—"मैंने कहा नहीं था प्रिय कि मैं नहीं, तुम ही प्रेम करना जानती हो। कम से कम अभी तो नहीं। मैंने तुम से ठीक ही कहा था न।"

"प्रेम के बदले में प्रेम। मेरी तरह से प्रेम करना बेहतर है।" छोटी लड़की ने कहा। "कम से कम इस तरह का प्रेम केवल खुशी ही देता है। वह छोटी लड़की उस कक्ष की ड्योढ़ी पर उसी तरह सीधी खड़ी हुई थी। एक कदम आगे बढ़ाए बिना छाया में खड़े हुए उस आदमी को उसने सम्बोधित किया—"इधर आओ—मेरे कदम चूमो, कुत्ते के बच्चे।"

और जब उसने उसके कदम चूम लिये तो बदले में उस लड़की ने उसके ओठ चूम लिये।

अध्याय बाईस

डिमिट्रियोस का स्वप्न

अब आइना, कंघा और हार लेकर जब डिमिट्रियोस घर लौट कर आया तो रात्रि को सोते समय उसने एक स्वप्न देखा। वह स्वप्न इस प्रकार था

वह सागर तट की ओर जा रहा है, रास्ते में खचाखच भीड भरी हुई है, रात ऐसी है कि आकाश मे न चाद है, न सितारे और न ही बादल, लेकिन वह अपने आप में ही प्रकाशमान है।

बिना कारण समझे ही कि वह इतनी व्यग्रता से उधर बढा जा रहा है, वह उस स्थान पर पहुँच जाने की जल्दी में है, चलने में उसे प्रयास करना पड रहा है, और वायु उसके पावो को इस तरह बाधा दे रही है मानो कि वह गहरे पानी मे चल रहा हो।

वह काप उठता है। वह सोचता है कि वह अपनी मजिल तक कभी न पहुँच सकेगा और यह कभी न जान सकेगा कि उस प्रकाशमान रहस्य की छाया मे बेचैन और हाँफता हुआ आखिर वह किससे मिलने के लिए इतना उत्सुक है।

कभी-कभी भीड बिलकुल छँट जाती है, मालूम नही पडता आया कि वह वास्तव में ही अदृश्य हो जाती है या वह उसकी उपस्थिति को अनुभव ही नही कर पाता। फिर अनेक कोहनिया उससे टकराने लगती हैं और सारी भीड तेज़ कदमो के साथ उससे आगे ही निकलती जाती है

इसके बाद अकस्मात् यह भीड परस्पर सटती जाती है। डिमिट्रियोस

पीला पडता जा रहा है। एक आदमी उसे कधे से धकेलता हुआ आगे निकल गया है। एक औरत के आँसू उसके कपडो पर ढुलक गए हैं और एक जवान लडकी भीड से इस कदर भिची जा रही है और उसके इतने निकट आ गई है कि उसके देह की गन्ध भी उसमे छूने लगी है और सहसा चौक कर अपने दोनो हाथो मे लडकी उसका मुंह दूसरी ओर फेर देती है।

फिर सहसा वह अकेला रह जाता है। और जेट्टी पर पहुँचने वाला वही सबसे पहला आदमी है। वह पीछे देखने के लिए मुडता है। उसे एक बगूला-सा दीख पडता है और वास्तव में उस बगूले के रूप में वह सारी की सारी भीड ही उमड रही है और और फिर सिमट कर अगोरा की तरफ बढती जा रही है।

अब उसकी समझ में आता है कि वह भीड अब इससे आगे नही बढ सकती।

जेट्टी अब उसके सामने विस्तारित होती जा रही है और सागर की छाती पर एक अज्ञात राजपथ के समस्त आश्चर्यों से भर उठी है।

उसके मन में फारोज की ओर चल पडने की भावना आती है और वह उधर चल खडा होता है। उसके पैर अकस्मात् बहुत हलके उठने लगते हैं। रेतीली बजर जमीन के ऊपर बहने वाली वायु उसे उस सतत दोलायमान शून्य की ओर बल पूर्वक खीचती-सी मालूम होती है। जैसे ही वह आगे बढता है फारोज उसे पीछे हटते दिखाई पडते हैं और जेट्टी आगे बढ़ती जाती है। उसी क्षण सगमरमर की गगनचुम्बी मीनार की जलती आग के रग की बुर्जियां काले और नीले रग के क्षितिज को छूती नजर आती हैं। फिर वह सहसा हिलने लगती हैं, नीचे झुकती हैं और वह अन्तर्धान हो कर दूसरे चन्द्रमा की तरह जग-मगाने लगती हैं।

डिमिट्रियोस फिर भी चलता जाता है।

लगता है जैसे एलेजैण्ड्रिया के बन्दरगाह से चलते हुए अनेक दिन

ग्रौर रात गुजर गए हैं। उसका साहस नही होता कि वह पीछे मुड कर देखे। पीछे पार किए हुए रास्ते के अतिरिक्त और क्या हो सकता है और वह रास्ता भी सागर और असीम की ओर सकेत करने वाली सफेद रेखा के सिवा और कुछ भी नही है।

तथापि वह पीछे लौटता है।

वह देखता है कि उसके पीछे एक द्वीप है जिसमे बहुत से वृक्ष हैं और उन वृक्षो से लगातार फूलो की वर्षा हो रही है।

क्या उसने आँखे मीच कर यात्रा की है, अथवा जो कुछ वह अब देख रहा है क्या वह तत्काल प्रकट हो उठने वाला कोई रहस्य है। वह यह प्रश्न करने का विचार भी मन में नही लाना चाहता, वह इस असम्भव को साधारण घटना के रूप में स्वीकार कर लेता है

इस द्वीप पर उसे एक स्त्री दिखाई पडती है। वह स्त्री द्वीप पर बने एकाकी भवन के द्वार पर खडी है। उसकी आँखे मुंदी हुई हैं और अपने कद के समान ऊँचे पौदो पर खिले हुए आइरिस के फूलो पर उसका मुंह झुका हुआ है। उसके बाल घने और सुनहरे रग के हैं और उसकी झुकी हुई पीठ पर बालो की भारी गांठ को देख कर अनुमान लगाया जा सकता है कि उनकी लम्बाई आश्चर्यजनक होगी। उसके शरीर पर काले रग का उत्तरीय है और उसने इससे भी अधिक गहरे काले रग की पोशाक नीचे पहनी हुई है और छत्र के समान दीख पडने वाले उस आइरिस-पुष्प का रग भी रात के रग से मिलता हुआ-सा है।

इस शोक मग्न पोशाक के ऊपर छिटके हुए बाल पत्थर के समान सख्त आबनूस के खम्बे पर रखे हुए सुनहरे दीवान के समान ही प्रतीत होती हैं। वह क्राइसिस को पहचान लेता है।

आइने, कघे और कठहार की धुंधली-सी स्मृति उसके मन में ताजा हो जाती है, लेकिन वह उस पर विश्वास नही करता। इस अनोखे स्वप्न मे उसे केवल यथार्थ ही स्वप्नवत् दिखाई पडता है।

"आओ," वह कहती है, "मेरे पीछे-पीछे चले आओ।"

वह उसका अनुसरण करता है। धीरे-धीरे वह सफेद रँग की खाल से मढे हुए जीने पर चढती है। वह बाहो से जीने पर बने जगले का सहारा ले रही है और उसकी नग्न एडियाँ उसके स्कर्ट के नीचे तैरती-सी दिखाई देती हैं।

मकान में सिर्फ एक मजिल है। जीने की अन्तिम सीढी पर पहुँच कर काइसिस रुक जाती है। वह कहती है, "इस मकान में चार कमरे हैं, जब तुम उन्हे देख लोगे तो तुम फिर बाहर कभी न आ सकोगे। क्या तुम मेरे पीछे-पीछे आ सकते हो। इतना साहस है ?"

लेकिन वह तो उसके पीछे-पीछे कही भी जा सकता है। वह द्वार खोलती है और उसके अन्दर आने के बाद बन्द कर देती है।

कमरा कुछ सकरा है, परन्तु लम्बा है। केवल एक वातायन से उसमें प्रकाश आ रहा है और उस वातायन ने ही जैसे सम्पूर्ण सागर का निर्माण किया है। दाई ओर बाई ओर दो छोटी-छोटी मेजें पडी हुई हैं और उनपर एक दर्जन पुस्तकें पडी हुई हैं।

"यहाँ केवल वही पुस्तकें हैं जिन्हे तुम प्यार करते हो," काइसिस कहती है, "इसके अलावा कोई भी पुस्तक नही है।"

डिमिट्रियोस उन पुस्तको को खोलता है। उनमें शेरमन लिखित 'एनियस' है, एलैक्सिस की 'रिटर्न', और स्टिपोज का 'मिरर ऑव लास', थ्योक्रिटोज की 'दी विच' 'साइक्लोप्स' और 'ब्यूकोलिक्स है और सैफो की "एडिपस एट कोलोनोस", और 'ओड्स' हैं और इसके अतिरिक्त कुछ और पुस्तकें। इस पुस्तकालय के मध्य एक जवान लडकी चुपचाप कुशनो पर विश्राम कर रही है।

"अब", काइसिस ने एक सुनहरे बक्स मे से एक ही लिखा हुआ कागज निकाला और बुदबुदाया, "इस पत्ते पर एक ऐसी प्राचीन कविता लिखी है जिसे तुम अकेले पढोगे तो बिना रोये नही रह सकते।"

युवक सरसरी निगाह से पढता है

वह सहमा रुक जाता है और चकित होता हुआ काइसिस को

कोमल दृष्टि से देखता हुआ कहता है, "तुम मुझे यह दिखा रही हो ?"

"आह, तुमने अभी पूरा नहीं देखा है, मेरे पीछे आओ, आओ मेरे पीछे, जल्दी ने ?"

वे एक दूसरा द्वार खोलते हैं।

यह दूसरा कक्ष वर्गाकार बना हुआ है। प्रकाश के लिए इसमें केवल एक ही वातायन है—जिसमे समस्त प्रकृति के दर्शन होते हैं। केन्द्र मे एक लकडी के खम्बे पर लाल मिट्टी का एक लौंदा रखा हुआ है। और कोने मे एक आराम कुर्सी पर एक लडकी खामोशी के साथ बैठी है।

"यहाँ तुम एण्ड्रोमीडा, जैंग्रेयूज और सूर्याश्वो की मूर्तियाँ बना सकोगे। क्योंकि तुम केवल अपने लिए इनका निर्माण करोगे, इसलिए अपनी मृत्यु के पहिले ही तुम अपने ही हाथो उनका विध्वन्स भी कर दोगे।"

'ये सुख का निकेतन है।' डिमिट्रियोस बुदबुदाता है।

और वह अपने मस्तक पर हाथ रख लेता है।

लेकिन ग्राइसिस अगला द्वार भी खोल देती है।

यह तीसरा कक्ष विशाल और गोलाकार है। प्रकाश के लिए इसमें भी एक वातायन है जिसमे समस्त अन्तरिक्ष दृष्टिगोचर होता है। उस की दीवारें कासे की हैं और दीवारो के कोणो का निर्माण हीरे की तरह गोलाई लिए हुए है। एक अज्ञात गायक वाद्य यन्त्र पर एक करुण राग बजा रहा है। उसके सामने बांसुरी का स्वर भी हेय मालूम पडता है। और सबसे दूर वाली दीवार के सहारे हरे संगमरमर के सिंहासन पर एक युवती चुपचाप बैठी हुई है।

"आओ! आओ!" क्राइसिस दोहराती है। वे एक और द्वार खोलते हैं। यह चौथा कक्ष अपेक्षाकृत नीचा है, और गुलाबी रंग का त्रिकोणाकार है, और चारो तरफ से बन्द होने के कारण ऐसा प्रतीत होता है जैसे किसी साधु का आवासगृह हो। और बडे-बडे पर्दे और विभिन्न प्रकार के समूर छत से लेकर जमीन तक कोमलता के साथ इस

प्रकार लटके हुए हैं कि उनके मध्य निर्वसन होना भी अशोभन प्रतीत नहीं होता था। जिस समय द्वार बन्द हो जाता है, यह कहा नहीं जा सकता, है कि वह कहाँ है। वहाँ कोई वातायन नहीं है। सारी दुनिया से अलग यहाँ की एक दूसरी ही दुनिया है। काले अशोक वृक्ष से सुगन्धि के आँसू निरन्तर टपक कर वायुमंडल को सुरभित कर रहे हैं। इस कक्ष को सात रत्नों से प्रकाशित किया गया है जो कि सात भूमिगत लेम्पों की तरह विभिन्न प्रकार का प्रकाश फैला रहे हैं।

"तुम देखते हो," वह नवयुवती शांत और प्रेमपगे स्वर में समझाती है, "हमारे इस कक्ष के तीन कोनों में तीन शैया हैं ?"

डिमिट्रियोस इसका कोई उत्तर नहीं देता। वह अपने से प्रश्न करता है, क्या मानवीय अस्तित्व का यही अन्त है। क्या वास्तविक अन्त यही है। क्या मैं इन तीनों कक्षों को पार करके इस कक्ष में हमेशा के लिए ठहर जाने के लिए आया हूँ। और क्या मैं, क्या मैं, अगर एक रात को यहाँ सो जाऊँ तो इसे छोड़ कर जा सकता हूँ। यह कक्ष लगता है कि जैसे किसी कब्र का उघड़ा हुआ स्वरूप हो।

लेकिन क्राइसिस बोल उठती है।

"परम प्रिय, तुमने मुझे यहाँ आने का आदेश दिया था, और अब मैं यहाँ आ गई हूँ। मुझे अच्छी तरह देखो ।"

वह अपनी बाहों को एक साथ ऊपर उठाती है और कानों के दोनों तरफ केश राशि को थाम लेती है। उसकी कोहानियाँ आगे निकली हुई हैं और मुसकराकर वह कहती है, "परम प्रिय, मैं तुम्हारी हूँ ओह इतने शीघ्र नहीं मैंने तुम से गाने का वायदा किया था। पहिले मैं गाऊँगी।"

और वह उसके चरणों में समर्पित हो गया है, सिवा उसके अब कुछ सूझता ही नहीं है। उसने श्याम वर्ण सैण्डल पहिन रखी हैं। नीले मोतियों से टके चार धागे उसके अंगूठों के पास से गुजरते हैं। उसके पैरों के सभी नाखूनों पर सुर्खी लगी हुई है।

उसका सिर उसके कन्धे पर झुका है। अपने बाएं हाथ की हथेली पर वह दाएं हाथ की अंगुली से चुटकी मारती जाती है और उसके नितम्बों में हल्का-हल्का स्पन्दन हो रहा है

"मैं सोती हूँ लेकिन मेरा मन जागता है,
मेरे प्रियतम का स्वर मेरे द्वार पर दस्तक दे रहा है,
कहते हुए कि हे मेरी हमिनि, परम पावन मेरे लिए द्वार उन्मुक्त करो,
क्योंकि मेरा सिर ओस के कणों से भरा है,
और मेरे केश रात की बून्दों से सराबोर हैं।
मैं अपने प्रियतम के लिए द्वार खोलती हूँ,
लेकिन मेरा प्रियतम लौट रहा है,
और चला गया है।
उसके स्वर को सुनकर मेरा अन्तर उद्विग्न हो उठा था,
मेरा मन उसको खोजता रहा, लेकिन मैं उसे पा न सकी।
मैंने उसे पुकारा, लेकिन उसने कोई उत्तर न दिया।
मैं तुम से विनती करती हूँ, हे यरुशलम की पुत्रियों,
अगर मेरा प्रियतम तुम्हें कहीं मिले,
तो तुम उससे कहना कि मैं प्रेम रोग से पीडित हूँ।"

आह, यह गीतों का शिरोमणि गीत है, डिमिट्रियोस! मेरे देश की कुमारियां विवाह के अवसर पर यह गीत गाती हैं।

"मेरे प्रियतम का स्वर सुनो,
देखो वह आ रहा है,
पर्वतों को फांदता हुआ,
पहाड़ियों को लांघता हुआ,
मेरा प्रियतम एक हिरण या तरुण बारह सिंघे की भांति है,
देखो! वह हमारी दीवार के पीछे खडा है,
वह खिडकी की तरफ देख रहा है,

और वह खिलखिली में से साफ दिखाई पड रहा है।
मेरा प्रियतम बोला, और उसने मुझ से कहा,
प्रिये, सुमुखि, उठो और मेरे साथ चलो,
और देखो, शरद ऋतु बीत गई,
वर्षा समाप्त हुई और चली गई,
धरती की गोद फूलों से भर गई,
पक्षियो के गाने का समय आ गया,
और हमारे देश में बत्तख के कूजने की आवाज आने लगी है।
अंजीर का वृक्ष हरे-हरे अंजीरों से भर गया है,
और अंगूर-लताएं अंगूरों की मीठी-मीठी सुगन्धि से महक रही हैं,
उठो प्रियतमे, सुमुखि, और मेरे साथ चलो।
ओ मेरी, फाख्ता तुम जो चट्टानो की दराजों में छिपी हो,
मुझे अपनी मुखाकृति देखने दो,
क्योंकि तुम्हारा स्वर मधुर है, और तुम्हारी मुखाकृति कोमल है,
हमें उन लोमडियो के पास ले चलो,
जो हमारी अंगूर लताओं को नष्ट करती हैं,
हमारी अंगूर-लताओं पर कोमल अंगूर लगे हैं।
मेरा प्रीतम मेरा है और मैं उसकी हूँ,
वह लिली पुष्पों पर विहार करता है।
भोर होने तक, जब छाया वृक्षो का सहारा छोड देगी,
तब तक तुम एक मृग के समान पर्वतों पर विहार करो।"

वह अपना अवगुंठन उतार देती है और उस तंग पोशाक को पहिने खडी रहती है। यह पोशाक घुटनो से नितम्बो तक बिलकुल चिपकी हुई है।

"जैसे वन के वृक्षों में सेब का वृक्ष होता है,
उसी प्रकार पुष्पो के मध्य मेरा प्रीतम है,
मैं उसकी छाया में प्रसन्नता पूर्वक बैठी हूँ,

ओर उसका फल मुझे स्वादिष्ट लगता है।
वह मुझे रास-रग से भरे घर में लाया है,
ओर अपने प्रेम का परचम मेरे सिर पर फहराता है,
—तुमने मेरा दिल मेरे सीने से छीन लिया है, मेरी प्यारी,
तुम्हारी एक ही नजर ने मेरा दिल जख्मी कर दिया है,
तुम्हारा प्रेम मदिरा से कितना बेहतर है.
ओर तुम्हारे अगराग मसालो से भी अधिक चटखदार हैं,
मेरी प्रिय, तुम्हारे ओष्ठ मधुछत्र के समान हैं,
तुम्हारी जिह्वा के नीचे मधु ओर दुग्ध का उद्गम है,
ओर तुम्हारे वस्त्रों की गध लेवनान की गध के समान है,
मेरी प्रियतमा एक चारो तरफ से घिरे बाग के समान है,
जैसे बन्द किया हुआ वसन्त,
जैसे बन्द किया हुआ चश्मा।
वह अपने नेत्र बन्द करते हुए अपनी गर्दन पीछे फेंकती है।
"जागो हे उत्तरी हवाओं ओर दक्षिण की ओर बहो,
मेरे बागो पर बहो ताकि पुष्पों का पराग बिखर जाय,
मेरे प्रियतम को उसके बाग में आने दो,
ओर सुस्वादु फलों का रसास्वादन करने दो,
वह अपनी बाहो को बल देती हुई अपने अधर अर्पित करती है।
मै अपने प्रिय की हूँ, ओर उसकी इच्छाएं मुझ से अभिभूत हैं,
आओ मेरे प्रीतम, हम खेतों में निकल चलें,
चलो चल कर देहात में रहें,
प्रेम की प्यास को अनेक सागर भी नहीं बुझा सकते,
ओर न सैलाब उसे डुबो सकते हैं,
अगर प्रेम के लिए अपने घर की प्रत्येक वस्तु अर्पित करदी जाय तो वह भी तुच्छ है।
तुम बाग में रहते हो,

तुम्हारे साथी तुम्हारी आवाज के साथ बोलते हैं,
मुझे वह अनुपम स्वर सुनने दो,
जल्दी करो मेरे प्रियतम,
और जिस तरह से सुगन्धित जडी-बूटियों से
भरे पर्वत पर एक बारहसिंघा विचरण करता है,
उसी तरह तुम भी विचरण करो।

अपने कदमो को बिना हिलाए और अपने घुटनो को पिचकाए बिना ही उसने अपना धड अपने नितम्बो पर झुका दिया। उसके नितम्बो में जरा सी भी थिरक नही थी। उसके वस्त्रो से बाहर निकला हुआ उसका मुँह इस तरह प्रतीत होता था जैसे ड्रेपरी के फूलदान में गुलाब का फूल रखा हो।

अब वह अपने कन्धो, सिर और अपने सुन्दर हाथो को नृत्य की गति दे रही है। उसके समस्त अस्तित्व पर उदासी छायी हुई है। प्रतीत होता है जैसे वह अपनी काया के अन्दर बहुत घनी पीडा अनुभव कर रही है। साँसो की तीव्र गति से उसकी छाती फूल गई है। उसका मुख खुला रह गया है। उसकी पलकें बन्द नही हो सकती हैं, अन्तर की बढती हुई ज्वाला से उसके कपोल सुर्ख होते जा रहे हैं।

कभी कभी उसकी अगुलियाँ उसके मुँह के सामने जाली बना लेती हैं, कभी-कभी वह अपनी बाहे इस तरह उठाती है कि उसे अक मे समा लेने को जी चाहता है। उसके उठे हुए कन्धो के बीच एक गर्त है। और नवागता वधू जैसे घूंघट से अपनी प्रणयजनित लज्जा छिपा लेती है अन्त मे हाँफती हुई वह सहसा उसी प्रकार अपने बालो से मुँह को आच्छादित करके अपनी अनन्त गरिमा को सभाले फर्श के बीचोबीच रहस्यमयी सी खडी रह गई है।

डिमिट्रियोस और क्राटसिस

कितना एकात्मकारी, कितना सम्पूर्ण है, उनका प्रथम आलिंगन निश्चेष्ट, प्रगाढ आलिंगन मे आबद्ध वे अनेक रूपो में आनन्द को प्राप्त

कर रहे है। क्राइसिस उन वलिष्ट-भुजाओ के आलिगन से जैसे चकनाचूर हुई जा रही है। प्यासे प्यार का माधुर्य उनके होठो से टपक रहा है। वह इस प्यार को परितुष्ट करने मे वीहडता नही लाएँगे। एक-दूसरे के नशे में अपने को भूली उनकी आत्माओ में एक कसक-सी उठ रही है।

दुनिया की किसी वस्तु को आदमी इतनी आत्मीयता से नही देखता जितना उस स्त्री के मुंह को—जिसे वह प्यार करता है, चुम्बन की घनता का भान होते ही क्राइसिस के नेत्र विस्फारित हो उठे हैं। वह उन्हे वन्द कर लेना चाहती है। उसकी पलको पर दो समानान्तर सलवटे उभर आई हैं और कपोलो पर सुर्खी छा गई है। ज्योही वह पुन आँखे खोलती है, रेशमी धागे के समान एक हरितवर्ण प्रकाश-वृत्त उसकी तिरछी चितवनो मे भर उठता है। जिस स्थान से अश्रु-वूदे छलक रही हैं वह सुर्ख है और उसमे स्पदन वढ गया है।

यह चुम्वन कभी समाप्त नही होगा। ऐसा लगता है, कि यह चुम्वन धर्म-ग्रन्थो में वर्णित मधु और दुग्ध से भी अधिक कुछ जीवन्त, तीव्र और मथित है, जो कर-स्पर्श से भी अधिक कोमल है, नेत्रो से भी अधिक अभिव्यजना पूर्ण है, जैसे एक सजीव पुष्प है—जिसे क्राइसिस अपनी कोमलता और कल्पना से जीवन प्रदान कर रही है आलिगन सुदीर्घ और घने होते जा रहे है। आलिगन करते समय उसकी अँगुलियो के अग्र-भाग एक कपन के साथ उसकी देह पर खेल रहे हैं। वह सुख का अनुभव करती हैं, लेकिन वासना उसे भयभीत कर देती है, जैसे कि वह कोई पीडा हो। अपनी वाहो से वह उसे अपने से दूर कर देती है, उसके होठ जैसे अव भी याचना कर रहे हैं। डिमिट्रियोस वलपूर्वक पुन उसे आलिगन में आवद्ध कर लेता है।

जिन्होने किसी स्त्री को अपनी वाहो मे वदलते हुए देखा है। प्रकृति का कोई दृश्य उन्हें इतना आश्चर्यजनक प्रतीत नही हो सकता, न सन्ध्या के सूर्य की लालिमा, न झझावात से झकोरे जाने वाले देवदार के वृक्ष, न आकाश में गर्जने वाली बिजली और न महासागरो में उठने वाले तूफान।

कृतज्ञता से क्राइसिस की आँखें चमक रही हैं, और धुंधली नजर आंखो के कोनो से प्रकीर्ण हो रही है। उसके कपोल चमक उठे हैं और मांस-पेशियो की प्रत्येक रेखा अभिराम हो उठी हैं।

डिमिट्रियोस सोचता है, उसके मन में एक धर्म-भय है, नारी-प्रकृति में देवत्व की यह महान शक्ति, समूचे अस्तित्व का यह परिवर्तन, अति मानवीय भावकता, जिसका कारण वह स्वय है, जिसे वह स्वतन्त्रता-पूर्वक गरिमायुक्त बना सकता है, या कुचल सकता है। वह इन्ही विचारों से अभिभूत है। आज जीवन के समस्त तत्वो को सचेष्ट होकर रचना के हेतु सयुक्त होते वह अपनी आंखो से देख रहा है। क्राइसिस उसे मातृत्व की गरिमा से युक्त जान पडती है।

अध्याय तेईस

लाश

सागर के ऊपर और देवी के उद्यानो के ऊपर चन्द्रमा प्रकाश के पैलो का निर्माण कर रहा था ।

किशोरी मिलीटा, कोमल और तन्वगी उस भविष्यवाणी करने वाली औरत के पास खडी रह गई । अभी-अभी डिमिट्रियोस की दृष्टि उसपर पडी थी और उसने स्वय डिमिट्रियोस को चिमारिस के पास ले जाना मजूर किया था ।

"उस आदमी के पीछे मत जाना," चिमारिस ने उसको टोका ।

"ओह, मैंने तो उससे यह भी नही पूछा कि वह फिर कभी उधर आएगा अथवा नही मै अभी अभी दौडकर उससे पूछ आती हूं ।"

"नही, तुम दोबारा उससे मिलने की कोशिश मत करना । इसी में तुम्हारा हित है छोकरी । जो उससे एक बार मिलते हैं । उन्हें दु ख सहना होता है । जो उससे दोबारा मिलते हैं, उन्हें मौत के साथ खेलना पडता है ।"

"तुम ऐसा कैसे कहती हो । मैंने तो अभी-अभी उसके दर्शन किए हैं, और मैंने उसकी बाहो में क्रीडा करने का सुख भी प्राप्त किया है ।"

"तुमने यह आनन्द इसीलिए प्राप्त किया है, मेरी बच्ची, क्योकि तुम यह नहीं जानती कि प्रेम क्या बला होती है । उसे साथी बनाने की बात भूल जाओ, और अपने भाग्य को सराहो कि तुम अभी बारह वर्ष की नही हुई हो ।"

"जब लोग बडे हो जाते हैं तो क्या बडे दु खी होते हैं ?" लडकी ने

पूछा, "सभी औरतें अपने दुःखों का रोना रोती रहती हैं। मुझे तो कभी रोना नहीं आता। मैंने अकसर औरतों की आँखें आँसुओं में भरी हुई देखी हैं।"

चिमारिस ने अपने दोनों हाथ अपने बालों में खोंस लिए और जैसे पीड़ा से कराहने लगी। उसके आँगन में बँधा हुआ बकरा अपने सुनहरे कान फटफटाता रहा, लेकिन उसने उधर देखा भी नहीं। मिलीटा जानबूझकर अपनी बातें कहती चली जा रही थी, उसने कहा, "लेकिन केवल एक औरत ऐसी मैंने देखी है जो दुःखी नहीं है—वह है मेरी परम मित्र काइसिम मुझे पूरा यकीन है कि वह कभी नहीं रोयी ।"

"वह भी रोएगी।" चिमारिस ने कहा।

"ओह, हमेशा विपत्तियों की भविष्यवाणी करने वाली बुढ़िया। तू अपने शब्द वापस ले, वरना मैं तेरी शक्ल भी न देखूँगी।"

लेकिन पूर्व इसके कि वह लड़की अपनी उस उक्ति को चरितार्थ करती वह काला बकरा अपने अगले पैर ऊपर करके पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और सींगों से झकझोरने लगा। मिलीटा भाग खड़ी हुई।

वह दस कदम ही भागी होगी कि एक झाड़ी में एक जोड़े को अभिसार करते देखकर वह अट्टहास कर उठी। इस दृश्य को देखकर उसके विचारों की धारा फिर से बदल गई।

घर वापस जाने के लिए उसने बहुत ही लम्बा रास्ता चुना और फिर वापस लौटने का विचार ही त्याग दिया। आकाश में सुन्दर चाँदनी छिटक रही थी, वातावरण गर्म था, और उद्यान हास्य और संगीत की आवाजों से भरा हुआ था। डिमिट्रियोस से उसने जो कुछ पाया था, उसी से संतुष्ट होकर वह गृहविहीन पुजारिन की तरह घने जंगल के अन्दर रास्ते पर दीन-हीन राहगीरों को देखती हुई कुछ देर भटकना चाहती थी। इस प्रकार घूमती-घामती तीन चार स्थानों पर थोड़ी देर के लिए वह रुकी। उद्यान में पड़ी बेंचों पर बैठकर उसने कई नए सीखे हुए खेलों का अभ्यास करने की चेष्टा की। चलने लगी तो उसे एक

सैनिक गस्ते मे मिला जिसने अपनी भुजाओ मे पकड़कर उसे सिर से ऊपर उठा लिया। मिलीटा को लगा जैसे उद्यान का देवता किसी परी को दर्शन दे गया हो। वह इस घटना से इतनी उत्फुल्लित हुई कि चीख-चीख कर अपनी खुशी प्रगट करने लगी।

इस घटना से मुक्ति पाकर वह रास्ते पर फिर चल खडी हुई। वह देवदार वृक्षो की कतारो में से होती हुई आगे बढ रही थी कि उसे मिकिलोस नामक छोकरा रास्ते मे मिला। लगता था मिकिलोस जगल में अपना रास्ता भूल गया है। उसने लडके से कहा कि वह उसे रास्ता दिखाएगी, लेकिन उसे ज्यादा देर तक अपने साथ रखने की दृष्टि से वह और भी गलत रास्ते पर ले गई। मिकिलोस मिलीटा के इरादो से बहुत अधिक देर बेखबर न रहा। जल्दी ही वह दोनो प्रेमियो के रूप में तो नही लेकिन दोस्तो के रूप में हाथ मे हाथ डालकर साथ-साथ दौडने लगे और उससे भी अधिक एकान्त और निर्जन रास्ते पर दौडते-दौडते सागर तट पर पहुँच गए।

यह स्थान जहाँ वह पहुँच गए थे—उस स्थान से बहुत दूर था जहाँ देवदासियाँ अपने धार्मिक कर्तव्यो को पूरा करती थी, इस स्थल के सौंदर्य से प्रभावित होकर वह सोचने लगे कि न जाने लोग दूसरे स्थानो पर मिलना क्यो पसन्द करते हैं। घने जगल से भरे उद्यानो में जहाँ अधिकाश लोग आपस में मिलते हैं—सभी रास्ते और तग गलियाँ भीड से भर जाती हैं, उस घने जगल के चारो ओर के मैदान का प्राकृतिक सौन्दर्य चाहे कैसा भी हो, वहा के वातावरण की रिक्तता और ऊबड-खाबड उगे हुए जगल मे एक विशेष प्रकार की शान्ति का आभास मिलता है।

मिकिलोस और मिलीटा इस प्रकार हाथ में हाथ डालकर विचरते हुए सार्वजनिक उद्यान के किनारे पर आ पहुँचे। यहाँ से देवी अफ्रोडाइटी का मन्दिर सामने ही दीखता था और रास्ते में केवल जगली बूटियो की कुछ झाडियाँ ही उगी हुई थी।

इस स्थान की खामोशी और निर्जनता से प्रेरित होकर दोनों ने इन टेढ़ी-मेढ़ी लपेटदार झाड़ियों को पार करके वापस लौटने का ही निश्चय किया। उसके पैरों के निकट ही भूमध्य महासागर किसी सरिता में उठती हुई लहरों के समान छोटी-छोटी हिलकोरों के साथ तट से टकरा रहा था। दोनों बच्चे तगड़ी तक गहरे पानी में घुस गए और नई सीखी हुई क्रीडाओं को दोहराते हुए एक-दूसरे का पीछा करने का प्रयास करने लगे। तब छिटकती हुई चाँदनी में पानी से सराबोर अपनी चमकती हुई टाँगें उछलते हुए वे किनारे पर आ गए।

रेत में पड़े हुए पग-चिह्नों का अनुसरण करते हुए अपने गन्तव्य पर पहुँचने की चेष्टा करने लगे। वह उनके सहारे बढ़ते ही गए। रात असाधारण चाँदनी से प्रकाशमान हो रही थी। वे चलते ही गए, फिर दौड़ने लगे और अपने हाथों से एक-दूसरे को पकड़ने की चेष्टा करने लगे। पीछे-पीछे उनकी छाया मूर्तियाँ वही आचरण दोहराती जाती थीं। वह कितनी दूर तक इसी तरह चलते जाएँगे? उस घने-नील क्षितिज पर उन्हें केवल अपनी ही दो मूर्तियाँ दिखाई पड़ती थीं।

लेकिन सहसा मिलीटा चीख उठी, "आह, देखो?"

"यह क्या?"

"कोई औरत है?"

"पुजारिन! और कितनी निर्लज्ज है। सोने के लिए यहाँ आई है?"

मिलीटा ने मिक्निोस का सिर पकड़कर हिलाया, "नहीं ओह, नहीं, मेरा नजदीक जाने का साहस नहीं होता वह कोई मामूली पुजारिन नहीं मालूम पड़ती।"

"मेरा भी कुछ ऐसा ही ख्याल होता है।"

"नहीं, मिक्निोस, व हममें से नहीं है। यह तो टोनी है। बड़े पुजारी की पत्नी! और उसकी ओर जरा गौर से तो देखो। वह सोई हुई नहीं है ओह, मेरा तो नजदीक जाने का साहस नहीं होता।

उसकी आंखे तो खुली हुई हैं। चलो यहाँ से भाग चले मुझे डर लग रहा है मुझे डर लग रहा है ।"

मिकिलोस अपने पजो पर तीन कदम आगे बढा। "तुम ठीक कहती हो मिलीटा, वह कोई नही है—वह तो मर गई है। आह बेचारी।"

"मर गई है।'

"उसके कलेजे मे किसी ने एक पिन भोक दी है।"

वह नजदीक बढकर उनके सीने से पिन निकालने का उपक्रम करने लगा, किन्तु मिलीटा ने उसे पकड लिया और वह चिल्लाई, "नही, नही, उसे छुओ मत वह अत्यन्त पवित्र आत्मा है 'उसके पास खडे रहो, उसकी देखभाल करो, उसकी रक्षा करो मैं दौडकर सहायता के लिए जाती हूँ मे औरो को जाकर इसकी सूचना देती हूँ।"

इतना कहकर बहुत तेज़ रफ्तार से वह उस काले घने जगल में गुम हो गई। मिकिलोस भय से कापता हुआ थोडी देर तक उस तरुण लाश के निकट घूमता रहा। और तब इस आशङ्का से कि कही उसे भी उस हत्या मे शरीक न मान लिया जाय, वह घबराकर भाग खडा हुआ। उसने निश्चय किया कि वह किसी से कुछ भी न कहेगा।

टोनी की ठण्डी लाश इस निर्जन स्थान मे यूं ही पडी रही। काफी देर बाद सारा जगल एक भयभीत फुसफुसाहट से भर उठा। चारो तरफ से वृक्षो की शाखो से, झाडियो से होती हुई भेडो की तरह एक दूसरे से सटी हुई लगभग एक सहस्र स्त्रियां आगे बढ रही थीं।

भय की एक चीख जैसे उन सभी के शरीरो में एक साथ ही दौड उठती थी ।

खोजन वालो का एक झुण्ड सागर की लहरो के समान पीछे आने वाले दस्ते को प्रथम स्थान देता जाता था। कोई भी दस्ता उस मृतक का सबसे पहिले पता चलाना नही चाहता था।

फिर सहसा एक साथ एक सहस्र कठो से भयार्त्त चीत्कार निकल

गई। एक वृक्ष के तने के निकट उन्होंने लाश को देख लिया था।

एक सहस्र हाथ अभिवादन के लिए वायु में उठे, फिर एक सहस्र आँसुओं से अवरुद्ध कंठों से आवाज आती सुन पड़ी, "देवी, तेरा प्रकोप हम पर नहीं, देवी हम पर नहीं, देवी अगर तुम्हें प्रतिशोध लेना है तो हम पर दया करना!"

एक घबराई हुई आवाज चारों तरफ गूँज उठी, "मन्दिर की ओर!"

सभी ने एक स्वर से दोहराया, "मन्दिर की ओर, मन्दिर की ओर!"

भीड़ में एक नयी उत्तेजना दौड़ गई। उस मृतक स्त्री की लाश की ओर—जो कि अपनी पीठ के बल पड़ी थी—दोबारा देखने का साहस किसी का नहीं होता था। लाश भयावनी लग रही थी, उसकी बाहें इधर उधर फैली पड़ी थी, उसकी पुतलियाँ घूम गई थी, और काले और गोरे रंग की पूर्व और पश्चिम के देशों की स्त्रियाँ अपनी भड़कीली और प्रायः अर्धनग्न पोशाकों वाली स्त्रियाँ उसे देखकर धीरे-धीरे वृक्षों की ओट लेकर गायब होती जा रही थीं। वे अब जंगल के बीच वाले साफ मैदानों में, छोटी-छोटी गलियों में, बड़े-बड़े राजपथों में भरती जा रही थीं, धीरे-धीरे वे मन्दिर की चौड़ी गुलाब के-से रंग वाली सीढ़ियों पर चढ़ने लगीं और काँच के दरवाजों पर दुर्बल हाथों से घूँसे मारते हुए बच्चों की तरह बिलखने लगीं—"हमें अन्दर आने दो, द्वार खोलो?"

अध्याय चौबीस

जन समुदाय

जिन दिन प्रातःकाल बच्चीज के घर में नच्चानेलिया का अन्त हुआ अनैवर्जेन्ट्रिया में एक घटना घटी वर्षा हुई। ऐसे अवसर अपेक्षाकृत कम ही आते है कि अफरीकन प्रभाव वाले देशो में प्रचलित प्रथा के प्रतिकूल अनैवर्जेन्ट्रिया निवासी वर्षा का स्वागत करने के लिए घरो से बाहर निकल आएँ।

मौसम ऐसा हो गया था जैसे कि एक गहरी बौछार आने वाली है। या तूफान उठने वाला है। फिर सहसा आकाश में घुमडते हुए बादलो से मोटी-मोटी बूंदो वाली बौछारो से समस्त वातावरण भर गया। स्त्रियो ने इस बौछार से अपने सीनो और जल्दी में बाधे हुए जूडो को ठण्डा किया। पुरुषवर्ग दिलचस्पी के साथ आकाश की ओर ताक रहा था और बच्चे आंगन में होने वाली कीचड में अपने पैर सान कर आनन्द लेने लगे थे।

इसके बाद बादल साफ हो गये। सूरज की चिलचिलाती धूप निकल आई। आकाश बिलकुल स्वच्छ हो गया। जमीन पर होने वाली कीचड सूरज की तेजी से सूखकर धूल के रूप मे परिवर्तित हो गई।

लेकिन इस क्षणिक बौछार ने काफी पारितोष प्रदान किया था। सारे नगर में हर्ष की एक लहर दौड गई थी। पुरुषवर्ग अगोरा के खुशगवार प्रस्तरो पर जमा हो गया था और स्त्रियां विभिन्न दलो में एकत्रित होकर समूह-गान का आनन्द लेने लगी थी।

केवल देवदासियां ही इस आनन्द से वंचित थी। देवी अफ्रोडाइटी

के पर्व का तीसरा दिन था और की देवी पूजाका यह दिन केवल विवाहित स्त्रियो के लिए ही सुरक्षित था। पुष्पित परिधान धारण करके और अगराग व अजन द्वारा शृगार करके ये स्त्रियाँ अस्टार्टियन की ओर जाने वाली सडक पर भरती जा रही थी।

जिस समय मिर्टोक्लिया सामने से गुजरी तो फ्लोटिस नाम की एक बालिका ने जो दूसरी लडकियो के साथ खडी हुई बातें कर रही थी—उसे आस्तीन पकड कर रोक लिया।

आह, लडकी कल तुमने बच्चीज के यहाँ नृत्य किया था ? वहाँ क्या क्या हुआ ? लोगो ने क्या-क्या किया ? क्या बच्चीज ने अपनी गर्दन मे पडने वाले गड्ढो को छिपाने के लिए कोई दूसरा कठहार पहिना था। वह छाती पर लकडी का कठला पहिनती है या पीतल का ? अपना रूप धारण करने से पूर्व अपनी कनपटियो पर उगे सफेद बालो को रगना वह भूल तो नही गई थी ? आओ बताओ तो सही।"

"तुम क्या यह सोचती हो कि मैं यह सब देखने के लिए वहा रुकी रह गई थी। मैं तो भोजन के बाद अपना खेल दिखाकर और अपनी उजरत लेकर फौरन वहाँ से भाग आई थी।"

"ओह, मैं जानती हूँ, तुम अपने को किसी तरह भी भ्रष्ट नही करती हो।"

"आह, अपनी पोशाक पर धब्बे डलवाना और लात-घूंसे खाना, ना बाबा! यह फ्लोटिस के बूते का काम नही है। इस प्रकार से हुड़दंग मे सिर्फ अमीर औरते ही शरीक हो सकती हैं। हम जैसी छोटी-मोटी गाने बजाने वालियो के पल्ले तो सिर्फ आसू ही पड सकते हैं।"

"अगर अपनी पोशाक पर धब्बे लग जाने का डर हो तो उसे दूसरे कमरे में रख देना चाहिए, जब वे तुम्हे घूंसे मारे तो उसका भी मेहनताना उनसे वसूल करो। यह तो मामूली सी बात है। तो फिर तो तुम्हारे पास बताने के लिये कुछ भी नही है, एक भी साहसिक घटना, कोई मजाक या कोई गुप्त सम्बन्ध। कुछ भी सुनने के लिये हमारे प्राण

टपटा रहे है। अगर कोई सत्य घटना न हो तो कोई बनाकर ही सुना दो। लेकिन सुनाओ जल्द।"

"मेरी मित्र थ्यानो मेरे बाद भी दावत मे रही थी। जब मैं सोकर उठी तो मैंने देखा कि वह अभी तक भी लौटकर नही आई थी। शायद वहा समारोह अब भी चल रहा है।"

एक दूसरी औरत ने कहा, "नही, समारोह समाप्त हो चुका है। थ्यानो को अभी मैने उधर बडी दीवार के पास देखा था।"

देवदासियां उधर को ही दौड चली। लेकिन रास्ते में ही उन्होने ऐसा दृश्य देखा कि हास्य के साथ करुणा भी उनके चेहरो पर बरस पडी।

थ्यानो की स्थिति अस्त-व्यस्त थी। उसने बहुत अधिक शराब पी हुई थी और वह उन्मत्तावस्था मे एक गुलाब के फूल को जिसके काटे उसके बालो में खुंस हुये थे—बार-बार निकालने की चेष्टा कर रही थी, उसकी पीले रग की ट्यूनिक भीग गई थी। ऐसा लगता था जैसे समारोह का सारा का सारा हुडदग उसी के सिर से गुजरा हो। और पीतल का पिन जो वस्त्रो को अस्तव्यस्त होने से रोकने के लिए उसके कन्धे पर लगा होना चहिए था, वह नीचे लटक रहा था, उसके सारे वस्त्र बुरी तरह अस्त--व्यस्त हो रहे थे।

ज्योही उसने मिर्टोक्लिया को देखा वह सहसा अट्टहास कर उठी, सारे अलैक्जेंड्रिया मे उसकी यह हँसी प्रख्यात थी और इस अट्टहास के कारण ही उसे "बत्तख" की उपाधि मिली हुई थी। यह आवाज अण्डे देती हुई बतख की आवाज से बहुत कुछ मिलती थी। जब वेग से उठने वाले तूफान को उसके फेफडे सहन न कर पाते तो वह केवल चीखने लगती और इस चीख को ही बहुत मधुर स्वर से बार-बार दोहराने लगती जैसे कोई जगली पक्षी कूकता हो।

"एक अण्डा ! एक अण्डा !" फ्लोटिस ने चिढाया ।

लेकिन मिर्टोविलया ने उसे खामोश करने के लिए प्रार्थना करते हुये कहा, "आओ थ्यानो । चलकर सो जाओ । तुम्हारी तबियत ठीक नही है । आओ मेरे साथ चलो ।"

"आ हा हा, आ हा हा ।" बालिका हँसती गई ।

लेकिन वह लडकी बराबर अपने हाथ से अपनी छाती पीटती जाती थी और अब बदली हुई आवाज में कहती जाती थी, आ हा आहा हा आइना !"

"इधर आओ !" मिर्टा ने बेचैनी के साथ कहा ।

"आइना, वह तो चोरी हो गया । आह ! हा ! अगर मैं क्रोनोस से भी लम्बी उम्र पा जाऊँ तो भी आज के समान कभी नही हँस सकती, चोरी हो गया चोरी ! चाँदी का आइना !"

गासिका ने उसको खींचकर दूर ले जाने की चेष्टा की, किन्तु फ्लोटिस की समझ में बात आ गई थी ।

'ओर ?" वह अपनी बाहें आसमान में उठाती हुई दूसरी ओर चिल्लाई, आओ दौडकर इधर आओ । बहुत ताजी मजेदार खबर । बच्चीज का आइना चोरी हो गया ।"

और सब से मिलकर दोहराया, "पपाई, बच्चीज का आइना ।"

एक क्षण में ही उस बाँसुरी—वादक के चारों ओर तीस औरतें इकट्ठी हो गईं ।

ये लोग क्या कह रही हैं ?

"क्या ?"

'बच्चीज का आइना चोरी हो गया । थ्यानो अभी-अभी ऐसा कह रही थी ।"

'लेकिन कब ।"

"चुराया किसने !'

बालिका ने कन्धे बिचकाए "मैं क्या जानू ?

"तुमने तो सारी रात वहां गुजारी है। तुम्हे जरूर मालूम होना चाहिये। यह मुमकिन नही। उसके घर मे कौन चोर घुस आया। निश्चय ही उन्होने तुम्हे बताया होगा। याद करने की कोशिश करो थ्यानो।"

"मै कैसे जान सकती हूँ—हाल में तो बीस से भी ज्यादा आदमी थे। उन्होने मुझे बांसुरी बजाने के लिए बुलाया था लेकिन किसी ने भी गाने के लिए नही कहा। उन्हे संगीत पसन्द ही नही था। उन्होने कहा कि मै टेनो की नृत्य-प्रतिमा की नकल करके उन्हे दिखाऊँ और नृत्य देखकर उन्होने स्वर्ण मुद्राए मेरी ओर फेंकी लेकिन बच्चीज ने सभी मुद्राए मुझसे ले ली और इससे ज्यादा क्या सुनाऊँ। वे तो सबके सब उन्मत्त हो रहे थे। उन्होने मेज पर सात प्यालो मे रखी हुई सात किस्म की शरावे एक तसले में उडेल दी और तब मुंह से चुस्की लगा कर पीने के लिए उसमें मेरा सिर झुका दिया। मेरा सारा चेहरा भीग गया। मेरे बालो में से और मेरे गुलाब के फूलो मे से भी शराब चू रही थी।'

"हा, हाँ,' मिर्टो ने कहा, "तू बडी शैतान लडकी है। लेकिन आइना किसने चुराया। यह तो बताओ ?"

"बिलकुल ठीक ! जब उन्होने मुझे मेरे पैरो पर खडा किया तो मेरे सिर में खून भर गया था और कानो में शराब। हा हा, उन सभी ने मुझे देखकर हँसना शुरू कर दिया तभी बच्चीज ने अपना आइना मँगवाया हा हा आइना वहाँ था ही नही। किसी ने वहाँ से उडा दिया था।"

"किसने, मैं तुमसे पूछ रही हूँ, किसने ?"

"मैने तो नही चुराया। मै बस इतना जानती हूँ, वे मेरी तलाशी भी नही ले सके। क्योकि मै तो बिलकुल नग्न थी। सोने के सिक्के की तरह उस आइने को तो मैं अपनी पलको के नीचे नही छिपा सकती थी। मैने नही चुराया, मै बस इतना ही जानती हूँ। उसने एक गुलाम लडकी को सूली पर चढा दिया जब उनकी निगाह मुझ से बची कि डेनाई

की तीन मूर्तियां मैंने उठाली, देख मिर्टो मेरे पास पांच मूर्तियां हैं। इनसे तुम हम तीनो के लिए पोशाक खरीद दोगी न ?"

यह चोरी की खबर धीरे-धीरे सारे चौक मे फैल गई। देवदासियां अपने ईर्ष्यायुक्त आनन्द को छिपा न सकी, लोग इधर-उधर खिसकने लगे थे और अपने कुतूहल को शोर मचाकर प्रकट कर रहे थे।

"कोई औरत ही हो सकती है ?" फ्लोटिस ने कहा, "किसी औरत की ही जालसाजी है ?"

"हा हां आइना अच्छी तरह छिपाया हुआ था। अगर कोई चोर यह काम करता तो उसे घर की हर चीज उलट-पुलट करनी होती। जिना गिरा दिए तो वह कीमती आइना उसके हाथ लग ही नहीं सकता था।"

'रन्नीज के दुश्मन तो हैं। खासतौर से उसकी महिला-मित्र। वे उसके सभी भेद जानती हैं। उनमें से कोई उसे फुसला कर दूर ले गई होगी और दूसरी। मौका पाकर—सूरज की चिलचिलाती धूप में जब सड़क बिलकुल सुनसान होती होगी—उसे पार कर दिया होगा।"

और, यह भी हो सकता है कि अपना कर्ज चुकाने के लिए उसने आइना बेच ही डाला हो।"

"शायद उसके यहां किसी आने वाले ने यह काम कर डाला है। सुनते हैं अब वह अपने यहां आने वालों के बारे में कोई खास ध्यान नहीं रखती।"

'नहीं, काम तो यह औरत का ही है, इतना मैं कह सकती हूं।"

'वाला इदिया की सौगन्ध, चाहे जिसने भी किया हो काम तारीफ के काबिल है।"

और एक भयानक चीखने की आवाज इस गहमागहमी के ऊपर सुनाई पडी। कोई कह रहा था, "किसी ने बडे पुजारी की पत्नी को कत्ल कर डाला।"

सारी भीड मे एक भयानक उत्तेजना फैल गई। किसी को भी इस खबर पर विश्वास नही होता था, कोई यह कल्पना भी नही कर सकता था कि अफ्रोडीमियन समारोह के दिनो मे देवताओ के कोप को निमत्रण देने वाला इस प्रकार का कत्ल भी कोई कर सकता है। लेकिन सभी तरफ केवल यही शब्द लोगो के मुंह से सुन पड रहा था।

"बडे पुजारी की पत्नी का कत्ल हो गया। मन्दिर-समारोह बन्द कर दिया गया।"

यह खबर तेजी के साथ फैलती गई। लाश उद्यान के अन्त में गुलाबी रग के सगमरमर की बेंच पर पडी हुई पाई गई थी। उसके सीने में बाई ओर एक पिन घुसी हुई थी। जख्म में से खून नही निकला था। लेकिन कातिल ने लाश के बाल काट लिए थे और सम्राज्ञी निटोक्रिस द्वारा प्रदत्त प्रसिद्ध कन्घा निकाल लिया था।

क्रोध की इस प्रथम लहर के उपरान्त, एक गहरी आश्चर्य-भावना सारे वातावरण पर छा गई। हर क्षण भीड बढती ही जाती थी। प्राय समूचा नगर ही वहा जमा हो गया था, नगे सिरो और स्त्रियो की ओटनियो का महासागर-सा दिखाई पडने लगा था। और बारी-बारी से ये सब गलियो की सुनील छाया से निकलकर अलैक्जैण्ड्रिया के अगोरा की चकाचौंध करने वाली रोशनी में एकत्र होते जा रहे थे।

इतनी भीड केवल एक ही और अवसर पर देखने को मिली थी—जबकि सम्राज्ञी बैरेनिस के साथियो ने प्टोलमी आलीटीज को सिहासनच्युत किया था। लेकिन इस अधर्म की अपेक्षा वे राजनीतिक क्रान्तियाँ भी कम खौफनाक नजर आती थी। इस पाप ने तो सारे नगर के कल्याण को सकट में डाल दिया था। पुरुष लोग इन साक्षियो के निकट भिडते जा रहे थे। वे बार-बार घटना का पूरा विवरण सुनना चाहते

थे। नई-नई अटकले लगाई जा रही थी। जो लोग बाद में आते थे, उन्हे स्त्रियां आइने की चोरी की बात भी बताती जा रही थी, जो अपनी बुद्धि पर अधिक विश्वास रखते थे, उनका कहना था कि एक हाथ मे ये दोनो जुर्म हुए हैं। लेकिन वह हाथ है किसका यह कोई न जान पाता था। जिन लड़कियो ने देवी के चरणो मे अपनी भेट अर्पित की थी, वह अब अपने कपडो में मुह छिपाकर सुबक रही थी, उन्हें भय था कि कहीं इस अपराध से अप्रसन्न होकर देवी उनकी भेट को नामजूर न कर दे।

एक पुरानी मान्यता अलैक्जैण्ड्रियावासियो मे यह थी कि अगर इस प्रकार के दो अपराध होते हैं तो तीसरा अपराध भी अवश्य किया जाता है। सारी भीड इस तीसरे अपराध की प्रतीक्षा करने लगी थी। आइने और कन्धे के बाद वह रहस्यमय चोर अब क्या लेगा, लोग यह जानने के लिए उत्सुक थे।

जाने क्या था, जैसे अपना दम घुटा हुआ-सा अनुभव होता था, दक्षिण से उठी सागर की रेतीली हवा चलनी शुरू हो गई और ऐसा प्रतीत होता था जैसे सारी भीड के सीना पर बहुत बड़ा वजन रखा हुआ है।

अचानक एक से सारी भीड में इस तरह भय की सिहरन दौड गई थी जैसे कि वह एक ही मानवी देह हो। घबराहट उत्तरोत्तर बढती जा रही थी और सभी की आखें क्षितिज पर टिकी हुई थी।

वही क्षितिज कैनोपिक द्वार और अलैक्जैण्ड्रिया के बीच पडता था, और इसी निम्न स्थान से होकर मन्दिर से अगोरा को रास्ता जाता था। यहीं वह ढलान पडता था, जहाँ एक दूसरी भयभीत भीड खडी हुई थी और आतुरता के साथ इस पहली भीड से मिलने के लिए बढ रही थी।

[illegible]! पवित्र देवदासियाँ!"

कोई भी अपने स्थान से हिला-डुला नहीं। किसी का साहस उठकर आगे बढकर मिलने का न होता था। एक तीसरी आपत्ति से परिचित होने की आशंका प्रत्येक व्यक्ति को जकडे हुए थी। वे लोग तूफान की तरह

उमड़ती आ रही थी, उनके पीछे का पथ एक भयानक सूनेपन से भर उठा था। उनकी बाहें बार बार आकाश मे उठ जाती थी और उनकी कोहनियां एक दूसरे से टकरा रही थी। वे एक भागती हुई सेना के समान प्रतीत होती थी। अब वे पहचानी जा सकती थी। उनकी पोशाक, पीठ मे बधे उनके फेंटे और उनके बाल सभी पहचाने जा सकते थे, उनके सुनहरे जवाहिरात सूरज की रोशनी मे चमक रहे थे। वे अब बिलकुल नजदीक पहुँच गई थी, उनके मुंह से अब स्वर निकल रहा था। वातावरण मे भयानक खामोशी छा गई थी।

"देवी का कण्ठहार चुरा लिया गया। इनडचोमीन के सच्चे मोतियो का हार!"

मायूसी से भरी आवाजो ने इन घातक शब्दो का स्वागत किया। यह भीड—सहसा एक लहर की तरह झिझक गई। उसके बाद आगे बढी। वह दीवारो से टकराती, राजपथो को भरती और भयभीत स्त्रियो को घेरती हुई ड्रोम के चौक मे भरती जा रही थी, और असमाप्त देव-मन्दिर की ओर बढती जा रही थी।

थे। नई-नई अटकलें लगाई जा रही थी। जो लोग बाद मे आते थे, उन्हे स्त्रियां आइने की चोरी की बात भी बताती जा रही थी, जो अपनी बुद्धि पर अधिक विश्वास रखते थे, उनका कहना था कि एक हाथ मे ये दोनो जुर्म हुए हैं। लेकिन वह हाथ है किसका यह कोई न जान पाता था। जिन लडकियो ने देवी के चरणो में अपनी भेट अर्पित की थी, वह अब अपने कपडो में मुह छिपाकर सुनक रही थी, उन्हे भय था कि कहीं इस अपराध से अप्रसन्न होकर देवी उनकी भेट को नामजूर न कर दे।

एक पुरानी मान्यता अलैक्जैण्ड्रियानिवासियो मे यह थी कि अगर इस प्रकार के दो अपराध होते हैं तो तीसरा अपराध भी अवश्य किया जाता है। सारी भीड इस तीसरे अपराध की प्रतीक्षा करने लगी थी। आइना और कपडे के बाद वह रहस्यमय चोर अब क्या लेगा, लोग यह जानने के लिए उत्सुक थे।

लगता था, जैसे अपना दम घुटा हुआ-सा अनुभव होता था, दक्षिण की तरफ से सीली हवा चलनी शुरू हो गई और ऐसा प्रतीत होता था जैसे सारी भीड के सीनो पर बहुत बडा वजन रखा हुआ है।

सहसा एक साथ सारी भीड मे इस तरह भय की सिहरन दौड गई जैसे कि वह एक ही मानवी देह हो। घबराहट उत्तरोत्तर बढती जा रही थी और सभी की आंखें क्षितिज पर टिकी हुई थी।

वहीं क्षितिज नाविक द्वार और अलैक्जैण्ड्रिया के बीच पडता था, और वहीं किसी स्थान से होकर मन्दिर मे अपराधी को समझा जाता था। वहीं वह स्थान पडता था, जहा पर दूसरी भयभीत भीड खडी हुई थी और आतुरता के साथ इस पहली भीड मे मिलने के लिए बढ रही थी।

उमड़ती आ रही थी, उनके पीछे का पथ एक भयानक सूनेपन से भर उठा था। उनकी बाहें बार बार आकाश में उठ जाती थी और उनकी कोहनियां एक दूसरे से टकरा रही थी। वे एक भागती हुई सेना के समान प्रतीत होती थी। अब वे पहचानी जा सकती थी। उनकी पोशाक, पीठ मे बंधे उनके फेंटे और उनके बाल सभी पहचाने जा सकते थे, उनके सुनहरे जवाहिरात सूरज की रोशनी मे चमक रहे थे। वे अब बिलकुल नजदीक पहुँच गई थी, उनके मुंह से अब स्वर निकल रहा था। वातावरण मे भयानक खामोशी छा गई थी।

"देवी का कण्ठहार चुरा लिया गया। इनडपोमीन के सच्चे मोतियो का हार!"

मायूसी से भरी आवाजों ने इन घातक शब्दो का स्वागत किया। यह भीड़—सहसा एक लहर की तरह झिझक गई। उसके बाद आगे बढी। वह दीवारो से टकराती, राजपथो को भरती और भयभीत स्त्रियो को घेरती हुई ड्रोम के चौक मे भरती जा रही थी, और असमाप्त देव मन्दिर की ओर बढती जा रही थी।

अध्याय चौबीस

प्रतिक्रिया

अगोरा इस तरह वीरान पड़ा था जैसे ज्वार के बाद का सागर तट। लेकिन फिर भी नितान्त शून्य नहीं था। एक स्त्री और एक पुरुष वहाँ अब भी बैठे रह गए थे। यही दोनो जनता की उस उत्तेजित भावना के रहस्य को जान सकते थे। क्राइसिस और डिमिट्रियोस जिन्होंने एक दूसरे के द्वारा यह स्थिति उत्पन्न की थी।

युवक द्वार के समीप एक संगमरमर के खण्ड पर बैठा हुआ था। और युवती चौक के बिलकुल दूसरे छोर पर खड़ी हुई थी। इतनी दूरी से वे एक दूसरे को पहचान नहीं सकते थे, किन्तु एक नैसर्गिक भाव से एक-दूसरे के अस्तित्व का आभास अवश्य पा गए थे। क्राइसिस गर्व और सन्तोष या वासना के वशीभूत सूरज की चिलचिलाती धूप में ही नंगे सिर उसकी ओर भागती हुई।

“तुमने वह सब कर ही दिया”, वह चिल्लाई, “तुमने अपने वचन पूरे कर दिए!”

‘हाँ’ युवक ने सामान्य भाव से कहा, “तुम्हारी आज्ञा का पालन हो चुका है?”

वह उसके चरणों पर गिर पड़ी और बाद में एक सुस्वादु आलिंगन में उसे बाँध लिया।

“मैं तुमसे प्यार करती हूँ, प्यार करती हूँ। आज मुझे, जैसा अनुभव हो रहा है, वैसा कभी भी नहीं हुआ। प्रिय! मैं आज समझ सकती हूँ कि प्रेम क्या होता है। तुम सब कर चुके प्रिय, मैं तुम्हें उससे

भी अधिक दे रही हूँ जितना मैने तुम से पहला वायदा किया था। मैने आज तक किसी को भी चाहा नहीं, आज इतनी जल्दी बदल जाऊँगी सोच भी न सकती थी। मैं तुम्हें प्यार कर सकती थी, पर आज तो मैं तुम्हें अपना सर्वस्व अर्पण करती हूँ। अपनी आत्मा, अपनी मातृ-मियत, अपने हृदय की समस्त चतुराई और निष्ठा, अपनी कुंवारी आत्मा तुम्हारे चरणों पर न्योछावर करती हूँ डिमिट्रियोस, विश्वास करो। आओ मेरे साथ, हम दोनों कुछ दिन के लिए इस नगर को छोड़ दें। चलो किसी ऐसे अज्ञात देश को चलें, जहाँ केवल तुम होओगे और मैं। वहां हम ऐसे दिन गुजारेंगे—जिन्हें दुनिया ने आज तक नहीं जाना। आज तक किसी प्रेमी ने ऐसा नहीं किया जो तुमने कर दिखाया है। आज तक दुनिया में किसी औरत ने ऐसा प्रेम न किया होगा, जैसा मैं करती हूँ। यह सम्भव ही नहीं है, बिलकुल सम्भव नहीं है। मेरे मुंह से शब्द नहीं निकल पा रहे हैं—मेरा गला रुंधा-सा जा रहा है। तुम देख रहे हो प्रिय। मेरी आंखों में आंसू छलक आए हैं। अब मैं समझ पाती हूँ कि आदमी क्यों रोता है आनन्द के आधिक्य से लेकिन तुम उत्तर क्यों नहीं देते। तुम तो कुछ भी नहीं बोल रहे हो। मेरा चुम्बन करो।"

डिमिट्रियोस ने अपनी टांग आगे फैला दी। बहुत देर से एक ही आसन मे बैठे-बैठे वह थकान अनुभव करने लगा था। तब उसने युवती को ऊपर उठाया और स्वयं उठ खड़ा हुआ। उसने अपनी पोशाक पर पड़ी हुई सलवटों को साफ करने के लिए उसे झाड़ा और एक आश्चर्य-जनक मुस्कान के साथ कहा, "नहीं । अलविदा ?"

और बड़े शान्त भाव से कदम रखता हुआ वह चलने लगा।

क्राइसिस गुमसुम-सी खड़ी रह गई। उसका मुंह खुला रह गया, और दोनों हाथ निश्चेष्ट होकर नीचे लटक गए। "क्या क्या क्या कहते हो तुम !"

"मैं तुम्हें अलविदा कह रहा हूँ", उसने स्वर को बिना ऊँचा किए हुए ही अपनी उक्ति को फिर दोहरा दिया।

"लेकिन तो वह सब तुम्हीं ने किया।"

"हाँ, मैंने। तुम से वादा जो किया था।"

"तो फिर अब मैं समझ नहीं पा रही हूँ।"

"तुम समझ पाओ या न समझ पाओ, मेरे लिए इसमें अन्तर नहीं पड़ता। मैं इस रहस्य को तुम्हारे चिन्तन के लिए छोड़ता हूँ। जो कुछ तुमने मुझ से कहा है अगर वह सत्य है तो तुम्हें चिन्तन के निष्कर्ष पर पहुँचनेमे विलम्ब होगा। इन भावनाओं पर तत्काल अधिकार कर लेने का यह स्वर्ण अवसर मैं तुम्हारे समक्ष उपस्थित करता हूँ।" "अलविदा।"

"डिमिट्रियोस मैं क्या सुन रही हूँ। यह स्वर कहाँ से तुम्हारे हृदय में आ गया है। क्या ऐसे शब्द बोलने वाले मनमुन तुम ही हो। तुम्हारा [illegible] क्या हो गया है। मुझे साफ-साफ बताओ, मैं तुम [illegible] मेरा अपराध हो तो मैं दीवार से टकरा कर अपना [illegible]।"

अब मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि किसी भी प्रकार के समझौते के लिए दोनों प्रेमियों की सहमति की आवश्यकता होती है, और अगर मैं अपने विचारों में कोई परिवर्तन नहीं करता तो हमारा मिलन कष्टापन्न हो जाएगा। जितनी भी वाक्शक्ति मुझ में है, उस सब का प्रयोग करते हुए मैं तुम्हें यही समझाने की कोशिश कर रहा हूँ। मैं सोचता हूँ कि इतना कहना बात को स्पष्ट करने के लिए काफी है और इससे अधिक स्पष्ट करना मेरी शक्ति के बाहर है। मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि इसे गरिमा के साथ स्वीकार करो। यह बात तुम्हें इसलिए कठिन और उलझी हुई नजर आती है, क्योंकि तुम ऐसा होना सम्भव नहीं मानती हो। मेरी हार्दिक इच्छा यह है कि हम अब इस निरर्थक भेंट को यहीं समाप्त करदें। क्योंकि हो सकता है उससे मेरी असहमति अधिक अप्रियकर हो जाय।"

"लोगों ने तुमसे मेरे बारे में जरूर कुछ कहा है ?"

"नहीं।"

"ओह, मैं देवताओं को साक्षी करके कह सकती हूँ, लोगों ने मेरे बारे में तुमसे जरूर कुछ न कुछ कहा है। उन्होंने मेरी निन्दा की है। मेरे बहुत भयानक शत्रु हैं, डिमिट्रियोस। तुम उनकी बातों पर मत जाओ। मैं देवताओं की सौगन्ध खाकर तुमसे कहती हूँ—ये स्त्रियाँ झूठ बोलती हैं।"

"मैं उन्हें जानता तक नहीं।"

"मेरा यकीन करो, मेरा यकीन करो, परम प्रिय। मैं तुम्हारे साथ विश्वासघात क्यों करूँगी, जब कि मुझे तुम्हारे सिवा तुमसे और कुछ नहीं चाहिए। मेरे जीवन में तुम पहिले पुरुष हो जिसको मैंने इन शब्दों से सम्बोधित किया है।"

डिमिट्रियोस ने उसकी आँखों में अपनी दृष्टि डालते हुए कहा, "अब वक्त निकल चुका है। मैं तुम्हें प्राप्त कर चुका हूँ।"

"यह क्या अनर्गल प्रलाप है ऐसा कब हुआ, कहाँ, किस तरह ?"

"मैं सच बोल रहा हूँ। मैंने तुम्हारे बावजूद भी तुम्हें प्राप्त कर लिया है। मैंने जिस सुख की कल्पना की थी, वह सुख तुम मुझे दे चुकी हो तुम उससे अनजान हो, मानता हूँ। पिछली रात स्वप्न में तुम मुझे अपने साथ एक अज्ञात प्रदेश में ले गई थी। तुम्हारा सौन्दर्य अप्रतिम था ... आह! तुम कितनी सुन्दर लग रही थी, क्राइसिस! मैं उस देश से लौट चुका हूँ, अब कोई मानवी सत्ता मुझे उस प्रदेश में नहीं ले जा सकती। आदमी को ऐसा सुख जीवन में दोबारा नसीब नहीं हो पाता। मैं इतना उन्मादी नहीं कि उसी मीठी स्मृति को इस तरह [illegible]। तुम कहना चाहोगी इस सुख के लिए मैं तुम्हारा [illegible] हूँ। लेकिन मैंने तुम्हारी छाया को ही प्रेम किया है, इसलिए मैं [illegible] के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन के कर्तव्य से अपने को [illegible] हूँ।"

[illegible] ने अपने कानों पर हाथ रख लिए। "यह सब घृणास्पद [illegible]। और तुम ऐसा कहने का साहस भी कर पाते हो। और [illegible] भी हो।"

विभिन्नता है तो केवल इतनी कि किसी एक प्रकार के लिए सन्नद्ध होने और उसे सम्पन्न करने के उनके तरीकों में उतनी भिन्नता होती है, और यह इतना बड़ा यथार्थ है कि उसके होते आदमी को किसी सम्पूर्ण रूप-गुण की खान प्रेयसी की तलाश करने का कष्ट अपने को नहीं देना चाहिए। इस अभिप्राय से तुम समस्त स्त्रियों में सर्वोपरि हो, कम से कम इतनी कल्पना करने का गुण मैंने अवश्य प्राप्त किया है। और शायद तुम इस बात से सहमत होओ कि देवी अफ्रोडायटी की कल्पना करने के बाद तुम्हारे स्वरूप की मूर्त कल्पना करने मे मुझे कोई कठिनाई नहीं हो सकती। मैं तुम्हें यह न बताऊँगा कि यह स्वप्न मुझे रात्रि मे आया था अथवा यह जाग्रत मनुष्य का दिवा-स्वप्न था। मेरे लिए यही काफी है कि चाहे मैंने स्वप्न में देखा या कल्पना में परन्तु मैंने तुम्हारा अभिराम रूप एक वस्त्रमुक्त स्थिति में देखा है। यह भ्रान्ति भी हो सकती है परन्तु मैं तुमसे चाहूँगा क्राइसिस कि तुम मेरी भ्रान्ति को मुझसे दूर न करो।'

"और मेरा, इस समस्त घटना चक्र में, मेरा तुम क्या बनाये दे रहे हो। मेरा जो तुम्हारे मुंह से इन भयानक बातों को सुनकर भी तुम्हें प्यार करती है। क्या मैं तुम्हारे इस स्वप्न के अस्तित्व के प्रति सचेत रही हूँ। जिस सुख और आनन्द की चर्चा तुम कर रहे हो, क्या उस सुख और आनन्द की सहभागी मैं बन सकी हूँ—उस सुख की जो तुमने मुझ से छीन लिया है—या चुरा लिया है। इस विचार से ही मेरा मस्तिष्क विकृत हुआ जाता है, मैं पागल हुई जा रही हूँ।"

अब डिमिट्रियोस ने उपहास के स्वर में बातें करना बन्द कर दिया, और वह हल्के कांपते हुए स्वर में कहने लगा 'क्या तुमने मेरी पीड़ा का ख्याल किया था जब मेरे भावावेश के क्षणों में तुमने मुझ से तीन वचन मांग लिए थे, जिनकी पूर्ति करने मे मेरा समस्त अस्तित्व ही सकट में पड़ सकता था। और कम से कम एक तिहरी शर्म से जीवन भर मेरा सिर नीचे झुका रहेगा।"

"अगर मैंने वैसा किया, तो केवल तुम्हें अपने प्रति आकर्षित करने के लिए। अगर मैं तुम्हारे समक्ष समर्पण कर देती तो तुम्हें कभी न पा सकती।"

'बहुत अच्छा है। तुम्हारी आकांक्षा पूरी हुई। तुमने मुझे पा लिया है बहुत अधिक समय के लिए न सही, तथापि तुमने मुझे अपना गुलाम बना सकने का गौरव प्राप्त कर लिया है। अब आज मुझे मुक्ति प्राप्त कर सकने का अधिकार भी ले लेने दो।"

'गुलाम तो मैं हूँ डिमिट्रियोस।"

कर घसीट सकता है, हमारा प्रेम आंसुओं में पुनर्जीवन प्राप्त करता है। केवल एक चीज ऐसी है जो गुलाम बनाने की भावना तुम्हें सन्तोष प्रदान करती है प्रेम पगल प्रिया! और वह है आदमी का तुम्हारे समक्ष बिना शर्त समर्पण कर देना।"

"ओह तुम चाहो तो मुझे दण्ड दो लेकिन मुझे प्यार करो।" और उसने इतने भावोन्मेष तौर पर उसका आलिंगन किया कि वह अपने होंठों को भी हटा न सका। तथापि उसने तुरन्त अपने को उसके आलिंगन से मुक्त कर लिया।

'मैं तुम से घृणा करता हूँ, गनचिरा।"

लेकिन क्राइसिस उसके समीपतर होती गई, 'झूठ मत बोलो तुम मेरी आराधना करते हो, तुम्हारी आत्मा में मैं भरी हुई हूँ। तुम लज्जित हो कि तुमने समर्पण क्यों कर दिया है। सुनो, परम प्रिय! अगर अपने अभिमान को सन्तुष्ट करने के लिए जो कुछ मैंने तुम से कराया है, यदि तुम मुझसे भी कुछ कराना चाहते हो तो मैं उससे भी अधिक तुम्हारे लिए करने के लिए तैयार हूँ। मुझे अपने लिए कुछ कुर्बानी करने दो प्रिय! अपने मिलन के उपरान्त मैं जीवन-पर्यन्त तुमसे किसी चीज की शिकायत नहीं करूँगी।"

डिमिट्रियोस ठीक उसी उत्सुकता से उसकी तरफ देखने लगा जिस प्रकार तीन रात्रि पूर्व जेट्टी पर उसकी ओर उसने देखा था। उसने कहा, "तुम क्या शपथ लेती हो।

"मैं अफ्रोडाइटी की शपथ लेती हूँ।"

"अफ्रोडाइटी में तुम्हारा विश्वास नहीं है यावेह् शवथ की शपथ लो।"

गैलीलीयन का रंग पीला पड गया। "यावेह की शपथ नहीं ली जाती।"

"तुम इन्कार करती हो।"

"यह तो बहुत भयानक शपथ है।"

"यही शपथ मैं स्वीकार करूँगा।"

टूटा हुआ है। वहां तुम्हें पुखराज का झालना मिलेगा, उस झालने को तुम हाथ में धारोगी, वहां तुम्हें फिरोजिया का कंगना भी मिलेगा उसे तुम अपने केशों में धारण करोगी और वहां तुम्हें हीरे जवाहरातों का सत-लड़ा हार भी मिलेगा, इस हार को तुम अपने गले में धारण करोगी। इस प्रकार अपना शृंगार करके तुम्हें महल में से गुजरना होगा, सुन्दरी कासिम। भीड़ तुम्हें सम्राज्ञी के सैनिकों के सुपुर्द कर देगी, लेकिन तुम्हें अपना अभीप्सित प्राप्त हो जाएगा और मैं सूरज निकलने से पहिले ही कारावास में तुमसे मिलने आऊँगा।"

वह कुछ समय तक झिझकी, लेकिन बहुत क्षीण स्वर में उसने स्वीकार किया, "मैं यावेह की शपथ ग्रहण करती हूँ। तुम मुझ से क्या माँगते हो डिमिट्रियोस।"

युवक एक क्षण को मौन रह गया।

"बोलो, परम प्रिय," क्राइसिस ने कहा, "जल्दी बताओ मुझे भय लग रहा है।"

"ओह, लेकिन कुछ भी तो नही है।"

"लेकिन फिर भी क्या माँगते हो।"

"मैं तुम से उन तीन उपहारो के बदले मे कुछ भी नही माँगता हूँ। तुमने जो उपहार माँगे थे, वे दुर्लभ थे। मैं तो सरल-सुगम उपहार भी नही माँगता हूँ। ऐसा शिष्टाचार नही है। कम से कम मैं तुमसे उपहार स्वीकार करने की माँग तो कर सकता हूँ, क्या नही।"

"निश्चय ही," क्राइसिस ने प्रफुल्लता के साथ कहा।

"वह आइना, वह कन्धा और वह कण्ठहार जिन्हे तुमने अपने लिए माँगा था, क्या तुम उन्हे धारण करना चाहती थी, नही न। चोरी किया हुआ आइना, मृतक से प्राप्त किया हुआ कन्धा और देवी के कण्ठ से प्राप्त किया हुआ हार—ये ऐसी चीजे हैं, जिन्हें धारण नही किया जा सकता।"

"कितना उत्तम विचार है।"

"नही, मेरे विचार मे इन्सान ऐसा नही कर सकता। तब इसका अर्थ यही हुआ कि तुमने बेरहमी के साथ ये उपहार इसलिए माँगे थे कि मैं वह तीन जुर्म करूँ जिनके कारण आज सारा शहर अभिभूत हो उठा है। तुम इन उपहारो को धारण करोगी।"

"इन उपहारो को प्राप्त करने के लिए तुम्हे उस उद्यान में जाना होगा, जहाँ स्टीजियन हर्मीज का बुत खडा है। यह स्थान हमेशा ही निर्जन रहता है, और तुम्हे उन्हे प्राप्त करने में कोई विघ्न नही होगा। उस देवता के बाएँ पैर की एडी को सरकाना होगा। वहाँ का पत्थर

टूटा हुआ है। वहाँ तुम्हें ब्रन्जीज का आइना मिलेगा, उस आइने को तुम हाथ में लाओगी, वहाँ तुम्हें निटोक्रिस का कन्घा भी मिलेगा उसे तुम अपने केशों में धारण करोगी और वहाँ तुम्हें देवी अफ्रोडाइटी का सत-लड़ा हार भी मिलेगा, इस हार को तुम अपने गले में धारण करोगी। इस प्रकार अपना शृंगार करके तुम्हें शहर में से गुजरना होगा, सुन्दरी फातिमा। भीड़ तुम्हें सम्राज्ञी के सैनिकों के सुपुर्द कर देगी, लेकिन तुम्हें अपना अभीप्सित प्राप्त हो जाएगा और मैं सूरज निकलने से पहिले ही कारावास में तुमसे मिलने आऊँगा।"

हर्मानुबिस का उद्यान

क्राइसिस के मन में पहला विचार यही आया कि वह उस शपथ को नहीं निभायेगी। उस शपथ को पूरा करने के लिए वह इतनी मूर्ख कैसे हो सकती है!

दूसरा विचार उसके मन में आया कि वह जाए और देखे तो सही!

उत्तरोत्तर बढ़ती हुई उत्सुकता उसे बाधित कर रही थी कि वह उस रहस्यपूर्ण स्थान में जाए और देखे जहाँ डिमिट्रियोस ने अपराध-जनित तीन उपहारों को छिपाया है। वह चाहती थी कि उन्हें प्राप्त करे, अपने हाथ से उन्हें स्पर्श करे, सूरज की रोशनी में उन्हें चमकता हुआ देखे और एक क्षण के लिए उन पर स्वामित्व का गर्व प्राप्त करे। उसका विचार था कि अपनी आकांक्षित वस्तुओं को जब तक वह अपनी आँखों न देख लेगी, तब तक उसकी विजय पूरी तरह सम्पन्न नहीं होगी।

जहाँ तक डिमिट्रियोस का सम्बन्ध है, उसका ख़याल था कि उसे वह किसी भी बाह्य उपकरण की सहायता से प्राप्त कर लेगी। यह कैसे हो सकता है कि उसने उसे हमेशा के लिए अपने अन्तर से निकाल दिया हो। उसके विचार से डिमिट्रियोस के हृदय में ऐसा भावावेश न था जो बिना प्रतिदान प्राप्त किए ही समाप्त हो सकता है। जो स्त्रियाँ बहुत अधिक प्रेम की पात्र बन चुकी होती हैं, आदमी की स्मृति में उनका स्थान अक्षुण्ण हो जाता है और पहली प्रेमिकाओं से भेंट होने पर, वह चाहे जितनी घृणा और उदासीनता की पात्र रह चुकी हो, हृदय में एक ऐसा आन्दोलन हो जाता है, कि प्रेम की स्थिति यथावत् उद्भूत हो

उठती है। क्राइसिस यह जानती थी। अपने प्रेमास्पद इस परम पुरुष को प्राप्त करने के लिए उसके हृदय में चाहे जितनी बलवती आकांक्षा क्यो न रही हो लेकिन अपने जीवन के मूल्य पर वह उसे प्राप्त करने का पागलपन कभी नही कर सकती। जबकि अपने अनेक दूसरे उपायो से वह उसे अपनी ओर सुगमता के साथ आकर्षित कर सकती है।

तथापि उसने कितना उदात्त अन्त उसके लिए चुना है।

असंख्य भीड़ के मध्य उस आईने को धारण करना जिसमें सेफो अपना मुख देख चुकी है, तथा जिसने निटोक्रिस के स्वर्ण-केशों को सवारा था और देवी का एफ्रोडिसियोमीन के मोतियो से बना कण्ठहार' और उसके पुरस्कार-स्वरूप डिमिट्रियोस को शाम से लेकर सुबह तक अपने पास रखना यह देखने के लिए कि गहनतम प्रेम की अनुभूति एक नारी के हृदय मे किस प्रकार होती है और मध्याह्न तक बिना प्रयास के मृत्यु का आलिंगन यह कितना अनुपमेय सौभाग्य है!

उसने अपने नेत्र बन्द कर लिये

लेकिन वह अपने को इस लोभ का शिकार नही होने देगी!

वह उतरकर सडक पर पहुँच गई। यह सडक रिहाकोटिस से होती हुई सीधी महान् सेरापियन तक जाती थी। इस स्थान पर यूनानियो की बहुतायत होने के कारण यह सडक भ्रष्ट हो गई थी। दोनो जातिया इस स्थल पर एक-दूसरे से मिल गई थी, हालांकि पारस्परिक घृणा के भाव अभी उनमें विद्यमान थे। मिस्री लोगो की नील-वर्ण पोशाक के मुकाबले में यूनानियो की सफेद रग की पोशाकें उनके अस्तित्व के अन्तर को भली भाँति प्रकट कर देती थी। क्राइसिस तेजी के साथ नीचे उतर आई। रास्ते में अनेक लोग उन्ही अपराधो की चर्चा कर रहे थे जो कि उसके लिए किए गए थे, उसने उस चर्चा की ओर ध्यान नही दिया।

इस विशाल भवन के सामने बने ज़ीने से उतरकर वह दाहिनी ओर मुड गई, फिर एक अंधेरी गली में मुड गई, उसके बाद फिर दूसरी गली

में चली गई जहाँ मकानो की छतें प्राय एक-दूसरे से मिली हुई प्रतीत होती थी। यही पर एक कोने मे धूप के अन्दर दो लडकियाँ एक चश्मे में खेल रही थी। क्राइसिस यहाँ आकर रुक गई।

हर्मिस-अनुबिस का उद्यान एक ऐसा श्मशान था, जहाँ लोगो ने मृतको को दफन करना छोड दिया था। यह एक ऐसा विस्मृत स्थान था जहाँ लोग आते भयभीत होते थे और उससे दूर होकर ही निकलते थे। उन खण्डहर जैसी कब्रो के मध्य मे होती हुई क्राइसिस आगे बढी। वह साँस रोके आगे बढ रही थी और अपने कदमो के नीचे खडकते हुए हर पत्थर को देखकर भयभीत हो उठती थी। हवा में रेत के कण उड रहे थे और उसकी लहराती हुई केशावली एक झटके के साथ उसकी कनपटियो पर आ जाती थी और उसके वस्त्र रास्ते में उगी हुई कँटीली झाडियो मे उलझ कर रह जाते थे।

उसने कई कब्रो के बीच बनी उस मूर्ति को आखिर पा ही लिया। वह स्थान चारो ओर से कब्रो से घिरा हुआ था और त्रिकोणाकार प्रतीत होता था। यह स्थान किसी लौकिक रहस्य को छिपाकर रखने के लिए अत्यन्त उपयुक्त था।

क्राइसिस अत्यन्त सावधानी के साथ इस सकरे और पथरीले रास्ते में से गुजर गई। मूर्त्ति को देखकर एक बार तो वह पीली पड गई।

इस शृगाल स्वरूप देवता का दाहिना पैर आगे बढा हुआ था, उसकी पगडी गिरती-सी प्रतीत होती थी और उसमें दो सुराख बने हुए थे, जहाँ से उसके हाथ निकले हुए थे। उसकी सख्त देह के ऊपर सिर कुछ झुका हुआ था, और उसकी मुद्रा उसके हाथो के सकेत के अनुरूप भावनाओ से भरी थी। कुल मिलाकर वह लाश सुरक्षित रखने वाले की तरह मालूम पडता था। बाँया पैर उखडा हुआ था।

भयभीत मुद्रा में चारो तरफ देखकर क्राइसिस ने यह जान लिया कि उस निर्जन स्थान में वह सर्वथा एकाकी है। एक हल्की-सी आहट से उसके शरीर में कँपकँपी दौड गई। किन्तु वह आहट एक गिरगिट के

चलने से पैदा हुई थी जो कि तमाम जगमगाहट को एक क्षण में गायब हो गया था।

तब [illegible] मूर्ति के टूटे हुए पैर पर उसने हाथ लगाने का साहस किया। पत्थर वह आसानी से ऊपर न उठा सकी। क्योंकि उस पैर के साथ एक चौकोना स्तम्भ भी जो कि मूर्ति की जड़ से मिला हुआ था— ऊपर उठ आया। तब [illegible] उस पत्थर के नीचे उसने मोतियों से निकलने वाली चकाचौंध को देखा।

उसने पूरा कण्ठहार बाहर निकाल लिया। वह कितना वजनी था। उसने यह कभी न सोचा था कि बिना जड़ावट के भी मोती इतने वजनी मालूम पड़ सकते हैं। मोती बिलकुल गोल थे और चन्द्रमा की तरह बिलकुल चमचम कर रहे थे। लड़ें एक के बाद एक ऐसी प्रतीत होती थीं जैसे तारों के प्रकाश से निखरी हुई सागर की शांत लहरें।

उसने कण्ठहार अपने गले में धारण किया।

एक हाथ से उसमें हार की लड़ें व्यवस्थित कीं ताकि उनकी शीतलता को अपनी त्वचा पर अनुभव कर सके। उसने छै लड़ों को अपने गले में लटका लिया और सातवीं लड़ को अपनी छाती के निकट रिक्त भाग में खोंस लिया।

इसके बाद उसने हाथी दांत का कन्धा उठाया। एक क्षण मुग्ध भाव से उसे देखती रही, और एक मुकुट के समान बने हुए शीर्ष से निकलने वाली उसकी शुभ्र अगुलिकाओं पर हाथ फेरती रही। और अपने मन-चीते ढग से उसे अपने केशों में धारण करने के पूर्व कई बार उसने अपने केशजाल में खोंसा।

उसने चांदी का आइना निकाला। और इस आइने में उसने अपना विजय श्री मण्डित मुखमण्डल देखा और गर्व के साथ कंठ में लटकता हुआ देवी का वह हार भी देखा।

और अपने अगरखे से अपने कानों तक का जिस्म ढककर वह इस श्मशान से बाहर निकल आई। उसने वह भयानक मोती अब भी उतारे नहीं थे।

अध्याय छब्बीस

लाल दीवारें

जिस समय देवी की मूर्ति के अपवित्र किए जाने का समाचार जनता ने धर्माधिकारियो के मुंह मे भी सुन लिया तो भीड अब उद्यान से होकर बाहर जाने लगी। काले देवदार-वृक्षो वाले पथो पर सहस्रो की संख्या में देवदासियां भरने लगी। कुछ ने अपने सिर पर भभूति छिड़क ली थी। कुछ ने अपने सिर धूलि से भर लिये थे, कुछ अपने बाल नोचकर और कुछ छातियां पीटकर विपत्ति के घटित होने की आशका प्रकट कर रही थी। अनेक देवदासियां अपनी बाहो में मुंह छिपाए सिसक रही थीं।

भीड धीरे-धीरे खामोशी के साथ नगर में प्रविष्ट होती हुई, ड्रोम और उसके बाद बदरगाह की ओर बढ रही थी। इस सार्वजनीन दुःख से सडको पर विपाद का गहरा वातावरण छा गया था। भयभीत दूकानदारो ने अपनी दूकानो पर सजे भांति-भांति के सामान को समेट कर रखना शुरू कर दिया था और सुरक्षा के लिए नोकदार लकडी के बाडे खडे कर दिये थे।

बदरगाह के जीवन में सहसा विराम उपस्थित हो गया। नौसैनिक पत्थर के चबूतरो पर बैठ गए और वे जघाओ पर कोहनिया टिकाए हाथो मे मुंह को थामे लोक-जीवन के उस आश्चर्य को देख रहे थे। जो जहाज यात्रा के लिए तैयार हो चुके थे उनकी लम्बी पतवारे संभाल ली गई थी और विशाल स्तम्भो पर बादबान फहराने लगे थे। वे जहाज जो लगर डालने के स्थानो में प्रवेश करना चाहते थे, सामुद्रिक-पथ-निर्देशक के सिगनल की प्रतीक्षा कर रहे थे। और इन जहाजो के कुछ

यात्री जिनके रिश्तेदार रमणी के भवन में काम करते थे, किसी रक्त-क्रान्ति की भावना ने अपने रिश्तेदारों की मंगल-कामना के लिए नीचे की दुनिया में जाकर बलि करने लगे थे।

फारोस के द्वीप और नौपाटी के निकट मार्टिन ने इतनी बड़ी भीड़ में भी क्राइसिस को पहचान लिया।

"ओह, क्राइसी! मेरी रक्षा करो। मुझे भय लग रहा है। मिर्टो मेरे साथ है, लेकिन भीड़ कितनी विशाल है। मुझे डर है कि हम बिछुड़ न जायें। हमारे हाथ पकड़ लो।"

"तुम्हें मालूम है," मिर्टोक्लिया ने कहा, "तुम्हें मालूम है क्या हो गया है। क्या वे अपराधी का पता लगा चुके हैं? क्या उन्हें यातनाएँ दी जा रही हैं? कहते हैं कि हिपोक्रेटीज के समय से अब तक कभी ऐसा नहीं देखा गया। ओलम्पियन देवताओं की कृपा हमारे ऊपर से उठ गई है। अब हमारा क्या होगा?"

क्राइसिस ने उत्तर नहीं दिया।

"हमने तो बत्तखें भेंट की हैं।" तरुण बांसुरी बजाने वाली ने कहा, "क्या देवी इस भेंट को स्मरण रखेगी। देवी तो निश्चय ही रुष्ट हो गई प्रतीत होती है। और तुम, और तुम मेरी क्राइसी? तुम तो आज के दिन बहुत सुखी या बहुत शक्तिशाली होने वाली थी? ।"

"सब कुछ हो चुका है!" देवदासी ने कहा।

"तुम क्या कह रही हो!"

क्राइसिस दो कदम पीछे हट गई और उसने अपना दायाँ हाथ मुँह की ओर बढ़ाया।

"देखो प्रिय रोडिस और तुम भी मिर्टोक्लिया। आज तुम वह देखोगी जो आज तक देवी के अवतरण के बाद इस पृथ्वी पर कभी घटित नहीं हुआ। और इस दुनिया के अन्तकाल तक ऐसा फिर कभी घटित नहीं होगा।"

दोनों मित्र आश्चर्य से हक्की-बक्की रह गईं। उनका ख्याल था

कि क्राइसिम पागल हो गई है। लेकिन अपने स्वप्न में खोई क्राइसिम दैत्याकार फारोज़ की ओर बढ गई। उसने पीतल के दरवाजे खोल डाले और सावधानी के साथ यह देखते हुए कि कोई उधर नही देख रहा है उसने दरवाजे अन्दर से बन्द कर लिये।

कुछ क्षण उसी प्रकार व्यतीत हो गए।

भीड का स्वर अब भी उसी प्रकार सुना जा सकता था। सागर की लहरो की थर्राहट से यह स्वर एकाकार हो रहा था।

सहसा भीड के सहस्रो कठो से एक स्वर गूंज उठा।

"अफ्रोडाइटी ! !

—अफ्रोडाइटी ! ! !"

यह स्वर चीख के रूप में फूट पडा। आनन्द के वेग मे उन्मत्त भीड फारोज़ की दीवार के नीचे नाच उठी।

जो भीड चौपाटी पर इकट्ठी हो रही थी वह द्वीप मे भरने लगी। लोग उस दृश्य को देखने के लिए चट्टानो पर चढ गए, मकानो की छतो पर, सिगनल देने वाले मस्तूलो पर और किलेबन्दी की हुई मीनारो पर चढ गए। द्वीप भर गया, और खचाखच भर गया और भीड नदी की बाढ लाने वाली लहरो के समान भटी हुई आगे बढती गई। और ऊँची चट्टान से लेकर सागर की तह पर टकराने वाली लहरो तक यह मानव-समूह ठटाठट भर गया।

इस मानवीय सैलाब का कोई अन्त नही था। प्टोलीज़ के राजमहल से नहर की दीवार तक, शाही द्वार, महान् द्वार और यूनोस्टीज सभी ओर से आने वाली सडकें निरन्तर इस स्थल की ओर आने वाली भीड मे भरती जाती थीं। और इस भँवरयुक्त मानव-सागर के ऊपर मानवो के मुखो और बाहो रूपी फेनो पर तैरती हुई सम्राज्ञी बैरेनिस की पीले पर्दो वाली पालकी किसी सकटग्रस्त पक्षी की तरह इधर-उधर टकरा रही थी। क्षण-क्षण में बढती हुई भीड के मुख से निकलता हुआ स्वर दुर्धर्ष होता जा रहा था।

उस लाल स्थान की प्रथम कुर्सी पर पश्चिमी [illegible] आलोकित [illegible] सी हो गई थी।

वह देवी की तरह लगती थी। वह अपने दोनों हाथों में अपने अवगुण्ठन का एक एक सिरा थामे हुए थी। वह अवगुण्ठन सान्ध्यकालीन आकाश में वायु के झोंकों से लहराते [illegible] था। उसके दाहिने हाथ में आईना था जिसमें सूर्य प्रतिबिम्बित हो रहा था।

मन्द गति से नत-मस्तक अत्यन्त गरिमा और वैभव के साथ वह बाहर घुमाव पर, जोकि ऊँची लाल रंग की मीनार के ऊपर तक गोलाई के साथ चढ़ता चला गया था, चलती जा रही थी। उसका अवगुण्ठन लौ की तरह लहक रहा था। सन्ध्या की लालिमा में [illegible] में झलकता हुआ किसी रक्तवर्ण सरिता के समान प्रतीत हो रहा था। वह ऊपर चढ़ रही थी और चकाचौंध पैदा करने वाली उसकी त्वचा, मांस, रक्त अग्नि, नील लोहित, मखमली लाल और गुलाबी वर्णों में दमकती जाती थी। अब वह महान् लाल दीवारों से ऊपर आकाश की ओर बढ़ रही थी।

महान् रात्रि

"तुम देवताओ की प्यारी हो, बेटी," वृद्ध जेलर ने कहा। "और अगर मेरे जैसा गरीब गुलाम तुम्हारे इन अपराधो का सौ में एक हिस्सा भी करता तो मेरे पैर लकडी के घोडे मे बांध दिए जाते, मार-मार कर मेरे परखचे उडा दिए जाते और नचन्नियो से मेरी खाल नोच ली जाती। वह मेरे नथनो मे कडवा तेल डालते और मेरे ऊपर ईंटे चिनवा देते और अगर दर्द से मेरा दम निकल जाता तो मेरी लाश गीदडो के सामने फिकवा दी जाती। लेकिन तुम्हारे लिए—जिसने सब कुछ चुरा लिया है, सब कुछ की हत्या कर दी है और सब कुछ अपवित्र कर दिया है—उन्होने केवल ज़हर का प्याला पीने का ही दण्ड चुना है और इस अवधि को पूरा करने के लिए एक सुन्दर कक्ष भी विश्राम के लिए प्रदान किया है। ज्योस मेरा बुरा करे अगर मैं इस मर्म को जानता होऊं। शायद राजभवन मे किसी से तुम्हारा परिचय होगा। ऐसा मेरा खयाल होता है।"

"मुझे कुछ अजीर दो", क्राइसिस ने कहा, "मेरा मुंह सूख रहा है।"

बूढा गुलाम एक हरी डलिया में लगभग १२ अजीर डाल कर ले आया। अजीर बिलकुल ताजे और पके हुए थे।

क्राइसिस अकेली थी।

पहले वह भूमि पर बैठ गई फिर तत्काल उठ खडी हुई। उसने कमरे का एक चक्कर लगाया। वह अपनी हथेलियो से दीवार को

पपकती जाती थी। उसे मालूम न था कि वह ऐसा क्यों कर रही है। कुछ ताजगी हासिल करने के लिए उसने अपने केश खोल दिए और फिर तत्काल उनमें गाँठ भी लगा ली।

उसे सफेद ऊन का एक चोगा पहिनने को दिया गया था। यह कपड़ा गर्म था। क्राइसिस पसीने में नहा गई थी। बाहें फैला कर और जम्हाई लेकर वह अपने को स्वस्थ करने की कोशिश कर रही थी। आखिरकार वह खिड़की में कोहनी टिका कर खड़ी हो गई।

बाहर आकाश इतना स्वच्छ था और चाँद इतना निखर रहा था कि एक भी तारा कहीं दिखाई नहीं देता था।

आज से सात वर्ष पूर्व एक ऐसी ही रात थी जब क्राइसिस ने जेना-सेरिट की भूमि से विदा ली थी।

उसे याद आ रहा था वे हाथी दाँत के व्यापारी थे। अपने लम्बी पूँछों वाले घोड़ों को उन्होंने अनेक रंगों वाली कलगियों से सजाया हुआ था। जब उसे मिले थे तो वह एक गोल कुएँ के ऊपर बैठी हुई थी। और उसके सामने नील सरोवर, पारदर्शी आकाश फैला हुआ था। गैलीली देश की सुपरिचित हल्की हवा बह रही थी।

घर के चारों ओर सन और झाऊ के पौदे उगे हुए थे। घास में फुदकते हुए कीड़े-मकोड़ों को पकड़ने की कोशिश करते ही कटीली झाड़ियों के काँटे हाथ में चुभ जाते थे। और हवा के झोंकों से लहराती हुई घास को देखकर हवा के रंग के आभासित होने का सन्देह होता था।

स्वच्छ जल से भरे हुए चश्मों में छोटी-छोटी बालिकाएँ स्नान करती होतीं, वहाँ पुष्पित झाड़ियों की जड़ों में घोंघे उन्हें पा जाते। पानी की सतह पर फूल खिले होते, घास के मैदानों में पर्वत-उपत्यकाओं में लिली के फूल खिले होते थे। और पर्वत-शृंखला तरुण उरोजों के समान उन्नत दिखाई देती थी।

क्राइसिस के चेहरे पर मुस्कान की हल्की-सी रेखा दौड़ गई।

उसने आँखे बन्द कर ली। सहसा वह मुस्कान भी उसके चेहरे से ग़ायब हो गई। मृत्यु के विचार ने उसे अभिभूत कर लिया था। और उसे यह आश्चर्य होने लगा था कि जब तक उसका अन्त नहीं हो जाता, क्या यह सोचना बिलकुल बन्द कर सकेगी ?

"आह !" उसने अपने आप से कहा, "मैंने किया क्या है ! मैं उस आदमी से मिली ही क्यो ? उसने मेरी बाते मान ही क्यो ली ? और मैंने अपने आपको क्यो फँसा लिया। फिर भी जो कुछ हुआ, उसका मुझे लेशमात्र भी खेद नही। प्रेम न कर पाना और जो न सकना ' भगवान् ने केवल यही दो वरदान मुझे दिए हैं। लेकिन मैंने ऐसा क्या किया है जिसका मुझे यह दण्ड मिल रहा है ?

उसकी स्मृति में पवित्र काव्य के कुछ अंश उभरने लगे जो बचपन में उसे सुनाए गए थे। सात वर्ष तक उसने उनका ख्याल भी नही किया था। लेकिन आज वे पंक्तियाँ उसके मानस में उभर कर आ रही थी और उसकी अपनी पीडा के साथ एक विचित्र सादृश्य उपस्थित कर रही थी

वह बुदबुदाने लगी लिखा है

"मुझे तेरी याद है, तेरे यौवन की दयालुताएँ,
तेरी प्रणय विह्वल प्रीति,
जबकि तू मेरे पीछे जगलो में भटकती फिरती थी,
वह जगल जो बिना बोया बजर पडा था।
क्योंकि मैंने तेरा जुआ तोड दिया है और तेरे
बन्धन खोल दिए हैं।
और तूने कहा था, मैं मर्यादा भग न करूँगी,
और अब हर ऊँची पहाडी और वृक्ष पर
तू भटकती है और अपनी दुश्चरित्रता की
छाप छोडती फिरती है।
"और वह अपने प्रेमियो का अनुसरण करेगी।

ग्रौर उन्हें खोजेगी।
क्योंकि वह नहीं जानती कि मैंने उसे अनाज
और शराब और तेल दिया है,
और उसके चांदी और सोने को अनेक गुना बढा दिया है।
तो इसलिए क्या मैं लौट कर आऊँ और अब
की फसल के अवसर पर अपना अनाज ले जाऊँ,
और अपनी शराब, उसके मौसम में,
और मैं अपनी ऊन और लिनेन जो मैंने
तुझे अपनी नग्नता को ढकने के लिए दिए हैं, उन्हें
वापस ले लूं।
"लिखा है
"तू कैसे कह सकती है कि मैं कलंकित नहीं हुई हूँ,
घाटी में जा और देख तूने क्या-क्या किया है।
तू एक ऐसी द्रुतगामिनी साडनी है जो जल्दी-जल्दी
अपनी दिशाए बदलती है,
एक जगली गधी, जो जगली-जीवन को ही पसद करती है।
और जिसके ऋतु काल में वे उसे खोज लेते हैं।
"लिखा है
उसने मिश्र देश में वेश्या का कार्य किया है,
क्योंकि उसे अपने प्रेमियो के प्रति बालपन से आसक्ति थी,
जिनके शरीर का मांस गधो जैसा है,
और जिनकी सतति घोडो की सतति जैसी है,
इस प्रकार तू अपनी जवानी की दुश्चरित्रताओ
को याद करती है,
तेरी जवानी का रसपान करने के लिए जो
खरोंच मिस्रियों के हाथों पडी हैं, क्या
तुझे उनकी याद है।

"ओह," वह बिलख उठी, "यही मैं हूँ, मैं। और आगे लिखा है

"तूने अनेक प्रेमियो से अभिसार किया है,
फिर भी तू मुझे प्राप्त कर,
लेकिन मेरा प्रायश्चित भी दिया है
"देख मैं तेरे प्रेमियो को तेरे विरुद्ध खडा करूगा,
और वे तेरे साथ खौफनाक व्यवहार करेंगे,
वे तेरे नाक और कान काट लेगे,
और तेरी बाकी देह को तलवार से टुकडे-टुकडे कर देगे।

और फिर

"और हजाब को बन्दी बना लिया जाएगा,
वह ऊपर लायी जायगी और उसकी दासियाँ
उसके आगे-आगे जाएँगी और,
फाख्ताओ की तरह आवाज करती हुईं,
अपनी छातियाँ पीटती हुईं।

"लेकिन लोग जानते है कि धर्म-ग्रन्थ क्या कहता है," उसने अपने को सतोष देने के लिए कहा, "क्या यह और कही नही लिखा है

"लेकिन मैं तेरी पुत्रियो को दण्ड नहीं दूंगा।"

"और इसके अतिरिक्त दूसरे स्थान पर क्या धर्म-ग्रन्थ यह नही कहता है

"अपने मनचीते पथ पर चल, आनन्द से भोजन कर और उत्फुल्ल हृदय मे अपनी शराब पी, क्योकि प्रभु अब तेरे कार्य स्वीकार करता है। सदैव स्वच्छ वस्त्र धारण कर और अपने सिर पर सभी सुगन्धियो का प्रयोग कर, अपनी पत्नी के साथ—जिसे तू प्यार करता है, जीवन के समस्त आनन्दो का उपभोग कर क्योकि जिस कब्र की ओर तेरे क़दम बढ रहे हैं, वहाँ न कोई काम है, न कोई उपाय, न ज्ञान और न विवेक।"

वह काँप उठी और उसने धीमी आवाज में दोहराया

"क्योंकि जिस कब्र की ओर तेरे कदम बढ़ रहे हैं, वहाँ न कोई काम है, न उपाय, न ज्ञान और न विवेक।

"सचमुच प्रकाश मधुर है और सूर्य को देखना आँखों को कितना सुहावना मालूम पड़ता है!

"आनन्द कर ओ नौजवान, अपने यौवन के दिनों में अपने हृदय को हर प्रकार के आनन्दों से भर दे। जो कुछ तेरे हृदय को भाता है, उसी पथ पर चल, जो तेरी नजर को भाता है, वही देख, क्योंकि मनुष्य अपने दूरस्थ निवास-स्थान की ओर बढ़ रहा है, और मर्सिया पढ़ने वाले सड़कों पर घूम रहे हैं। अन्यथा क्या पता कि चांदी की डोर ढीली पड़ जाय, स्वर्ण-चषक टूट जाए और झरने के निकट ही सुराही फूट जाय या तेरे यान का चक्र ही टूट जाय। तब तेरी मिट्टी पहिले की तरह मिट्टी में मिल जाएगी।"

एक और कम्पन के साथ उसने दोहराया

'तब तेरी मिट्टी पहिले की तरह मिट्टी में मिल जाएगी।" और उसने अपना सिर अपने हाथों में दबा लिया। सहसा उसके नेत्रों के समक्ष त्वचा के अन्दर का ढाँचा मूर्तिमान हो उठा और प्रयत्न करने पर भी यह विचार उसके मस्तिष्क से निकल नहीं पा रहा था उसकी रिक्त कनपटियां, खाली-खाली गड्ढे, सिकुड़ी हुई नाक और आड़े-तिरछे जबड़े।

भयानक! तो उसका यह रूप होना है? उसका ढाँचा एक भयानक विशदता के साथ उसके नेत्रों के समक्ष मूर्तिमान हो उठा था। यह विश्वास करने के लिए कि अभी भी उसका ढाँचा उस की देह में है, और वह मर नहीं गई है, उसने अपनी देह पर अपना हाथ फेरा और पूरी गहराई से साथ उसका अध्ययन किया। वह यह जानना चाहती थी कि उसका शरीर अभी तक कायम है और मानवीय देह-रचना के आकर्षण से अतीत नहीं हुआ है। उसने यह भी अनुभव किया कि प्राणदण्ड प्राप्त होने के बाद जीवित रहने का अर्थ, वास्तव में कब्र में ही पहुँच जाने का प्रतीक है।

जीने की, हर चीज फिर से एक बार देखने की, हर चीज को फिर से आरम्भ करने की, एक बलवती आकांक्षा ने उसे सहसा अभिभूत कर लिया। मृत्यु के समक्ष एक विद्रोह उसके हृदय में जाग उठा था। उसे यह विश्वास नहीं होता था कि वह उस दिन की शाम को फिर न देख सकेगी और उसे इस बात पर भी विश्वास न हो पाता था कि यह सौंदर्य यह सक्रिय विचार और उसकी यह मांसल विलास-युक्त देह और जीने का उत्साह ये सभी चीज़ें समाप्त हो जाएंगी। धीरे से दरवाज़ा खुला।

डिमिट्रियोस अन्दर दाखिल हुआ—

अध्याय अट्ठाइस

धूलि का मिट्टी में पुनरावर्तन

डिमिट्रियोस ! वह चीख उठी।

और वह लपक कर आगे बढ़ आई।

परन्तु कक्ष के द्वार सावधानी से बन्द करने के बाद वह युवक इतने गम्भीर प्रशान्त भाव से खड़ा था कि उसकी मुद्रा को देख कर क्राइसिस का रक्त जैसे जम गया।

उसने उम्मीद की थी कि वह उसे अंगीकार करेगा, उसकी बाहें फड़क उठेंगी, उसके ओष्ठ, कुछ भी न सही तो सहारा देने के लिए वह अपनी बांह ही आगे उठायेगा।

डिमिट्रियोस का एक कदम भी आगे नहीं हिला।

एक क्षण को वह मौन खड़ा रहा, बिलकुल सही तौर पर, यह देखने के लिए कि वस्तुतः क्या उसका व्यामोह समाप्त हो चुका है।

तब यह देखते हुए कि उससे किसी भी चीज़ की मांग नहीं की गई, वह चार कदम चल कर खिड़की के पास आया और उभरते हुए दिन के प्रकाश को देखने लगा।

क्राइसिस अब उस नीचे पलंग पर बैठ गई थी, उसकी दृष्टि जैसे स्थिर हो गई थी और बहुत बेहूदा दिखाई दे रही थी।

तब डिमिट्रियोस अपने आप से कहने लगा।

"यह बेहतर है", उसने सोचा, "कि इस चीज का अन्त इसी प्रकार हो। मृत्यु के क्षणों में इस प्रकार की क्रीडा घृणास्पद ही अधिक लगेगी। आश्चर्य है कि उसने मुझे देख कर क्रोधावेश की अभिव्यक्ति क्यों नहीं

की, उलटे इस तरह से मेरा स्वागत किया। मेरे लिए तो यह खेल खत्म हो चुका है। मुझे अफसोस है कि इसका अन्त इस प्रकार हुआ। आखिरकार क्राइसिस ने कुछ भी नही किया, सिवाय इसके कि उसने अपनी एक आकाक्षा जाहिर की, जैसे कि निस्सन्देह उसकी स्थिति में प्रत्येक स्त्री के लिए स्वाभाविक समझा जा सकता है और अगर वह सार्वजनिक घृणा की पात्र न बना दी गई होती, तो मैं उससे मुक्ति पाने के लिए उसे निर्वासित ही करा सकता था। कम से कम जीवन का सुख प्राप्त करने का उसका अधिकार बना रह सकता था। लेकिन अब यह चर्चा चारो ओर फैल गई है, और अब कुछ भी नही किया जा सकता।

उत्तेजित भावोद्वेग में बह जाने का यही परिणाम होता है। विचार-शून्य वासना और उसके विपरीत बिना आनन्द की अनुभूति के विचार-इनका कभी इतना दुःखद अन्त नही होता। आदमी अनेक प्रेयसियाँ रख सकता है परन्तु उसे देवताओ की सहायता से अपने आप पर अधिकार रखना चाहिए। उसे यह न भूलना चाहिए कि सभी ओष्ठ एक समान होते हैं।

और इस प्रकार इस दुःखवादी नैतिक सिद्धान्त के रूप में अपने विचारो के निष्कर्ष पर पहुँचने के उपरान्त वह अपनी स्वाभाविक विचार-धारा में लीन हो गया।

उसे याद आया कि उसने कल रात्रि को खाने का एक निमत्रण स्वीकार कर लिया था और घटनाओ के उस तूफानी चक्र मे फँस कर वह वहाँ जाना भूल चुका था। अब उसने खेद प्रकट करते हुए एक पत्र भेजने का निश्चय किया।

वह सोचने लगा कि उसे अपना दर्जी का काम करने वाला दास बेच देना चाहिए अथवा नहीं, यह दास पिछले राज्यशासन से जुडी हुई पोशाक परम्परा मे ही चिपका हुआ था और नए फैशन की पोशाक तैयार करने में वह सर्वथा अयोग्य था।

उसका मस्तिष्क इतना मुक्त था कि उसने अपने मॉडल बनाने के

औजार से दीवार पर "जगरियोस और टिटान्स' को चित्रित करने वाली एक आकृति भी बना डाली और खास-खास व्यक्तित्वों के दाहिने हाथों को संकेत करने की मुद्रा में ऊपर उठा दिया।

उसने यह सुधार समाप्त ही किया था कि द्वार पर किसी ने दस्तक दी। डिमिट्रियोस ने आहिस्ता से द्वार खोल दिया। बूढ़े जल्लाद ने अन्दर प्रवेश किया। उसके साथ दो सशस्त्र सैनिक भी थे।

'मैं यह छोटा-सा प्याला लाया हूँ।" जल्लाद ने चेहरे पर औपचारिक मुस्कान लाते हुए शाही प्रेमी को सम्बोधित करते हुए कहा।

डिमिट्रियोस खामोश रहा।

क्राइसिस ने अत्यन्त व्यग्र भाव से सिर उठा कर देखा।

"आओ, बेटी", जेलर ने कहा, "समय हो चुका है। विष बिलकुल पिसा हुआ है। अब बस केवल उसे पी भर लेना है। डरने की कोई बात नही है। इससे बिलकुल कष्ट नही होता।"

क्राइसिस ने डिमिट्रियोस की ओर देखा, डिमिट्रियोस ने अपनी निगाह फेरी नहीं।

अपने विशाल काले नेत्रों के हरित प्रकाश को प्रकीर्ण करती हुई उसकी दृष्टि डिमिट्रियोस पर टिकी रही और विष का प्याला लेने के लिए उसने अपना हाथ आगे बढा दिया, प्याला हाथ मे लिया और उसे अपने ओठो की ओर बढाने लगी।

उसने ओठो से उसका स्पर्श किया। विष की तीव्रता और विष-पान से उत्पन्न पीडा के भाव से अतीत करने के लिए उसमे शहद मिला दिया गया था।

उसने आधा प्याला पी लिया और उस भाव-मुद्रा के साथ जो उसने मागाथान की थिस्टीज में नाटक में देखा होगा, या जो वस्तुत उसकी अपनी अनुभूति में से स्फूर्त हो उठी थी, उसने अवशिष्ट भाग डिमिट्रियोस के आगे बढा दिया हाथ उठाकर युवक ने उस अविवेकपूर्ण प्रस्ताव से इन्कार कर दिया।

तब उस गैलीलियन ने बाकी प्याला भी समाप्त कर दिया और तब एक हृदय-द्रावक मुस्कान उसके ओठो पर नाच उठी। इस मुस्कान से घृणा परिलक्षित होती थी।

"अब मुझे क्या करना है", उसने जेलर से पूछा।

"जब तक तुम्हारे पैर भारीपन न महसूस करने लगे तब एक कमरे मे घूमती रहो, मेरी बच्ची! बाद में पीठ के बल लेट जाना होगा। तब विष अपना काम स्वय करेगा।"

क्लाइसिस उठ कर खिडकी की ओर चली गई। दीवार पर कोहनी टिकाए और कनपटी को हाथ से सहारा देती हुई वह ऊषा की लालिमा को देखने लगी।

समस्त पूर्व प्रदेश रग की झील में डूबा हुआ प्रतीत होता था।

क्षितिज पर पानी की पतली रेखा के समान एक छाया घनीभूत हो उठी। क्रमश यह छाया विलीन हो गई। एक सुनहरी रेखा उदित हो उठी, और चारो ओर फैल गई। लोहित वर्ण की एक हल्की रेखा अभी उस उदास ऊषा-मण्डल पर खिची रह गई थी। और जैसे रक्त के सरोवर मे सूर्य का उदय हुआ।

लिखा है

"—प्रकाश कितना सुखदायी होता है ।"

जब तक उसके पैरो मे शक्ति रही, वह उसी तरह खडी रही। जिस समय अपने पैरो के निस्सत्व हो जाने का सकेत उसने किया तो सैनिको ने उसे पलग पर लेटा दिया।

बूढे आदमी ने उसके सफेद उत्तरीय को उसके सारे जिस्म पर ढक दिया। तब उसने उसके पैरो का स्पर्श किया और पूछा

"क्या तुम्हे स्पर्श की अनुभूति होती है।

उसने उत्तर दिया

"नही।"

उसने उसके घुटनो का स्पर्श किया और पूछा

"क्या तुम्हे स्पर्श की अनुभूति होती है ?"

उसने स्पर्श की अनुभूति न होने का संकेत किया। और यह संकेत उसने अपने मुंह और कन्धों के आन्दोलन से किया था। क्योंकि उसके हाथ भी निर्जीव हो चुके थे। उस विषादयुक्त क्षण के प्रति खेद के रूप में एक बार अपना पूर्ण देह उसने डिमिट्रियोस की ओर उठाने की कोशिश की किन्तु डिमिट्रियोस के उत्तर देने से पूर्व ही उसकी प्राण-हीन देह पीछे ढुलक गई। नेत्रों मे सदैव के लिए अन्धकार छा गया।

तब जेलर ने उसके ऊपरी भाग के कपड़ो को अच्छी तरह उसकी देह पर ढक दिया और एक सैनिक ने यह सोचते हुए कि सम्भवत उस मृतात्मा और उस युवक के मध्य कोई मधुर सम्बन्ध रह चुका है, अपनी तलवार से उसके बालो का अन्तिम गुच्छा पत्थर पर रखकर काट लिया।

डिमिट्रियोस ने उसे अपने हाथ से स्पर्श किया और सचमुच जैसे उसके समक्ष स्वय क्राइसिस का स्वरूप मूर्तिमान हो उठा, उसके सौंदर्य-रूपी स्वर्ण का अंश जो उसके साथ नही गया था, और उसके नाम को सार्थक कर रहा था

उसने उस गर्म केशराशि को अपने अँगूठे और अँगुलियो के बीच दबा लिया और धीरे-धीरे उसे छितरा दिया और अपने जूते के नीचे कुचलकर उसे धूल में मिला दिया।

अध्याय उनतीस

क्राइसिस का अमरत्व

जब डिमिट्रियोस एक बार अपने कला-कक्ष में पहुँचा तो चारो तरफ लाल सगमरमर के टुकडो और मूर्ति बनाने के उपकरणो मे उसने अपने को घिरा पाया। वह चाहता था कि वह पुन अपने काम मे प्रवृत्त हो जाय।

उसके बाएँ हाथ में छेनी थी और दाएं हाथ में लकडी का साँचा था—जिसे वह बिना किसी प्रयोजन ही हाथ मे लिये हुये था। वह एक अधूरी मूर्त्ति को पूरा करने की योजना बना रहा था। यह मूर्त्ति पोमीटियम के मन्दिर के लिए बनाए गए एक विशाल अश्व की ग्रीवा एव स्कन्ध भाग था। अश्व के घने अयालो के नीचे, सिर के आन्दोलन को चित्रित करने के लिये सागर में उठने वाली लहरो के समान लहरियाँ मूर्ति पर अंकित की जानी थी।

आज से तीन दिन पूर्व डिमिट्रियोस के मस्तिष्क मे माँस-पेशियो के क्रमिक विकास को अंकित करने के प्रति पूरा उत्साह था किन्तु क्राइसिस की मृत्यु वाली सुबह से उसे हर चीज के प्रति अपना दृष्टिकोण कुछ बदला हुआ प्रतीत होता था। चित्त को एकाग्र करने के लिए जितनी शान्ति अपेक्षित थी, उसका वह अभाव अनुभव कर रहा था। सगमरमर और उसके बीच एक झीना पर्दा पड गया था और उसे उठाना उसके लिए असम्भव हो गया था। उसने अपने उपकरण एक ओर फेंक दिये और व्यग्रतापूर्वक कक्ष मे चहल-कदमी करने लगा।

सहसा उसने सहन पार किया और एक दासी को बुलाकर उससे

कहा मेरे लिए स्नान और सुगन्धित जल की व्यवस्था कर दो।

जब मैं नहा लूंगा तो मेरी देह पर अंगराग लगाना, उसके पश्चात् मुझे मेरे श्वेत वस्त्र देकर और वृत्ताकार सुगन्धित अगरबत्तियों को भी जला देना।

जब वह स्नान समाप्त कर चुका तो उसने अन्य दो दासियों को बुलाया और कहा, "सम्राज्ञी के कारागार मे जाओ और यह मिट्टी जेलर को दे दो और उससे कहो कि वह उस मिट्टी को उस कक्ष में ले जाये जहाँ देवदासी क्राइसिस की मृत देह पडी हुई है। अगर उसका शरीर गड्ढे में न फेंक दिया गया हो तो उनसे कहना कि जब तक मैं आज्ञा न करूँ उसका किसी प्रकार भी अंग-भंग न होने पाए। जल्दी से दौडकर उधर जाओ।

उसने मॉडल बनाने वाले उपकरण अपने अंगरखे की जेबों मे रख लिये और ड्रोम के वीरान इलाके की तरफ खुलने वाला मुख्य द्वार खोला। ड्योढी पर पहुँचकर वह सहमा चकित रह गया। अफ्रीकन दोपहरी का झुलसाने वाला सूरज अपने पूरे वेग में प्रखर था। पूरी गली मे सफेद रंग के मकान बने हुए थे किन्तु सूरज की लपटें उगलने वाली किरणे इस कदर चकाचौंध पैदा कर रही थी कि सामान्यत चूने और पत्थर से बने मकानो के रंग कभी नीले, कभी लाल, और कभी हरे प्रतीत होने लगते थे। ऐसा मालूम होता था कि वे कम्पायमान रंग वायु मण्डल में ही दूसरे रंगों में परिवर्तित हो जाते थे और सभी मकानो के अगले भाग भी उनके साथ बदले हुए प्रतीत होते थे। इन पारदर्शी रंगो को चीरकर दृष्टि मुश्किल से ही उनके अचल अस्तित्व को देख पाती थी। इस चमक के पीछे रेखाएं कुरूप दिखाई देने लगी थी और सडक की दाहिनी ओर की दीवार जैसे रिक्तता में वर्तुलाकार बनकर एक पर्दे की तरह लहराती हुई दीख पडती थी और कुछ स्थानो पर उसका दीख पडना भी समाप्त हो गया था। एक कुत्ता जो कि बाजार के एक कोने पर पडा था वस्तुत बैंजनी रंग का मालूम पड रहा था।

उस दृश्य के प्रति उत्साहपूर्ण प्रशंसा के भावों से भरे डिमिट्रियोस ने उसमें अपने नवीन अस्तित्व के प्रतीक के दर्शन किए। सूनी रातों, मौन और शान्त जीवन का लम्बा क्रम अब खत्म हो रहा था। काफी समय तक वह चन्द्रमा की किरणों में प्रकाश के दर्शन करता रहा था और कोमल आन्दोलनों को अपनी मूर्त्तियों में रेखांकित करता रहा था। उसकी रचनाओं में ओज नहीं आ पाया था। उसकी मूर्त्तियों की त्वचा पर एक बर्फानी झलकमात्र दिखाई देती थी।

पिछले दिनों उस दुःखान्त घटना से वह इतना अभिभूत रहा था कि उसकी बुद्धि ही सर्वथा उदभ्रान्त हो गई थी, परन्तु इस दृश्य को देखकर पहली बार जीवन का सम्पूर्ण श्वास उसके फेफड़ों में भरा था। इस संघर्ष में से सफलतापूर्वक अपने को निकालते हुए अपनी दूसरी परीक्षा के प्रति अगर वह किसी प्रकार शंकालु भी था तो भी वह इस निष्कर्ष पर पहुँच चुका था कि कला की अभिव्यक्ति का माध्यम चाहे संगमरमर हो, रंग अथवा शब्द, केवल एक ही कल्पना है—जिसे सार्थक कहा जा सकता है—और वह कल्पना है मानवीय उद्वेगों की गहराइयों को चित्रित करना। दैहिक सौंदर्य केवल सतही वस्तु है, जो दुःख अथवा आनन्द के उद्वेगों को अभिव्यक्ति देने के क्रम में स्वयं परिवर्तित हो जाती है।

अपने विचारों के प्रवाह के इस छोर पर पहुँचते-पहुँचते वह कारागार के द्वार पर आ पहुँचा था।

दोनों दासियाँ अभी तक वहीं पर उसकी प्रतीक्षा कर रही थीं।

"हम लाल मिट्टी यहाँ ले आई हैं," उन्होंने कहा, "उसका शरीर अभी पलंग पर ही पड़ा हुआ है। उन्होंने अभी उसे छुआ भी नहीं है। जेलर आपको प्रणाम करता है और आपके हुजूर में हाजिर होने की इजाजत माँगता है।"

युवक ने चुपचाप अन्दर प्रवेश किया, वह महल में गुजरता हुआ आगे बढ़ा। कुछ सीढ़ियाँ चढ़कर वह मृतक-कक्ष में पहुँच गया और

सावधानी के साथ उसने अपने को अन्दर बन्द कर लिया।

लाश लम्बी पड़ी हुई थी। सिर नीचे लटक रहा था और उस पर पर्दा पड़ा हुआ था, हाथ फैले पड़े थे और टांगें जुड़ी हुई थीं। अंगुलियों में अंगूठियां भरी हुई थीं और पीले टखनों पर चांदी के झांझन पहिने हुए थे और प्रत्येक नाखून पर अभी तक सुर्ख़ दफूर लगा हुआ था।

डिमिट्रियोस ने घूंघट उठाने के लिए हाथ से उसे छुआ। लेकिन उसके छूने-छूने एक दर्जन मक्खियां फर से उड़ गईं।

वह एड़ी तक सिहर उठा तथापि उसने सफेद ऊन का टिप्पू हटाया और उसे बालों की ओर उलट दिया।

मृत्यु एक शाश्वत अभिव्यक्ति मृतक की पुतलियां और केशों को प्रदान करती है। क्राइसिस का मुख-मंडल उस अभिव्यक्ति से धीरे-धीरे मण्डित हो चुका था। उसके नीचे पड़ते हुए गालों पर जो गहरी नीली धारियां उभर आई थीं वह उस स्पन्दन-हीन सिर को संगमरमर का स्वरूप प्रदान कर रही थीं। सुन्दर ओठों के ऊपर पारदर्शी नासिका-रन्ध्र खुले हुए थे। कानों की कोमलता प्रायः नगण्य हो चुकी थी। डिमिट्रियोस ने आज तक किसी भी प्रकाश में स्वप्न अथवा यथार्थ में इतना अतिमानवीय सौंदर्य और त्वचा की चकाचौंध पैदा करने वाली जगमगाहट न देखी थी।

और प्रथम भेंट में क्राइसिस ने जो शब्द उससे कहे थे, उसे याद आ रहे थे। "तुमने अभी मेरा चेहरा ही देखा है। तुम नहीं जानते कि मैं कितनी सुन्दर हूं।" एक घनीभूत उद्वेग से उसका गला भर आया। वह जानना चाहता था। वह वैसा कर सकता था।

इन तीन दिनों के भावावेश की स्मृति में वह एक ऐसा स्मारक बनाएगा जो उसके अपने जीवन से भी अधिक दिनों तक स्थायी रहेगा। इस सुन्दर देह को निर्वसन करके वह स्वप्न में देखी हुई क्राइसिस की देह एवं भावमुद्रा के समान उस देह की मुद्रा बनाएगा और उस मृत देह से वह शाश्वत जीवन की मूर्त्ति का निर्माण करेगा।

वह बकसुए और गिरह खोलता है। वह वस्त्र उतारता है। शरीर वज़नी हो गया है। वह उसे उठाता है। सिर पीछे लटक जाता है। बाहे नीचे लटक जाती हैं। वह समस्त पोशाक उतार देता है और बीच कमरे में फेंक देता है। शरीर धम्म से गिर जाता है।

उसकी ठंडी बाहों के नीचे हाथ डालकर वह लाश को पलंग के सिरहाने की ओर खिसकाता है। वह बाएँ कपोल के रुख से सिर मोड देता है। समस्त केशराशि को एकत्रित करके वह पीठ पर फैला देता है। उसके दाहिने हाथ को ऊपर उठा देता है और पहुँचे को मस्तक पर खम दे देता है, वह उसकी अँगुलियों की जकड में कुशन फँसा देता है, और इस प्रकार वह देवी अफ्रोडाइटी की झुकी हुई मुद्रा तैयार कर लेता है।

अब वह दोनों पैरों को एक दूसरे से अलग करता है। एक पैर मस्ती के साथ आगे फैला हुआ है और दूसरे का घुटना ऊपर उभरा हुआ है। इसके बाद वह कुछ और विवरण ठीक करता है, दाहिना पैर आगे बढ़ा देता है और ब्रेसलेट, नेकलेस और अँगूठियाँ उतार देता है ताकि उस सम्पूर्ण समस्वरता के भाव में एक भी व्यवधान उपस्थित न हो सके।

अब मॉडल की मुद्रा पूरी हो जाती है।

डिमिट्रियोस मिट्टी मेज पर पटक देता है। वह उसको कुचलता है। वह उसे मानव-आकार प्रदान करता है, उसकी अँगुलियों के चमत्कार से एक वहशी दानव तैयार हो जाता है, वह उसे देखता है।

स्पन्दनहीन लाश उसी मुद्रा में स्थिर है। किन्तु दाहिने नथने से एक हल्की खून की धार बह चली है और अर्ध-मुकुलित मुख के नीचे बूँदें टपकती जा रही हैं।

डिमिट्रियोस की रचना सतत जारी है। स्केच में जीवन आ रहा है, वह सशिल्प और मानवात्म प्रतीत होने लगा है बायाँ हाथ जैसे स्नान में शरीर के ऊपर वर्तुलाकार झुका हुआ था, उसी तरह मॉडल में भी

झुका हुआ है। माँस-पेशियाँ उभरी हुई हैं। अँगूठे पीछे अकड़े हुए हैं। धुँधलका होने तक डिमिट्रियोस ने वह मॉडल तैयार कर लिया।

उसने चार दासियों को आज्ञा दी कि वह मॉडल को उनके काम करने के कक्ष में ले जाय। उसी रात्रि को लैम्प की रोशनी मे पैरियन संगमरमर के खण्ड को उसने तुड़वाना शुरू कर दिया। और उस दिन के बाद लगातार एक वर्ष तक डिमिट्रियोस उस मूर्ति की रचना मे तल्लीन रहा।

अध्याय तीस

दया

"जेलर, द्वार खोलो, जेलर, द्वार खोलो।" गोडिम और मिर्टोक्लिया कारागार के बन्द द्वार को खटखटा रही थी।

दरवाजा थोडा सा खुला। "तुम लोग क्या चाहती हो?"

"हम अपनी मित्र को देखना चाहती हैं," मिर्टो ने कहा, "हम अपनी मित्र गरीब क्राइसिस को देखना चाहती हैं। आज सुबह ही जिसकी मृत्यु हुई है।"

"ऐसी आज्ञा नही है। भागो यहाँ से।"

"ओह, कृपा करके थोडी देर के लिए हमें अन्दर आने दो। किसी को क्या पता चलेगा। हम किसी को कुछ भी नही कहेंगे। वह हमारी मित्र थी। हमें उसे एक नजर देख लेने दो। हम बहुत जल्दी बाहर आ जाएँगी। हम जरा भी शोर नही मचाएँगी।"

"और अगर मुझे पकड लिया गया, छोकरियो तो मेरा क्या होगा कुछ पता है! अगर तुम्हारी वजह से मुझे दण्ड मिला तो। तुम तो उसका दण्ड नही भोगोगी न?"

"तुम पकडे नही जा सकते। तुम यहां बिलकुल अकेले ही हो और कारावास में दूसरे मृत्यु-दण्ड पाए हुए अपराधी भी नही हैं। सैनिकों को तुमने भेज दिया है। हमें यह सब कुछ मालूम है। हमें अन्दर आने दो।"

"अच्छा! लेकिन ज्यादा देर अन्दर न लगाना। लो यह चाबी। तीसरा दरवाजा खोलना है, जब जाओ तो मुझे बता देना। बहुत देर

हो गई है, मैं सोना चाहता हूँ।"

उस दयालु बूढ़े आदमी ने चाबी उन लड़कियों को दे दी और दोनों लड़कियाँ अंधेरे बरामदों में से होती हुई अपनी सैण्डलों द्वारा कम-से-कम आवाज करती हुई भाग खड़ी हुईं।

जेलर दोबारा अपने दफ्तर में पहुँच गया। अब उसने अपनी निरर्थक चौकीदारी समाप्त कर दी। यूनानी मिस्र में कारावास का दण्ड देने की प्रथा नहीं थी। और इस छोटे से सफेद मकान में जिसकी देखभाल करने का उत्तरदायित्व इस वृद्ध पुरुष के कन्धों पर था, उसमें केवल उन्हीं लोगों को रखा जाता था, जिन्हें मृत्यु-दण्ड दिया जा चुका होता था। कई बार मृत्यु दण्ड दिए जाने के अन्तरिम काल में वह खाली भी पड़ा रहता था।

जिस समय वह विशाल चाबी ताले में फँसाई जाने लगी तो रोडिस ने अपनी मित्र की बाँह को पकड़ लिया।

"मैं नहीं कह सकती कि मुझे उसे देख सकने का साहस हो भी सकेगा अथवा नहीं," उसने कहा, "मैं उसे कितना प्रेम करती थी मिर्टो अब मुझे डर लगता है पहिले तू अन्दर जाना जाएगी न!"

मिर्टोक्लिया ने दरवाजा अन्दर धकेल दिया। लेकिन ज्योंही उसने कमरे में निगाह डाली, उसके मुँह से चीख निकल गई।

"अन्दर न आना रोडिस। मेरी इन्तजार करना।"

"ओह, क्या बात है? क्या तुम्हें भी डर मालूम होने लगा है उधर पलंग पर क्या है। क्या वह मरी नहीं है?"

"हाँ, मेरी इन्तजार करो अभी बताऊँगी सब कुछ बराण्डे में ही रहना और अन्दर की तरफ बिलकुल मत देखना।"

डिमिट्रियोस ने शाश्वत जीवन की प्रतीक मूर्त्ति का मॉडल बनाने के लिए लाश को जिस मुद्रा में कर दिया था, वह वैसे की वैसे ही पड़ी थी। आत्यन्तिक आनन्द और आत्यन्तिक पीड़ा का सन्धिस्थल प्रायः एक ही होता है। और मिर्टोक्लिया अपने से प्रश्न कर रही थी इस देह ने

कितनी मर्मान्तिक पीडा सही है, कैसी शहादत है यह और कैसी यातना है यह !

अपने अँगूठो के बल चलती हुई वह पलग की ओर बढी ।

रक्त की बारीक धारा उसके पारदर्शी नथनो से अब भी बह रही थी । शरीर की त्वचा बिलकुल सफेद हो चुकी थी, उस ह्रासोन्मुख मूर्त्ति के समस्त अग पर जीवन के लक्षण के रूप मे एक भी गुलाबी छाया नही दीख पड रही थी, प्रत्युत कुछ गहरे दाग जो उस देह पर उभर आए थे वह प्रकट करते थे जैसे उस कठोर शीत मज्जा में से सहस्रो जीवन स्फुरित हो रहे हैं और अपने अवसर की प्रतीक्षा मे हैं ।

मिटोविलया ने उस निर्जीव हाथ को उसकी बगल की बराबर में फैला दिया । उसने बाएँ पैर को भी फैलाने की कोशिश की किन्तु घुटना इतना सख्त हो चुका था कि उसे आगे फैला सकने मे उसे सफलता न मिल सकी ।

"रोजिन," उसने काँपते हुए स्वर मे पुकारा, "आ जाओ । अब तुम अन्दर आ सकती हो ।"

लडकी काँपती हुई अन्दर आई । उसकी मुद्रा नितान्त निश्चल और उसकी आँखें विस्फारित सी थी ।

ज्योही उन्होने सामीप्य का अनुभव किया वह एक दूसरे की बाहो में लिपटकर सुबकने लगी ।

"अभागी क्राटमिन, हाय अभागी क्राटमिन !" रोजिन ने रोते हुए कहा ।

उन्होने अत्यन्त कोमलता के साथ एक-दूसरे के कपोलो पर चुम्बन लिया, आसुओं के उस खारेपन में जैसे उनकी अकिंचन आत्माओ का सारा कडवापन सिमट आया था ।

वे रोती ही जाती थी, और कातर दृष्टि से एक दूसरे की ओर देख रही थी । और कभी-कभी अपने घहराते हुए पीडायुक्त स्वर में एक साथ ही बात उठती थी । शब्दो के समाप्त होने-होते सुबकियाँ

फिर प्रारम्भ हो जाती थीं।

"हम उसे कितना प्यार करती थी। वह हमारी मित्र ही नहीं थी, वह हमारे लिए मां के समान थी। हम दोनो को वह मां के समान स्नेह करती थी।"

रोडिस ने दोहराया, "हमारे लिए मां के समान थी।"

मिर्टो ने मृतक के निकट होते हुए सहमे से स्वर मे कहा, "उसका चुम्बन करो।"

वे दोनो पलग पर हाथ रखकर उसके ऊपर झुक गई और सिसकियो के प्रवाह मे डूबते हुए उन्होने अपने ओठ उसके वक्ष मे मस्तक पर टिका दिए।

मिर्टो ने उसका सिर अपने दोनो हाथो में ले लिया। और उसे सम्बोधित करते हुए कहने लगी "क्राइसिस, मेरी क्राइसिस, तुम अपने जीवन मे सबसे सुन्दर और सबसे अधिक चाही गई औरत थी। देवी अफ्रोडाइटी से इतनी मिलती थी कि लोगो ने तुझे अनायास ही देवी समझ लिया। अब तू कहां है। उन्होने तेरा क्या कर डाला है। तू आनन्द देने के लिए इस दुनिया मे आई थी। दुनिया में शायद तेरे ओठो के चुम्बन से अधिक मीठा कोई फल न होगा और तेरी आंखो से अधिक प्रकाशमान कोई प्रकाश न होगा। तेरी त्वचा सम्राटो की सत्तासूचक पोशाक के समान थी जो तुझे सदैव अनावृत रखनी चाहिए थी। आनन्द भीने पराग की तरह तेरे चारो तरफ मडराया करता था। जब कभी तेरे केशो ने तुझसे विदा ली तो प्रतीत हुआ कि जैसे समस्त गरिमा पृथ्वी तल से तिरोहित हो गई और जब कभी तूने अपने हृदय के कपाट बन्द कर लिये तो लोगो ने मृत्यु की कामना करनी शुरू कर दी है।

रोडिस फर्श पर पडी हुई सिसक रही थी।

"क्राइसिस, मेरी क्राइसिस," मिर्टोविलया अपना संवाद जारी रखे हुए थी, "कल तक तू जीवित थी, जवान, लम्बी उम्र की उम्मीदो से भरपूर, और अब देखो, तू निर्जीव पडी है और दुनिया की कोई चीज

तेरा एक बोल भी हमे नही सुना सकती । तूने अपनी आँखे बन्द कर ली । हमारा दुर्भाग्य हम तेरे पास न हो सके । तू यातना सह रही थी और तुझे क्या मालूम कि दीवार के पीछे हम किस तरह जार-जार रो रहे थे । अपनी मृत्यु के क्षणो मे तूने किसी की कामना की थी । तेरी आँखे हमारी शोक और करुण से भरी आँखे कभी न देख सकी ।

बाँसुरी बजाने वाली लडकी अभी तक रो रही थी । गाने वाली लडकी ने उसे हाथ पकडकर उठाया और कहने लगी, "क्राइसिस, मेरी क्राइसिस ! रोडिस और मिर्टोक्लिया हम दोनो कितनी दुखी हैं । प्रेम मे अधिक दुख मानव-मिलन को अधिक दृढ करता है । वे लोग जो जीवन मे एक-साथ रो चुके हैं, दुनिया की कोई शक्ति उन्हे जुदा नही कर सकती । प्यारी क्राइसीडियन हम तेरी प्यारी देह को कब्र तक ले जाएँगी और उसके ऊपर अपने केश काटेगी ।"

उसने परागपोश मे उसकी सुन्दर देह को लपेट लिया और तब गोदिस से कहा, "मेरी सहायता करो ।"

उन्होने उसे आलिंगन मे उठाया । लेकिन इन किशोरियो के लिए वजन बहुत भारी था । और उन्होने उसे पहिले भूमि पर लेटा दिया ।

"हमे अपनी सैण्डिल उतार देनी चाहिए ।" मिर्टो ने कहा, "हमे रास्ते मे नगे पैर ही चलना चाहिए । जेलर सो चुका होगा अगर हमारे सावधान करने पर उसे जगा न दिया तो हम लाश को लेकर निकल सकती हैं । अगर उसने हमे देख लिया तो वह हमें रोक लेगा जहाँ तक कब्र का सम्बन्ध है, अगर सम्राज्ञी के सैनिको ने उससे पूछा भी तो वह यह कहेगा कि लाश उसने गड्ढे मे फेंक दी है । कानून की यही माँग है । बिलकुल डरो नही रोडिस अपनी सैण्डिल अपनी झोली मे रख लो, जैसे मैंने रख ली है । आओ ! घुटनो से नीचे से पकड कर उठाओ । पैर अपने पीछे निकाल लो । और बिना आवाज किए धीरे-धीरे, बहुत धीरे-धीरे चलो ।"

अध्याय उन्नीस

पवित्रता

दूसरी गली के मोड़ को पार करके उन्होंने साँस लेने के लिए लाश को फिर एक बार जमीन पर रख दिया। अब वह सैण्डिल पहिन लेना चाहती थी। रोडिन के पाँव इतने कोमल थे कि नंगा चलने से उनमें से खून निकलने लगा था।

रात्रि प्रकाश से जगमगा रही थी। सारा नगर शान्त था। और मशालों की परछाइयों से सड़क पर अनेक छाया चित्र बन गए थे।

तरुण कुमारियों ने अपना बोझा फिर उठाया।

'हमें किधर चलना है' बच्ची ने पूछा, "हम किस स्थान पर उसे जमीन में दफन करेंगे।'

'हर्मानुबिस की कब्रगाह में। वह हमेशा सुनसान रहती है। वहाँ वह शांति से रहेगी।"

"क्राइसिस ! क्या मैंने कभी यह कल्पना की थी उसके अन्त समय में मशालों की रोशनी में शव-यात्रा करने के बजाय एक चुराई हुई चीज के समान इस तरह तेरी लाश मुझे ले जानी पड़ेगी।"

तब लाश के सामीप्य से उत्पन्न होने वाले भय को दूर करने के लिए उन्होंने ज़ोर-ज़ोर से बातें करना शुरू कर दिया। क्राइसिस के जीवन के अन्तिम दिन ने उन्हें आश्चर्यचकित कर दिया था। वह शीशा, कन्घा और कण्ठहार उसे किस तरह प्राप्त हुए थे। वह अपने आप कण्ठहार प्राप्त नहीं कर सकती थी क्योंकि देवी के मन्दिर की रक्षा इतनी चौकसी से की जाती है कि एक देवदासी के लिए वहाँ प्रवेश करके कण्ठहार

चुरा लेना सम्भव नहीं है। जरूर किसी ने उसके लिए यह काम किया होगा। लेकिन किसने ? उस देवी की मूर्ति के रक्षक पुजारियों में तो किसी ने उसके प्रेम की चर्चा कभी नहीं सुनी। फिर अगर किसी ने उसकी तरफ से ये काम किए तो उसने उसे जाहिर क्यों न कर दिया। आखिर ये तीन अपराध करने की उसे आवश्यकता ही क्या थी ? उससे यह दण्ड पाने के अतिरिक्त और क्या प्राप्त हो सकता था। कोई भी औरत जब तक वह किसी के प्रेम में उन्मत्त न हो जाए, इस प्रकार की निरुद्देश्य मूर्खता कभी नहीं कर सकती। तो क्या क्राइसिस किसी से प्रेम करती थी। कौन था वह ?

"यह रहस्य हम कभी न जान सकेंगे," बाँसुरी बजाने वाली लड़की ने कहा, "वह अपना रहस्य अपने साथ ही ले गई। और अगर इन अपराधों में किसी ने उसका साथ दिया भी है, तो वह हमें कभी भी न बताएगा।"

[illegible], जो पहले ही लड़खड़ाने लगी थी, बोली, "अब [illegible] आगे उस [illegible] ले जा सकूंगी, मिर्टो। [illegible] गिर पड़ने वाली हूँ। [illegible] और तुम्हारा शरीर बिलकुल टूट चुका है।"

कोई इधर आ रहा है। मेरे साथ इस लाश के सामने बैठ जाओ और उसे अपने वस्त्रों से ढक लो। अगर किसी ने देख लिया तो सब मामला बिगड़ जाएगा।'

फिर वह सहसा रुक गई।

"वह तो टाइमन है मैंने उसे पहिचान लिया है। टाइमन, चार औरतों के साथ ? हे देवताओ अब क्या होगा। वह जो दुनिया की हर चीज पर हँसता है, हमारी मजाक बनाएगा लेकिन नहीं, रोटिस, ठहरो। मैं उससे बातें करती हूँ।"

और सहसा किसी विचार से प्रेरित होकर वह सड़क पर दौड़ती हुई, उस दल के समक्ष पहुँच गई।

"टाइमन," उसने पुकारा। उसकी आवाज याचना से भरी थी, "टाइमन, जरा ठहरो तो। मैं तुम से एक बात सुनने की प्रार्थना करती हूँ, मुझे कुछ अत्यन्त दुःखद वार्ता तुम से करनी है। मैं एकान्त में तुमसे कुछ बातें करना चाहती हूँ।"

"आह, मेरी भोली बालिका," युवक ने कहा, "इतनी व्यग्र क्यों हो उठी हो, क्या तुम्हारे कन्धे की गांठ खुल गई है, अथवा तुम्हारी गुड़िया गिर पड़ी है और उसकी नाक टूट गई है। इस हानि की क्षतिपूर्ति होना तो काफी मुश्किल काम है।"

लड़की ने वेदनाभरी नजर से उसकी ओर देखा। लेकिन टाइमन की चारों मित्र—फिलोटिम, नीडोस की सेसो, कैलिश्चियन और ट्राइफेरा—उसके इर्द-गिर्द जमा हो गई थी।

"इधर तो आ मूर्ख लड़की," ट्राइफेरा ने कहा, "अगर तेरी धाय का दूध उतरना बन्द हो गया है, तो हम तेरी सहायता नहीं कर सकती। अब तो दिन निकलने को हो रहा है। तुझे बिस्तर में होना चाहिए। बच्चे कब से रात की चाँदनी में घूमने लगे हैं।"

"उसकी धाय !" फिलोटिम ने कहा, "वह तो टाइमन को ले जाना चाहती है।"

"उसकी ठुकाई करो। वह ठुकाई चाहती है।"

और कैलिब्रियन ने मिर्टो की कमर में हाथ डालकर उसको ऊपर उठा लिया और उसके नितम्बों पर से कपड़ा भी ऊपर उठा दिया।

लेकिन मेगो ने उन्हें रोका।

"तुम लोग पागल तो नहीं हो गई हो," वह चिल्लाई, "मिर्टो आदमियों के पीछे दौड़ने वाली लड़की नहीं है। अगर उसने टाइसन को बुलाया है तो कोई और कारण होगा। उन्हें शान्तिपूर्वक बात करने दो और मामले को निपटने दो।"

"अच्छा।" टाइसन ने कहा "तुम मुझ से क्या कहना चाहती हो। पास आओ, मेरे कान में कह डालो। क्या कोई बहुत गम्भीर बात है?"

"कार्लिसन का शरीर ऊपर सड़क पर पड़ा हुआ है।" काँपती हुई लड़की ने कहा, "मैं और मेरी दोस्त उसे कब्रगाह में ले जाना चाहती हैं लेकिन लाश बहुत भारी है। मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि हमारी सहायता करो [illegible] बहुत देर नहीं लगेगी [illegible] थोड़ी देर बाद ही तुम अपनी मित्र[illegible] मिल सकते हो।"

टाइसन [illegible] उसकी ओर देखने लगा।

[illegible] और [illegible] मैं [illegible] करने लगा था। तुम [illegible] [illegible] में तुम्हारी सहायता करूँगा। तुम अपनी मित्र के पास पहुँचो। मैं शीघ्र ही आता हूँ।"

[illegible] हुए उसने कहा "तुम लोग [illegible] [illegible] पास। मैं भी [illegible] [illegible] पहुँचता हूँ। [illegible] कोशिश न करना।"

'तुम विश्वास रखो' टाइमन ने आश्वासन दिया।

उसने शरीर को कन्धों के नीचे से पकड़ा और मिर्टो ने घुटनों के पास। वे चुपचाप चलने लगे और रोडिस छोटे-छोटे कदम रखती हुई उनके पीछे-पीछे चलने लगी।

टाइमन मौन ही रहा था। पिछले दो दिनों में दूसरी बार उसकी एक मित्र मानवीय आत्मा का शिकार हो चुकी थी। और उसने अपने आप से प्रश्न किया! यह कितना निरर्थक काम है कि मृत्यु के संसार की ओर बढ़ते हुए जीवन-पथ से उस प्रकार आत्माओं को ढकेल कर दूर कर दिया जाय!

'निर्जीव देह!' वह सोच रहा था, "उदासीनता विश्राम और टलनशील शान्ति! कौन आदमी तुम्हें समझ सकेगा। आदमी अपने को उत्तेजित करता है, संघर्ष करता है, आशा करता है, लेकिन एक चीज बहुत कीमती है यह जानना कि परिवर्तनशील क्षणों में से आनन्द की प्राप्ति किस प्रकार की जा सकती है और यह कि जितना सम्भव हो सके अपने बिस्तर को उतना ही कम छोड़ा जाय।"

वे उजड़े हुए नेक्रोपोलिस के द्वार पर आ पहुँचे थे।

'उसे कहाँ दफनायेंगे!'' मिर्टो ने पूछा।

"देवता के निकट।

मूर्ति किधर है। मैं यहाँ कभी नहीं आई। मुझे कब्रों और मृतकों की यादगार में रखे गए पत्थरों से बहुत डर लगता है। मैं हर्मानुबिस को नहीं जानती।'

"मेरा खयाल है हर्मानुबिस की मूर्ति बगीचे के बीच में कहीं होगी। चलो ढूँढते हैं। जब मैं बच्चा था, तभी एक दिन एक बारहसिंघे का पीछा करता हुआ इधर आ निकला था। चलो अंजीरों की कतार में से होकर आगे चलें। ऐसा नहीं हो सकता कि मूर्ति हाथ ही न आए।"

और वास्तव में उन्होंने गन्तव्य स्थान पा लिया।

ऊषा की जगमगाती हुई अरुणिमा और आकाश में छिटकने वाली

चाँदनी का संगमरमर के पत्थरों पर मिलन हो रहा था। देवदार वृक्ष की शाखाओं पर एक अस्पष्ट और सुदूर ममस्वरता झूला झूल रही थी। खजूर पत्तियों की लययुक्त खड़खड़ाहट वर्षा होने जैसा भाव उत्पन्न कर रही थी और उसमें शीतलता का भी आभास होता प्रतीत होता था।

टाइमन ने कठिनाई के साथ जमीन में गड़ा हुआ एक पीला-सा पत्थर उभारा। उस श्मशान के देवता के हाथ के नीचे एक कब्र को खोला गया। हो सकता है उसके अन्दर पहले भी कोई लाश रखी गई हो, किन्तु उसके अन्दर अब सिर्फ थोड़ी धूल ही बाकी रह गई थी।

युवक कब्र में कमर तक नीचे घुस गया और उसने अपने हाथ ऊपर फैला दिए।

"अब मुझे दे दो," उसने मिटा से कहा, "मैं उसे ठीक से अन्दर रख दूँगा और तुम ऊपर से कब्र को बन्द कर देंगे।"

[illegible] लाश के ऊपर दहाड़ मारकर गिर पड़ी थी।

"नहीं! उसे इतनी जल्दी न दफनाओ! मैं उसे फिर देखना चाहती हूँ! आखिरी बार। बस आखिरी बार! कोडमिस, मेरी अभागी [illegible]! आह, कितनी [illegible] वह रंगी हो गई है [illegible]!"

[illegible] ने लाश के ऊपर पड़ी हुई चादर का एक छोर [illegible] दिया था। चेहरा दिखाई पड़ने लगा था और वह इतनी [illegible] हो गया था कि [illegible] देखकर भयभीत हो उठी। [illegible] [illegible] थी, [illegible] और [illegible] [illegible] गया। [illegible] [illegible] मानवीय [illegible] कोई [illegible] नहीं रह गया था।

तब दोनो लडकियो ने सुबकते हुए उस प्राणहीन देह को टाइमन के हाथो मे सौंप दिया।

और जिस समय उस रेतीली कब्र में क्राइसिस की लाश रख दी गई, टाइमन ने कब्र के ढकने को फिर उठाया। उसने क्राइसिस की शिथिल अंगुलियो मे चांदी का सिक्का रख दिया, एक चौडा पत्थर लेकर लाश के सिरहाने रख दिया और उसके लम्बे सुनहरे बालो को मुंह से लेकर पैरो तक छितरा दिया।

तब वह उस कब्र से बाहर निकल आया। दोनो गायिकाओ ने जो कब्र के समक्ष झुकी हुई थी—अपने-अपने केशो के अग्रभाग काट लिये और एक ही जगह उनकी गांठ बांधकर उसे क्राइसिस की लाश के साथ दफन कर दिया।